* श्रीजानकीवल्लभो विजयते *

श्री रसिकजन प्राणवल्लभाय नमः

श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल

अर्थात्

(श्रीनाभास्वामीजी के भक्तमाल से अतिरिक्त भक्तों का जीवन चरित)

सीताकान्तशरण

9984395667

रचयिता

श्रीस्वामी युगलप्रियाशरणजी महाराज

टीकाकार

श्रीजानकीरसिकशरणजी

प्रकाशक

आचार्य स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज 'व्यास'

श्रीलक्ष्मणकिला, श्रीअयोध्याजी

तृतीय संस्करण १५००]　　संवत्-२०१८　　[न्यौछावर ३)

मुद्रक
श्रीशिवनाथप्रसाद वर्मा
श्रीकालिका प्रेस, गोलघर, वाराणसी।

* श्रीमते रामानन्दाय नमः *

भूमिका

विदितवेदितव्य महानुभावों से यह तिरोहित नहीं है कि मानव मात्र का लक्ष्य परमानन्द की प्राप्ति है। श्रुति कहती है रस रूप परमात्मा को प्राप्त कर जीव आनन्द से पूर्ण हो जाता है :—

'रसो वै सः। रसंह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति।'

सम जम नियम फूल फल ज्ञाना। हरिपद रति रस बेद बखाना॥

संयम नियम फूल है, ज्ञान फल है, श्रीभगवत्पादारविन्द में अनुराग ही तो रस है। इसी रस की प्राप्ति से वासनाओं सहित विकारों का नाश सम्भव है:—परं दृष्ट्वा निवर्तते।

भगति करत बिनु जतन प्रयासा। संसृति मूल अविद्या नासा॥

भक्ति के अनेक भेद हैं किन्तु साधना और सिद्धा के भेद से भक्ति दो प्रकार की है :—

'भक्त्या संजातया भक्त्या बिभ्रत्युत्पुलकांतनुम्॥ (भागवत)

अर्थात् साधना भक्ति के सेवन से सिद्धा भक्ति प्राप्त होती है जिससे रोम-रोम में रस भर जाता है और जब रस के वेग से हृदय भर जाता है तो फूट-फूटकर रस की धारा अश्रु-पुलकावली आदि सात्विक अनुभावों के द्वारा बाहर गिरने लगती है।

साधना भक्ति भय से प्रेरित होकर की जाती है अतः उसमें रसास्वादन का पूर्ण अवसर नहीं मिलता है, माया की निवृत्ति के लिये आरम्भ में साधक साधना भक्ति में नवधा का सेवन करता है, भय, चिन्ता, उद्वेग एवं विकारों के सम्पर्क से अशान्त हृदय में विशुद्ध भक्ति रस का प्राकट्य नहीं हो पाता, किन्तु क्रमशः नवधा के सेवन द्वारा जब विकारों का अभाव होता है तब धीरे-धीरे रस की अनुभूति होने लगती है और वही साधना भक्ति सिद्धा भक्ति के रूप में परिणत हो जाती है।

जो भक्ति पूर्व में भय के कारण की जाती थी वही अब सम्बन्ध के कारण होने लगती है। सिद्धा भक्ति सम्बन्ध प्रयुक्ता होती हैं जो भगवान् भक्ति के काल में अनन्त ऐश्वर्य सम्पन्न माया के निवर्तक के रूप में अनुभव में आते हैं वही भगवान् सिद्धा भक्तिकाल में अनन्त माधुर्य सम्पन्न रस सागर के रूप में अनुभव होने लगते हैं। पूर्ण ऐश्वर्य सम्पन्न होते हुए केवल प्रियतम हो जाते हैं जिनको हम 'आपके हम हैं' ऐसा कहते थे—तवास्मीति च याचते, उन्हीं को अब हम आप हमारे हैं ऐसा कहने लग जाते हैं।

जिनके भजन स्मरण के लिये आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि की आवश्यकता होती थी उनका स्मरण अब सोते जागते, उठते बैठते अनायास होता रहता है।

सम्बन्ध ज्ञान के बिना जिनको हम अपने से दूर देखते थे उन्हीं को अब अपने अपने जीवनधन प्राणप्यारे समझने लगे हैं, यदि भगवान् को प्रियतम बनाना हो तो परम श्रद्धा और प्रेम से श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल का अध्ययन मनन करें। यदि नीरस जीवन को सरस बनाना हो तो श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल का नित्य नियम से पाठ करिये।

यदि श्रीसीताराम तत्त्व को पूर्ण रूप से जानना चाहते हैं तथा रस सिद्धान्त का वास्तविक ज्ञान चाहते हैं तो इस ग्रन्थ रत्न को अपना इष्ट ग्रन्थ बनाइये।

श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल एक सिद्ध रस की मधुर मञ्जूषा है श्रीसीताराम रहस्य का अक्षय भण्डार है एवं रस परिपाटी परिज्ञान के लिये अनुपम रस शास्त्र है।

रस क्या है ! रसिक सम्प्रदाय क्या है ! अवध रस क्या है ! रसिकाचार्य महापुरुषों का स्वरूप क्या है ! इन सभी विषयों का विशद विवेचन रसिक प्रकाश भक्तमाल में मिलेगा।

वेद-शास्त्रों का निश्चित सिद्धान्त है कि आचार्यवान् मनुष्य ही भगवान् को जान सकता है—

आचार्यवान् पुरुषो वेद। तस्माद् गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासु श्रेय उत्तमम्।
शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपसमाश्रयम्।

भगवत्तत्त्व का जिज्ञासु श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु की शरण में जाय और उनसे भगवद् रहस्य प्राप्त करे—

गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई। जो विरञ्चि शङ्कर सम होई॥

इस ग्रन्थ के अध्ययन मनन से सद्गुरुतत्त्व का सम्यक् ज्ञान होगा।

इस ग्रन्थ में सिद्ध देह रसावतार रसिकाचार्यों के परम पुनीत मङ्गलमय गुणों का वर्णन है। रसिक महापुरुषों के जीवन चरित्र में उनकी अपार भक्ति निष्ठा का वर्णन है रस का आस्वादन किस प्रकार किया जाता है यह प्रकार इस भक्तमाल से ज्ञात होगा।

यद्यपि रसिकाचार्य अनन्त श्री विभूषित श्री नाभास्वामीजी ने अपने भक्तमाल में भक्तों की गाथा के साथ ही रस का भी निरूपण किया है। तथापि श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल के भक्तों की गाथा तथा रस का निरूपण विलक्षण है।

श्रीनाभास्वामीजी महाराज रसिकाचार्य स्वामी श्रीअग्रदासजी महाराज के शिष्य थे। स्वामी श्रीअग्रदासजी महाराज श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के स्तम्भ थे, किन्तु रसिक सम्प्रदाय के तो एकमात्र प्रवर्तक थे। उनके शिष्य होने के कारण श्रीनाभास्वामीजी महाराज की विशेषता जितनी कही जाय थोड़ी है।

यद्यपि श्रीनाभास्वामीजी ने चारों युगों के भक्तों की महिमा विस्तार से गाई है, भक्ति के पञ्च रसों का वर्णन भी विस्तार से है, अष्टयाम की रचना भी पृथक् की है, फिर भी कलि ग्रसित जीवों पर कृपा करके पुनः श्रीयुगलप्रियाजी महाराज के रूप में स्वयं श्रीनाभास्वामीजी ने अवतार लिया है। ग्रन्थ के टीकाकार ने लिखा है :—

जद्यपि प्रथम रसिकाई नीके गाई चारो जुगन के भक्तन की माल उर धरे हैं।
पंच रस मुख्य सप्त गौण रस रूप रङ्ग भक्ति के जनाय अङ्गभूषण ज्यों भरे हैं॥
ईशता लषाय स्वच्छ माधुरी प्रकाश हेत अन्हिक विलास अष्टजाम अनुसरे हैं।
पैषि कलि घोर जीव मति अति थोर कृपा करिकै बहोर नाभास्वामी अवतरे हैं॥

ग्रन्थकार को परमाचार्य श्रीकरुणासिन्धुजी ने सम्बन्ध प्रदान करते समय समग्र भगवद् रहस्य का उपदेश किया है। मुख्य रूप से भक्ति के चौंसठ अङ्ग बतलाये हैं:—

करुणा के सिन्धु बोले भक्ति के अनेक भेद मुख्य अङ्ग चौंसठि हैं बैठि सुनि लीजिये।
गुरु सरनागत प्रथम पंच संसकार संत गुरु हरि में अभेद मन दीजिये॥
साधुसेवा साधुधर्म जानिवो यथा उचित इष्ट अनुकूल है इतर त्याग कीजिये।
नेम सो अवध मिथिलादि धाम को निवास धाम अङ्ग परिज्ञान रास रङ्ग भीजिये॥

१३ से १८ कवित्त तक भक्ति के अंगों का वर्णन है। इसमें एक बड़ा ही सुन्दर अङ्ग कहा है कि-श्री अग्रस्वामीजी आदि रसिकाचार्यों के प्रबन्धों का गान एवं स्वयं नृत्य-गान रसिकों को सन्ध्यावन्दन की भांति नित्य नियम से करना चाहिए।

श्रीरूपगोस्वामीजी ने भक्तिरसामृतसिंधु में इन अङ्गों का वर्णन किया है; किन्तु इस ग्रन्थ की वर्णनशैली कुछ विलक्षण है। श्रीसीतारामजी के रूपगुण लीला धाम एवं रहस्य का विशद वर्णन प्रस्तुत ग्रन्थ में है, तभी तो श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल के गानेवालों को रसिक शिरोमणि कहा गया है :—

"पाइ है ते रसिक समाज में प्रधान ताई। रसिक प्रकाश भक्तमाल जोई गाई है ॥४॥"

श्रीसीतारामजी की उपासना करने के लिये गुरुदीक्षा तिलक तुलसीमाला एवं सम्बन्ध ज्ञान आवश्यक बतलाया है—

"प्रथम षडक्षर युगुल मंत्र लेइ पुनि मिथिला अवध जन्म नातो मन भावई।
ऊर्द्धपुंड्र धनुवान तप्त भुज अंसन पै कंठ में युगुल कंठी शोभा सुख छावई॥
अग्रस्वामी भनित प्रबन्ध मिलि अष्टयाम सेवा औ शृङ्गार बीज अंकुर बढ़ावई।
इष्ट को परत्व महामाधुर्य स्वरूप जानै दम्पति उपासना की रीति तब पावई॥"

रसिक सम्प्रदाय के मौलिक सिद्धान्तों का विशद वर्णन जिस प्रकार इस ग्रन्थ में वर्णन है वैसा अन्यत्र नितान्त दुर्लभ होगा।

इस एक ही ग्रन्थ के अनुशीलन से केवल रसिक सम्प्रदाय का नहीं, किन्तु समस्त श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का ज्ञान सम्भव है।

श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के गुप्त-प्रकट अनेकों ग्रन्थों का संकेत प्रस्तुत ग्रन्थ में है श्रीरामानन्दीय श्रीवैष्णवों का यह ग्रन्थ सर्वस्व है।

डा० भगवतीप्रसाद सिंहजी ने 'रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय' नामक अपने शोध ग्रन्थ में श्रीरसिक प्रकाश भक्तमाल को ही मूल आधार स्वीकार किया है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन से संत एवं भक्त समाज को अपूर्व आनन्द प्राप्त होगा। भावुकों को अभी तो इसके मूल पाठ को देख कर ही सन्तुष्ट होना चाहिए, विशद टिप्पणी एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों के साथ शीघ्र ही इसका अन्य संस्करण प्रकाशित होगा।

यह ग्रन्थरत्न श्रीलक्ष्मणकिला की अमूल्य निधि है, इसके रचयिता स्वामी श्री जीवारामजी उपनाम स्वामी श्रीयुगलप्रियाशरणजी महाराज हैं। अयोध्या में सुप्रसिद्ध स्थान श्रीलक्ष्मणकिला के संस्थापक रसिकाचार्य स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज के सद्गुरुदेव श्रीयुगलप्रियाजी महाराज हैं, इनकी जन्मभूमि चिरान (छपरा) है इनका जन्म कान्यकुब्ज बंश में हुआ था इनके पिता श्रीशङ्करदासजी महाराज बड़े सिद्ध पुरुष हुए हैं, इनका चरित्र ग्रंथ के अंत में वर्णित है। ग्रंथकार का संक्षिप्त जीवन चरित्र ग्रंथ के आरम्भ में ही है।

टीकाकार श्रीजानकीरसिकशरणजी महाराज श्रीयुगलप्रियाजी महाराज के शिष्य हैं। ग्रंथकार ने टीकाकार को टीका लिखने की आज्ञा दी है इसका संकेत टीकाकार ने ग्रंथ के प्रथम कवित्त में ही किया है।

इस ग्रंथ का प्रकाशन दो बार हो चुका है—प्रथम बार खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, पटना में १८८७ ई० में हुआ था जो अत्यन्त जीर्णशीर्ण था, द्वितीय बार स्वामी श्री युगलानन्यशरणजी महाराज के कृपापात्र महर्षि पद विभूषित श्री पं० जानकीवरशरणजी महाराज की आज्ञानुसार लण्डन प्रिंटिङ्ग प्रेस में १८६३ ई० में प्रकाशित हुआ। इसकी छपाई पूर्व से कुछ अच्छी रही किंतु फिर भी बहुत ही साधारण छपाई थी, वह भी अब अप्राप्य है, इधर कई वर्षों से इसके प्रकाशन की बात चल रही थी, डा० भगवतीप्रसाद सिंहजी भी इसको प्रकाशित कराना चाहते थे किंतु दैवयोग से प्रकाशित नहीं हो सका।

इधर श्रीलक्ष्मणकिला से नित्य नवीन ग्रंथों का प्रकाशन हो रहा है। स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज के अनेकों ग्रन्थ प्रकाशित हो गये, मासिक पत्रिका 'अवध संदेश' द्वारा भी छोटी-छोटी पुस्तकों के प्रकाशन होते रहते हैं।

अभी श्रीरामचरितमानस नवाह्न पारायण एवं अखिल भारतीय दार्शनिक सम्मेलन के पुनीत आयोजन के अवसर पर श्रीलक्ष्मणकिला एवं श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के अन्य ग्रंथों का भी प्रकाशन हुआ। अतएव रसिक सम्प्रदाय एवं श्रीलक्ष्मणकिले की अमूल्य सम्पत्ति का प्रकाशन हो गया।

आशा है भावुकों को रसोपासना में इससे पूर्ण सहायता मिलेगी।

अंत में हम श्री रसिकाचार्यों के पुनीत पादपद्मों में नतमस्तक होकर यही प्रार्थना करते हैं कि श्रीसीतारामजी के श्रीचरणारविंद में अमल अनुराग प्राप्त हो तथा रसिक संतों के दासानुदास बनकर जीवन को कृतार्थ करें।

सीतारामशरण
श्रीलक्ष्मणकिला, श्रीअयोध्याजी
२५–१०–६१

विषय सूची

—:*:—

श्री सद्गुरवे नमः । श्री जानकीवल्लभाय नमः
श्री रामानन्दाचार्याय नमः
श्री हनुमते नमः

श्री रसिकप्रकाश भक्तमाल

मनहरन कवित्त

जनक लडैती गुरु कृपा रस रीति जानि राघव अनूप रूप हिये नित ध्याइये ।
धाम में निवास मुख नाम को प्रकाश हिये लागी यह आश सतगुरु कहाँ पाइये ॥
देखे बहु ग्रंथ भक्ति साधन के पंथ नाहि मिटी उरग्रन्थि सतगुरु कहाँ पाइये ।
नगर चिरान जहाँ संगम प्रधान तहाँ मिले जु महान कह्यो रास पथ गाइये ॥ १ ॥
रास पथ गाऊँ कहाँ पाइये कृपाल कह्यो रसिक प्रकाश भक्तमाल पढ़ि लीजिये ।
आसै अवगाह अति निरखि कियो विचार भई तब आज्ञा रचि टीका याको कीजिये ॥
टीका को विस्तार सेतु सागर अपार जैसे कैसे होय पार सो अधार कछु दीजिये ।
वेई हैं अधार है चरित्र जिनको उदार भयो उर चैन वरवैन मति भीजिये ॥ २ ॥

ग्रन्थ कर्त्ता का स्वरूप वर्णन

जद्यपि प्रथम रसिकाई नीके गाई चारो जुगन के भक्तन की माल उर धरे है ।
पंच रस मुख्य सप्त गौण रस रूप रंग भक्ति के जनाय अंगभूषन ज्यों भरे हैं ॥
ईशता लषाय स्वच्छ माधुरी प्रकाश हेत अन्हिक विलास अष्टजाम अनुसरे हैं ।
पेषि कलि घोर जीव मति अति थोर कृपा करिकै बहोर नाभा स्वामी अवतरे हैं ॥ ३ ॥

ग्रन्थ प्रभाव वर्णन

गाई है जुगल भक्ति भाव के सरस पद रसिकन ग्रंथन के भेद मन भाइ है ।
भाइ है न तिन्है रुच्छमत के असत पंथ बैठि संत सभा में अनन्य रूप ध्याइ है ॥
ध्याइ है नवल दिव्य दंपति स्वरूप गुन धाम नाम महिमा मधुरताई पाइ है ।
पाइ है ते रसिक समाज में प्रधानताई रसिक प्रकाश भक्तमाल जोई गाइ है ॥ ४ ॥
नवल लडैतीलाल नवल सनेह तरु अंकुर को हेतु प्यारी इच्छा सो रसाल है ।
आली उर थल प्यारी लाल रंग जड़ भक्ति भाव भेद साखा और साधन प्रवाल है ॥

परा प्रेमा फूल फल लीला रस स्वाद भल पाय के अनेक जन भये जु निहाल है ।
ऐसे कामप्रद नेह तरु के लषायवे को रसिक प्रकाश भक्तमाल दीपमाल है ॥ ५ ॥

ग्रन्थ कर्त्ता का मूल मंगलाचरण ॥

सोरठा – सुमिरत सुखद समाज, नवधा जहँ साधन भई ।
दसधा भक्ति सुसाज, परा दसा जाके रहत ॥ १ ॥
तेई मंगल रूप, जिनको जस वर्णन करौं ।
परम्परा सु अनूप, रसिक संप्रदारति कथा ॥ २ ॥

टीका— मंगल विविध सब जगत प्रसिद्ध ऐसे मंगल परम दृग एक ही लषाने हैं ।
सेवत जिनहिं गुरु हरि में प्रतीति होत जग राग सोते नेक संग ते सुषाने हैं ॥
नवधा दृढ़ाय परा प्रेमा में छकाय लेत आपु में मिलाय गंग रंग समबाने हैं ।
ऐसे रसिकन के समान कोऊ कहूँ नाहिं और कहा कहौं हरिहूँते अधिकाने हैं ॥ ६ ॥

तेई सर्व मंगल स्वरूप जग देषियत चहूँ जुग तीनि काल त्रिभुवन ओक में ।
जिनको सुजस विधि हरि हर गान करि मंगल स्वरूपी राजे निज निज लोक में ॥
अजहु पुनीत भयो चाहत है गाइ केते पाय संप्रदाई रसिकन की विलोक में ।
मानद अमानी निज जन सुषदानी ऐसी विरद बषानी याते होतहौं बिसोक में ॥ ७ ॥

मूल । छप्पै—जै जै जै गुरु देव रास पथके विस्तारक ।
आचारज को रूप धरे सेवक निस्तारक ॥
दसधावेधी परा भक्ति को भेद लषायो ।
जानकीबल्लभ रसिक रूप लषि नैनन छायो ॥
नाम धाम लीला अलख कृपा लखावत भावहीं ।
रसिक भक्तजन प्रिय सदा मधुर चरित नित गावहीं ॥ १ ॥

टीका— संत हरि गुरु में न भेद सब बेद कहै याते गुरु रूप ही में तीनिहू गनाये हैं ।
तीनि लोक तिहू काल लेखी महिमा विसाल मन बचकाय करि जैतिहू जनाये हैं ॥
तीनि बार कहे की प्रतिज्ञाहूँ अलीक होत भवथिति लयहूकी सक्ति को लषाये हैं ।
अंधकार रोधक सु सोधक चितत्वहूँ को ऐसे गुरु पद में अनेक भाव गाये हैं ॥ ८ ॥

ग्रन्थकर्त्ता का जीवन चरित

ग्रंथकारजू के बालपने की बिचित्र कथा भई सब जथा तथा सुनो मन लायकै ।
कान्यकुब्ज बंश में बिदित बड़े सिद्ध दूजे शंकरहिं भये राम नाम दल पायकै ।

इनकी कथा विशेष आगे ही कहब अब तिनके सुवन को चरित्र कहौं गायकै ।
नाम जीवाराम सब जन अभिराम जैसे चंद्रमा ललाम जग जस रह्यो छायकै ॥ ९ ॥

भयो उपवीत विद्या पढ़न पुनीत लगे व्याकरन ज्योतिष की कला उरधारी है ।
संत मंसाराम जोग अष्ट अंग धाम तिन पास ते स्वरोदय की रीतिहु विचारी है ॥
लखि और भास बोले तजौ यह आस राम राम कहै सोई भल जोगी सुखकारी है ।
यही पद गाय ध्यानमंजरी मँगाय कही माथे पधराय सियारामै हितकारी है ॥१०॥

याको देस काल पढ़तेही हियें भाषै तोहि आसिषा को फल थोरे कालही में पाई है ।
सदाचार रीति संत सेवा में प्रतीति नित भाव भरि सियाराम पदनि को गाई है ॥
अवध निवास करुणा समुद्र पास जाय रामायन भाव रत्न नीके लहि आई है ।
सियाराम ध्यान भक्ति भाव में प्रधान ह्वैहैं रसिक जनन हिये मध्य भल भाई है ॥११॥

आसिष पुनीत पाय अवध में आए नैन प्रेमजल छाये पेषि सोभा परधाम की ।
गये घाट जानकी लषी सभा सुजान की भवी भई न जान की सो फेरि और ठाम की ॥
पाद पद्म आरज आचारज को सीस नाइ लीनों सनबन्ध यथा रीति अली नाम की ।
रामायन टीका पढ़ि निज रूप जाने तब लोचन लुभाने पाय परा पूर काम की ॥१२॥

करुणा के सिंधु बोले भक्ति के अनेक भेद मुख्य अंग चौंसठि है बैठि सुनि लीजिय ।
गुरु सरनागत प्रथम[1] पंच संसकार[2] संत गुरु हरि में अभेद[3] मन दीजिये ॥
साधु सेवा[4] साधु धर्म जानिवो यथा उचित[5] इष्ट अनुकूल ह्वै[6] इतर त्याग[7] कीजिये ।
नेम सों अवध मिथिलादि धाम को निवास[8] धाम अंग परिज्ञान[9] रास रंग भीजिये[10] ॥१३॥

जगते प्रयोजन ही मात्र राषै व्यवहार[11] दुर्जन को संग त्याग[12] सदा हित जानिये ।
शिष्य न बहुत करै[13] कर्म भर्म में न परै[14] बहुमत बाद विद्या प्रत्यवाय[15] मानिये ॥
स्वकर संवारै तुलसी सुमन बाटिकादि[16] सियाराम जन्म दिन उत्सव[17] को ठानिये ।
प्रीतम के काज में कृपिनता को त्याग करै[18] काम क्रोध परिहार[19] बानी सत्य भानिये[20] ॥१४॥

इष्टको परत्व दृढ़[21] और की न निन्दा करै[22] भूत द्रोह त्याग[23] इष्ट निन्दाहू[24] न सहिये ।
बत्तिस सेवापराध[25] त्यागै दस नामहू के[26] परिक्रमा[27] दंडवत[28] नित्य नेम चहिये ॥
राम भक्त चिह्न धनुवान औ जुगुलकंठी नाम मुद्रा अंगन में धारै[29] नित्य रहिये ।
राघव प्रसाद चरणामृत में प्रीति करै[30] माधूकरी वृत्तिहू बिराग युक्त[31] गहिये ॥१५॥

अग्रस्वामी आदि के प्रबन्ध गान समै सम[32], स्वयं नृत्यगान[33] संध्याबंदन ज्यों कीजिये ।
लीला अनुकर्ण प्रेम[34] प्रीतम को जान देखि, आवत उत्थान करिसंग[35] लागि लीजिये ॥
अष्टजाम सेवा[36] अंतरंगा बहिरंगा दोऊ, एक सम मानिकै अभेद[37] चित्त दीजिये ।
मंत्र अर्थ ज्ञान[38] नाम कीर्तन[39] औ मंत्र जाप[40] बन्दना[41] विज्ञापन[42] विनय[43] करि रीझिये ॥१६॥

श्याम गौर मूर्त्ति के मधुर अंग स्पर्श करै[44] रूप माधुरी में भले दृष्टि[45] को लगावनो ।
चंदन अतर बीरी दर्पन चमरछत्र भूषन बसन माल अर्पन[46] करावनो ॥
भोजन नवीन सेज सिंहासन सभा भौन बाटिका बिहार रचि[47] लाडको लडावनो ।
कृपा को निहारै[48] मधुधारा सम वृत्ति धारै[49] कभू ध्यानही में लषि रीझनो रिझावनो[50] ॥१७॥

राम कथा कीर्त्तन[51] श्रवण[52] सारग्रहन[53] सिंगार महा माधुरी[54] पियूष को हिये धरै ।
दास्य[55] सख्य[56] आतम निवेदन[57] औ प्यारी वस्तु प्यारे को समर्प्पन[58] तदर्थ कर्म[59] को करै ॥
प्रीतम को लागै प्रिय सोई प्रिय आपने को[60] सदाचार रीति चलै[61] अन्य रीति सो डरै[62] ।
मन बचकाय ते भरोसो सियारामही को[63] जग नाते त्यागि[64] प्रभु नाते ओर को ढरै ॥१८॥

राग पुनि वैधी भेद भक्ति को स्वरूप जहां तहां समबन्ध दोऊ में विशेष मानिबो ।
देश पुरवासिन को अनुराग शुद्ध राग मिथिला अवध हेरि नाते पहिचानिबो ॥
वैधी बेद शास्त्र के विधान जुत भक्ति अंग करै कछु काल लौं संबन्ध रीति जानिबो ।
नवधा साधान सिद्धा प्रेमा को प्रत्यक्ष फल कृपा सिद्धा पर मौंहि संगम बषानिबो ॥१९॥

नाम धाम लीला को स्वरूप है अलष गुरु भक्ति दै लषावत है खोलि हिय नैन को ।
नाम जानौं कारन कृसानु भानु सोम को त्रिदेव को त्रिलोक को सकल सुख ऐन को ॥
हनूमान आनद को बालमीक मानद को नाम बिन आन को सकल फल दैन को ।
अजामिल गाथा में जनाये भक्त द्वादश जे तेऊ भनै नाम को निदान सर्व चैन को ॥२०॥

कोशला नगर सब धाम ते अगर रघुवंसिन बगर भांति भांति के बने हैं जहँ ।
धनिक अगार अति रुचिर बजार बहु बस्तु के पगार धनदाधिक लसे हैं जहँ ॥
विविध विलास जुत प्रजन अवास राज मारग निकास सावकास जुत सोहैं जहँ ।
नृपति महल अति आनंद सहल छबि चहल पहल सिय लाल रति मानै जहँ ॥२१॥

विपिन असोक जहं व्यापत न सोक सिय अलिन के थोक रास ओक बहु सोभा कर ।
क्रीड़ाचल सरित सरोवर विहंग बर बाटिका सुघर सुरतरु पांति लता घर ॥
नाग नर देव नृप गंधर्व सुता अनेक कोटिन के वृन्द मध्य राजै नित सियाबर ।
सरजू के तीर बहै सीतल समीर तहां बैठि बर नीर निरखत पुलिनादि घर ॥२२॥

लीला रस सागर के ब्रह्मा शिव सेस आदि मीन से भये हैं कभू पावत न अंत हैं ।
सतकोटि चरित रतन बालमीक लहे औरहू लहत कवि मति रतिवन्त हैं ॥
अजहू चहत ते लहत अभिमत निज थावर जंगम विधि कीटहू प्रजन्त हैं ।
बाल ब्याह बन रन आषेटक राजलीला रासलीला वृन्द वृन्द गावै बहु सन्त हैं ॥२३॥

मूल—ऐसे गुरुन मनाय रसिक भक्तनि जस गाऊँ ।
नाभाजू के चरन बन्दि मन मोद बढ़ाऊँ ॥
भक्तनि के शुभ चरित अमित महिमा सुखकारी ।
किमि कहिहौं मैं लोह चुम्बवत लेहु सुधारी ॥
पूर्वाचारज सहचरी नित्य धाम बसि हेरिये ।
जनक लडैती के प्रिये मोहि भरोसो तेरिये ॥

टीका—गुरू पदपंकज प्रनाम करि ध्यान धरि रसिकन जस गायबे को मति करी है ।
पेखि कै ढिठाई स्वामी अति हरषाय निज दरस दिखाय मति गति सब हरी है ॥
दियो सीस नाय कही विनय सुनाय लोह चुम्बक ज्यों आपुही सो मेरी बुद्धि अरी है ।
माथे धरि हाथ कियो तुरत सनाथ कही गावो सदगाथ रिद्धि सिद्धि सहचरी है ॥२४॥

श्री जनकजी का चरित भ्राताओं सहित

मूल—मिथिलापति भ्राता चतुर उग्र प्रतापी भक्ति रति ।
सीरध्वज कुशकेतु बसध्वज बीरध्वज बर ॥
केकीध्वज निमिबंस सकल दसधारति घर घर ।
रानि सुनैना सुष्ट दर्शना सुम चित्रा करि ॥
सुख वर्द्धिनि अरु चन्द्रकान्ति बानी सुखमा भरि ।
उन्मत्त प्रीति वात्सल्य पथ नहिं ब्यापी कछु जगत गति ॥
मिथिलापति भ्राता चतुर उग्र प्रतापी भक्ति रति ॥३॥

कवित्त—नमो बातसल्य भक्तिभाव में धुरीन जेते भाविक प्रवीन तिन चरन मनाइये ।
मिथिलेश राउ श्री सुनैना सतिभाउ जासु अमित प्रभाउ रिषि नारदादि गाइये ॥
जिनके निकेत निज आलिन समेत सिया प्रगट भई है बाल लीला सरसाइये ।
जानै जब रागै मिथिला प्रभाव पागै रसिकन संग लागै तौ रहस्य यह पाइये ॥२५॥

भ्राता चारि मूल में विदित ग्रंथकार कहे औरो निमिबंशी अष्ट भ्राता सुखदानी है ।
बातसल्य भाव में मगन उनमत्त सबै जिनके निहारे जग बासना हिरानी है ॥
तिनहू के भौन चारुसीला चन्द्रकला आदि सियाजू की मुख्य सहचरी प्रगटानी है ।
आलिन समेत सिय मातु के भवन जैसे तैसे घर घर बाल लीला हुलसानी है ॥२६॥

श्री दशरथजी का चरित भ्राताओं सहित

मूल—कृपा दृष्टि मोपर करौ भ्राता कोशलराज के ।
बीर सिंह विख्यात प्रतापी सूर सिंह बर ॥

विजय सिंह जयशील भले तैसे चन्द्रशेषर।
महाबाहु अरु धर्मसील श्रीरत्नभानु हैं ॥
रति वात्सल्य उदार आदि जुत नीतिवान हैं ।
इक्ष्वाकु वंश मण्डन सब ध्यान धरौ प्रिय काज के ॥
सब कृपा दृष्टि मोपै करौ भ्राता कोशलराज के ॥४॥

भ्राता अष्ट सुराष्ट के रानी भाव प्रभाव बड़
रत्नकला अरु रत्नप्रभा रूपावति मदवति ।
भ्रमरकेसि मदसिला सुचित्रा सुखद चन्द्रवति ॥
पुरवासिनी अनेक संग उत्सव रंगराची ।
जनक लली मुख निरखि प्रीति अति मीता माची ॥
सब मिलिकै करिये कृपा विनै करौ किमि हृदै जड़ ।
भ्राता अष्ट सुराष्ट के रानी भाव प्रभाव बड़ ॥५॥

अनुराग लता फूली फली महाराज प्रिय कारिणी ।
कैकेई सुकुमारि मित्र प्रिय नाम सुमित्रा ॥
कौसिल्या सौसील्य कौन तिय कथा पवित्रा ।
रानो विपुल सुज्ञान भक्ति रत महल भरी है ॥
लालन पालन लली लाल के प्रीति भरी है ।
रघुवंस बधू उत्तम कथा सकल धर्म धुर धारिणी ॥
अनुराग लता फूली फली महाराज प्रिय कारिणी ॥६॥

टीका—नमो चक्रवर्ती महाराज अवधेश राउ रानी सतिभाउ ख्यात राम पितु मात हैं ।
वेदरूप भूप कर्म ज्ञान भक्ति रूप रानी केकयी सुमित्रा श्री कौसिल्या पुन्यव्रात हैं ॥
चारि फल चारिहू अवस्था पूत पूतबधू आठौ अंग भूपति के भाई अवदात हैं ।
कृपादृष्टि कीजै सियनाह भक्ति दीजै ऐसी आसिषा करीजै जामें सबै कुसलात हैं ॥२७॥

श्री रंग महल के अंगन मध्य सुरतरु ता तर सिंहासन पै महाराज राजे हैं ।
अंग लिये रामलाल तैसे रघुबंसी बाल सोहैं आस पास ऐसे निर्तक समाजे हैं ॥
अंग सुकुमार तासु सोभा मुख कंजहू की पेखे मुख चूमै प्रेम परा दसा भ्राजे हैं ।
रानी शतसातन समेत महारानी सुख सागर समानी सो कहत कवि लाजे हैं ॥२८॥

मूल । छप्पै—श्री कोसलराज कुमार के सखा रंगीले प्रिय सबै ।
विजै सुकंठ सु बीरमनी विद्याधर सुंदर ॥

सुक अरु विद्युद्वर्ण कलावर्द्धन रस मंदिर ।
मालाधर अरु चन्द्रवरन श्रीचन्द्रहास है ॥
पुष्पमाल अरु प्रमासिंधु श्रीनिद्धि खास है
लक्ष्मीनिधि श्रीचित्रसील करुणा करि हेरिय अबै ॥
श्रीकोशलराज कुमार के सखा रंगीलेप्रिय सबै ॥७॥

टीका—कोसल कुमार के रंगीले प्रिय सखा जेते छैल अलबेले सूर चतुर सुजान हैं ।
नर्म प्रिय सुहृद मधुर मध्य उत्तमादि बैक्रम यथा उचित राजत समान हैं ॥
रूप भरे सील भरे सुंदर सनेह भरे प्रीतम विश्वास भरे जानत न आन हैं ।
धाये कोइ पाछे कोइ दाहिने सुरूप पगे सन्मुख है तिनको हमारे नित ध्यान है ॥२९॥
बीर सिंह आदिक के सुवन प्रसिद्ध जेते औरहू बरन कुल भूषन जे भए है ।
राजसुत नेह गहे सर्बकाल संग रहे खेटकादि लीला मधि लाल जहाँ गए हैं ॥
षट अष्ट द्वादश षोड़श सत साहस कमल दल अंगनि ज्यों चारयो ओर छए है ।
तिन्हैं प्रिय मित्र जानि बंदतहौं जोरिणनि समै पाय इनहूके भाव निज लए है ॥३०॥

श्री जानकीजी का चरित सखियों के सहित

मूल । छप्पै—बन प्रमोद महली प्रिया मिथिला कुञ्ज उपासिनी ।
श्रीविमला अरु चन्द्रकला श्रीचारुसिला अलि ॥
चन्द्रवती चन्द्रादि और सीला सुसील भलि ।
कमला कमलमुखी अनूप बिसदा सुखदानी ॥
पद्मा पद्मिनी चम्पकली रति बर्द्धिनि मानी ।
प्रिय केलि कलाबिद पण्डिता जनक कुँवरि सहबासिनी ॥
श्री बन प्रमोद महली प्रिया मिथिला कुञ्ज उपासिनी । ८ ॥

टीका—नेमी सिया अली जे महल रंग रली दिव्य दंपति सनेह सर मीन ज्यों समानी है ।
प्रथम प्रधान श्री प्रमोद बन जानि गोपनंदन भवन सहजाजू प्रगटानी है ॥
सुखित मंगल्या गोपी गोप भूप पुन्य जूप कोसल कुमार गोप्यलीला सुठि ठानी है ।
नन्दिग्राम पालिग्राम बीच सोम बट नाम तहाँ दानलीला रासलीला मनमानी है ॥३१॥
सांतानिक बिपिन लता प्रतान के बितान तहाँ देवसुता जाइ लता रूप भई है ।
ग्रीषम बिहार के बिहारी रघुचन्दजू के अंगन में नारी ज्यों लपटि सब गई है ॥
तहाँ आइ देवन समेत विधि हेतु कह्यो गहौ पानि दासी ए तुम्हारी नित नई है ।
सुने बर बैन उर भयो अति चैन रास लीला सुख ऐन गृह आनी रसमयी है ॥३२॥

शंभु सेवा मिसि दिसि दच्छिन में जाइ गठे घेरि संबरासुर को दनुज संघारे हैं ।
बान बज्र लागे कछु मरे कछु भागे रति तेज तीव्र आगे तम तोम ज्यों सिधारे हैं ॥
तहाँ जच्छ नाग नर किन्नर गन्धर्व सुता सिद्ध साध्यसुता वृन्द अमित निहारे हैं ।
सुमिरत आये विधि सुनी सब ताकी विधि पाइ निज निधि रंग महल पधारे हैं ॥३३॥

एक समय नारदजू रिषिन समेत आए मिथिला नगर देखि हिये हरषाने हैं ।
पेख्यौ जब राज सभा छाई जहँ दिव्य प्रभा विधि के विधान तहाँ एकौ न लखाने हैं ॥
भूप उठि बन्धुन समेत लागि पायन में यथा योग्य आसन बैठारि सनमाने हैं ।
सुता निज गोद लै देखाई रिषिराजजू को, अंक बर हेरि सुख सिंधु में समाने हैं ॥३४॥

सुनो महीपति तुम साँचे महीपति जग बड़े बड़भागी देव महिमा बखाने हैं ।
रावरी तनूजा शुभ लच्छना विचच्छना हैं रमा उमा कला इनहीं की हम जाने हैं ।
इनहिं बरै गो जोई उत्तम पुरुष सोई जाके पदरागी ब्रह्म सभा सनमाने हैं ॥
सुनि कै विमल बर बचन महीस बोले सन्त गिरा अचल त्रिकाल अनुमाने हैं ॥३५॥

एक समै गोपित रहस्य मिथिलेश लखि बूझे ते बतायो औ दिखायो निज धाम को ।
चले सिर नाइ निज भाग्य को सराहत भे छके परा प्रेमा में जपत हरिनाम को ॥
विरह मगन पेषि बोले शिव करौ पन चाप जो उठावै सोई पूरै सब काम को ।
पाइकै रजाय आये रंग भूमि हरषाय मंत्रिन बुलाय कै सुनायो हेतु बाम को ॥३६॥

आये सुनि पन देश देश के महीप गन लागे सब धनुष उठावै अभिमान ते ।
उठ्यो न धनुष सती सत ज्यों कलुष बस रारि करि भागे पछिताने अपमान ते ॥
घरहीं के घेर में विपति अति परी बिन मारे फौज मरी अकुलाने निज प्रान ते ।
बूझे गुरु ज्ञानी तिन प्रगट बखानी जगदम्बा तिय मानी बचौ कन्या निज दान ते ॥३७॥

सुने भूमि देवन के सांचे बर बैन जबै गयो अभिमान चलौ कहै सोई कीजिये ।
आये मिथिलाधिप के बिनै करि पांइ परे बोले करजोरि हमैं अभै बाँह दीजिये ॥
औरो निज भावना सम्बन्ध सतसंग दीजै लली सेवा हेत यह कन्या धन लीजिये ।
लीने अपनाय ज्ञान अंग सिखराय निज रीति को लखाय कह्यो येही रस भीजिये ॥३८॥

जेती राजकन्या बर नारि अग्रगन्य। देव देविन की मन्या सब सिया ढिग आई है ।
बोली करजोरि भई दासी जू तुम्हारी अब देवो वही भाव जोई सदा सुखदाई है ॥
सुनि हरषाय मंत्र को सुनाय भगिनी ज्यों अपनाय रास लीला रीति सिखराई है ।
दियो दिखराय निज रूप में अनूप जबै भई मुदमाती हिये परा रति छाई है ॥३९॥

गुरुजन आयसु सो गौरि नित पूजै सब आलिन समेत हेत हिय को जनाय कै ।
प्रीति पहिचानी हर्षि बोली यों भवानी प्रीति जहाँ है समानी बर पैहो सो अघाय कै ।

सांवल सुजान सब गुन को निधान यह बाग बरदान फल पेखिहौ बनाय कै ।
सुने बरबैन भयो हिये अति चैन गीत गावती अली समेत चली हरषाय कै ॥४०॥

शिवजू की प्रेरना ते कौसिक अवध जाय करिकै उपाय लाये लछिमन राम को ।
श्याम गौर जुगुल किशोर मुनी चितचोर पाइकै निहाल भए जन अभिराम को ॥
वला अति वला अस्त्र ग्रहन संहार आदि प्रभुहि समर्पत भे विद्या विद्याधाम को ।
दुष्ट मूल गंजन मुनींद्र संत रंजन समर्थ रघुनन्दन सुबन्दन ललाम का ॥४१॥

ताड़ुका संघारि मष राखि मुनि तीय तारि रंगभूमि जाइ तोर्यो धनुष पुरारि को ।
जयमाला धारि भृगुपति मद टारि हंसि सहज चढ़ायो धनु सारंग मुरारि को ॥
आई ज्यों बरात ज्यों बिवाह भयो लोकन में व्याप्यो यश राघव औ जनक कुमारि को ।
चरितसुसार श्रीगोसाईजू कियो सम्हार यह कथा है अपार ताते बरनै विस्तारि को ॥४२॥

आये व्याहि कुँवर अनंद भये नारी नर घर घर मंगल अवध अधिकाने हैं ।
दंपति बदन विधु निरखि हरषि उर सज्जन चकोर सुख सिन्धु में समाने हैं ॥
रानी शत सात राउ सहित विभात सुत बधुन समेत लखि हृदय सिराने हैं ।
पुर परिजन देव भूसुर महीश सुर ईशन विशेष निज इष्ट पहिचाने हैं ॥४३॥

याम एक यामिनी रही जबै नरेशजू के द्वार द्वार दुंदुभी मधुर धुनि छाई है ।
अली विमलादि चारुशीलाजू समेत सजि जनक निकेत सैनकुंज को सिधाई है ॥
जागे लली लाल लखि बदन निहाल भई मंगलनीराजन की जैसी विधि गाई है ।
करि असनान देवपूजा रत्नदान मातु कर ते कलेवा मृदु मेवा मन भाई है ॥४४॥

मातु पितु पद सिर नाइ बर आयसु लै करि पुर काज सुखसाज के गहल में ।
रिद्धि सिद्धि भूषन बसन खंड दीपन के सत्रुन को जीति व्याहि लाए हैं सहल में ॥
देव द्विज सुर गुरु सन्त पद नाइ सिर आसिष सु पाइ गए मुदित महल में ।
रतन सिंहासन बिराजे मार कोटि लाजे सहित सिया के छबि चहल पहल में ॥४५॥

जेती गोपकन्या देव नर नाग धन्या आदि राघव समीप जुत्थजुत्थ मिलि आई है ।
मातु पितु नाम देश कुल अभिराम कहि नागरी ललाम निज प्यारी सो मिलाई हैं ॥
इतहू ते सियाजू सहेलीन को पानि गहि प्राननाथ मृदु करकंज में गहाई है ।
इतौ प्रेम प्यासी पिय जानौ निज दासी आपुही के सुखरासि रूप अंबु की जियाई है ॥४६॥

प्यारी छबि हेरि न अघात पियाजू के नैन पिय मुखचन्द्र की चकोरी सिय भईहै ।
समै पाइ बाग में जनाई सुखदाई रैनि रंग छबि छाई मन भाई रति नई है ॥
कैसो वह रास दृग देखन की आस अहो प्रीतम सुजान थारी लीला रस मई है ।
सुने बरबैन सर्बकला गुन ऐन बोले सदा सुखदेनी भली आज्ञा यह भाई है ॥४७॥

यद्यपि अनेक मम भक्त सुख दानी मात पिता सुत मित्र दास भाव में प्रवीन हैं।
तहां तहां बाल ब्याह आखेटक रन राजलीला रसभाव सुख सागर के मीन हैं॥
उनहीं के भाव में मगन ह्वै कै राजै नित मित सुख योग सबहुन हमैं दीन हैं।
अमित प्रियाजू अति हित रासलीला सुख ताके बिन मेरो मन रहत मलीन हैं॥४८॥
देखौ यह विपिन अशोक गत शोक जहां बन उपबन क्रीड़ा शैल बहुतेरे हैं।
लताद्रुम जाल सर बापिका विशाल जहं कूजत अनेक खग आवै चलि नेरे हैं॥
सब ऋतु सोहन मदन मन मोहन मनोज्ञ रास मण्डल के मण्डल घनेरे हैं।
तहां एती गोपिकादि रास में प्रवीना बर नागरी नवीना युत्थ सेवा योग्य तेरे हैं॥४९॥
ऐसे कहि राघव अनंग रंग भरे सिय अंश भुज धरे पागे रास के प्रसंग में।
रमत अशोक बन कबहूँ प्रमोदबन चित्रकूट कामदा विहार सिय संग में॥
मिथिला निकुंज बन कंचन बिराजत हैं सारी सरहज के सुप्रेम की तरंग में।
श्रीप्रमोद महली में मिथिला निकुंज बासिनी को अर्थ दरसायो रस के उमंग में॥५०॥
धन्य चारुशीला चन्द्रकला विमलादि अली जिनकी कृपा ते दिब्य दंपति मिलत हैं।
लौकिक अनीश रुच्छमत के प्रसंगी तिन्है त्यागि अनायास रससागर हिलत हैं॥
इतहूँ की दासिन की दासी पद आश्रित जे तेऊ मोह तम तोम रबि ज्यों गिलत हैं।
जुगल अनूप धाम रूप नाम गुन गन मानस अगाध सरकंज ज्यों खिलत हैं॥५१॥

❋ श्री स्वामी हरियानन्दजी का चरित ❋

चरन कमल बन्दौं कृपाल हरियानंद स्वामी।
सर्व सु सीताराम रहसि दशधा अनुगामी॥
बाल्मीक बर शुद्ध सत्व माधुर्य्य रसालय।
दरसी रहसि अनादि पूर्व रसिकन की चालय॥
नित सदाचारमय रसिकता अति अद्भुत गति जानिये।
जानकि बल्लभ कृपा लहि शिष प्रति शिष्य बखानिये॥९॥

टीका-बन्दौं पादपद्म श्रीहरियानन्द स्वामीजू के जिन उरधारी सीताराम की उपासना।
लक्ष्मी संप्रदाय में प्रसिद्ध मंत्र तारक जो पारक है सोई करी शिष्यन को सासना॥
साखी विश्वनाथ बसै काशी अविनाशी सोई मानै नहिं हटी जन मिटै कैसे बासना।
रामायन माधुरी बताई मन आई नहिं रोपै पच्छ चतुर्भुज आनै उर त्रासना॥५२॥
कोई बृद्ध आरज महान तिन रामायन शत आठ पाठ को प्रयोग ठहरायो है।
शतबार आवृति के भीतर ही पेखि रूप द्विभुज धनुर्द्धर को हिये सुख पायो है॥

दोनो शीश नाय बर पाय गये स्वामीजू पै भयो मन भायो सुनि नैन जल छायो है।
माधुर्य्य रहस्य को स्वरूप अति गोप्य जानि राख्यो हिये गोय भेद काहू न जनायो है॥५३॥

❋ श्री स्वामी राघवानन्दजी का जीवन चरित ❋

रसिक राघवानन्द बसे काशी अस्थाना।
गुरु रूप शिव लये दये रसिकाई ध्याना॥
काल करालहि जीति शिष्य किय रामानन्दा।
प्रगटी भक्ति अनादि अवध गोपुर स्वच्छन्दा॥
जो आचारज को रूप धरि जगत उधारण जतन किय।
महिमा महा प्रसाद की प्रगटि रसिक जन सुख्ख दिय॥१०॥

श्रीराघवानंदजी भये हैं मुख्य स्वामि शिष्य जिनके हिये में मानसी सुरीति छाई है।
समै पाई बूझी प्रभु लोक में प्रचार करौ कही भली बात ईस आज्ञा नहिं पाई है॥
तुमहीं बिस्तार करौ सीताराम ध्यान धरौ अवध स्वरूप लखि आवो सुखदाई है।
आज्ञा पाइ आये घूमि तीरथ सकल न्हाये कोसला निहारि सर्बोपर मन भाई है॥५४॥
काशीपुरी राममय बिलोकि बसे कोई दिन जोई मरै ताहि शिव परम्पद देत हैं।
अहो राम मंत्र को प्रभाव परतच्छ इहां तऊ मूढ़ जीव नहिं राम नाम लेत हैं॥
शंका कछु भई नई स्वामी बिनु मेटै कौन चले जहां रहैं गुरु बैष्णव समेत हैं।
तहां जाय सुनी गये स्वामीजू परम धाम भयो उर खेद बड़ो यामें कहा हेत हैं॥५५॥
गादी पै अपर गुरु भाई को बैठे बिलोकि करिकै प्रणाम मिले परस्पर भाइ कै।
माता तहं आई ताके पद शिरनाय पाई सुखद असीस लह्यो आनंद अघाइ कै॥
मन्दिर में तीरथ लै पंगति में आये जब सदाचार रीति ते बैठारें बिलगाय कै।
देखि अभिमान उर योग बल आन कही करौ शुद्ध बापी जल मधुर बनाई कै॥५६॥
देखिकै प्रभाव ते तौ बहुत लजाने करजोरि सनमाने अरु पायन में परे हैं।
शुद्ध जल कीनौ औ सिखावनहू दीनो नेकु सन्तन को चीन्हों वेष मात्रहू जे धरे हैं॥
सियाराम दासन को दास हौं मैं भाव यह भयो जाके उर तेई संसृति ते तरे हैं।
रूप कुल यौबन महत्व विद्या मद त्यागि पागे भक्ति मारग में सन्त तेई खरे हैं॥५७॥
ईश कीं रजाय पाय फेरि पुरी काशी आय बैठि वर्ष द्वादश को मंत्र जाप ठान्यं है।
हिये राम ध्यान गुरु वचन प्रमान दिब्य दम्पति दरश को सरस मन मान्यो है॥
छठये बरष शिव आये गुरु रूप धारी जानो हमैं कही रूप नीके पहिचान्यो है।
करिकै दण्डवत करजोरि कही महाप्रभो आप गुरु दोनों एक रूप जिय जान्यो है॥५८॥

यद्यपि अनेक मम भक्त सुख दानी मात पिता सुत मित्र दास भाव में प्रवीन हैं।
तहां तहां बाल ब्याह आखेटक रन राजलीला रसभाव सुख सागर के मीन हैं॥
उनहीं के भाव में मगन ह्वै कै राजै नित मित सुख योग सबहुन हमैं दीन हैं।
अमित प्रियाजू अति हित रासलीला सुख ताके बिन मेरो मन रहत मलीन हैं॥४८॥
देखौ यह विपिन अशोक गत शोक जहां बन उपबन क्रीड़ा शैल बहुतेरे हैं।
लताद्रुम जाल सर बापिका विशाल जहं कूजत अनेक खग आवै चलि नेरे हैं॥
सब ऋतु सोहन मदन मन मोहन मनोज्ञ रास मण्डल के मण्डल घनेरे हैं।
तहां एती गोपिकादि रास में प्रवीना बर नागरी नवीना युत्थ सेवा योग्य तेरे हैं॥४९॥
ऐसे कहि राघव अनंग रंग भरे सिय अंश भुज धरे पागे रास के प्रसंग में।
रमत अशोक बन कबहूँ प्रमोदबन चित्रकूट कामदा विहार सिय संग में॥
मिथिला निकुंज बन कंचन बिराजत हैं सारी सरहज के सुप्रेम की तरंग में।
श्रीप्रमोद महली में मिथिला निकुंज बासिनी को अर्थ दरसायो रस के उमंग में॥५०॥
धन्य चारुशीला चन्द्रकला विमलादि अली जिनकी कृपा ते दिब्य दंपति मिलत हैं।
लौकिक अनीश रुच्छमत के प्रसंगी तिन्हैं त्यागि अनायास रससागर हिलत हैं॥
इनहूँ की दासिन की दासी पद आश्रित जे तेऊ मोह तम तोम रबि ज्यों गिलत हैं।
जुगल अनूप धाम रूप नाम गुन गन मानस अगाध सरकंज ज्यों खिलत हैं॥५१॥

❋ श्री स्वामी हरियानन्दजी का चरित ❋

चरन कमल बन्दौं कृपाल हरियानंद स्वामी।
सर्व सु सीताराम रहसि दशधा अनुगामी॥
बाल्मीक बर शुद्ध सत्व माधुर्य्य रसालय।
दरसी रहसि अनादि पूर्व रसिकन की चालय॥
नित सदाचारमय रसिकता अति अद्भुत गति जानिये।
जानकि बल्लभ कृपा लहि शिष प्रति शिष्य बखानिये॥९॥

टीका-बन्दौं पादपद्म श्रीहरियानन्द स्वामीजू के जिन उरधारी सीताराम की उपासना।
लक्ष्मी संप्रदाय में प्रसिद्ध मंत्र तारक जो पारक है सोई करी शिष्यन को सासना॥
साखी विश्वनाथ बसै काशी अविनाशी सोई मानै नहिं हटी जन मिटै कैसे बासना।
रामायन माधुरी बताई मन आई नहिं रोपै पच्छ चतुर्भुज आनै उर त्रासना॥५२॥
कोई बृद्ध आरज महान तिन रामायन शत आठ पाठ को प्रयोग ठहरायो है।
शतबार आवृति के भीतर ही पेखि रूप द्विभुज धनुर्द्धर को हिये सुख पायो है॥

दोनो शीश नाय बर पाय गये स्वामीजू पै भयो मन भायो सुनि नैन जल छायो है।
माधुर्य्य रहस्य को स्वरूप अति गोप्य जानि राख्यो हिये गोय भेद काहू न जनायो है॥५३॥

❋ श्री स्वामी राघवानन्दजी का जीवन चरित ❋

रसिक राघवानन्द बसे काशी अस्थाना।
गुरु रूप शिव लये दये रसिकाई ध्याना॥
काल करालहि जीति शिष्य किय रामानन्दा।
प्रगटी भक्ति अनादि अवध गोपुर स्वच्छन्दा॥
जो आचारज को रूप धरि जगत उधारण जतन किय।
महिमा महा प्रसाद की प्रगटि रसिक जन सुक्ख दिय॥१०॥

श्रीराघवानंदजी भये हैं मुख्य स्वामि शिष्य जिनके हिये में मानसी सुरीति छाई है।
समै पाई बूझी प्रभु लोक में प्रचार करौ कही भली बात ईस आज्ञा नहिं पाई है॥
तुमहीं बिस्तार करौ सीताराम ध्यान धरौ अवध स्वरूप लखि आवो सुखदाई है।
आज्ञा पाइ आये घूमि तीरथ सकल न्हाये कोसला निहारि सर्बोपर मन भाई है॥५४॥
काशीपुरी राममय बिलोकि बसे कोई दिन जोई मरै ताहि शिव परम्पद देत हैं।
अहो राम मंत्र को प्रभाव परतच्छ इहां तऊ मूढ़ जीव नहिं राम नाम लेत हैं॥
शंका कछु भई नई स्वामी बिनु मेटै कौन चले जहां रहैं गुरु बैष्णव समेत हैं।
तहां जाय सुनी गये स्वामीजू परम धाम भयो उर खेद बड़ो यामें कहा हेत हैं॥५५॥
गादी पै अपर गुरु भाई को बैठे बिलोकि करिकै प्रणाम मिले परस्पर भाइ कै।
माता तहं आई ताके पद शिरनाय पाई सुखद असीस लह्यो आनंद अघाइ कै॥
मन्दिर में तीरथ लै पंगति में आये जब सदाचार रीति ते बैठारें बिलगाय कै।
देखि अभिमान उर योग बल आन कही करौ शुद्ध बापी जल मधुर बनाई कै॥५६॥
देखिकै प्रभाव ते तौ बहुत लजाने करजोरि सनमाने अरु पायन में परे हैं।
शुद्ध जल कीनौ औ सिखावनहू दीनो नेकु सन्तन को चीन्हों वेष मात्रहू जे धरे हैं॥
सियाराम दासन को दास हौं मैं भाव यह भयो जाके उर तेई संसृति ते तरे हैं।
रूप कुल यौबन महत्व विद्या मद त्यागि पागे भक्ति मारग में सन्त तेई खरे हैं॥५७॥
ईश की रजाय पाय फेरि पुरी काशी आय बैठि वर्ष द्वादश को मंत्र जाप ठान्यो है।
हिये राम ध्यान गुरु वचन प्रमान दिब्य दम्पति दरश को सरस मन मान्यो है॥
छठये बरष शिव आये गुरु रूप धारी जानो हमैं कही रूप नीके पहिचान्यो है।
करिकै दण्डवत करजोरि कही महाप्रभो आप गुरु दोनों एक रूप जिय जान्यो है॥५८॥

अजर अमर होहु करै सियावर छोहु रिद्धि सिद्धि बांछित अनेक तुम पाइ हौ।
काशी में निवास करि राम रूप हिये धरि माया फन्दहूँ ते बचि और का बचाइ हौ॥
सियाराम भक्ति रस रसिक की संप्रदाय शिष्य प्रति शिष्य द्वारा लोक में बढ़ाइ हौ।
हनुमन्त संग गन्धमादन प्रसंग रास रंग रस पाय फेरि लोक में न आइ हौ ॥५६॥
पाइकै असीस चरनन नाइ शीश मंत्र नेम करि पूरो बैठे गंगा तट जाय कै।
शङ्कर मतानु गामी सिद्ध रामदत्त नामी चले जात बोलि तिन्है कही यों सुनाय कै॥
काल ठिग आयो तन चाहौ जो बचायो जाय गुरुन ते पूछौ सो उपाय सतिभाय कै।
गुरु को जनायो सत्य तिनहू बतायो जावो वेई हैं सहाय जिन दियो है लषाय कै ॥६०॥
गुरु आज्ञा पाय फेरि इनहीं के पास आये महाराज आपुही बचाय हमैं लीजिये।
करुणा निधान निज दृष्टि पथ आन करि आपनी समान कह्यो भक्ति रस भीजिये॥
पञ्च संस्कार त्रै अकार तत्वत्रय विचार रसिक अनन्य रीति माँहि चित्त दीजिये।
कालहू ते बांचे सियाराम रंग राचे रामानन्द तुम सांचे राम नामामृत पीजिये ॥६१॥

❋ श्रीस्वामी रामानन्दजी का जीवन चरित ❋

टीका-रामानन्द स्वामी से भये न कोई और होने जिनको विदित तीनौ लोक में प्रताप हैं।
काम क्रोध लोभ मोह मत्सरादि सुंडादंड मर्दन को केशरी ज्यों राजै करिदाप हैं॥
विमुख पाखंडी आन धर्मी तम तोम रवि अभिमान सागर को कुंभज से आप हैं।
रामभक्ति शालि क्षेत्र पोषिबे को बारिद से आश्रित प्रपन्नन के एक माई बाप हैं ॥६२॥
टीका-श्रीअनंतानंद आदि द्वादश आदित्य सम शिष्य भे प्रधान लोक विदित महानता।
पंचकाल अष्टकाल रीति में प्रवीन सबै पादोदक पान औ प्रसाद की प्रधानता॥
एक-एक शिष्य संप्रदाय के प्रवृत्तिकारी पर उपकारी राम पद्धति प्रमानता॥
जग नाते त्यागि ईश नाते अंगीकार करै त्यागि जाति कुलबर्ण आश्रम गुमानता ॥६३॥
प्रथम ही शठकोप आदि पारषद आए कलि की अनीति देखि मौन वृत्ति लये हैं।
रामानुज स्वामिहु प्रतिज्ञा करि सदाचार बैष्णव रहस्य को प्रचार करि गये हैं॥
बीचपाय सियाराम रहस्य उपासना की मंद रीति पेखि सदाचार नए नए हैं।
तबही कृपाल निज भक्तिके दृढ़ाइबे को रामचंद्र आपु स्वामी रामानंद भए हैं ॥६४॥

❋ श्री स्वामी अनन्तानन्दजी का जीवन चरित ❋

मूल—द्वादस सिष्य प्रधान एकादश चतुर प्रधानी।
बड़े अनंतानंद कंद भृङ्गार लखानी॥

रसिक समाधी प्रबल कृपा उर दाह लहे हैं।
जनकलली के कृपा रास रस पूरि रहे हैं॥
आंसू चलत समाधि में अद्भुत गति बिरही लहे।
शिष्य किये बहु विरति रति तिनके गुन गन को कहे ॥११॥

रामानंदस्वामीजू के शिष्य श्रीअनंतानंद शीतल सुचन्दन से भक्तन अनन्दकर।
संतन के मानद परानंद मगन मन मानसी स्वरूप छबि सरसी मरालबर॥
जनकलली की कृपापात्र चारुशीला अली रूप में अभिन्न भुंजै रंगभूमि लीला पर।
ऊपर समाधि उर अमित अगाध नैन अंसुवा श्रवत उमंगत मानो सुधासर ॥६५॥
श्रीअनंतानंदजू की अद्भुत रहस्य पेखि गादी पै बैठाय साधु सेवा में लगाये हैं।
रसिकन रीति सियानाथ पदप्रीति शिष आशिष पुनीत दैकै बन को सिधाए हैं॥
इनहूँ के शिष्य सब उत्तम समर्थ भये जिनके सुयश नाभास्वामी जू ने गाए हैं।
भावना रहस्य सांख्ययोग भक्तियोग भेद एक कृष्णदासस्वामीजू ने भले पाये हैं ॥६६॥

❋ श्रीकृष्णदास पयअहारीजी का जीवन चरित ❋

मूल—कृपा अनंतानंद रसिक पूरन पय अहारी।
कृष्णदास रस रीति उपासक सिय ब्रतधारी॥
पुष्कर छाया भजन भूमि प्रगटी सिय प्यारी।
पूर्व सूचिका धरी कथा प्रिय लेहु सुधारी॥
जिमि उलूक अरु काग रति नित्य रास रस रूप गति।
आचरज भृंगार पथ शिष्य अग्र से विमल मति ॥१२॥

टीका-श्रीअनंतानंदजू के शिष्य कृष्णदास भये पाय दृढ़ योग पय अहार व्रत लयो है।
तीरथ पुनीत न्हाये फेरि स्वामी पास आये गये परधाम सुनि शोक अति भयो है॥
धरि बड़ धीर उर राखि रघुबीर कियो उत्तम महोत्सव सुख संतन को दयो है।
आये स्वामीजू के बहु शिष्यन प्रतोषि तिन्हैं पुष्कर में जाइकै सुनेम दृढ़ गह्यो है ॥६७॥
तारक जुगुल मंत्रराज जप ठान्यो व्रत द्वादश जुगुल वर्ष हर्ष उर छाय कै।
छठये बरस दिव्य दंपति दरस पाय उठि हरषाय दंडवत कीनी भाय कै॥
धरो सीस कर मांगु अभिमत बर सुनि यांच्यौ भक्ति बर नाश रहित बनाय कै॥
एवमस्तु कहि दीर्घ आयुष असीस दई रिद्धि सिद्धि योग छेम आनंद अघाय कै ॥६८॥
सिद्धि योग भये गालवाश्रम को गये तहाँ देखी रम्यताई गिरिकंदरा विश्राम की।
झरना झरत मन हरत त्रिविध वायु गुल्म तरु लता छबि छाई अभिराम की॥

करि असनान बैठि कीनो इष्ट ध्यान अग्र होनी गति जानि सुधि आई सुखधाम की।
भूपति दिवान विद्याधर बुद्धिवान पाई दरसन भूप सों जनाई जित काम की ॥६९॥
राजगुरु से बराने सुनि एक सिद्ध आये देखि घबराये तेज कहीं कहा कीजिये।
मिलि दश पांच गये कही ह्यांते उठि जावो जायँगे अवश्य आजु रैन रहै दीजिये॥
जंत्र मंत्र मूठि कालकृत्या लै चलाई सब उलटि पठाई निज कियो फल लीजिये।
तब खिसियाय सिला ऊपर गिराई स्वामी अधर झुलाई कह्यो इन्हैं न पतीजिये ॥७०॥
सिंह बनि आये तिन्हैं रासभ बनाये मृग अजिन बिछाये बैठे मुद्रिका मँगाय कै।
भूप भोर गये मुद्रा बिन गुरु लहे अति मन पछिताय पूछी कहौ समुझाय कै॥
मौन गुरु रहे विद्याधर हाल कहे चले दरसन हेत ससमाज सुखछाय कै।
दूरही ते दंडवत करि पाहि पाहि कही आए शरणागत को लीजिये बचाय कै ॥७१॥
सुनो पृथिराज कुशबंश में विदित जन्म पाय सीतानाथ भजौ क्यों न मन लाय कै।
स्वामी हम संसृति भुलाने नहिं जानै कैसो बैष्णव धरम प्रभु कहौ समुझाय कै॥
सुनिकै प्रवृत्ति को निवृत्ति को स्वरूप कह्यो नाम को महत्व सुनि दियो शीस नाय कै।
द्वादश तिलक माला छाप नाम मंत्र ध्यान पायो सुख छायो भयो अभय बजाय कै ॥७२॥
भूपति बिनय कीनी इनहूं पै कृपा करौ सुनिकै दयाल तिन्हैं रूप निज दयो है।
पायन में परे आप सेबरा के समुदाय कृपा दृष्टि हेरौ बड़ो अपराध भयो है॥
कीनो बड़ो काम और ठौर करौ धाम इहाँ बसे सीताराम अभिराम यश छयो है।
पाँच बोझ लकरी को डारी इत जावो सियाराम गुन गावो यह दंड नित नयो है ॥७३॥
योगिन की इष्ट देवी शिष्य भई आय कही बिनय सुनाय दासी हमहूं को कीजिये।
ईशन के ईश सियानाथ रघुनाथ पद पंकज संबंध दया दृष्टि हेरि दीजिये॥
करुणा निधान बोले भई तुम रामदासी दुष्टन को संग छाँड़ि संत संग लीजिये।
रहौ अंतरिच्छ में अदृश्य कभूं दृश्य रूप हित उपदेश सियाराम भक्ति भीजिये ॥७४॥
भूपति को आज्ञा भई करौ नित साधु सेवा संत चरणामृत प्रसादी लेवो नेम सों।
कथा कीरतन श्रवनादि हरि भक्ति अंग अंगन में धारौ नाम सुमिरन प्रेम सों॥
आय गुफा बैठिकै सहजही संभार्यो रूप दंपति सनेह पगे जैसे रत्न हेम सों।
यथा चित्रसेन को भुसुंडि को न साव कास तथा अष्टयाम सेवा पागे योग छेम सों ॥७५॥
कोई दिन बीते द्विज कुल अवतंस बाल कील और अग्रस्वामी पास दोउ आए हैं।
देखि हिये भाव भागवत धर्म चाव किये शिष्य संसकार साधु सेवा में लगाए हैं॥
जानि सब लायक महंत किये कीलजी को अग्रजी को भावना रहस्य में छकाये हैं।
पाखंड मिटाय कुलराज को बढ़ाय रामदूत संग पाय गंधमादन सिधाये हैं ॥७६॥

✽ श्रीकीलस्वामीजी की जीवनी ✽

मूल—कील कील सिरदई नृपति तबहूं नहिं जागे।
प्रबल समाधी रसिक राम सिय छवि अनुरागे॥
गुप्त केलि रस रीति प्रीति ऐश्वर्य छिपाई।
पंच शिष्य प्रति शिष्य रास रस मानस भाई॥
दई कृपा उलहीलता मधुराचारज मधुर रस।
अग्र स्वामि के तुल्यता प्रियता रसिकाई स्ववस ॥१३॥

टीका-कीलस्वामी योग बल अचल समाधि थल काल दन्त कील मिले मानसी समाध में॥
अमल कमल दल सहस मंझार रास मंडल विहार पगे माधुरी अगाध में।
सन्त हरि सेवा अग्र स्वामि करते प्रवर निरखि निशोच रहै को परै उपाध में॥
बूझेहूँ न करै रस उज्जल प्रचार कभूं सत्य दरसाय आप रहै सूधे साध में ॥७७॥
एक समै सहज सुभाय मधुपुरी आए यमुना सुतीर न्हाइ बैठे शुचितीर में॥
श्यामल स्वरूप रघुनंदन को हिये आयो अचल समाधि लागी संतन की भीर में।
देश दुनीपति पाय साह सुनि कौतुक ज्यों पेषन को आयो नहिं जानै परपीर में॥
कील शिरदई कछू बेदना न भई रही अचल समाधि जैसी लागी रघुबीर में ॥७८॥
कीलजी के शिष्य लघु कृष्णदास साधु सेवी तिनके सुशिष्य विष्णुदास भक्ति खानी है।
तिनके नारायण मुनींद्ररसिकेंद्र जिन रघुपति रहस्य प्रदीपिका बखानी है॥
हृदैं देव शिष्य मधुरारज विख्यात जग नाम राम प्रयत्न दुतीय सुख दानी है।
रसिक शिरोमणि पैहारीजू के कृपा पात्र कील रसिकाई जिन जानी तिन जानी है ॥७९॥

✽ श्री अग्रस्वामीजी का जीवन चरित ✽

मूल—रसबोध विपुल आनंदघन अग्र स्वामि बानी विशद।
अक्षर पद अनुप्रास मधुरता बालमीक सम॥
आशय गूढ़ उपाय प्राप्ति रसिकन की संगम।
रैवासे जानकी वल्लभी रहसि उपासी॥
ललित रसाश्रय रंग महल कल कुंज खवासी।
आचारज रस रासपथ रसिक बर्ज रसिकन सुखद॥
रस बोध विपुल आनंदघन अग्र स्वामी बानी विशद ॥१४॥
अग्र स्वामि श्रीअग्र सहचरी जनकलली की।
पुष्प बाटिका मिलन हेतु प्रिय भांति भली की॥

चन्द्रकला प्रिय नाम श्याम सिय बस करि राखी।
प्रगटि स्वामि पद लही ध्यान रस मन मन चाखी॥
ग्रंथकार शृङ्गार रस सागर मंजरि ध्यानहीं।
भेदी अनभेदी पढ़ै रसिक रास पथ जानहीं॥१५॥

टीका-बन्दौं पद कमल अमल अग्रस्वामीजू के आचारज रसिक शिरोमणि महान हैं।
रस बोध विपुल आनन्द घन शील दया छमा तोष धन जन मानद अमान हैं॥
भेदि रुद्र ग्यान महा माधुर्य प्रधान जिन कीन्हों अग्रसागर सो विदित जहान हैं।
लीनो मथि सार ध्यान मंजरी शृङ्गार सबै भेदी अनभेदी पढ़ै जानत सज्ञान हैं॥८०॥
पुष्प बाटिका में दोऊ गये दल फूल लेन तहां अग्र गामिनी ह्वै लाल को बताये हैं।
महल बिहारिणी बिहार अग्र सहचरी चन्द्रकला अली अग्रअली सों जनाये हैं॥
षट ऋतु रास मास द्वादश प्रकाश तहां भाव को विकास करि दम्पति रिझाये हैं।
केलि कुञ्ज बासिनी मनोज रति कासिनी के प्रथम समागम के पद स्वच्छ गाये हैं॥८१॥
भक्ति भेद बाटिका के भूषन बसन्त ऐसे मोह सर सोषिबे को ग्रीषम के भानु हैं।
रसिक सु शालि पोषिबे को बरषा के सम पाप ताप मेटिबे को शरद निदान हैं॥
कर्म कंज बन जारिबे को हिम जामिनी ज्यों कलि दंश त्रासन को शिशिर समान हैं॥
दम्पति विलास रस सागर बढ़ाइबे को अग्रस्वामी सुधाकर सरिस न आन हैं॥८२॥
सुंदर बदन शोभा सदन ललाट पर उर्द्ध पुण्ड्र द्वादश तिलक अंग भ्राजहीं।
लम्बित भुजा बिशाल कंठ में जुगुल माल धनुबान मुद्रा भुज मूल पै विराजहीं॥
पींत उपवीत कटि बसन कोपीन शुभ्र बैठे सुख आसन विराग योग साजहीं।
मानसी क्रिया सु सारि दम्पति सेवा सुधारि राजत जिन्हैं निहारि जीव दुःख भाजहीं॥८३॥
कोई देश काल जानि कीलजू की आज्ञा मानि शिष्यन समेत श्रीरैवासे स्वामी आये हैं।
तहां रमनीय जल भूमि द्रुमलता देखि मन्दिर बनाय लली लाल पधराये हैं॥
विनय बिवेक शुभशील दया नेह गेह नाभाजी को देखि सत सेवा में लगाये हैं।
आपु सो कियो उपाय काल मृषा न बिताय अष्टयाम सेवा की रहस्य मन लाये हैं॥८४॥
कहूँ सैनकुंज कहूँ मज्जन निकुंज कहूँ भूषन बसन के निकुंज सँवराये हैं।
कहूँ भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य पान भोजन के लली लाल हेत पाक सदन बनाये हैं॥
कहूँ महारास योग मंडली अनेक रचि बृन्द बृन्द आलिन के भेद बहु गाये हैं।
तहां निज रूप सों सदेह गये आये नहीं ताके भेद एक नाभास्वामीजू ने पाये हैं॥८५॥

* श्री नाभास्वामीजी का जीवन चरित *

मूल—नाभा नाभी छबि सरसी शुचि भाव कंज हैं।
प्रफुलित लखैं सुजान रसिक जन भ्रमर मंजु हैं॥
भये विलक्षन रसिक संत सेवा के मुखिया।
रसिकराज गुरु कृपा लली पद पेषे सुखिया॥
रली भली नाभा अली अैसी नहिं भइ कोउ अलि।
अष्ट काल सेवा रची ग्रंथ प्रेम पथ की गली॥१६॥

टीका-बंदौ नाभाजू के पद कंज अति मंजु जिन्हैं सुमिरत छूटै उर ग्रंथि दुष्ट काम की।
स्वामी नाभि सर शुचि भाव कंज बास अली जानिकै सुजान दीनी सेवा निज ठाम की॥
खल मद गंजन को संत मन रंजन को रचिकै बनाई भक्तमाला प्यारी श्याम की।
रसिकन रीति संप्रदाय के बढ़ायबे को अष्टयाम सेवा लै बताई सियराम की॥८६॥
स्वामी को प्रभाव सुनि सन्तन को वृन्द आवै देखि सुख पावै हरि सन्त सेवा रीति की।
सुनै हरि कथा मध्य माधुर्य्य रहस्य यथा पाय शुचि भाव तथा लहत प्रतीति को॥
भाव को निदान सन्त चर्णामृत पान औ प्रसाद अवशेष लेत देत लहैं प्रीति को।
युगुल उपासना की रहसि जो चाहै ध्यानमंजरी बना है लहैं रसिकन नीति को॥८७॥
विमुख बनिक एक धनी अभिमानी ताने लोक निन्दा ठानी उर आवै न प्रतीति है।
सेरक बतासा लैकै स्वामीजू के पास आयो बोल्यो शिरनाय बांटि दीजै जस नीति है॥
स्वामी रुख पाय ओ लीं नाय बरतायो सन्त सबहुन पायो ताहू दियो करि प्रीति है।
अचरज पाय परयो पायन में आय प्रभु लीजिये बचाय उर भई अति भीति है॥८८॥
देखि नम्रताई भक्ति रीति समुझाई स्वामी शिष्य गति पाई जो सदैव सुखदाई है।
सन्त सेवकाई हरि सेवा तें अधिक गाई लोक परलोकहूँ में याही ते भलाई है॥
भयो हिये चैन खुले अन्तर के नैन बसे श्याम उर ऐन जग बासना हिराई है।
ऐसेही विमुख जीव सन्मुख अनेक भये महिमा अनन्त यथा मति कछु गाई है॥८९॥

* श्रीस्वामी तन तुलसीदासजी की जीवनी *

मूल—श्री जंगी गुरु कृपा ते तन तुलसी जन विमल मति।
सीताराम रहस्य कथा संहिता प्रीति बर॥
सन्त सभा मधि श्रवन कथा सु अनन्य रीति पर।
भजन मानसी मत्त सन्त सेवा शुचि नीके॥

जिनके देव मुरारि प्रतापी जानत जी के।
जूथपाल द्वारेश बर मूड़तही सीतल सुगति ॥
श्रीजंगी गुरुकृपा ते तन तुलसी जन विमल मति ॥१७॥

टीका-अग्र स्वामि शिष्य भये जंगी जू विमल मति राम रस रंगी सतसंगी शुचि भाव के।
तिनके विनीत तन तुलसी पुनीत जिन गाये बहु ग्रंथ रघुनन्दन प्रभाव के॥
रामायन श्रवन निरत मन रैनि दिन गदगदे बैन द्रवै नैन भरे भाव के।
सन्त चरणामृत प्रसाद में अनन्त प्रीति जीते जग ख्याल जेते काल अनुभाव के ॥६०॥

तन तुलसी के शिष्य भये श्री मुरारि देव भजन प्रभाव द्वारा बात ख्यात लोक में।
शिष्य प्रति शिष्य जिन बिरच्यो बिचार माल जाके पढ़े सुने ते परै न जग शोक में॥
इष्ट सेवा काय मन बचन ते करै आपु तारक निरन्तर जपत स्वच्छ ओक में।
आरति हरन सरनागत अभै करन एकई लखाने सब सन्तन के थोक में ॥६१॥

* श्रीस्वामी चतुर्भुजदासजी का जीवन चरित *

मूल—तन तुलसी गुरु कृपा ते चतुर्भुजा परस्यो अटल।
पंगति सन्त प्रधान भक्ति पथ प्रेम लखायो॥
निज कर परिचर्य्या अनूप निष्ठा मन भायो।
तिलक युगुल रेखा ललाट सोहत अति नीके॥
बिलग्यो द्वारा सन्त सुखद सेवक बहु जीके।
सुभट एक ते एक बर परम धर्म पोषक अमल॥
तन तुलसी गुरु कृपा ते चतुर्भुजा परस्यो अटल ॥१८॥

टीका-बड़े भक्तमान चतुर्भुजजी महान तन तुलसी कृपाल पदकञ्ज नित ध्यावहीं।
षोडसो पचार बहु भोग के प्रकार निज कर ते संवारि लली लाल को रिझावहीं॥
कथा कीरतन संध्या आरती में नेम करि हरे हरे जैति भनैं नाचैं अरु गावहीं।
सन्त चरणामृत प्रसाद में अनन्त प्रीति रीति उर आवै कहते न बनि आवहीं ॥६२॥

सांवरे स्वरूप रंग राते परा दशा माते द्वादश तिलक किये श्री की सुधि ना रही।
आई सुधि शोच भयो तब हंसि बोले श्याम ऐसेही तिलक राखौ आज्ञा दृढ़ कै गही॥
प्रेम में विदेह भये पंगति में थार लिये कटि पट छूट्यो तब भुजा और द्वै लही।
इष्ट गुरु ध्यान रामपुर में विराजमान शिष्य प्रति शिष्य द्वारा कीरति सु छै रही ॥६३॥

* श्रीस्वामी मलूकदासजी का जीवन चरित *

मूल—गुरुदेव मुरारि कृपा लह्यो जन मलूक उत्तम कथा।
बारेहि ते अनुराग कथा सुनि छबि उर आने॥
श्याम बरण धनु धरण छैल नैना मंडराने।
निःनिकंच ग्रह मातु हेतु सेवा अनुरागी॥
कढ़ी हेतु हिय बढ़ी लखी मोटरि बड़भागी।
बिरति लई गुरु के शरण आवत ही छूटी व्यथा॥
गुरुदेव मुरारि कृपा लह्यो जन मलूक उत्तम कथा ॥१९॥

टीका-देव श्रीमुरारि कृपा भाजन मलूक भये उत्तम पवित्र कथा तिनकी विस्तारी है।
बारेही ते कीनो अनुराग रघुनन्दन में शिशुता के खेल रामलीला अनुहारी है॥
श्यामल बरण धनु धरण बिशाल नैन छैल छबि बांकी हग टरत न टारी है।
जानकी जीवन रघुनाथ रघुनन्दन हे राघो प्राण प्यारे यह बानी उरधारी है ॥६४॥

दिन दिन बढ्यो चित औरै रंग चढ्यो घरहू ते मन कढ्यो कहूँ दूर देश जाइये।
बैठि कै एकान्त भजि लीजै सियकांत जग झूठो बिरतांत वृथा आयु क्यों गवांइये॥
तिया तजी देह तऊ माता के सनेह बश रहे फिरि गेह मन कैसे विरमाइये।
फेरी करि आवै तामें नफा कछु पाइये तौ लाय सब सामा कढ़ी भोग को लगाइये ॥६५॥

चले जात तरु छाया शीतल निहारि तहाँ मोटरी उतारि बैठे व्यापी क्षुधा तन में।
सोवत निहारि भक्त रूप को सुधारि हरि गठरी उठाय घर लाये एक छन में॥
माय को बोलाय कढ़ी भात रोटी बनवाय भोग को लगाय बैठे आपने सदन में।
उतै उठि पेखि पछिताये घर आये सब माता को जनाये अति शोच भयो मन में ॥६६॥

माता कह्यो अबहीं तू आयो दाम लायो कढ़ी भोग को लगाय रखवाय कछु गयो है।
जायकै निहारी कहा कियो जु बिहारी अहो निपट अनारी दरशन हू न भयो है॥
लियो सो प्रसाद उर भयो अहलाद मिटे सकल विषाद सु विराग उर छयो है।
तजि देह नेह कियो रूप सों सनेह नैन बरषत मेह ज्यों अनूप रंग रयो है ॥६७॥

छोड़ि जग आश गये गुरुदेव पास खास सेवा सुख रासि पाय संनिधि विराजे हैं।
हरि गुरु सन्त में अभेद भाव लाय उर आनंद बढ़ाय सब सेवा विधि साजे हैं॥
सन्त भुक्त शेष में आवेष नित नेम देखि साधु हरषाने औ असाधु गन लाजे हैं।
आवत शरण केते तुरत सनाथ भये फिरत अनाथ केते भरे काम काजे हैं ॥६८॥

जेतो धन आवै तेतो सन्तन पवावै नित सुनि पातसाह मोती थार पठवायो है।
करत विचार श्रीमुरारि सन्त सभा मध्य भोग को उपाय तहाँ काहु न बतायो है॥
बोले श्रीमलूक मोती जारिकै बनावो चूना पान मंगवाय बीरा भोग को लगायो है।
सुनि सकुचाने सब अचरज माने हिये अति हरषाने दूनो नेम बंधवायो है॥९९॥
जगन्नाथ धाम दूरि मारग बिलोकि योग बल प्राण रोकि गंगधार मिलि चले हैं।
तीनि ठाउं देह त्याग लोक में जनाय पुरी मध्य जाय उत्तम दरस सुख रले हैं॥
आठौयाम मुखचन्द छवि में लोभाय पाय भुक्त अवशेष अन्त दोष दलमले हैं।
अजहूँ लौं सिंधु तीर मिलत मलूक टूक सन्त के प्रसाद ते अनन्त दोष दले हैं॥१००॥

✻ श्रीस्वामी अनभीनन्दजी का जीवन चरित ✻

मूल—भावानंद पद परसि कै अनभीनंद कथा सुखद।
परम धर्म प्रति पाद्य हितू शिव सैन्य विनासी॥
एक एक बर सुभट शिष्य सन्तन सुख रासी।
दृढ़ विश्वास उदार उपासक सीतावर के॥
पर उत्कृष्ट सुबोध चरन बन्दित नर बर के।
धीर बीर मति थीर सुचि प्रबल प्रतापी यश विसद॥
भावानन्द पद परसि कै अनभीनंद कथा सुखद॥२०॥

टीका-भावानन्द जी से भावना की रीति पाइ भये अभय अनंद अनुभव अधिकायो है।
अनभी अनन्द मन मानसी मगन रहैं सदा सतसंग राम भजन सोहायो है॥
ताही समै प्रबल संन्यासिन कियो विरोध गुरु अपराध देखि इन्हैं न सोहायो है।
राघव ज्यों बिरचि उपाय शत्रु नाश कियो तब ते अखाड़ा द्वारा भेद बिलगायो है॥१०१॥

✻ श्रीस्वामी केवलकूबाजी का जीवन चरित ✻

मूल—केवलकूबा शिष्य बर एक एक दृढ़ भजन रति।
द्वादश बर कल्यान छाप बाई तुलसा हैं॥
आधी ये जगन्नाथदास जाड़ा हुलसा हैं।
प्रेमहिं के पय सरस अहारी पय हारी हैं॥
रस उज्ज्वल अधिकार दरश दिय सिय प्यारी हैं।
प्रेम पुष्ट बर प्रेम पठा खेम दमोदर सुजन मति।
केवल कूबा शिष्य बर एक एक दृढ़ भजन रति॥२१॥

टीका-कूबाजी के शिष्य एक एक ते अधिक सबै द्वादश कल्यान नाम महा मोद भरे हैं।
भण्डारी कल्यान अधिकारी कल्यान कोई पुजारी कल्यान बांके आदि नाम धरे हैं॥
आदि शिष्य बाईतुलसा सु नाम गाई पांच औरो शिष्य सांचे स्वामी भाव अनुसरे हैं।
जगन्नाथदास जाड़ा प्रेम पठा खेमदास दामोदर प्रेम पय अहारी जग तरे हैं॥१०२॥

✻ श्रीस्वामी प्रेमपयअहारीजी का जीवन चरित ✻

टीका-प्रेम पय अहारी बर सन्त व्रतधारी नाभाजी के अनुचारी प्रेम परै कैसे गायो है।
होरी के समाज में अनूप छबि हेरी मन बिबस भये पै जाय स्वामी को जनायो है॥
जपत एकान्त परा प्रेम में नितान्त परि पूरन बिलोकि प्यारी दरश देखायो है।
कूवाजी ने जानी नाभाजू के मनमानी हरि सन्त गुरु सेवा को प्रत्यक्ष फल पायो है॥१०३॥

सुरसुरानंदजी के शिष्य श्रीगोपालदास बड़े अवधूत घुघुरारे शिर बार हैं।
तिन के सु शिष्य रघुनाथदासजी महान राम रास ध्यानी जिन जान्यो रूप सार हैं॥
तिनके विमल नरहरिदास रस रास जिनके विदित कूवा केबल अधार हैं।
कूवाजी के छोटे गुरु भाई श्रीगोसाईं जिन रामायन गाथा गाई महिमा अपार हैं॥१०४॥

✻ श्रीस्वामी सूरकिशोरजी का जीवन चरित ✻

मूल—मणि भूमि अनादि उपास्य थल मिथिला प्रगट कियो महत।
भाविक सूर किशोर लली लालन मन भाये॥
अटल भक्ति अविरल सु योग रस रीति लखाये।
रघुनन्दन या मात लली पुत्री भई जाके॥
कील स्वामि के पौत्र शिष्य का कहिये ताके।
काल कठिन मानस विमल कलि उपमा कवि को लहत।
मणि भूमि अनादि उपास्य थल मिथिला प्रगट कियो महत॥

टीका-सूर किशोर सारिखे न भाविक प्रवर दूजे जिनकी सियाजू आप कन्या जाय भई है।
बातसल्य भाव भरे बैठत चलत खरे छके परा माँहि लोक रीति तजि दई है॥
रसिक उपासकन मिलै गुन गावै लली लाल को रिझावै दरशावै लीला नई है।
सदाचार रीति प्रीति पूरन उमंग भरे कीरति पुनीत लोक माँहि बर छई है॥१०५॥
अवधबिहारी उर धारी चित्रकूट आये नैन जल छाये जब देखी छवि धाम की।
कामद अवनि सियाराम पाद पद्म चिन्ह अङ्कित बिलोकि सुधि आई अभिराम की॥

ठौर ठौर रमत जनकपुरी आये लखि भूमि को लुभाये गति भूली और ठाम की।
यही चाह मन कब देखिबे लली बदन शोभा को सदन मन भावत अराम की ॥१०६॥
सीतामढ़ी यज्ञभूमि चिन्ततहीं वृद्ध विप्र पण्डित प्रवर एक आयकै जनायो है।
ह्वै है पूर्ण काम तुम चलौ वाही ठाम रंगभूमि तट जाय बट वृक्ष दरशायो है॥
योग बल अचल समाधि मन लायो जब नैनन प्रतच्छ मिथिला स्वरूप छायो है।
देख्यो सो प्रमान परै मिले हनूमान विप्र रूप धरि मिथिला महातम सुनायो है ॥१०७॥
पेखिकै महत्व धाम तत्व लै प्रतच्छ कियो उत्सव अनेक लली जन्म दिन ठाने हैं।
अवैं जे रंगीन सन्त भाव में प्रवीन तिन्हैं राखै बिरमाय लली लाल सम जाने हैं॥
रह्यो ढिग एक संन्यासी ताको भाव हेरि दीनो सनबंधता ने गुरु तुल्य माने हैं।
सेवा वस योग छेम वाही को समर्पि दियो आपु वातसल्य रस सिंधु में समाने हैं ॥१०८॥
कियो सियाराम को बिवाह उत्तसाह बर भूपति विदेह ज्यों दसा भुलानी देह की।
संपति अनेक रिद्धि सिद्धि दरशानी तहां संतन बखानी महा महिमा सनेह की॥
मंगल कवित्त पद सरस अनेक गाये भये मन भाये लखी छवि नेह गेह की।
कंचन विपिनि कमला नदी के तीर सुमिरत रघुवीर भई वृष्टि सुख मेघ की ॥१०६॥
उठी उत्तकंठा उर अवधि निहारै जहां युगुल विहार भौन लसत सोहावने।
चले सुख पाय आप सरजू पुनीत न्हाय पेखे राज मन्दिर सुदर मन भावने॥
सहज सुभाय छवि देखिकै लली कौ मन अति सकुचाने अब नहीं इत आवने।
लाल बोले रहौ इहां हू के सुख लहौ कही सुख मूल आपके दरश नित पावने ॥११०॥
सरजू नहाय भये पार मिथिला की ओर चले दृग कोरन में वही छवि पागी है।
भूली भूख प्यास तरु तर कियो बास शैन समै लली लाल को निहारि मति जागी है॥
देखि दिव्य भूषन बसन निरदूषन सुता के सुख छाके उर शंका सब त्यागी है।
भोजन पवाये जल प्याये ललीजू ने हठि लाल छवि हेरि जाने बड़े बड़भागी है ॥१११॥
मिथिला में आये निज थल छवि छाये तब बोले रघुनन्दन बचन हरषायकै।
मांगौ बर मागनो न धर्म है हमारो जो पै देत हौ तौ देवौ नित दरश अघायकै॥
चैत नौमी उत्सव नवीन इतहू में होय बाल लीला आदि सबै देखैं भरि भायकै।
एवमस्तु कहि करुणा निधान कियो सोई अजहूँ लौं होत जन्म दिन सुख दायकै ॥११२॥

※ मामा श्रीप्रयागदासजी महाराज का जीवन चरित ※

मूल—भाबिक सूर किशोर के प्रागदास साधक विशद।
प्रिय संबंध उदार सख्य पद निमि बंशी हैं॥

नीम तरे नव खाट बिछी करवा विलसी हैं॥
तीव्र त्याग अनुराग अवधि पनहीं सिरधारी॥
पंचवटी बन कुञ्ज गली भेंटे पिय प्यारी।
बचन भाव युत कहि सरस पहिराई पनही सुखद।
भाबिक सूर किशोर के प्रागदास साधक विशद ॥२३॥

टीका-भाविक शिरोमणि के साधक विमल प्रागदास सुख रास रसिकाई जिन पाई है।
बारेही ते रामलाल पद अनुरागी बड़भागी ने विचार्यो जग नाते दुखदाई है॥
संत मुख बानी रस सानी सुनी मिथिला को चले घर त्यागि जाने वेई सुखदाई है।
तीरथ प्रयाग काशी न्हाय तिरहुत जाय भूमि का मृदुल देखि परारति छाई है ॥११३॥
पुरी को प्रकाश लखि भूलि तन भास पायो कछू अवकास तब स्वामीजू पै आये हैं।
भयो सतसंग भक्ति भाव के प्रसंग सुने देखिकै प्रभाव चरणन शीश नाये हैं॥
भ्राता लघु लली के उदार निवि बंशी हम रामलाल साले प्रिय सख्य सुख छाये हैं।
सेवा सदाचार रस रीति परतीति प्रीति पाय सुख छाय निज मानस छकाये हैं ॥११४॥
नाम संगी नीम तरुतर डेरा किये बहु बाल संग लिये नित्य रमै ग्राम ग्राम में।
पुरी चहुँ ओर निज ईच्छित विलोकि ठौर ठौर श्याम गौर सुधि आवै सब याम में।
जनक लडैती रघुबंसी लाल प्रेम बश गुरु आज्ञा पाय संग आये औध धाम में॥
नगर बजार बर बाटिका विहार नृप नीति रस सार लखि पागे अभिराम में ॥११५॥
भाई नर्म सखा प्रिय सुहृद समाज सब आनंद विलास बैन कहि परि तोखे हैं।
राज सभा बैठक निवास नृप मंदिरादि राघव सुजान संग सब अवलोके हैं॥
पुरी चहुँ ओर बर तीरथ सकल न्हाये सरजू के तीर बर विप्र साधु पोखे हैं।
रहे कछु काल विदा मांगि स्वामी पास आये पूछे ते सुनाये सब समाचार चोखे हैं॥११६॥
गुरु महाराज के चरण रज शीश धरि आयसु पुनीत लै प्रयागराज आये हैं।
श्याम गौर मिलित ललित बेनी पेखि भयो आनंद विशेषि दंडवत करि न्हाये हैं॥
संतन के बहुत समाज देखि गये तहां बेष को निहारि तिन दूरि बिलगाये हैं।
रसिक सजाती बिन मेल नहीं होत यह मन में विचारि खेत भूमि छवि छाये हैं ॥११७॥
शैव मत बादी बकवादी बहु मिले आइ चर्चा में हराय तिन्हैं भाव निज दीनो हैं।
रामायण कथा में श्रवण सुने राज सूनु सानुज सिया समेत गौन बन कीनो हैं॥
बार बार पण्डित सों बूझी तिन कही यहै पनही विना पयादे गये सुनि लीनो हैं।
कोमल कुसुम ते कठोरता कुलिशहू ते राघव स्वभाव पहिचानि उर भीनो हैं ॥११८॥

मिल्यो एक शिष्य ताने भेट कछु करी ताकी पनहीं विचित्र बनवाय शिर धरी है।
चित्रकूट जाय सब थल ढुढ़े धाय दीये काहू न बताय तब लागी अरबरी है॥
ढूढ़त विपिनि पंचबटी तट मिले भले भले जू नृपति लाल लीला कौन करी है॥
पहिराई पायन मृदुल पद दासी संग संग धाम आय बतराय मति हरी है॥११६॥

❋ श्री टोडरमल जी का जीवन चरित ❋

मूल—श्री गोसांई तुलसी कृपा टोडर की पूरी परी।
मीच पुनीत सु छाय दाय कलि की नहिं लागी॥
सती शिरोमणि नारि संत सेवा अनुरागी।
लहि उपाय अति गुप्त गंग तस्मई खवाई॥
जानि परी तब कही नारि अति ही दुखदाई।
सुखदाई दंपति कथा जासु विरह नहिं धीर धरी॥
श्री गोसांई तुलसी कृपा टोडर की पूरी परी॥२४॥

टीका-श्रीगोसांई कृपा पात्र टोडर सु भक्त काशी बासी साधु सेबी सब जानत जहान है।
आवैं बहु संत देश देश ते अनंत तिन्हैं सेवैं तजि अंतर न राखै कछु मान है॥
चरण प्रक्षालि चरणामृत को पान नित गंध पुष्प धूप दीप आरती विधान है।
लावै इच्छा भोजन खवावै ढिग बैठि कथा संत मुख सुनै सुख पावै मिले प्रान है॥१२०॥
श्रीगोसाईंजू सों बर मानस पवित्र सुनो पाई है उपासना की रीति हरखाय कै।
आवो मीत कहि श्रीगोसाईंजू बोलावैं एऊ विश्व गुरु मानि पूजैं आदर बढ़ाय कै॥
कोई काल पाय काम छुट्यो घट्यो धन तऊ संत सेवा ते न हट्यो बिपति सनाय कै।
नारी पतिब्रता पति आज्ञा अनुसार सदा निज कर करै साधु सेवा भरिभाय कै॥१२१॥
उठि परभात ही मुदित गंग न्हाय श्रीगोसांई ढिग जाय घर आवै माथ नाय कै।
स्वामि रुख पाय संत सेवा मनलाय सब करै शुभ उत्सव कृपिणता मिटाय कै॥
एक दिन बूझे ते जनाई सुनि आई दया दीनी सो बताय दुःख मिटै ज्यों बनाय कै।
चतुर्मास व्रत नित मेवा खीरि दीप घृत भागीरथी गंगहिं समर्प्यौं मन लाय कै॥१२२॥
कोई दिन बीते देव धुनी ठौर दयो शत्रु मूल नाश भयो मित्र मिले बहु धाय कै।
करिकै सल्लाह सब भूमि इनहीं को दीनी उपज्यौ अनेक अन्न सरसौं मिलायकै॥
औरो राज ग्रह ते अनेक काम पाये घर बैठे दाम आये पूर्वहू ते अधिकायकै।
अचरज पायो तिया मरम जनायो गुरु कृपा सुख छायो सुनि दियो शीश नायकै॥१२३॥

भरयो घर अन्न धन निरखि निहाल भये फेरि हरि संत सेवा नीके मन लायो है।
हिये रूप श्याम मुख रटै युग नाम कथा सुनै अभिराम बहु काल यों बितायो है॥
एक दिन अवध स्वरूप उर आयो नैन प्रेम जल छायो अति विरह सतायो है।
त्यागि तन महल पधारे तन जारे पर सुनि श्रीगोसांई बड़ो अचरज पायो है॥१२४॥
अहो राम धाम गये टोडर निशोच भये तिया हू सिधारी संग साधु सेवा को करै।
जो शिर उठायो भार कांधेहू न लायो जग जाको यश छायो ऐसी टेक अब को धरै॥
मीत गुन बाग नैन माली नित सींचि हैं सो ऐसे काल बीतिहैं न और उर में परै।
राघव सुजान इतहू ते सुनै कान दै कै गये मीत जहां हमैं लै चलो वही घरै॥१२५॥

❋ श्री मेघा गंगारामजी का जीवन चरित ❋

मूल—कथा युगुल उत्तम सुजन मेघा गंगाराम की।
रामाज्ञा जेहि प्रीति प्रगट जिन पर अति ममता॥
मुखिया साधक श्रवण कथा श्री मुख की समता।
राम चरित मानस प्रगटी मेघा उर धारी।
नेमी प्रेमी छाय आय कहि विरद प्रचारी॥
अवध गली विरही लख्यो धनुष लह्यो सुख धाम की।
कथा युगुल उत्तम सुजन मेघा गंगाराम की।

टीका-गंगाराम जोतिषी पुरान वेद वेदुषी सो पूजै विश्वनाथ नित्य गंगा में अन्हाय कै।
कीनों उर ध्यान शिव प्रगट ह्वै दीनों ज्ञान करो श्रीगोसांईजी को संग मन लाय कै॥
आज्ञा पाय आये स्वामी दरशन पाये सुनि मानस चरित्र डूब्यो मानस बनाय कै।
भक्ति भेद भाव भेद रस भेद जाने परा प्रीति में समाने सुख कौन कहै गाय कै॥१२६॥
रामायण चरित सुनै को सब आवैं तब स्वामी कहें नेमी प्रेमी श्रोता नहिं आये हैं।
आये जब पूछे ते जनायौ निज काज तब कृपा करि राम आज्ञा यतन बताये हैं॥
लीनी सिर धारि प्रभु महिमा बिचारि उर त्यागि कै प्रवृत्ति को निवृत्ति मन लाये हैं।
ऐसे श्रीगोसांईजू के शिष्य तो अनेक राजैं सहित विवेक यश लोकन में छाये हैं॥१२७॥
टीका- मेघाराम भक्त श्रीगोसांईजू के प्रेमी बर मानस के नेमी कथा सुनै मन लायकै।
जेती सुनै कथा तेती कंठ करै तथा मन छूटी सब व्यथा यथा रङ्क धन पायकै॥
दरश त्रिकाल चरणामृत प्रसाद नेम सैन समै सेवत चरण हिय लायकै।
आज्ञा जब पावै पद बन्दि घर आवै तहां बैठिकै एकांत मानसी में रहै छायकै॥१२८॥

शील क्षमा दया गुणवती बर रूपवती भागवती भामिनी सनेहवती गेह में।
संपति अमित सब काल भोग योग तऊ काहू में न रागे पागे राम के सनेह में॥
कोक कला चातुरी समेत रति चाहै तिया आप ज्ञान संयुत बिराग भरे देह में।
भक्ति भेद यद्यपि अनेक समुझाये तऊ मन में न आवै मेघ वृष्टि यथा खेह में॥१२६॥
कछू दिन ढरे कथा कहै नित श्रीगोसाईं घरी एक दिन रहे सावकाश देत हैं।
आपु छन एक उठि गंग की तरंग लखैं माला कर लीने मुख राम नाम लेत हैं॥
वाही समै भक्त बधू सुंदरी निहारि उर छाई छवि दंपति की भये जू अचेत हैं।
न्हाइ कै निहारि इन्हैं बूझि हंसि बोली तिया नीके हम जाने सब संत उर हेत हैं॥१३०॥
आई घर मांझ सांझ लौके सब काज साजि पाइ कै एकांत निज कांत ढिग आई है।
व्यारू करि सैन समै बैठि गुरु ध्यान पगे ताही छिन नागरी ने चरचा चलाई है॥
कैसे अहैं स्वामी जक्तगुरु हम जानैं किमि जाइ देखि आवो सुनि वानी मन भाई है।
कीनों न विचार करि मंजन सिंगार साजि दासी एक साथ लीने स्वामी ढिंग आई है॥१३१
रकम झमक भई ठाढ़ी सो निहारि द्वार गुफा के मनोरथ सफल निज जाने हैं।
रह्यो कैसे जाय उठि दंडवत कीनी वह तिया लाज भीनी अपराध निज माने हैं॥
गहे पांय धाय दासी दीनी है जनाय आई दरशन हेत नीके नाहिन पिछाने हैं।
बोले गुरु ज्ञानी हम इष्ट निज जानी जो पै भक्तराज तिया तऊ भाग अधिकाने हैं॥१३२॥
चली सिर नाय स्वामी आशिष पुनित पाय आई घर लाज भरी नाह ढिग गई है।
कीने दरशन कछु पाई है परीक्षा बोली कछू न परीक्षा स्वामी दृष्टि राममई है॥
कैसे करि जानी बात सकल बखानी सुनि बुद्धि बिलगानी शिव सती जिमि भई है।
करिकै प्रणाम मोह त्यागि गुरु पास आये कथा सुख छाये सु बिराग मति छई है॥१३३॥
स्वामी नहिं जानी बूझे कछु न बखानी दिन तीसरे वृत्तान्त सब दासी ने जनायो है।
हरि माया प्रबल बखानि अनुमानि अग्र होनी पहिचानि उर अति दुःख पायो है॥
भक्त गृह जायकै उपाय रचि धीर दियो मूरति लखाय उर शोच लै मिटायो है।
भक्त पन अचल रहित कलिकाल मल अमल विलोकि उर आनंद बढ़ायो है॥१३४॥
जब ते युगुल भावना की रीति पाई लागी अति सुखदाई मिटी मोह मलिनाई है।
राघव सुजान गुण रूप के निधान हिये भाव पहिचानि भक्त तिया अपनाई है॥
भक्त दुख मोख भायो स्वामी को प्रतोष भयो नयो सुख छयो मेघाराम मन भाई है।
भक्ति बल पाय लली लाल को लडाय भले कोई दिन बीते राम धाम को सिधाई है॥१३५॥
श्रीगोसांईजू के ग्रंथ लोकन में छाये सब संतन ने गाये मन भाये सियाराम के।
संबत षोड़श शत सावन धवल पच्छ सातैं तन त्यागि भये बासी औध धाम के॥

मेघाराम भक्त नहिं जानी पाछे सुनी बानी मति अकुलानी हम भे न काहू काम के।
स्वामी कहां गये तुम देखे कहं अहैं कहां थावर लौं बूझे सब वासी बाम धाम के॥१३६॥
पूछत पूछत श्रीअवध धाम आये देखि नैन जल छाये कहां महल ललाम हैं।
कहां सीतानाथ लीने लषन भरत रिपुदवन कपीश श्रीगोसांई जित काम हैं॥
बैठे राम घाट पै विचारत अधीर भये करत रुदन कहां मिलैं अभिराम हैं।
अहो मति मंद मैं तो पतित अभागी वे तौ बड़े बड़भागी नित्य राजे निज धाम हैं॥१३७॥
सुन्दर विशद रंग गंग के तरंग सम घोड़ा पै चढ़े चारि कुँवर निहारे हैं।
सम बैसवारे नैन सोहैं अनियारे बर भूषन बसन बाम अंश धनु धारे हैं॥
कमर कसी है तरकसी तापै लसी बर असी छवि बसी श्याम गौर नृप बारे हैं।
पाछे हनूमान ध्वजाधारी की विलोकि छवि तिनहूँ के पाछे श्रीगोसाईं प्राण प्यारे हैं॥१३८॥
लीने पहिचानि धाय पांय लपटाने श्रीगोसांईहूँ उठायकै मुदित उर लाये हैं।
राज सुत गये तुम्हैं दरशन भये अब रहौ कोई दिन कहि आपहू सिधाये हैं॥
फिरी असवारी तैसी फेरिहू निहारी छबि महल पधारे नेक बोलिहू न पाये हैं।
घूमि घूमि टेरिकै पुकारे न निहारे तब तन त्यागिबेको मन पन ठहराये हैं॥१३९॥
सरयू नहाय चले सीताकुंड तीर आये तहां बैठि शोभा देखी बिटप लतान की।
भूली भूख प्यास उर विरह विकास एक दरश की आश कहां मिलै राम जानकी॥
इतने में सन्मुख निहारी छवि दंपति की पाई जनु संपति अचल तन प्राण की।
करत प्रणाम जन जानि शीश धर्‍यो पानि मंद मुसकाइ बोले बानी रस खान की॥१४०॥
जैसे प्राण प्यारे श्रीगोसांईजू हमारे तैसे तुमहूँ हमारे तातें काम एक कीजिये।
लेव धनुबान तुम जावो निज थान तहां रामायण गायकै प्रत्यक्ष सुख लीजिये॥
मूरति अदृश्य भई आज्ञा शिर धारि लई चले धरि धीर प्रभु बानी रस भीजिये।
आये फेरि काशी जहां बसैं अबिनाशी शिवहूँ की रुचि भासी रामलीलामृत पीजिये॥१४१॥
धर्‍यो धनुबान तहां थाये हनुमान ऊंचे तानिकै बितान बर बाजे बजवाए हैं।
राम अनुहारि द्विज बालक निहारि तिन्हैं ललित सिंगारिकै सिंहासन बैठाए हैं॥
बाल व्याह बन रन राज लीला कीनी सब संपति लुटाय निज भाग को मनाये हैं।
लोक में प्रचुर रामलीला रस छाय उर आनंद बढ़ाय औध धाम को सिधाये हैं॥१४२॥

* श्री स्वामी विनोदीदासजी का जीवन चरित *

मूल—अग्र स्वामि बर कृपा बिनोदी सिय बिनोद की।
रंग महल बिच कनक भवन मानसी मोद की॥

आज्ञा स्वामी भजन भूमि में भजन फली हैं।
परम अनुग्रह दरश दिये मिथिलेश लली हैं॥
भजन काल में लखि कृपा कहि नाभा प्रति भाइकै।
संमत करि स्वामी सरस गादी दई बुलाइकै॥२३॥

टीका-वन्दौं पद पदुम पराग श्रीविनोदीजी के कीरति विमल जासु संतन में छाई है।
गुरु आज्ञा पाय छाया पुरुष को जाप मंत्र जपि मन लाय ध्यान धारणा दृढ़ाई है॥
परम अनुग्रह प्रकाश उर छायो लली दरशन पायो भक्ति यांची सुखदाई है।
सेवा के समै में स्वामी बात सब जानी उठि नाभा सों बखानी मानी भाग्य अधिकाई है॥१४३
अभिमत पाय आय स्वामी के दरश किये करत प्रणाम आपु नीके उर लाये हैं।
संतन बुलाय निज संमत सुनायो तिन अति सुख पायो ऊंचे गादी पै बैठाये हैं॥
भयो अभिषेक बर बाजने बिबिध बाजे सादर भोजन पूजा सबहुन पाये हैं।
मानसी प्रधान यथा बाह्य के विधान तथा दोनों सम देश श्री बिनोदी दरशाये हैं॥१४४॥

※ श्री स्वामी ध्यानदासजी का जीवन चरित ※

मूल—ध्यान दास अति प्रबल ध्यान गति सरस दरश हैं।
परम गुरू श्री अग्रस्वामि की रीति परस हैं॥
सुख सागर श्रीचरणदास रसिकन के प्रेमी।
बिविध भांति सुख दये सरस दशधा के नेमी॥
किये बहुत उत्सव प्रगट मानस रति शृङ्गार रस।
मनन श्रवन जस रास के जानकि बल्लभ प्रेम बस॥२७॥

टीका-ध्यानदास श्याम गौर ध्यान जब पायो उर मोद सरसायो जग आश सब त्यागी है।
पद नख चन्द्रिका प्रकाश उर छायो जग तिमिर नशायो मति परा रति पागी है॥
जागत सोवत बैठे उठत समान गति जीह जपै नाम नैन नीर झरि लागी है।
मानसी दृढ़ाई अग्रस्वामी गति पाई रसिकन सुखदाई ऐसे कोई बड़भागी है॥१४५॥
छके परा रति नीके जानि मति गति निज चरणानुदास शिष्य निकट बुलायकै।
अष्टयाम सेवा संत सेवा रीति भांति दीनी नीके समुझाय निज गादी पै बैठायकै॥
आप महा माधुरी प्रवाह अवगाह पगे बैठिकै एकांत स्वच्छ गुफा संवरायकै।
एही तन मांहि आली रूप सुख पायो रति रंग सरसायो सो बनत नहीं गायकै॥१४६॥

※ श्रीस्वामी चरणदासजी की जीवन चरित ※

टीका-चरणदास स्वामी गुरु कृपा बल पाय आज्ञा शीश पर लाय संत सेवा अपनाई है।
आप सावधान राम पद्धति विधान सियाराम गुण गान पाटी सबन सिखाई है॥
रामायन श्रवन मनन ध्यान सुमिरन आदि मध्य अंत महा माधुरी लखाई है।
झूलन बिवाह होरी उत्सव लखाय ऐसे सुख सरसाय निज स्वामी गति पाई है॥१४७॥

※ श्रीस्वामी बालअलीजी का जीवन चरित ※

मूल—बाल कृष्ण प्रिय महत नाम पुनि बालअली जू।
सदाचार ते पलटि रसिक मति भई भली जू॥
कृपा प्रगट जेहि अग्रस्वामिजू दीनों सपना।
जनक किशोरी शरण सुखद अपनायो अपना।
अद्भुत रसिक विचित्र मति नेही नेह प्रकाश किये॥
ध्यान मंजरी विस्तरे विपुल ग्रंथ रचि सुख दिये॥२८॥

टीका-वन्दौं नित चरण सरोज बालअलीजू के जिनकी रहस्य रसिकाई बीज मई है।
दम्पति सनेह सरसाने उर मानस ते बानी रस सानी जासु सरयू ज्यों भई है॥
सज्जन पुनीत मन भावना विनीत सोई अवध नगर पाइ कांति सरसई है।
नेह को प्रकाश ध्यान मंजरी बिलास आदि तीर तीर घाटन की शोभा जनु छई है॥१४८॥
प्रथम रसिक संप्रदाय के विवेक हेत वेद औ पुराण तंत्र शास्त्र लै बिचारे हैं।
सर्वोपरि रामानुज भाष्य की बड़ाई सुनि अहो बाल गादी चिन्ह अंगन में धारे हैं॥
बैठिकै एकन्त करै भावना स्वतंत्र स्वप्न भई अग्र बानी रस रीति क्यों बिसारे हैं।
गयो और भाव उर बाढ्यो मंत्र को प्रभाव ता पीछे प्रधान पूजा अंग निरवारे हैं॥१४६॥
पूरण विधान हेत राम घाट आये इष्ट दरसन पाय शुचि सेवा रुचि भई है।
बोले रघुनाथ श्रीकिशोरीजू के हाथ यह जेती रस रीति सब अली भाव मई है॥
रूप सो छपायो उर विरह सतायो तब प्रगटी लडैती छवि हेरी कृपा भई है।
भयो मन भायो बालअली नाम पायो उर अति सुख छायो सब स्वामी रीति लई है।१५०।
रैंवासे विराजे साधु सेवा अंग साजे बैठि रसिक समाज में रहस्य ग्रंथ गाये हैं।
खण्डि कै बिरोधी अंग मण्डि रसराज रंग दंपति सिद्धांत तत्व दीपिका बनाये हैं॥
मंत्र अर्थ नाते नव शिष्यन जनाये कृपा दूती के प्रसंग नाह नेह सरसाये हैं।
उज्ज्वल विभाष ध्यान मंजरी विलास दिव्य नेह के प्रकाश रस रसिक छकाये हैं॥१५१॥

❋ श्री रूपसखीजी का जीवन चरित ❋

मूल—रूप सखी श्री रूपलाल जुग रूप लुभाने ।
दिल्लीपति दीवान सरस रस रसिकन जाने ॥
बालअ्रली की कृपा लहे मानसो प्रधानी ।
शीश महल प्रतिबिम्ब छाप दिल्लीपति जानी ॥
दुतिय देह कलियुग प्रवल करी अबल सब जानहीं ।
हो हो होरी ह्वै रही रसिक संप्रदा मानहीं ॥२९॥

टीका-रूप सखी रूपलाल छप्पै में बखान कियो नाम रूपलाल सो दिवान पातसाह के ।
बालमीक रामायण कथा कौ श्रवण सुनै राजपुत्र माधुरी बिचारी अवगाह के ॥
कैसे मिटै भ्रम श्रम निरखि कृपाल हनुमन्त सन्त रूप ह्वै बताये भेद लाह के ।
बालअली बाल कृष्ण गादी के महन्त राजैं पैहौ रस गली अग्र अली उर माह के ॥१५२॥
अन्तर्ध्यान भये निज नाम को जनाय सुनि मानिकै प्रतीति सो रैवासे बेगि आये हैं ।
स्वामी बर बैन सुने भयो हिये चैन भये शिष्य सुख ऐन रूप नैन में बसाये हैं ॥
देख्यौ वही मधुर कपीश को स्वरूप तिन रास में प्रत्यच्छ लली लाल को मिलाये हैं ।
अंश लागे लली के बिलोकी सांवरे की छबि ता समै की कौन पै परत दशा गाये हैं॥१५३॥
गुरु आज्ञा पाय घर आये छवि छाये दिव्य मन्दिर बनाये लली लाल पधराये हैं ।
ऋतु अनुसार पुष्प वाटिका बिहार कुंज कुंज के सदन चित्र मण्डित कराये हैं ॥
अष्टयाम सेवा साधु सेवा सावधान बैठि रसिक समाज रास कथा मन लाये हैं ।
श्वास प्रति श्वास राजपुत्र रघुचन्द जानकी के सुखकन्द कहि बिरह उठाये हैं ॥१५४॥
एक समै ग्रीषम बिहार शीश महल में मनो चन्द्र मण्डित भवन छवि छाई है ।
दंपति छबीले प्रतिविम्ब खम्भ खम्भन में ललित निहारि तन सुरति भुलाई है ॥
ताही छण राजदूत आये हैं बुलावन को देखि दशा जाय बात साह को जनाई है ।
सुनतही आप उठि आय कै निहारी छबि अवधबिहारीजू की उर अति भाई है ॥१५५॥
देखी है दिवान दशा अधिक दिवानी प्रतिविम्बन पै छापिकै बेहोस तन परे हैं ।
औरहू रसिक वृन्द परा दशा छाके नैन आंसू झर लाये अनुराग उर भरे हैं ॥
समय समान राग रागिनी उचारैं बर वेष को सँबारि केते नृत्य अनुसरे हैं ।
जानी ईश अंश गति आशिकी रसिक रीति हरे हरे जाय आप पङ्खा कर धरे हैं॥ १५६॥
सौरभ ते सींचि कै जगाये उठे भाव भरे तऊ नहिं जानी मानी भाव रंग भोरी हैं ।
पाय परि पूछ्यो कह्यो सदय हृदय भाव जान्यो सुख मान मति आवो सभा पौरी है ॥

दूनो करि दियो लाल दया दृग भीज्यो हियो लियो वही भाव जामैं सदा मति बोरी है ।
युगुल किशोर छबि छाई रसिकन सुखदाई महारास की अनूठी रची होरी है ॥१५७॥
प्रथम युगुल बृन्द शोभा सुखकन्द रची सखी सखा भेद विलगाये सुखकारी है ।
होरी के सकल साज प्रगट बखाने अन्तरंगा रति सोई बहिरंगा में संवारी है ॥
समय सोहावन संवारि कै गवायो राग काफी रंग छायो मैन कोटि वारि डारी है ।
रसिक समाज में अनूप रस छायो अंश धरे भुज देखि प्राण कीने बलिहारी है ॥१५८॥
दिल्ली ही में दिली बात हेत दूजो जन्म लियो कोऊ कामदार घर रूप दरसायो है ।
मौन वर्ष पांच लौं रहे न कछु बोले कौन खोलै बात हिये की प्रयोजन न पायो है ॥
बालक के लच्छण विलच्छण को शोर पर्‌यो चार समाचार पातसाह को जनायो है ।
जान्यो वही आशिक है बासना प्रकाश कहै आज्ञा जोई होय सोई करै मन भायो है ॥१५९॥
होरी परिपूरण करै की अभिलाष सही कोटि तब कही मानी सुखद रजाई है ।
भई है तयारी सुनि रसिक सजाती जुरे यमुना ते सरयू की धारा प्रगटाई है ॥
विपिन प्रमोद श्रीअवध प्रतिबिम्ब धाम सकल संवारे रचि किल्ला कोट खाई है ।
कनक भवन रंग भवन सभा भवन अष्टयाम सेवा साज सकल भराई है ॥१६०॥
श्याम गौर बालक सोहावन सुलच्छण विचच्छण सुशील सियाराम मनो आये हैं ।
पंच शत सखा रघुबंशिन के बाल यथा नर्म प्रिय सुहृद को रीति सिखराये हैं ॥
सखी शतसात यूथ यूथेश्वरी साथ मुग्धा मध्या प्रौढ़ा भेद बृन्द बृन्द मन भाये हैं ।
नव शत साजे जुरे होरी के समाजे तहां नृत्यगान करि दिब्य दंपति रिझाये हैं ॥१६१॥
प्रथमहीं होरी के सकल अंग पूरे करि रसिक समाज बर मानस छकाये हैं ।
विमुख पाखण्डी सब मूकवत भये कलिकाल मल गये त्रेता युग धर्म छाये हैं ॥
दूजी अति प्रवल मचाई रंग होरी जैसी गाई सुखदाई तैसी सबन लखाये हैं ।
अंश भुज धारे प्राणप्यारे की बिलोकी छबि आज्ञा लै सदेह राम धाम को सिधाये हैं।१६२
हिंदू पति सुनी मानी भाग्य की अधिकताई प्रीति की सचाई सोई नर तन सार है ।
सुने बनि आवै कहे बनै न विचित्र कथा रसिक नरेशन की महिमा अपार है ॥
संग लै लखावै निज रूप सरसावै वे तौ बड़ई दयाल जीव प्राण के अधार है ।
कीजै यही ध्यान नित्य राम रस गान भजै रसिक प्रधान तजै और ब्यवहार है ॥१६३॥

❋ श्रीस्वामी मधुराचार्यजी का जीवन चरित ❋

मूल—मधुराचारय मधुर सरस शृंगार उपासी ।
रंग महल रस केलि कुंज मानसी खवासी ॥

निमि कुल जन्म उदार सुखद सम्बन्ध प्रतापी।
पैहारी रसिकेन्द्र कृपा माधुर्य अलापी ॥
द्वादश वार्षिक रास रस लीला करि बहु सुख दिये।
बिपुल ग्रंथ रचि रसिकता राम रास पद्धति किये ॥३०॥

टीका-नमो माधुराचार्य मधुर रस के उपासी योग लता वासी सन्त जन सुखरासी हैं।
बालपनेही में पै अहारीजी दरश दियो पूछे ते बतायो स्वामी बंश अविनाशी हैं॥
सुनिकै प्रसन्न भये दियो शीश कर लेहीं आशिषा पुनीत उर विद्या सब भाषी है।
ह्वै देव स्वामी कृपा गादी पै बिराजे सब सन्त सेवा साजें पराभक्ति के प्रकाशी है।१६४
दिल्लीपति पातसाह पण्डित बोलाये तहां इष्टबल जायकै बिजय पत्र लाये हैं।
रामायण माधुर्य दंपति रस रूप जानि लक्षावधि पुष्पांजली तिलक बनाये हैं॥
राम रास उत्सव संकल्प वर्ष द्वादश को अली रूप भले लली लाल को लडाये हैं।
छठे रास मध्य श्री पैहारी आप आये अली वेष सुख छाये लखि काहू नैन पाये हैं।१६५॥
अन्य मतवारे मतवारे जे बहुत आये पराजय पायकै उपाय तिन ठान्यो है।
राजा को मिलाय यज्ञारम्भ करवाय बोले राजगुरु पत्नी के सहित वेद भान्यो है॥
भूप हठ कियो इनहू ने पन लियो निज रूप को सम्हारिकै विराग उर आन्यो है।
त्यागि गालवाश्रम बराय कछु काल रहे चित्रकूट देखि कै निवास मन मान्यो है॥१६६॥
कामद विहार घूमि घूमि अवलोकी भूमि मंदाकिनी तीर भूमी लता मन भाई है।
सियाराम पाद पद्म अंकित शिला द्रवित राम शय्या निरखत आंसू झरिलाई है॥
बैठिकै एकान्त रास भूमि को वृतान्त नित्य दंपति संयोग मनिसंदर्भ बनाई है।
सीताराम तत्व को परत्व को प्रकाश सावकास युत रचि निज शिष्यन पढाई है॥१६७॥
सीतापुर नाम को नगर सु बसाय राम घाट नित न्हाय बसे राघव प्रयाग में।
हरियाचार्य शिष्य जो कृपा के पात्र मुख्य तिन्हैं आज्ञा जो जो दीनी सब कीनी अनुराग में॥
रसिकन संग महा माधुरी प्रसंग जीति राजत अनंग दल संयुत विराग में।
योग बल ब्रह्म रंध्र फोरि पर धाम गये पागे दिव्य दंपति पदारविन्द राग में॥१६८॥

* श्रीस्वामी हरियाचार्यजी का जीवन चरित *

मूल—हरियाचारय नील पीतरंग हरित ध्यान लहि।
शैन कुंज रासान्त सुरति बर ग्रंथ मान कहि॥
गुरु आज्ञा श्री चित्रकूट ते पालन कीनी।
राम रास लीला रसाल रसिकन सुख दीनी॥

मधुराचारय शिष्य बर कलियुग में त्रेता कियो।
षटऋतु नित्य विहार युत उत्सव करि बहु सुख दियो॥३१॥

टीका-हर्याचार्य भाविक उपासक प्रवर भये हरि सहचरी नाम ख्यात है पदन में।
नील पीत रंग मिले होत जो हरित रंग वही ध्यान पगे पैठि रास के सदन में॥
सुमिरन माला पद पादुका पैहारीजू की पूजि इष्ट सेवैं भाव भरे स्वच्छ मन में।
राम रास रंग मान मोचन उपाय गीत गायो सोई छायो ठौर ठौर रसिकन में॥१६९॥
आरय चरण पद पंकज दरश लागि त्यागि और आश बास चित्रकूट आये हैं।
स्वामी आज्ञा पाय फेरि गलते सिधाये व्याह विधि अपनाये सब सन्त मन भाये हैं॥
कीनो अनुष्ठान हनूमानजी को ध्यान गयो राजा को गुमान खल गर्ब को गंवाये हैं।
इच्छा अवशेषता में आपु चारि रास किये और श्रियाचार्य द्वारा पूरण कराये हैं।१७०॥

* श्रीस्वामी रामसखेजी का जीवन चरित *

मूल—श्री राम रास पद्धति प्रचुर राम सखे बानी मधुर।
सरस काव्य गुण ललित बलित दंपति रस लीने॥
पढ़त गुनत मन मोद प्रेम पथ रसिक रंगीले।
ब्रह्म संप्रदा मुनि अगस्ति परिमाण लहे हैं॥
मत अभेद खंडन समर्थ बहु ग्रंथ कहे हैं।
गोलोक अवधि अवतार महि बन प्रमोद रस रास उर।
श्री राम रास पद्धति प्रचुर राम सखे बानी मधुर॥३२॥

टीका-नमो रामसखे पद पंकज प्रसिद्ध जिन मेटिकै अद्वैत द्वैत मत सरसायो है।
ब्रह्म संप्रदाय के आचरय प्रधान हनूमान माधो भये श्रीअगस्त्य मुनि गायो है॥
सर्वोपरि धाम श्रीअवध अभिराम सप्त आवरण बाहेर गोलोक ज्यों सोहायो है।
सोई महि मंडल में आयकै बतायो श्रीप्रमोद बन मध्य महारास दरशायो है॥१७१॥
दक्षिण दिशा ते दिव्य धाम के दरस हेत बयक्रम चेत गुरु संग मिलि चले हैं।
गलते में आये महारास छवि छाये रास मंडल में इष्ट के स्वरूप रंग रले हैं॥
सहज सुभाय हरि स्वामी मन भाय कही लेवो अली भाव नहीं मन अनुसरे हैं।
राघव के संग हंसि बोलनि मिलनि नर्म क्रीड़ा बिन और भाव व्रीड़ा तन धरे है १७२॥
इष्ट प्रेरणा ते चलि मैहर में आये गुरु आयसु लै देखी छवि कामद लतान की।
सानुज ससीय पद अंकित विलोकी भूमि हनूमान धारा पर चौकी हनूमान की॥

करिकै संकल्प बर्ष द्वादश को बैठे तहां बीचही में मिले रघुनन्दन औ जानकी ॥
लीने उरलाय गये संग में लिवाय छवि देखी मन भाय रही सुधि न अपान की ॥१७३॥

संपुट अकार मध्य रतन प्रकार शुभ्र कोटि शशि सूर ते प्रकाश अधिकायकै।
बड़े बड़े चौक सप्त आवरण बीच एक मंडप पुनीत कहि सकै कौन गायकै ॥
दंपति सहेली कोटि कोटि अलबेली जिन रूप के निहारे रहै इंदिरा लजायकै।
महारास थली की अनेकन सुगंध गली जहां लली लाल नित्य रमत लुभायकै ॥१७४॥

चारिउ ओर चारि द्वार हीरन जड़े किवार द्वार द्वार कल्पतरु सुखमा को घर है।
तरु तरुता रमनि वेदिका बनी है बर बेदी के समीप पुष्प वाटिका सुघर है ॥
बाटिका के बीच बीच अमृत भरे तड़ाग पंकज दुरेफ बहु खग बारिचर है।
तिनहूँ तड़ागन के मध्य मध्य मंदिर हैं मन्दिर मन्दिर नृत्य केलि के बगर है ॥१७५॥

रहे दिन तीनि परा प्रेमा में सुलीन श्याम सुंदर प्रवीन संग संग फेरि आये हैं।
मंदाकिनी विपिन प्रमोद महा मोद युत बैठि तहां राम मंत्र जाप मन लाये हैं ॥
एक समै राघव सुजान कला के निकेत प्रेम यों बहत रूप कूप में छिपाये हैं।
बिरह बिकल प्राण त्याग हठ ठान गायो पद ऊंची तान आय कंठ में लगाये हैं ॥१७६॥

कामद अचल परिक्रमा छवि धारि उर अत्रि अनुसूया थल दरशन कीनो है।
सरभंग आश्रम सुतीक्षण निवास थल पेखिकै अगस्ति मुनि और मन दीनो है ॥
पंचवटी दंपति बिरह सुधि आई तन उठी अकुलाई पीछे ही को पंथ लीनो है।
मैहर में आये गुरु दरशन पाये तहां बसे कछु काल चित वही रंग भीनो है ॥१७७॥

देखिकै प्रभाव जन आये हैं शरण जेते करुणा कटाक्ष हेरि तिन्हैं अपनाये हैं।
चित्रकूट आये फेरि सोई सुख छाये निज शिष्यन को आपनो स्वरूप दरसाये हैं ॥
भन्यो नृत्यराघवमिलन ग्रन्थ भक्ति पंथ साधन अनंत निरवारि समुझाये हैं।
औरो बहुग्रन्थ रस रास के प्रबंध युत बिरचि अनेक निज शिष्यन पढ़ाये हैं ॥१७८॥

उठी उतकंठा सत्या भूमि दरशन हेत शिष्यन समेत श्रीअवधपुरी आये हैं।
करिकै प्रदक्षिणा सु लक्षण विलोकि भूमि सरयू नहाय फेरि मिथिला सिधाये हैं ॥
तहां चारौ भाइन की निकसी सवारी घोड़े चढ़े छबि भारी संग संग मन भाये हैं।
शिष्यन जनाई वह शोभा सुखदाई तिन मानि उपकार गुरु इष्ट गुण गाये हैं ॥१७९॥

श्रीप्रमोदबन सोम बट के निकट आये सखन के मध्य रघुलाल छबिछाई है।
ओढ़े नील सारी गोपकन्या सुकुमारी संग लिये भीर भारी सहजाजू उत आई है ॥

सांवरे सुजान तहां लीनो दधिदान महारास रस ठानि बंशी सुघर बजाई है।
नैनन जो देखी सोई ग्रन्थन में पेखी रचि दान मान लीला सब शिष्यन पढ़ाई है १८०॥
सखी सखा भाव दोउ मुख्य करि गाये निज रूप में देखाये प्रिय शिष्य तेउ ठानहीं।
अली चारुशीला संग राम चन्द्रिका सरूप पाई रति अमल सुशीला गति जानहीं ॥
नाम धाम रूप लीला महिमा दृढ़ावन को किये बहु संग्रह सो पण्डित प्रमानहीं।
सरस उपासना की रीति को लखाय जाय राज सुत पास लसे पाय प्रेम पानहीं १८१॥

* श्री स्वामी कृपानिवासजी का जीवन चरित *

मूल—प्रिय काव्य सरस अनुरागमय कृपानिवास प्रसाद गुन।
रास उपासक प्रवर जानकी बल्लभ नाता।
रति अनन्य गति धन्य रसिक रसिकन सुख दाता ॥
लक्षावधि माधुर्य चरित बहु ग्रंथ महा रस।
सुनत श्रवण मन मोद होत प्रेमा परमावस ॥
हनुमन्त कृपा लहि परम गुरु श्रीप्रसाद अलिअग्र उन।
प्रिय काव्य सरस अनुरागमय कृपा निवास प्रसाद गुन ॥३३॥

टीका-श्रीकृपानिवास दिव्य दंपति की अली खास भजै नित लली लाल परा रति जासु की।
माधुर्य उपासना अनन्यता दृढ़ाई जिन गाई सुखदाई लीला रास के विलास की ॥
रसराज सागर की धारा उमड़ाई जामें खोदि कै बहाई मूरि अन्य रस भास की।
अग्र स्वामी भाव रीति प्रगट देखाई करि बन्दौं पद पङ्कज पराग नित्य तासु की ॥१८२॥

उत्तम जनम अति उत्तम धरम सदा बचन करम मन राम रंग रये हैं।
छांड़ि जग राग उर धारिकै विराग जाय सन्त संग पायकै रैवासे शिष्य भये हैं ॥
मानसी सुजान बाह्य सेवा में प्रधान अष्टयाम के विधान जनु हस्तामल लये हैं।
सुनी मन भावन ते राम रास की बड़ाई गलते सिधारे उर महा सुख छये हैं ॥१८३॥

श्रियाचार्य मुख सुनी पूर्वाचार्य रीति प्रीति महारास पेखिकै प्रत्यक्ष फल पायो है।
श्याम गौर भारी छवि सम्पति निहारी मन भंवर विहारी मुख पंकज लुभायो है ॥
क्रीट की झुकनि श्रुति कुण्डल हलनि दृग कोर की चलनि बिहसनि सुख छायो है।
नूपुर नद निपट पीत फहरनि लली ओर की झुकनि सो परत कैसे गायो है ॥१८४॥

अद्भुत अनूप सुख सुन्यौ पै निहार्यो आजु भये कृत कृत्य नैन नीर झरि लागी है।
गिरे मुरछाय तन सुधि बिसराय सो दशा न कहि जाय ऐसे वेई बड़भागी है ॥

बीते युग याम तन होस कछु आयो स्वामी निकट बुलायो जानि बड़े अनुरागी है।
चरणन शीश नायो दम्पति प्रसाद पायो परा रंग छायो सिया पिया रट लागी है॥१८५॥
महारास बीते उर बिरह जनायो रसिकन संग पायो कछु काल को बितायो है।
बड़ोई आवेस कोई जानै नहीं भेष तब फिरे बहु देश पै उज्जैन मन भायो है॥
आचारय आरय परत्व शंख चक्र कह्यो सह्यो कैसे जाय तब पैज को लगायो है।
धरौ जल मांहि शंख चक्र धनु बान जोई रहै उतराय सो प्रधान कै गनायो है॥१८६॥
इन को बिलोकि बड़ इष्ट को प्रभाव काहू कियो न जनाव उठि गये चलि भोरहीं।
गुरु अपमान को विषाद जिय जानि उर आनि हनुमान चले मिथिला की ओरही॥
बीच बीच बास करि सीतामढ़ी आये भूमि देखि सुख पाये वृक्ष लता चित चोरहीं।
आगे चलि पुरी छबि नैनन प्रत्यक्ष देखी धनुष दरश दरशावत किशोरहीं॥१८७॥
रही कछु बासना उपासना की दृढ़ता में करत ही ध्यान प्रगटे हैं हनुमान जू।
श्रीप्रसाद रूप निज अलख लखायो उर ताप को मिटायो जन जानिकै नदान जू॥
कनक भवन को स्वरूप दरशायो यथा मिथिला में तैसोई अवध परमान जू।
इष्ट के मिलायबे में हमहीं को गुरु मानौ आलिन के युत्थ चारुशीला हैं प्रधान जू १८८॥
मारुतनंदन बल पाय सब सुख साजे अवधपुरी में आय अति हरषाने हैं।
सरयू के तीर तीर निरखि बिहार भूमि विपिन अशोक सीता कुंड मन माने हैं॥
दम्पति उदार रंग भवन बिहार अष्टयाम सेवा सार को विचार उर आने हैं।
मन्दिर मन्दिर सेवा बिविध प्रकार बिन त्रिबिध सजाती के बिजाती से लखाने हैं॥१८९॥
चले शिरनाय श्रीप्रसाद रुख पाय देवधुनी में नहाय मानसी बिधान ठान्यो है।
बढ्यो उर अधिक प्रकास सावकास युत भजन के लायक निवास अनुमान्यो है॥
रहे कछु काल तब प्रेर्‌यो हनुमन्तलाल चले ततकाल चित्रकूट मन मान्यो है।
इष्ट कृपा भेद सब पायो सुख छायों महारास भूमिका में जीव अधिक लुभान्यो है॥१९०॥
बाहेर भीतर गुरु प्रगट सु थल जेते तेते सब पेखे छके मानसी विकास में।
वृक्ष वृक्ष शाखा पत्र सीताराम नाम अंक शिला पद अंक पेखे लीला के विलास में॥
द्वादश महीना बीते द्वादश दिवस मानौं करत परिक्रमा अनुक्षण सुपास में।
दंपति सुजान कियो अति सनमान निज निकट बुलाइ दियो पान महारास में॥१९१॥
सन्मुख निहारी रघुनन्दन की बांकी छवि पाछेहू निहारे श्यामा श्याम सुखदाई है।
बाम दाहिने तियन बिच बिच लाल सोहैं आस पास बाला गान तान धुनि लाई है॥
ऐसी छवि जोर चित चोर लाल दक्षिण की ललित निहारि तन सुरति भुलाई है।
बैठि नैन मूदिकै निहारि हियेहू में सोई जानि लाल ख्याल चरणन शीश नाई है॥१९२॥

यद्यपि विचित्र ईश ईशता लखाई बोले अचरज कौन सीतानाथ प्रभुताई में।
ब्रह्म बिधि विष्णु जाकी भृकुटी बिलोकै पुनि पवन के पूत जाके नित्य सेवकाई में॥
चले हनुमन्त बल करिकै प्रणाम मन लीन आठौयाम लली लाल मधुराई में॥
पहुँचे उज्जैन जहां प्रथम निवास तहां सन्त सब मिले जे रंगे हैं रसिकाई में॥१९३॥
बैठि तहां मानसी छकायो सुख पायो नैन रूप बिन देखे उर बिरह सतायो है।
अरचा स्वरूप को करत अनुमान लीला रूप सनमान हनूमान जू बतायो है॥
बालक अनूप लली लाल योग आये तिन्हैं ललित निहारि बर वेष को बनायो है।
उनहीं को अष्टयाम सेवा सनमान नित्य तत्सुख विधान भेद काहू नहिं पायो है १९४॥
कोई खल जाय भूमिपाल सों लगाय कही नारी भाव नरतन कैसे कै पती जिये।
दियो सो लखाय दुष्ट रहे हैं लजाय बिनै कीनो परि पांय अपराध क्षमा कीजिये॥
गान को बुलायो महादेव नाम सेंधिया ने गये नहीं आयो गुप्त देखी मति भीजिये।
देन लाग्यौ पट्टा तीनि सहस को लीजे बोले साधु हरिव्यासी जो मृदंगी ताहि दीजिये१९५
बोल्यो करजोरि दास तेरो अंगीकार करौ जानि जन निज कोई सेवा फरमाइये।
कृपा करि कह्यो सियानाथ रास उत्सव में जेतो लागे तेल तेतो नित्य पहुँचाइये॥
मन्दिर प्रकाश होत हिय में प्रकाश छयो भयो शिष्य कही साधु सेवा अपनाये॥
ऐसे बहुतेरे जन आइ भये चेरे तेऊ भये भाव रंगी सतसंगी सुखदाइये॥१९६॥

समय प्रबन्ध बर्षउत्सव अनन्यचिन्तामणि आदि मधुर रहस्य ग्रन्थ गाये हैं।
रामरसामृतसिंधु मध्य हनुमान बली जन्महीं ते राघव के संग चलि आये हैं।
मिथिला को गये तहां संग हनुमान बनहू में गये तहूँ नित्य संगम गनाये हैं।
माधुर्य रहस्य लक्षावधि पद गाय दिव्य दंपति रिझाय निज धाम को सिधाये हैं।१७९।

※ श्री रामदास गूदरजी का जीवन चरित ※

मूल—श्री रामदास गूदर प्रबर रसिक रास बर ध्यान पर॥

चित्रकूट बन कुंज बास अति उत्तम धरनी।
दिव्य दृष्टि ते दरश कांचनी श्रुति बर बरनी॥
प्रिय मिथिला सम्बन्ध जन्म मानसी लखे हैं।
रंग महल सरयू सुकुंज छवि सुधा चखे है॥

कृपाराम से शिष्य जेहि सन्त सभा सनमान बर।
राम दास गूदर प्रवर रसिक रास बर ध्यान पर ॥३४॥

टीका-श्रीरामदास गूदर रसिक राम रास ध्यानी ज्ञानी श्रीमुरारिदेव बंस सुखरासी है।
राम कथा कीर्त्तन श्रवण बल पाय जिन्हें मिथिला अवध चित्रकूट भूमि भासी है॥
मानस दृढ़ायो दया दिव्य दृष्टि द्वार गिरि कामद विहार की परिक्रमा प्रकाशी है।
सन्त सेवा सर्वोपरि शिष्यन सिखाय योगानल में जराय तन भये सुखरासी है ॥१९८॥

तिनहीं के कृपा राम कृपा पांच शिष्य भये सज्जन महान पुनि पण्डित प्रधान हैं।
भाषा बहुग्रंथ किये जीवन को ज्ञान दिये लिये वर वृत्ति साधु सेवा सुख दान हैं।
बालमीक रामायण पाठ में परायण लखाये रास लीला आदि उत्सव विधान है।
भाविक बिशद् भक्ति पथ दरशायबे को जड़ता मिटायबे को भानु की समान है १९९॥

※ श्री प्रेमसखी जी का जीवन चरित ※

मूल—प्रेमसखी रस रहसि प्रवर बर द्विज तन धारी।
शृंगबेरपुर निकट बास बिरदावलि भारी॥
चित्रकूट श्रीरामदास गूदर सतगुरु लहि।
रसिकाई निधि भये गये मिथिला दंडोतहि॥
जनकललीजू प्रगट ह्वै अली समुझि अपनाय कै।
प्रेम कथा प्रगटी सरस बिविध ग्रन्थ छवि गायकै ॥३५॥

टीका-प्रेम सखी उज्वल रहस्य रस छाके सदा भाविक प्रवीण बांके भक्त सुख रासी है।
शृंगबेरपुर द्विज कुल जन्म पाये गुरु गूदर श्रीरामदास चित्रकूट बासी है॥
श्री गोसाईं रामायण गान नित्य नेम सदा दूलह स्वरूप सुधा पान मति प्यासी है॥
श्याम गौर छवि नख शिख लौं निरखि हिये हरषि कवित्तन में सोई परकासी है ॥२००॥

माधुर्य निधान श्रीअवध रूप जानि भले रसिकन संग मिलि मिथिला निहारी हैं।
तीरथ नहाय धनु दरशन पाय रंगभूमि मध्य जायकै बिलोके लाल प्यारी हैं॥
अभिमत पाय वर परा रति छाय रचि मिथिलाविलास कथा लोक में संचारी हैं।
होरी सुख गाय मिले आली वृन्द जाय ऐसे रसिकन पायन में बन्दना हमारी है ॥२०१॥

※ श्रीस्वामी रामप्रसादजी का जीवन चरित ※

मूल—अग्र स्वामि पथ सुदृढ़ भये श्रीरामप्रसादा।
रस उमंग शृङ्गार भक्ति दशधा अनुवादा॥
अवध बास सेवा प्रधान सन्तन सुखकारी।
मोदी को भरि दिये दाम पिय श्री धनुधारी॥
रंग महल झारू स्वकर जनक लली बिन्दी दई।
विदित भई संसार में दशधा संपति नित नई ॥३६॥

टीका श्रीरामप्रसाद वेद विदित अह्लाद शक्ति अंश जो अनादि सोई लीनो अवतार है।
भक्ति पथ सुदृढ़ विलोकि अग्रस्वामीजू को सोई मान्यो सर्व लोक जीवन अधार है॥
राम भगवान लच्छीराम मस्तराम परमेश नन्दलाल हरीदास गुरु प्यार है।
सन्त संग पाय सब तीरथ नहाय नीमिषारण्य में आइ मान्यो भजन सु सार है ॥२०२॥

मलिहाबाद जन्मभूमि निकट बिलोकि सर सुंदर कुटीर बैठि मंत्र जाप ठान्यो है।
शील चमा विनय दया के सुख सागर उजागर रसिक सन्त सेवा सुख मान्यो है॥
भई उर प्रेरणा अवध पुरी आये दिव्य भूमि छवि छाये उर मोद सरसान्यो है।
रामजन्मभूमि रत्न सिंहासन रंगभूमि पेखि दिव्य दंपति प्रभाव पहिचान्यो है २०३॥

सरयू अस्नान इष्ट सेवा साधु सेवा नित्त रामायण पाठ अर्थ सुनिवो सुनाइवो।
कनक भवन लली लाल दरशन नेम परिक्रमा झारू निज कर ति लगाइबो॥
आवैं जेते सन्त तिन्हें इष्ट सम जानै करि धूप दीप आरती नैवैद्य को पवाइबो।
तुलसी आभूषण नूपुर पग धारि आली भाव को सम्हारि नृत्य करिबो कराइबो २०४॥

तुलसी सुमन बाटिका लगाई सुखदाई निज कर सींचन की महिमा सुनाई है।
दल फूल दोना भरि मन्दिर प्रवेश कियो लियो निज भाव लली दरश जनाई है॥
सुखमा निहारि झुकि कियो है प्रणाम शीश दियो निज पानि भाल विन्दी सुठि लाई है।
अचरज भयो सन्त कहै कहा कियो यह तुरत मिटावो नहिं मिटत मिटाई है २०५॥

इष्ट को प्रभाव उर आनि सुख मानि निज आसन पै बैठि मन मानसी छकायो है।
लोक में विदित बात भई नित नई सियाराम इच्छा मयी सुनि काको न सोहायो है॥
शिष्य बहु भये गुरु आज्ञा सुख छये तिन हरि गुरु सन्त में अभेद भाव पायो है।
श्रवणादि नवधा स्वरूप दरशायो परा भक्ति जो अगम ताहि सुगम लखायो है ॥२०६॥

आवै पूजा भेट ताहि मोदी कर देत सन्त सीधो नित लेत निज इच्छा अनुसार हैं।
बीते कछू दिवस हजार लौं करज भयो भोग कौन दियो सन्त बैठे निराधार हैं॥
श्याम धनुधारी जानि स्वकर सुधारी दाम मोदी को गनाय आप लाये रिद्धि भार हैं।
जानी नहिं बात सब लोक सुख दानी नाय शीश बोले बानी सन्त महिमा अपार हैं २०७॥

मोदी भोर आयो सो वृतान्त को जनायो आप दूने दाम सौंपि लिखि कागद लै आये हैं।
जेतो लागै तेतो अबहीं तुलाय सीधो लीजै राम नाम लेवो जो चलत बिसराये हैं॥
सुनतहीं बनिक को जानि बड़भागी उठि पूजा विधि साजिकै चरण शीश नाये हैं।
राघव स्वहस्त दत्त मुद्रा मंगवाये सन्त सेवा हित लागि पूजा मध्य धरवाये हैं॥२०८॥

मोदी को दरश दियो हमहीं अभागी एक अहो धनुधारी मन भावै सोई कीजिये।
दियो जल अन्न त्यागि बिरह की बाढ़ी आगि जियो कैसे जाय देखै रूप तव जीजिये॥
आये धनुधारी संग जनक दुलारी छबि मधुर निहारी तन मन वारि दीजिये।
अजहूँ लौं मूरति मन्दिर मध्य राजै छबि देखे दुःख भाजै करि दरश पतीजिये॥२०६॥

देश पति सुनी सब सन्तन को पूजत हैं पकरि तुरन्त एक रासभ मंगायो है।
शीश में तिलक माला कंठ पहिराय इत प्रेम की परीक्षा हेत निकट पठायो है॥
देखि बेष पूजि परिक्रमा करि बिदा कियो आज्ञा पाय ताही भूप पास चलि आयो है।
पेखिकै प्रभाव आय पांयन में पर्यो धाय निरखि सभीत कृपा करिकै बचायो है॥२१०॥

यमन पठाये साधु वेष धरि आये तिन्हैं पंगति में लायकै विधान सो पवाये हैं।
निन्दक जे आये तिन शीश उघराये शिखा निरखि लजाये जाय भूप को जनाये हैं॥
भयो अपराध क्षमा कीजै गांव लीजै सुनि सन्त सेवा हेत पत्र तुरत लिखाये हैं।
चारयो संप्रदाय सन्त कृपा बलपाय सियाराम गुण गाय निज धाम को सिधाये हैं २११॥

※ श्रीस्वामी रघुनाथप्रसादजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीरघुनाथ प्रसाद रसिक रस लहयो अनादी।
ज्यों गुंगे गुड़ खाय सरस रस रास के स्वादी॥
परम धीर गम्भीर गुरू की वृत्ति निबाही।
काल करालहिं बचे सचे दशधा प्रिय जाही।
तापिनी जंत्र सेवा सरस भजन प्रगट बपु अवतरे।
रामचरण से शिष्य जिन हम से विमुखन उद्धरे॥३७॥

टीका-श्रीरामप्रसादजी के शिष्य रघुनाथ परसाद सब लायक महंत सुखकारी हैं।
पायो रसराज स्वाद तज्यो सब मतवाद भरे अहलाद सन्त सेवा दृढ़धारी हैं॥
नाम रूप धाम लीला तत्व परतत्व जंत्र राज पूजा दत्त तुच्छ कामना बिसारी है।
काल गति बांचे सियाराम भक्त सांचे जग नाच नहि नाचे तिन्है बन्दना हमारी है२१२॥

※ श्रीस्वामी छेदादासजी का जीवन चरित ※

मूल—श्री रामप्रसाद कृपाल के अनुग एक ते एक बर।
छेदादास पुनीत साधु सेवी जग जान्यो।
बलदुदास माधुर्य कुण्डली ग्रन्थ बखान्यो॥
औरो शिष प्रति शिष्य भक्ति दशधा के आकर।
श्री जानकीप्रसाद महंत भगवान उजागर।
श्रीजनक किशोरी कृपा लहि बंश बिपुल सेवक सुघर॥
श्री रामप्रसाद कृपाल के अनुग एक ते एक बर॥३८॥

टीका-श्रीरामप्रसादजी के शिष्य बर छेदादास जगत बिदित साधु सेवा जिन कीनी है।
नीमषार मंडल प्रदक्षिणा प्रकाश करि महा मूढ़ जीवन चेताय भक्ति दीनी है॥
श्री गोसाईं रामायण कीर्त्तन श्रवण सदा संध्या समै नृत्य गान अली भाव लीनी है।
शिष्य गंगादासजी के भगवानदास आदि गुरु परिपाटी के निबाह मति भीनी है २१३॥

श्रीरामप्रसादजी के शिष्य तौ अनेक भए तिन में प्रधान चारि सर्व गुण खानी हैं।
छेदादासजी से लघुरामकृष्ण साधु सेवी बल्दूदास माधुर्य की कुंडली बखानी हैं।
भई रघुनाथ के प्रसाद की महंती पाछे जानकीप्रसादजू की गादी सुखदानी हैं २१४॥

अयोध्याप्रसाद रामचरण महंत दोनो शिष्य रघुनाथपरसादजी के जानिये।
अयोध्याप्रसादजी के शिष्य श्री हरिप्रसाद लक्ष्मीनारायण अहारी दूजे मानिये
रामचरण जानकी के घाट पै बिराजे जिन्हैं लखे दुख भाजै सर्व शुभ गुण खानिये।
रसिक सुजान सियाराम सेवा में प्रधान भाविक महंत सन्त सुखद बखानिये॥२१५॥

※ महान्त श्री रामचरणदासजी का जीवन चरित ※

मूल—श्री रामचरण सियराम रसिक रसिकन में आगर॥
विविध ग्रन्थ भरि दये सरस शृङ्गार उजागर।

श्री तुलसी श्रृंगार गुप्त रस दास्य बखानी।
यही चोट रहि गई प्राप्ति में रस बिलगानी॥
सोई आनि रस वपु धर्यो अग्र स्वामि के यश लहे।
टीका रचि निज ग्रंथ के प्रगट रास रस निर्बहे॥३९॥

टीका-रामचर्ण सियाराम रसिक अनन्य जिन मानस रामायण को तिलक सु कीनो है।
भाव परि पूरण रहित दोष दूषन विज्ञान नैन खोलन को पूषण प्रवीनो है॥
गोपित शृंगार मारग प्रसिद्ध करि भक्ति भामिनी को जनु भूषण नवीनो है।
गूढ़ जानि निज ग्रंथ अर्थ के प्रसिद्ध हेत स्वयं अवतार श्रीगोसाईं जनु लीनो है॥२१६॥

कान्यकुब्ज कुल में उदार अवतार लैकै बारेहीं ते सीतानाथ पद अनुरागे हैं।
कोई देश भूपति की चाकरी करत तहां इष्ट सेवा योग छेमहीं में सदा पागे हैं॥
एक दिन राघव की सेवा में लुभाने उत उनहीं को रूप धरि आपु हरि जागे हैं।
जानी जब बात भये हरषित गात तजि जगत के नात रघुनाथ ओर लागे हैं॥२१७॥

अवध पुरी में आये सरयू नहाये कोट द्वार हनुमन्त के चरण शीशनायकै।
दीनबन्धु शिष्य रघुनाथपरसाद मिले तिनकी शरण भये अति हरषायकै॥
युगुल उपासना को मूल मन्त्र पायो सब भयो मन भायो गुरु सेवा सुख पायकै।
मानसी स्वरूप को प्रभाव सरसायो स्वामी आदि के प्रबन्धन में रहे हैं लुभायकै॥२१८॥

श्रीगोसाईं रामायण तत्व को बिचारि उर बाढ्यो रस सिंधु ताके सोत उमड़ाने हैं।
बड़े अनुरक्त जग नेह ते बिरक्त बिचरत महिमंडल अनूप धरे बाने हैं॥
मिथिला अवध चित्रकूट की अवनि पेखि रैवासे में जाय सतसंग में लुभाने हैं।
माधुरी रहस्य पथ पोषक बिलोकि ग्रंथ सार सार चुनिकै अवधपुर आने हैं॥२१९॥

सीताराम नवरत्न संग्रह बनायो अष्टयाम सेवा अनुकूल रस के बनाई है।
मानस समुद्र टीका सेतु ज्यों बनायो तापै चढ़ि रस रत्न निधि रसिकन पाई है॥
औरहूँ अनेक ग्रंथ भाव भरि गाये परतत्व दरशाय कै उपासना दृढ़ाई है।
जानकी रसिक सेवा सन्तन की सेवा करि जानकी के घाट बसि आयुष बिताई है॥२२०॥

कोई बड़े दच्छिण ते आचारय आये तिन चक्र को परत्व सब ऊपर बतायो है।
जोई रूप ध्यान सोई आयुध प्रमान सुनि कियो अनुमान उनहूँ के मन भायो है॥
बोले तुम जानकी के भक्त हौ प्रधान यथा बिन्दु को प्रकाश धनुबान त्यों चलायो है।
नीको तुम कियो औध धाम के निवासी रामभक्ति के प्रकाशी सांचो भाव तुम पायो है २२१

सुनि मृदु बैन करजोरि कै बिनै सुनाई ऐसी कृपा है तौ सीताराम भक्ति दीजिये।
राम नवरत्न आदि ग्रंथ में उपासना के अंग जेते कहे तिनको प्रमाण कीजिये॥
बोले स्वामी रामकृष्ण नारायण आदि रूप सबही के पूर्ण अंग सांची मानि लीजिये।
एक अंग ऊन किये होत हम दोष भागी जोई उर छायो रंग ताही मांझ भीजिये॥२२२॥

कोई ने जनाई तुम लेत हौ प्रसादी सन्त ऊंच नीच को न कछू तुम्हरे विचार है।
सन्त चरणामृत प्रसाद को महत्व गंगाजल ते अधिक मुनी कहत अपार है॥
गंगोत्तरी जल अग्नि दाह ते न घटै तैसे होय कछु कीजिये परीक्षा को बिचार है।
भूमि गड़वायो लै महीना बीते निकसायो रह्यौ जैसो पायो मान्यौ यही तत्व सार है २२३

दीनबंधुजी की जैसी भजन की रीति तैसे तुलसी के भूषण सकल अंग धारिकै।
मंत्र पढ़ि तुलसी चढ़ावै दल सहस लौं मानसीहू करै निज रूप को संबारिकै॥
पण्डित गुनी जन कवि जन जे राम भक्त सङ्ग रच्यो मानस को तिलक विचारिकै।
सम्बत अठारासै अठासी माघ शुक्ल नौमी गुरु पिय पास गये दुबिधा निवारिकै॥२२४॥

मानस रामायण प्रसिद्ध पाठ अर्थ करि आगम निगम औ पुराण मत गावै गो।
अलङ्कार छन्द के प्रबन्ध हाव भाव भेद रसन के भेद जहां तहां दरशावै गो॥
कर्म ज्ञान भक्ति योग अर्थ धर्म काम मोक्ष तत्वबाद संयुत परत्व सरसावै गो।
श्री रामचरण को तिलक बिन देखे जीव दंपति उपासना की रीति कहां पावैगो॥२२५॥

प्रथम षडक्षर युगुल मंत्र लेइ पुनि मिथिला अवध जन्म नातो मन भावई।
ऊर्द्ध पुंड्र धनुबान तप्त भुज अंसन पै कंठ में युगुल कंठी शोभा सुख छावई॥
अग्रस्वामी भनित प्रबन्ध मिलि अष्टयाम सेवा औ सिंगार बीज अंकुर बढ़ावई।
इष्ट को परत्व महामाधुर्य स्वरूप जानै दम्पति उपासना की रीति तब पावई॥२२६॥

मानस रामायण प्रत्यक्ष कियो चाहै रामचरण तिलक सुख अंजन करीजिये।
भाविक प्रबर जेते द्वार द्वार पाल तिन तिनसों नमित ह्वै मिला न भल कीजिये॥
गुरु बल पाय हरे हरे संग जाय नाह संगम सु पाय तन मन बारि दीजिये।
जनक लडैती की कृपा ते यह होय सोऊ पावै जब रसिक सम्बंध बल लीजिये॥२२७॥

आई नित प्रीतम के संग रस रंग भरी आलिन के संग पेखी शोभा बन की नई।
पवन झकोरन लता कुञ्ज में छिपानी तहां मतवारे पुरुषन घेरि चहुँधा लई॥
मुग्धा मध्या सखी सब संग की सकानी निज प्रीतम बिरह पाय देह दूबरी भई।
रामचरण प्रौढ़ा अली नागरी सहाय पाय राम भक्ति भामिनी नबीन फेरि कै भई॥२२८॥

वेद औ पुराण पढ़े शास्त्र मत दुर्ग चढ़े तत्व ज्ञान मान बढ़े राखे निज टेक हैं।
शील क्षमा दया दम समता सन्तोष ज्ञान विमल बिराग युत साधु तौ अनेक हैं॥

दंपति उपासना के अङ्ग सब साधे गुरु सन्त अवराधे जिन सहित बिवेक हैं।
शरण जे आये तिन्हैं जग ते बचाये ऐसे भाविक रसिक कोई लाखन में एक हैं ॥२२९॥

※ परमहंस श्रीरामप्रसादजी का जीवन चरित ※

मूल—श्री राम उपासक छाप दृढ़ परमहंस आनन्द घन ॥
राम प्रसाद प्रशंस वेद कंठस्थ जु तीनो।
परम धरम पय सार भाग छबि हिय धरि लीनो ॥
जानकी बल्लभ कुञ्ज केलि मनसा मद माती।
बिपुल उपासक जुरे संग प्रिय रसिक सजाती ॥
जफराबाद निवास तजि बास जानकी घाट बन।
श्रीराम उपासक छाप दृढ़ परमहंस आनन्द घन ॥४०॥

टीका-जानकी रसिक के उपासक प्रवर श्रीपरमहंस रामपरसाद नाम ख्यात है।
वेद औ वेदांग वेद भाष्य षट शास्त्र कंठ बैष्णव के मत अन्यमत कुशलात है॥
बालमीक रामायण आदि मध्य अन्त मांहि दंपति की माधुरी निहारी अवदात है।
तुलसी गोसाईं कृत मानस प्रवेश होत रोम रोम पुलकित भये सब गात है ॥२३०॥
आगम निगम शास्त्र संमत पुराण सन्त सबको सिद्धांत जहां एक राम ध्यान है।
रुच्छ मतवादी को निरास सब भांति जहां रसिक परमहंस धन को निधान है॥
ईश ईशताई मधुराई बीज वृक्ष जिमि ज्ञानहूँ में भक्ति भक्तिहूँ में यथा ज्ञान है।
तैसे सार तम तत्व पूरण महान ग्रन्थ मानस रामायण समान नहीं आन है ॥२३१॥
जफराअवाद ग्राम गंगा के निकट तहां बैठें हैं एकान्त क्रिया मानसी जगाइ कै।
रसिक सजाती कोई आवै बिरमावै तिन्हैं मानस चरित्र महा माधुरी सुनाइ कै॥
कृपा पात्र राम के गुलाम आदि रामायणी तिनहूँ के शिष्य समरत्थ भये पाइ कै।
लोक परलोक में पवित्र यश छायो कहौ को न सुख पायो सियाराम गुन गाइकै ॥२३२॥
अवध तजे ते तन फेरि न संसार होत करिकै बिचार यों तुरन्त उठि चले हैं।
रामघाट आये सरयू पुनीत न्हाये जानकी के घाट जाय सतसंग मांहि रले हैं॥
बैठे बर भाविक समाज में प्रसन्न मन दरश परश कलि दोष दल मले है।
मानस चरित्र के प्रसंग बहु रंग सुनि जीव[illegible] आमय समूल सब गले हैं ॥२३३॥
भये जे अनन्य शिष्य तिन्हैं उपदेश यही मानस सिंगार मूल जानि सुनि लीजिये।
सरयू अस्नान मन्त्रराज जप ध्यान दिव्य दूलह स्वरूप सुधा नैन भरि पीजिये॥

अष्टयाम सेवा रंग भवन बिलास महारास रस भावना में नित्य चित्त दीजिये।
भाविक सजाती को सदैव संग भलो छिन मात्रहू विजाती को प्रसङ्ग जनि कीजिये॥२३४॥

※ श्री स्वामी माखनदासजी का जीवन चरित ※

मूल—रस मोद बिनोद सुबोध घन बासी अवध प्रमोद बन ॥
माखन माखन सरिस हृदय शृङ्गार उपासी।
कुञ्ज केलि अनुराग द्रवत मुख श्रवत सुधा सी ॥
बचन भाव संमिलित ललित लीला अनुरागी।
अवध भूमि छबि घूमि दृगन सुख लहि बड़भागी ॥
रसिकन संग सुयोग सुख बिछुरनि परम वियोग मन।
रसमोद बिनोद सुबोध घन बासी अवध प्रमोद बन ॥४१॥

टीका-माखनदास रसिक परमहंसजी के शिष्य अवध प्रमोद बनबास सुख लियो है।
मानस चरित्र महा माधुरी सुनाय गाय भाव को बताय सुख रसिकन दियो है॥
दंपति माधुरी सिंधु बूड़ेई रहत नेक पृथक भये ते दुख पूरि होत हियो है।
ऐसे अनुरागिन को सङ्ग न सोहाय जिन्हैं तिनकी समान और पातकी न बियो है २३५॥
रसिकन सङ्ग मिलि महल में जाय पद गावै रस भरे स्वर ताल को मिलाय कै।
रसिकन सङ्ग में प्रसाद स्वाद लहै काहू सों न कछु चहै रूप संपति को पाय कै॥
रसिकन सङ्ग औध बीथिन में डोलैं बात हिये की न खोलैं और बस्तु में लुभाय कै।
रसिकन सङ्ग बिन और न सोहाय ज्ञानी योगी समुदाय लगै नीरस बनाय कै ॥२३६॥

※ रसिक श्रीसियादासजी का जीवन चरित ※

मूल—रस रीति उपासन सरस मति रसिक छाप सियदास की ॥
मिथिलापुर सम्बन्ध लखै कहु कोऊ मग माहीं।
तिनहिं प्रिया सम मानि कुशल पूछत सकुचाहीं ॥
अवध मांहि श्रीरंग महल में रसिक समाजै।
रूखे जन उपदेश किये सनमुख रस राजै ॥
अब लौं रसिक समाज में मची प्रशंसा जासु की।
र[illegible] रीति उपासन सरस मति रसिक छाप सियदास की ॥४२॥

टीका-भाविक परमहंस शिष्य सियादासजी रसिक जग आश तजि धाम बास कियो है।
गुरु आज्ञा पाय रङ्ग भवन में जाय रसिकन समुदाय मध्य गान नेम लियो है॥
श्याम गौर सु छबि निहारि यकटक रहै नैन बहै नीर तन मन वारि दियो है।
जनक लडैती रघुनन्दन युगुल नेह स्वाति बुन्द चातक ज्यों प्रेम भरि पियो हैं॥२३७॥
फिरै उनमत्त जग विषय विरक्त लोक लाज कुल कानि जिन पीठि पाछे मेली है।
बोलनि हंसनि प्रेम प्रीति रसिकन संग और रीति जिन्हैं सब लागत गबेली हैं॥
अग्रस्वामी आदि रस ग्रंथन के पाठ करैं और श्रुति पाठहू लों कहत कठेली है।
बैठत उठत परा प्रेमा रति छाके रहैं भविक रङ्गीलन की चाल अलबेली है॥ २३८॥
सरयू नहाय निज आसन पै जाय पूजा करै मनलाय वारै तन मन प्रान को।
रामकोट परिक्रमा नेह भरे करै सदा जीह जपै नाम उर दंपति सु ध्यान को॥
अवध के बासी तिन्हैं लाल सम मानै मिथिला से कोई आवै तिन्हैं लली के समान को।
भाविक अनन्य सब रसिक प्रशंसत है सियादास रसिक समान और आन को॥२३९॥
निज निज ठौर सब राजत हैं भूपति से इन्द्र आदि समता न पावत गुमान को।
रैन दिन श्याम गौर रूप हिय मांहि धरे रूखे जनहूँ को करैं रसिक समान को॥
घोर भव त्रास सब देत हैं मिटाय सुखदाई सियाराम के सुनाय गुन गान को।
और सुख सकल बैकुंठ हूँ लौ त्याग करै अवध के बासी सम जगत में आन को॥२४०॥

* श्री सियानागरीदासजी का जीवन चरित *

मूल—गुण विशद सरस अनुरक्त मति सिया नागरीदास की।
नागर प्रीतम संग नागरी कुंज महल की।
दृग भोगी ततसुखी स्वसुख सम्बंध टहल की।
नित प्रति यहि रस छके रैनि दिन बिरह प्रवाही।
जानकि बल्लभ शरण सुखद गति दूसरि नाहीं।
त्याग अवध ममता अवध आश अवध बनवास की।
गुण विशद सरस अनुरक्त मति सिया नागरीदास की॥४३॥

टीका-सियादास कृपा पात्र सियानागरी के दास संत बड़भागी अनुरागी सियाराम के।
त्यागि जग आश कौशला नगर बास कियो लियो मंत्र जाप व्रत लक्ष एक नाम के।
सदाचार रीति में व्यतीत सब काल स्वर ताल मिले गावत प्रबन्ध छवि धाम के।
दंपति बदन शशि सुधा पान छाके रसिकन मध्य राजत सदन गुण ग्राम के॥२४१॥

नागर प्रीतम प्रिया नागरी सहेली सोहैं नागर अवध नर नारी सब नागरी।
दम्पति उजागर सकल गुण आगर के सेवती पदारबिन्द रूप की उजागरी॥
लीने कर व्यजन चमर छत्र दंड कर कोऊ लिये बीरी मुख जोवैं छवि आगरी।
ततसुख में स्वसुख समायो इन पायो सोई सबन मोहायो मन भायो अनुराग री॥२४२॥

* श्री शीलनिधिजी का जीवन चरित *

मूल—शीलसिंधु प्रियसख्य प्रगट जनु रामसखेजू।
अवध कुंज श्रीवन प्रमोद रस रास लखे जू॥
श्री सरयू रज प्रीति लपटि तन दिव्य भई है।
कोटि कोटि ब्रह्मादि प्रगट रज छाय लई है॥
आदि चरित रस रास के बचन काय मन दृढ़ गहे।
आदि नाम दोउ गुप्त रटि प्रगट लली लालन कहे॥४४॥

टीका-रामसखेजू के प्रिय शिष्य शीलनिधि जिन गुरु अभिलाष अवशेष पूर कीनी है।
बिपिन प्रमोद में देखायो रस रास जोई सोई सुख पाय हिय मांझ धरि लीनी है॥
नित्य आदि रामायण कथा सुख छायो महा रास में प्रसादी सहजाजू जिन्हैं दीनी है।
काय मन बचन निबाहत उभय रीति अकथ कहानी यह रीति कछु झीनी है॥२४३॥
अवध नगर शोभा देखिबे के हेत भले बिपिन प्रमोद में निवास दिव्य लहे हैं।
देह रुज भेखज जनायो मन आयो नहीं सरयू की रज अंग लाय दोष दहे हैं॥
कोटि कोटि ब्रह्मादिक पुलिन में लोटत हैं बिरजादि नदी ते महत यश कहे हैं।
धाम बासी सूकर कूकर बानरादि पशु सबै ब्रह्म की समान दिव्य देह गहे हैं॥२४४॥
एक समै बैठे श्रीबसिष्ठजी को ध्यान हिये संग सखा भाइन की लागी चटसार है।
इतने में ईस प्रेरे चोर बहुतेरे आये चारयो ओर घेरें करैं चोरी को विचार है॥
नैन खोलि पेखि श्री बसिष्ठजू की जैति भनी सुनि दुष्ट भागे तन रही न सम्हार है।
फेरि वेई आये कहे भीर कहां पाये सुनि सत्य अपनाये करयो शिष्य जिमि प्यार है२४५॥
बोलनि हंसनि रघुबंशिन की रीति यथा प्रीति परमिति नीति जहां जस चाही हैं।
इष्ट की अनन्यता बिरोध परिहार तथा नाते सनबन्ध की बकाई निरबाही है॥
अब महरानी महाराज की मर्य्याद यथा आज्ञा योग क्षेम निष्ठा सबन सराही है।
आदि नाम उर राखै लली लाल मुख भाखै ऐसो रसिकाई रसिकन अवगाही है॥२४६॥

* श्री चित्रनिधिजी का जीवन चरित *

मूल—चित्रसिंधु अति चित्रभाव शृङ्गार उजागर।
एक पुरुष श्रीरामलालजाने अति नागर॥
सख्य पुरुष गति तजे भजे श्री जनकललीजू।
रसिकन को सुख देन प्रगट जनु बालअलीजू॥
श्रीराम सखे रसिकेंद्र के हृदय कंज आशा लही।
ग्रन्थ बिरचि शृंगार रस रत्नदेव भाषा कही ॥४५॥

टीका-भाविक प्रवर चित्रसिंधु को विचित्र भाव रामसखे उर अभिलाष भले जाने है।
रसराज सागर सकल गुण आगर पुरुष एक नागर श्रीराम लाल माने है॥
रसिक समाज सुख देन को प्रगट मानो सब गुण ऐन बालअलीजू सयाने है।
रहसि विशद पंथ नवल मधुर ग्रन्थ सीताराम ध्यान रत्न मंजरी बखाने है ॥२४७॥
निज पितु दोष भये अंगुली बिहीन तऊ शोच न तनक मन लीनो है विचारिकै।
नश्वर शरीर पाय भजै रघुबीर सोई जन अति धीर वेद कहत पुकारिकै॥
सहित विराग उमगत अनुराग भये शरण सखेंद्रजू के सरबसु वारिकै।
नृत्य राघौ मिलन सुनत हरषायो मन अति सुखछायो निज रूप को संवारिकै २४८॥
अवध स्वरूप निज महल स्वरूप रघुबंशिन स्वरूप को प्रकाश उर छायो है।
बिपिन अशोक जहां नित्य रास थली तहां आलिन समेत लली दरश दिखायो है॥
करत प्रणाम पद लियो निज नाम सुनि दियो शीश पानि कर गहि अपनायो है।
रूप निज दियो रंग भवन प्रवेश कियो तब ते लडैतीजी को पत्त मन भायो है ॥२४९॥
अग्रस्वामी आदि के प्रवन्धन की रीति लखि बालअली कृत ध्यानमंजरी निहारी है।
दंपति के अंगन परसपर छाई रीति सोई रस मूल मति नीके कै विचारी है॥
अत्तर मधुर पद मधुर मधुर भाव संयुत मृदुल देव भाषा में संवारी है।
पूरण बनाई सब रसिकन मन भाई लाल उर लाई लखि निज सुखकारी है ॥२५०॥
रसिक प्रतोष मूल निरषि कौशल खंड व्याकरण विद्या बिन अर्थ नहीं आवई।
पढ़ै मन कामना पढ़ै की सों अवस्था नहीं काशी लौं गये परंतु कोई न पढ़ावई॥
विरह बिकल देखि बिप्र रूप आपु बोले देवैंगे पढ़ाय जो तुम्हारे मन भावई।
गोमती के तट थोरे काल ही में लीनो पढ़ि रसिक सभा में नित सोई रस छावई २५१॥
सुंदर सहस बर बदन मधुर तन रसिक समाज में अधिक शोभा पावई।
दोउ कर संपुट में लेखनीं सुदृढ़ गहि अत्तर सुघर पांति लिखि दरशावई।

महली समाज में बजावत मृदंग जब सुनि सुख पावै गुणी जन यश गावई।
ऐसे गुण बिमल श्रवण सुनि गाये और जानै सब रसिक कहै न बनि आवई ॥२५२॥

* श्री प्रेमसागरजी का जीवन चरित *

मूल—प्रेमसिंधु मन मीन वारि शृङ्गार धार के।
विपुल ग्रन्थ रस भरे धरे दशाधा प्रचार के॥
सख्य नर्म गति लहे कहै जिज्ञासू लौटी।
बचन तर्क युत लसे कसे जनु कनक कसौटी॥
श्रीरामसखे गुरु की कृपा चित्र कुंज रचना लही।
ब्रह्म संप्रदा ब्रह्म गुण प्रगटत सरस विहारही ॥४६॥

टीका-भाविक प्रवर प्रेमसागर सखेंद्र शिष्य दम्पति शृंगार सिंधु मज्जन प्रवीने हैं।
श्रुति स्मृति संहिता पुराण के प्रमाण आनि नृत्यराघोमिलन के मांझ धरि दीने हैं॥
जीव ईश सख्य की प्रबलता लखाय मत जेते प्रतिकूल ते समूल नाश कीने हैं।
और कहा कहै रस रहसि लोभाय मन बातन चोराय केते निज ओर लीने हैं ॥२५३॥
दम्पति मधुर छबि छाके सख्य भाव बांके श्री मनृत्यराघव की कला भरे गात है।
द्वैत सबिशेष प्रतिपादन प्रवर उक्ति युक्ति में अगर सर्ब तर्क कुशलात हैं॥
अत्तर में अत्तर लखावै अर्थहू में अर्थ भावहू में भाव सब बातन में बात है।
भाविक सभा में गुण आगर रसिक प्रेमसागर समान प्रेमसागर लखात हैं ॥२५४॥
जानकी रमण सदुपासना की दृढ़ता के मूल अनुकूल पौन पूत पद करे हैं।
सोई माध्वमत में विदित मुख्य आचारय वाक्य सब जंत्र तापिनी के अनुसरे हैं॥
श्रीगुरु कृपा ते सर्व वस्तु को विज्ञान चित्र लिखिकै प्रमाण कुञ्ज आदिन के धरे हैं।
रसिक सुजान विद्यमान ते प्रसंसत हैं ब्रह्म संप्रदाय के बृहद गुण भरे ॥२५५॥
श्रीप्रमोद विपिन निकुञ्ज सोमबट तहां दम्पति सिंहासन पै राजत सोहाये हैं।
ललित छखंड क्रीट कलंगी झुकी है इत चन्द्रिका झुकनि दोउ एक में मिलाये हैं॥
वर्तुल कपोलन पै कुण्डल हलनि नाशामोती की हलनि विहंसनि में लुभाये हैं।
छूटी अलकावली दुहूँ के भुज अंशन पै दीने गलबांही लेत चित को चोराये हैं ॥२५६॥
नवल विशाल कञ्ज लोचन बिलोकि दुहूँ ओर के समाज प्रेम अङ्कुर बढ़ाये हैं।
लीने बर व्यजन चमर दण्ड छत्र कर निज निज ठौर आली बृन्द छवि छाये हैं॥
सुख के निधान पान पावत परसपर बांटत प्रसाद सब सखन बुलाये हैं।
सोई सुख सिंधु में प्रवेश प्रेमसिंधु किये भये लीन मोन इमि फेरि नहीं आये हैं ॥२५७॥

* श्रीराम रघुनाथजी का जीवत चरित *

मूल—तुलसी कृत वक्ता प्रबल अवध मध्य महिमा प्रचुर ।
राम सनेही सुखद राम रघुनाथ उजागर ।
हाव भाव रस उक्ति युक्ति बेता अति नागर ॥
चतुर्वेद षट बोध तथा पुराण मत जानै ।
सब ते पर श्रीराम जानकी भाव बखानै ॥
विद्याकुंड निवास थल संत सभा मंडन प्रचुर ।
तुलसी कृत वक्ता प्रबल अवध मध्य महिमा प्रचुर ॥४७॥

टीका-भाविक बिशद राम सनेही सुखद राम रघुनाथ वक्ता बड़े रामायण तत्व के ।
सीताराम धाम नाम रूप लीला को प्रभाव कहि दरशावै भेद माधुरी महत्वके ॥
चारि षट आठ दश ग्रन्थ के प्रमाण बल शंका दूरि करै लाय बचन परत्व के ।
संत सभा मंडन निवास विद्याकुण्ड कियो दिये सुखजीवन मिटाय दुख सत्व के २५८॥

* कावरिया श्रीजगन्नाथदासजी का जीवन चरित *

मूल—कावरिया दृढ़ छाप लहि अच्युत कुल सेवन कियो ॥
जगन्नाथ श्रीरामचन्द्र के दास रंगीले ।
कथा श्रवण रोमांच गद्गदे बचन रसीले ॥
सेवा संत प्रधान अवध बासी सम जान्यो ।
सबं जीव सन्मान सुखद नातो निज मान्यो ॥
परम उपासक प्रेम भर शील क्षमा सम नहि वियो ।
कावरिया दृढ़ छाप लहि अच्युत कुल सेवन कियो ॥४८॥

टीका-जगन्नाथदास रामचन्द्रजी के दास भले अवध निवासी साधु सेवा में सचेत हैं ।
फिरै कामधेनु लिये कावरिया कहावै तामें सीधो जेतौ आवै सब संतन के हेत हैं ॥
दीन दुखी रंक जेते द्वार पर आवैं तिन्हैं सबन जेंवावैं आपु श्रद्धा के समेत हैं ।
इष्ट सनबन्ध धाम बासिन सो मांगि अन्न करि सनमान मरकटहूँ लौं देत हैं ॥२५६॥
शील क्षमा दया सत्य समता सन्तोष घर पूजा निज कर जोह राम नाम लेत हैं ।
सरयू अस्नान अर्चा पूजा मंत्र ध्यान कथा श्रवण सजल नैन तनहूँ अचेत हैं ॥
विमुख पाखण्डिन सों बैर नहीं प्रीति नित परम उपासना की बांधे दृढ़ सेत हैं ।
हरि गुरु सन्तन सों सांचे राम रंग रांचे कोई ऐसे संत राम भक्ति के निकेत हैं ॥२६०॥

* श्री भगवानदासजी का जीवन चरित *

मूल—अति उग्र सन्त सेवा सरस शम दम दया निधान भल ॥
कांवरिया प्रिय शिष्य महत भगवान दास बर ।
रामायण की कथा श्रवण अति प्यास प्रेम भर ॥
गुरु को नेम निवाहि भलो अनुपम सुख लीनो ।
निज कर टहल दिखाय मुमुक्षुन सर्बसु दीनो ॥
अंबरीष उपमा लहे प्रबल काल चक्री अमल ।
अति उग्र सन्त सेवा सरस शम दम दया निधान भल ॥४९॥

टीका-कावरिया थान के महन्त भगवानदास सेवा सावधान अंबरीष के समान है ।
स्वकर संवारै रघुनन्दन महल की टहल सुख पाय करै यद्यपि महान है ॥
राम कथा श्रवण रसिक सन्त संग मन मान्यो नहिं जान्यो काल चक्र को पयान है ।
तन धन धाम सब सन्तन के हेत गुरु मारग सचेत बड़ो सज्जन प्रधान है ॥२६१॥

* श्री स्वामी बेंकटाचार्यजी का जीवन चरित *

मूल—अवध बास ममता अवध समता ताकी कौन के ॥
श्रीबेंकट गुन ऐन मैन छबि राम श्याम के ।
कथा पवित्र जु कह्यो लह्यो श्रोता सु धाम के ॥
सन्त सभा के मध्य प्रचुर वक्ता जु प्रकासक ।
अर्थ भाव त्रैकाण्ड वेद वेत्ता जु उपासक ॥
नवधा दशधा भक्ति प्रिय रामलाल सुख भवन के ।
अवध बास ममता अवध समता ताकी कौन के ॥५०॥

टीका-श्री बेंकटाचारी बड़े पण्डित महान वक्ता परम सुजान सर्व शास्त्र अवगाहे है ।
धाम नाम रूप लीला गुण को परत्व गाय दम्पति उदार महा माधुरी निवाहे है ॥
कर्म ज्ञान भक्ति को स्वरूप समुझावै सुनि बचन सुधा समान श्रोता पान चाहे है ।
तिनहीं के शिष्य रामानुजदास अच्युत हैं जिनके सहास कर्म सबन सराहे हैं ॥२६२॥

* श्री रघुनाथदासजी का जीवन चरित *

मूल—श्री राम सखे रसिकेन्द्र गुरु कृपा रसिक रघुनाथ बर ॥
अवध विपिनि की बास आश जग की नहिं राखी ।

काष्ठ पात्र गूदरी नृत्यराघव रस चाखी ॥
वचन भाव रस हाव मधुर लीला अनुरागी ।
रसिक सभा अनुराग महल गायो बड़भागी ॥
नैन रसीले बैन लसि जानकि कुंज सुछात पर ।
श्रीराम सखे, रसिकेन्द्र गुरु कृपा रसिक रघुनाथ बर ॥५१॥

टीका-रामसखेजी के कृपा पात्र रघुनाथदास त्यागि जग आश श्रीअवध बास कियो है।
रसिकन वृन्द मिलि महल में जाइ लाल छवि में लुभाइ दरशन नेम लियो है॥
बोलैं मृदुबैन रस भरे नैन नेह भरे लीला रूप पै जु वारि सरबसु दियो है।
जानकी निकुंज छात ऊपर विराजै ग्रंथकार को प्रथम जिन मोह्यो वर दियो हैं॥२६३॥
सखेजू की बानी श्रीगोसाईं जू की बानी सोई उर में समानी रसिकन में कह्यो करै।
काष्ठ पात्र गूदरी कलेवर निवाह हिये दम्पति को ध्यान नाम परा बाणी सो ररै॥
सख्य भाव पूरण लसत मानो भूमिपति लीला रस सम्पति ममत्व न कह्यो परै।
लोक लोकपति सब इनहीं के भृत्य जनु रसिक समाज लखि मोद उर में भरै॥२६४॥

❋ श्रीअवधप्रसादजी का जीवन चरित ❋

मूल—रघुनाथदास सतगुरु कृपा अवध प्रसाद लही भली ॥
अवध गली अनुराग राग प्रीतम रघुनन्दन ।
जनक लली अनुराग रंगे प्रमोद बन बंदन ॥
महल रंग अनुराग सकल रंगी जहं आवै ।
रसिक सभा अनुराग रंग पद गाय सुनावै ॥
श्री सरयू अनुराग नित्त नर्म सख्य पंकज कली ।
रघुनाथदास सतगुरु कृपा अवध प्रसाद लही भली ॥ ५२ ॥

टीका-अवध प्रसाद ब्रह्मचारी रघुनाथदास कृपा अधिकारी नर्म रीति सरसाये हैं।
अवध गलिन बिचरत अनुराग भरे रसिकन संग रंग मानस छकाये हैं॥
कनक भवन जाय लोचन को फल पाय दम्पति बिलास के प्रबन्ध छंद गाये हैं।
सरयू के तीर हिये कीनो इष्ट ध्यान बैठि पुष्पक बिमान परधाम को सिधाये हैं॥२६५॥

❋ चतुर्भुजी श्रीरामकृष्णदासजी का जीवन चरित ❋

मूल—अति प्रबल रसिक मति गूढ़ गति चतुर्भुजी दुइ भुज लह्यो ॥
शास्त्र तत्व विद ज्ञान भक्ति अविरल के भेदी ।

जानकि बल्लभ सेव्य मानसी कुंज निवेदी ॥
रामकृष्ण वर नाम दास युत विरति अखण्डित ।
यज्ञदत्त अरु श्रीमुरारि मान्यौ सब पण्डित ॥
रसिक सभा मंडन प्रचुर मधुर रहसि प्रिय सब चह्यो ।
अति प्रबल रसिक मति गूढ़ गति चतुर्भुजी दुइ भुज लह्यो ॥५२॥

टीका—चतुर्भुजी रामकृष्णदासजी रसिक बर द्विभुज उपासी वेद शास्त्र तत्व वेदी हैं।
प्रवृत्ति निवृत्ति कर्म ज्ञान को विज्ञान को स्वरूप दरशावैं मूल संशय के छेदी हैं॥
जानकी बल्लभ सेवा रीति समुझाइ देत मानसी क्रिया के सर्व भाव के निवेदी हैं।
अवध निवासी सब रसिक प्रशंसत हैं नीके राम रहस्य उपासना के भेदी हैं॥२६६॥

❋ तपस्वी श्रीरामदासजी का जीवन चरित ❋

मूल—कलि तीव्र त्याग रति अवध भू महल उपासक विमल मति ॥
कोट द्वार श्रीराम घाट तपसी बर नामा ।
श्रीसरयू तट नेम कठिन सहि शीत जु घामा ॥
चारि संप्रदा सन्त रसिक भेदी तिन माही ।
सर्वभाव पहिचानि यथा बिधि सेवत ताही ॥
श्रीरामदास विरही प्रबल टेक बिवेकी शुद्ध गति ।
कलि तीव्र त्याग रति अवध भू महल उपासक बिमल मति ॥५३॥

टीका-श्रीतपस्वी रामदास महल उपासी नित सरयू पुलिन बासी मधुर स्वरूप हैं।
ओढ़े कट सरयू में मज्जत त्रिकाल सहि शीत उष्ण मंत्रराज जपत अनूप हैं॥
निज तट बास नेम प्रेम को निबाह देखि कृपा करि अमल दिखायो निज रूप हैं।
चरणन शीश नायो अभिमत बर पायो लोक यश छायो बड़े साधु धर्म भूप हैं॥२६७॥
सरयू कृपा ते रिद्धि सिद्धि बहु आई तिन्हैं फेरिकै पठाई सन्त सेवा मन भाई है।
सन्तन को इच्छित पवावै देखि सुख पावै आप पैअहार ब्रत लीनो सुखदाई है॥
साधु ढिग आवै तिन्हैं पूछै प्रिय नाम धाम सुनै भाव भेद मन मुदित सदाई है।
रामायण कथा भिन्न और नहिं भावै नित सुनत दृगन नैन आंसू झरिलाई है॥२६८॥
रसिक सिंगारिन सों कहै तुम महली हौ हम कोट द्वार पर रामजी के परे हैं।
तुम सदा राम पद पंकज को सेवत हौ हमहूँ दरश हेत यही ठौर अरे हैं॥
पूजन करत एक एक सालिग्रामन को काठ की कुटी में बैठे परा प्रेम भरे हैं।
सालिग्राम ही में राम लाल दरशन पाये अजहूँ लौं राजत मनोज्ञ तन धरे हैं॥२६९॥

एक दिन पूजा के समै में आगि लागी भागे सकल बिरागी निज आसन समेतही।
आपु बैठे रहे ज्वाल माला ताप सहे वह आपुही बुझानी इन तजे न निकेतही॥
तई में घटत घृत निरखि कै पूर्‌यौ जल सरयू समृद्धि भई आयसु के देत ही।
घटत न घीउ मालपुवन के लागे ढेर संत नीके पाय जैति बदत सहेतही॥२७०॥
शुक्लपच्छ नवमी को व्रत प्रति मास करै राम जन्म उत्सव सम्बन्ध उर लायकै।
एकादशी दिन कोट परिक्रमा करै सब संतन समेत ठौर ठौर सिरनायकै॥
सरयू की कृपा हनूमानजू की कृपा सियनाथ की कृपा ते चिर आयुष बितायकै।
शिष्यन जनाय राम भजन सु सार तन त्यागि कै असार भव पार भे बजायकै॥२७१॥

❋ तपस्वी श्रीबालकदासजी का जीवन चरित ❋

मूल—लहयो तपस्वी साध की प्रबल कुवावत बाल का॥
कोट द्वार श्रीराम घाट जहं सन्त समाजै।
परम उग्रता भक्ति योग लखि साधक लाजै॥
सेवा सिद्ध सुजान आगमी आगम भाखै।
सीतापति पद प्रेम नेम अभिअन्तर राखै॥
सर्बकाल चैतन्य भल अवध बस्यौ बहु काल का।
लहयो तपस्वी साध की प्रगट कुवावत बालका॥५४॥

टीका-बालकदास साधक तपस्वीजू की कृपा बल कारय भविष्य जिन बहुत जनाये हैं।
आज्ञा संत गुरु की बचन मन काय करैं सीतापति चरण सरोज चित लाये हैं॥
सर्बकाल सेवा में रहत सावधान सब संतन समाज में सुयश बड़ छाये हैं।
कीरति सुमति गति सम्पति सकल सुख गुरु पद सेइ जग कौने नहीं पाये हैं॥२७२॥

❋ श्रीस्वामी पैहारीदासजी का जीवन चरित ❋

मूल—शुचि सुमति सुरति चिन्तामणी भूमि घूमि रसिकन दरश॥
श्रीसरयू के तीर कुटी जानकी कुंज तट।
पैहारी के दास रास रस ध्यान लग्यौ घट॥
नाम युगुल अरु धाम युगुल अरु युगुल चरित्रा।
रूप युगुल जेहि नैन लस्यौ सब कथा पवित्रा॥
विरह अग्नि उपयोग ते त्रै शरीर गति लहि स्वरस।
शुचि सुमति सुरति चिन्तामणी भूमि घूमि रसिकन दरश॥५५॥

टीका-अग्रस्वामी शिष्य सन्तदासजी प्रसिद्ध जग तिनहीं के बंस में पैहारीदास भये हैं।
माधुर्य रहस्य गुरु ढिग नीके जानि सुबिराग उर आनि श्रीअवध बास लये हैं॥
इनहीं के सीतारामदासजी परमहंस जिनके बचन में सकल सुख छये हैं।
औरौ सियारामशरण जानकीशरण आदि शिष्य भये भाविक माधुर्य रंग रये हैं २७४॥

नाम जपै युगुल युगुल रूप हिये ध्यावै युगुल चरित्र रसिकन मध्य गावहीं।
मिथिला अवध धाम युगुल की टेक राखै युगुल प्रदच्छिणा महल की लगावहीं॥
युगुल प्रसाद चरणामृत युगुल नेम जैति भनि युगुल अनंद उपजावहीं।
युगुल सु कण्ठ कण्ठी आयुध युगुल छाप युगुल तिलक आदि मन अति भावहीं॥२७५॥

सरयू पुलिन श्रीप्रमोद बन घूमि घूमि भूमि छवि देखि नैन नीर भरि आवहीं।
कनक भवन अष्ट भवन विलास महारास रस राशि के प्रबन्ध नित गावहीं॥
कबहुँक रसिक समाज में बिराजै मिलि आपुस में दिव्य नाते हंसत हंसावहीं।
नर तन पाय ऐसो संग न करैं अघाय सो तौ पछिताय नर्क जाय दुःख पावहीं॥२७६॥

❋ श्रीरसमालाजी का जीवन चरित ❋

मूल—श्रीराम चरण रसिकेंद्र गुरु कृपा लहो रस मालिका॥
तीव्र अवधि वैराग राग भूमा सुख मानी।
नित्य अखंड अनादि महल सुखमा की खानी॥
मायिक दृष्टि अदृश्य तहां भाविक गति पाई।
यही देह करि नेह भले पहुंचे सुखदाई॥
सब रसिकन ते बिदा लै श्रीसरयू जन पालिका।
श्रीराम चरण रसिकेंद्र गुरु कृपा लही रस मालिका॥५६॥

टीका-राम चरण भाविक के कृपा पात्र साधु गुण पूरण विषै विरागी रागी सियाराम के।
जो अखंड अमल अनादि सुख एक रस लली पद कञ्ज संग ख्यात परधाम के॥
तहां निज रूप सुख छायो सोई भायो गुरु देवहूँ बतायो लायो सेवा पद श्याम के।
एहू तन मांझ ताको भास लषि पायो तब तिन्हैं बिसरायो जे विरोधी निज नाम के॥२७७॥

आठौयाम श्याम गौर रूप को विलोकि रहै आठौयाम दुहूँ को सनेह व्रत पालिका।
आठौयाम पूजा बिधि भूषण बसन साजै आठौयाम भोग को लगावै भरि थालिका॥
आठौयाम आरती उतारैं तन मन वारै आठौयाम शैन की संवारै छवि जालिका।
आठौयाम रति उपजावैं नई नई महा रास रसमई ताते नाम रस मालिका॥२७८॥

रसिकन संग कथा सुनै अनुराग भरै रसिकन संग गुण गावैं हरषायकै।
रसिकन संग औध वीथिन में डोलैं रसिकन ही में खोलैं रस रीति भरि भायकै॥
रसिकन संग रस उत्सव समाज लखैं पीवैं लली लाल महा माधुरी अघायकै।
रसिकन मध्य बिदा मांगि सरयू के तट त्यागि लोक गये परधाम छबि छायकै॥२७६॥

* श्रीस्वामी रघुबरशरणजी का जीवन चरित *

मूल—एक रीति अनूठी भाव की रघुबरशरण पवित्र मन॥
जब जहं परम एकांत रसिक जन बूझत बाता।
तब तहं पर प्रतिपाद्य अग्रस्वामी की नाता॥
यश बरणत बाणी प्रशंसि आंसू झरिलावै।
अति प्रवीण सम्बन्ध भेद कैसे लषि आवै॥
सोई भले पहिचानि है जेहि सम्बन्ध चरित्र धन।
एक रीति अनूठी भाव की रघुबरशरण पवित्र मन॥५७॥

हे विधना जो जन्म देहु संग रघुबरशरणहिं।
प्रिय सम्बन्ध उमंग विरह प्रीतम सुधि करणहिं॥
मिथिला भूमि प्रताप रूप गुण अवध बखानै।
रसिक मंडली बसे लसे माधुर्य्या सानै॥
शील सिन्धु गुरु की कृपा अति अद्भुत गति लेखिये।
प्रगट दोष हनुमत कह्यो विमल बंश सोइ लेखिये॥५८॥

टीका-रघुबरशरण प्रसिद्ध शीलनिधिजी के कृपा पात्र पूरण सखा हैं रघुराज के।
बड़े सनबन्ध के आवेशी रघुबंश रीति ज्ञानी सुखदानी सब रसिक समाज के॥
जहां कोई बूझै भाव रीति के प्रमाण कहौ तहां ग्रन्थ कहैं अग्रस्वामी महाराज के।
प्रिय गुण कहत सुनत नैन भरि आवैं नेह सरसावैं दोष त्यागि पितृ कार्य्य के॥२८०॥

अवध प्रभाव उर अन्तर में राखे रहैं मिथिला प्रभाव जात देख्यो सो कह्यौ करै।
अवध निवासिन को नेह गुप्त किये रहैं मिथिला निवासिन को प्रेम आपुही ररै॥
राघव के मित्रन को देह की समान मानै लली सनबंधिन को प्राण तुल्य आदरै।
ऐसे रघुनंदन के इष्ट प्रिय मित्रन को कविगुण गाय महा मोद हिय में भरै॥२८१॥

धर्मबीर दानबीर दयाबीर युद्धबीर सबै रघुबंशिन में भूप होत आये हैं।
राजनीति चौसठ कला कुशल विद्या दश चारि निगमागम बशिष्ठजू पढ़ाये हैं॥

सबै मरजादा पुरुषोत्तम कहत हैं पै राघव सुयश निज अति अधिकाये हैं।
तैसे ग्रंथ कर्त्ता यश इनहूँ को गाय व्याज अस्तुति लखाय निज नेह दरशाये हैं॥२८१॥

* श्री स्वामी धर्मदासजी का जीवन चरित *

मूल—विद्या कुण्ड महंत पद लह्यौ धर्म देही सुखद॥
धर्मदास आचरण सन्त मंडल को तोष्यौ।
सर्व जीव सनमान अन्न दै दै भल पोष्यौ॥
तासु शिष्य प्रहलाददास महंती पद पाई।
राजन ते कर लेत सन्त सेवा सुखदाई॥
राम जानकी भक्ति पथ अटल सुमति वहि कोउ दुखद।
विद्याकुण्ड महन्त पद लह्यौ धर्म देही सुखद॥६०॥

टीका-धर्मदास बड़े साधु सेवा धर्म धारी विद्याकुंड के महन्त सब सन्त सुखदाई है।
अन्न दान देइ सर्व जीव सनमान करै लोक की विषमताई सकल मिटाई है॥
तिनके सु सिष्य प्रहलाददासजी महन्त सन्तन के बृन्द में बड़ाई जिन पाई है।
जानकी बल्लभ सनबंध रीति भासी उर तब ते विधि निषेध बासना उठाई हैं॥२८२॥

* श्री महांत सियारामसेवकजी का जीवन चरित *

मूल—सीयराम सेवक महंत भये महत गुणाकर।
राम चरण रसिकेन्द्र कृपा दशधा के आकर॥
यथा भाव गुण दरश सरस श्रृङ्गार भावहीं।
सर्वसु महाप्रसाद नाम रसना लड़ावहीं॥
सजल नैन विरही बिमल छकै निकुंज चरित्रहीं।
बिरति क्षमा सतसंग प्रिय सुहृद नेम रति निबंही॥६१॥

टीका-करुणा समुद्रजी के पौत्र सुखसागर श्रीजानकीप्रकाशजी के शिष्य भले भ्राजे हैं।
सीयराम सेवक महन्त गुण आकर सुधाकर से जानकी के घाट में बिराजे हैं॥
जो रहस्य रामायण टीका मध्य गाई इन वेई सुख पाय निज अंगन में साजे हैं।
सन्त सुख दायक अमायक सुभाय साचे जिनके दरश ही ते जीव दुःख भाजे हैं॥२८३॥

जानकी सुघाट चारुशीला बाग कुंजन में वकुल की छाया जन मन को हरत है।
आस पास बिपिन प्रमोद ठौर ठौर जहां रसिक निवास मोद हिये में भरत है॥

तहां गुरु पादुका समीप आपु राजै जुरै भाविक समाज तब रंग बरसत हैं।
मानस चरित्र मूल रस के प्रवाहन में जीव गन न्हाय केते अजहूँ तरत है ॥२८४॥
रैनि दिन दम्पति पदारबिंद ध्यावत हैं सीताराम नाम पराबाणी उचरत हैं।
तापिनी विचार जंत्र आवरण सार पूर्व पर को संभारि तत्व हिय में धरत हैं॥
श्याम गौर माधुरी समुद्र अवगाहैं तब पुलक शरीर नैन असुवां झरत हैं।
सन्त चरणामृत प्रसाद स्वाद पावै महा महिमा सुनाय उर आनन्द भरत हैं ॥२८५॥
विरति क्षमा के तौ समुद्र से बिराजत हैं जीव दया में तो दीनबंधु से लसत हैं।
माधुर्य्य रहस्य सम्प्रदाय के प्रकाशिवे को अग्रस्वामीजू की सब रीति परसत हैं॥
युगुल उपासना परत्व के दृढ़ाइवे में करुणा समुद्र परिपाटी सरसत हैं।
बचन मधुरताई गुरुता गंभीरताई सौम्यताई में तो राम रूपै दरशत हैं ॥२८६॥

* वृन्दावनी श्रीसन्तदासजी का जीवन चरित *

मूल—जनककिशोरीशरण भये दृढ़ सन्तदास जै।
वृन्दावन में बसे प्रथम बन अवध बास लै॥
गोला गोलक अन्न लहे सन्तन सुख देही।
रसिक अनन्यन मिलै खिलै तब निज सुख लेही॥
राम चरण रसिकेंद्र के पूरण कृपा लहे दरश।
युगुलप्रिया गुरु बंधु गुण रटे लटे निज सुख सरस ॥६२॥

टीका-सन्तदास वृन्दावनी निर्गुण निरंजनी श्रीराघव की प्रेरणा ते अवध में आये हैं।
सरयू नहाय प्रति मन्दिर में जाय बर दम्पति उदार छवि लखिकै लोभाये हैं॥
जानकी के घाट सन्त सभा देखि हरषाये चरचा में माधुरी रहस्य सुख छाये हैं।
जनककिशोरीशर्ण नाम निज पायो अष्टयाम रस रसिकन हाथ में बिकाये हैं ॥२८७॥
सरयू पुलिन श्रीप्रमोदवन कुंज सीताकुंड मणीपर्वत प्रभाव जब जाने हैं।
कनक भवन रसिकन संग जाय लली लाल मुखचन्द में चकोर ज्यों लुभाने हैं॥
समै सम भाविक प्रबंधन के गान सुनि तन मन वारि रोम रोम हुलसाने हैं।
सब थल देखे मतवाद बहु पन्थ हैं पै मेरे अनुमान राम रसिक सयाने हैं ॥२८८॥
माधुर्य रहस्य के प्रधान अनुरागिन के बैनन में लली की प्रधानता लखानी है।
चले गुरु सन्त पद कंज शीशनाये हिये अति हुलसाये जहां मिथिला बखानी है॥
प्रेम के बिवश पन्थ भयो सुखदानी सीतामढ़ी में लडैती छवि प्रगट देखानी है।
आगे लखि कांचनी अवनि कोट किल्ला वाग नगर बिभाग मिथिलेश राउ रानी है ॥२८९॥

रहैं कछु काल उमगत अनुराग बरणत निज भाग श्रीअवधपुर चले हैं।
सरयू के तीर तीर गालाग्राम आये लाल स्वपन दिखाये कही रहौ इहां भले हैं॥
अन्न राशि पाई सन्त सेवा मन भाई लली ज्वर में पियाय दूध दुःख सब दले हैं।
ऐसे अनुरागिन की कथा सुखदाई सुनि जिन्हैं न सुहाई तिन्हैं नीके कलि छले हैं॥२९०॥

* श्रीजानकीप्रपन्नजी का जीवन चरित *

मूल—-श्रीजानकीप्रपन्न उग्र गुण सागर नागर।
रसिकाई के गद्य पद्य सुठि काव्य उजागर॥
लली लाल रस छके जके रसिकन की रीती।
रसिकराज गुरु रामचरण पद प्रीति प्रतीती।
पुरी लक्ष्मणा जन्म भू लक्ष भई रसराज के।
लखी जवाहिर मणिन की भूमि परखि रुचि बास के ॥६३॥

टीका-जानकीप्रपन्न सीताराम के उपासी रंगभूमि सुख राशी शिष्य करुणा निधान के।
रामायण तिलक बिशद गुण गायक अमायक अनेक भेद कहैं भक्ति ज्ञान के॥
पुरी श्रीअवध भूमि परखि सु पारखी ज्यों लक्ष्मणा की भूमि त्यागि बसे सुखमान के।
धन्य सेवा धर्म द्विज छत्री बैश्यहू जो धारै तेऊ संत सेइ पद पावैं राम ध्यान के॥२९१॥
जानकीप्रपन्न एक मूल में प्रसिद्ध कहे दूजे और करुणा निधान के उपासी हैं।
कान्यकुब्ज कुल अवतंस साधु पण्डित अखंडित बिवेक रसराज के प्रकाशी हैं॥
रामायण गीतावली प्रेम भरि गावैं संत मिले सुख पावैं कुल लोक मति नाशी हैं।
जिन्हैं अपनाये तिन्ह रामभक्ति पाये जहां हमहूँ से मन्द मति भये सुख राशी हैं ॥२९२॥
जप तप आदिक की सिद्धि बहु काल बीते रूप बिन देखे मन धरत न धीर है।
कियो है बिचार राम लीला है सुसार और सकल असार बिन भजे रघुबीर है॥
सहगऊ ग्राम निज जन्मभूमि ठाम तहं उत्सव आरंभ कियो लागी बहु भीर है।
राघव की प्रेरणा ते लक्ष्मणा पुरी में आये लीला सुख छाये शिष्य हरी उर पीर है ॥२९३॥
अवध में आवै जब अति सुख पावै लखि बिपिन प्रमोद छवि घाट राम जानकी।
रसिक समाज सतसंग सुख छावै नैन नीर भरि लावै सुनि बानी गुन गान की॥
कनक भवन लली लाल मुखचन्द हेरि एकटक रहैं ठाढ़े सुधि न अपान की।
बार बार बिधिहिं मनावैं बर देउ यही सेवैं पदकञ्ज अली ह्वै के प्रिय प्रान की ॥२९४॥
मानस चरित्र गाय हिय हुलसाय मिलि रसिक सजाती रामलीला सुख छावहीं।
बाल ब्याह बन रन राजलीला क्रमहीं से करे तऊ दूलह स्वरूप गुन गावहीं॥

बिरह बढ़ाय भक्ति पथ दरशाय गये दम्पति के धाम जहां ते न फिरि आवहीं।
ऐसे अनुरागी जन जाहि दया दृष्टि हेरै ताहि सियालाल निज मानि अपनावहीं ॥२६५॥

* मधुकरिया श्रीजानकीदासजी का जीवन चरित *

मूल—श्रीजानकी सरोज चरण के रसिक भृंग हैं।
रसिक सन्त संग सरस दरश दशधा उमंग हैं ॥
बन प्रमोद में बास अवध बासिन में प्रीती।
श्री सरयू तट प्रीति रीति मानसी प्रतीती ॥
पूर्व कृपा जिन लहि सरस दरश सुखद मृदु हासहीं।
मधुकरिया लखि सुख भयो रामचरण सुख रासहीं ॥६४॥

टीका-श्रीजानकी जानकीरमण पाद पद्म भृंग लली लाल माधुरी में छकेई रहत हैं।
गावत हंसत कभू रोम रोम नांचि उठैं बैठिकै एकांत मौन कवहूँ गहत हैं।
नाम कीरतन गुण कहत सुनत तन पुलकि उठत नैन असुवां भरत हैं॥
अवध निवासी रसिकन में प्रतीति प्रीति राखै मृदु भाषै बैन कहे न परत हैं ॥२६६॥
माधूकरी मांगि कृपा सिंधु को पवावै अवशेष आपु पावै प्रेमी नेमिन पवायकै।
मानस चरित्र पढ़ि मानसी दृढ़ावै कछु निशा अवशेष रहे सरयू नहायकै॥
एक दिन सीताकुंड मज्जत निहारी छवि गिरे मुरछाय रूप बारुणी को पायकै।
बीते तीनि याम तऊ परे हैं बेहोस तन कौन कहै आप इत दशा सो जनायकै ॥२६७॥
राघव सुजान जानी भयो अति काल भक्त नेम निरवाह जैसे होय सोई कीजिये।
तिनहीं को रूप धरि माधूकरी झोरी भरि करुणा निधान ढिग जाय कह्यो लीजिये॥
नीके कै पवाय उत प्रेमी को जगाय कही भई है अबार जाय माधूकरी दीजिये।
आये माथनाय बोले लीजिये प्रशाद गये अबहीं पवाय बात कैसे के पतीजिये ॥२६८॥
अचरज पाय बोले करुणा निधान यह राघव की रीति प्रीति कही नहीं जात है।
सब दिन सब काल सुहृद अनन्यन के सुहृद सनेही एक राम ही लखात है॥
शिष्यन बोलाय सो प्रशाद बरताय दियो भजौ सियारामै सब जा में कुसलात है।
लखौ बिनु हेतु कृपा धर्म सेतु राघव की जो न लखै ताको जन्म बादिही बितात है॥ २६९॥

* श्रीराजराघौदासजी का जीवन चरित *

मूल—अति प्रबल उपासक शुद्ध मति राज राघवीदास प्रिय ॥
मधुर भाव संमिलित ललित महली अधिकारी।

गति अनन्यता छाप भाव आवेस खुमारी ॥
श्रीरामचरण सद्गुरु सुजान प्रिय आज्ञाकारी।
बिपुल द्रव्य को बारि निछावरि तन मन वारी ॥
करुणा सिन्धु जू पवन सुत जपत जानकी रसिक हिय।
अति प्रबल उपासक शुद्ध मति राज राघवीदास प्रिय ॥६५॥

टीका-श्रीराज राघौदास बड़े भाविक विशुद्ध मति प्रबल उपासक अनन्य इष्ट धाम के।
करुणा निधान हनुमान सुमिरत दोनों मंत्र को जपत रैनि दिन निज नाम के॥
मानस प्रसिद्ध महा माधुरी के रच्छक स्वपच्छ पच्छ मंडि पच्छ खंडि मत बाम के।
बिमुख को धीर बीर काल सम भासै रामदासन को दास है मधुर सीताराम के ॥३००॥
श्रीराज राघौदास ऐसे भाविक नरेशन के कबिन को अगम अगोचर चरित्र है।
रूप अनुरूप कोई उपमा न देखि परै कैसे कहि गावे बाणी लागत बिचित्र है॥
एक अवलंब कृपा सिंधु सब कहै कृपा दृष्टि अपनाये ताकों कृपा एक मित्र है।
सरयू को नीर प्रबिशत शीत लागै न्हाये सबै दुःख भागै होत शीतल पवित्र है ॥३०१॥
प्रथम ही करुणा निधान को स्वरूप हेरि गुरु शिष्य धर्म की प्रधानता सँवारी है।
जीव ईश नाते को निदान दास धर्म जानि दासहू में मधुर स्वरूप टेकधारी है॥
नीति मरयाद धर्म रूप भूप राघवजी सोई सनबन्ध निज नाम हितकारी है।
इष्ट नाम युगुल में कौन बड़ छोट करै ताते निज युगुल उपासना बिचारी है ॥३०२॥
युगुल कमल युग छरी कर धारे रहै युगुल जयति बोलि मोद उपजावहीं।
आगे रामचरित गोसाईं हनुमान तिन पाछे ध्वजा धारी आपु चलत सोहावहीं॥
महल महल जहां जहां हनूमान लसैं संग संग तहां तहां सेवा सुख छावहीं।
युगुल प्रदच्छिणा युगुल करि दंडवत युगुल प्रसाद चरणामृत लै पावहीं ॥३०३॥
होतही प्रभात नित प्रात क्रिया करि जाय सरयू सुनीर लखि मोद उर में लहै।
सियाराम उर्मिलारमण मांडबी भरत श्रुतिकीर्त्ति शत्रुहन आदि नाम को कहै॥
प्रति नाम मज्जत प्रमोद उर में भरत सीताराम भक्ति अनपायिनी सदा चहै।
हरे हरे करुणा निधान ढिग जाय करि दंडवत पादोदक नेम सों सदा गहै ॥३०४॥
रसिक समाज रैनि दिन जहां होत रहै रसिक निवास नाम मन्दिर बनायो है।
करुणा निधान निज महल पधारे जब सीताकुंड तब ते निवास मन भायो है॥
इष्ट सेवा हेत एक पांय में निगड़ देखि बोले दोउ पांयन में बन्ध क्यों न नायो है।
एक मुद्रा कूप में गिरत दूजो गिरवायो बीछू कर डस्यो दूजी बार लै कटायो है ॥३०५॥

बड़ेई रसिक सदा भाव के आवेशी नित बैठत उठत इष्ट नाम सुमिरत है।
जागत सोवत रघुबंश मणि जैति भनि युगुल विहार थल तीरही रहत है॥
करुणा निधान परिपाटी के बिरोधी तिन मुखहु न देखै सोई यतन करत है।
नाम धाम रूप लीला गुण के परत्व मांहि ऊनता जो करै तापै दंड लै धरत है॥३०६॥

इष्ट नाम अङ्क युत मुद्रा पंच धारे अर्द्धचन्द्र बिन्दु श्रीयुत तिलक रेख करे हैं।
शिष्यन समेत हनुमन्त पद बन्दि राम दुर्ग मध्य मारग चलत प्रेम भरे हैं॥
मानस रामायण को पाठ जौ लौं करै कोई सादर सप्रेम तौ लौं होत तहां खरे हैं।
आगम निगम सबही को मूल मानस है सर्व जगगुरु श्रीगोसाईं उर धरे हैं॥३०७॥

बिपिन अशोक रासथली मध्य सीताकुंड निकट कुटीर साजि रह्या मन भाई है।
निज कर तुलसी सुमन बाटिका संवारी कमल मृणाल दल फूल शोभा छाई है॥
महल महल फूल क्रमही सो पहुँचावै कोई सन्त हठी तिन रीति लै मिटाई है।
गढ़ पर जाय कर पटकि जनाई तब कोपे हनुमान निज सैना सो भगाई है॥३०८॥

भये केते शिष्य रसराज अङ्क लये तिन्हैं दम्पति महल सिद्धि सेवा में लगाये हैं।
शिष्य बहुतेरे दास्य रस में प्रबीन रामजानकीशरण भले कृपा फल पाये हैं॥
सरबसु अर्पि निज करुणा निधान पद कमल दरश हेत बिरह बढ़ाये हैं।
जीरन बसन त्यागि नूतन ज्यौं धारै नर तैसे तन त्यागि निज रूप सुख छाये हैं॥३०९॥

※ श्री जनकराजकिशोरीशरणजी का जीवन चरित ※

मूल—सब भाँति भलाई प्रिय कथा जनककिशोरीशरण की॥
सब रसिकन सुख देन भलो सिद्धांत बिचार्‌यो।
महल अटारी झुकी नैन प्रत्यक्ष निहार्‌यो॥
रची उपाय अनेक यथा गति ताहि सुधारी।
कहुं मिथिला कहुं अवध महल कुञ्जन के चारी॥
रसराज कथा कहुं ग्रन्थ रति जिज्ञासू दृढ़ करण की।
सब भांति भलाई प्रिय कथा जनककिशोरीशरण की॥६६॥

टीका—बन्दौं श्रीजनकराजकिशोरीशरण पद कंज कथा जिनकी रसिक सुखदायिनी।
दुःख मूल दारुण अविद्या को बिनाश करै सीताराम पाद पद्म भक्ति की बिधायिनी॥
जानकी रमण दासरथी रघुनन्दन के नाम रूप लीला धाम गुण अनुपायिनी।
शरण में आये तिन्हैं जग ते छुड़ायें निज रूप दरशाय किये रसिक रसायिनी॥३१०॥

कुंभज संभव दिग कोन में सुदामापुरी नागर ब्राह्मण घर जन्म शुचि पाये हैं।
बालपने ही ते जग विषयं बिरागी कोई संत संग लागि श्रीअवधपुरी आये हैं॥
महल में लली लाल स्वपन दिखायो कृपासिंधु तहं आइ निज जानि अपनाये हैं।
तारक युगुल मंत्र पंच संसकार दीये तीव्र बुद्धि पेखि विद्या पढ़ै में लगाये हैं॥३११॥
करुणा निधान रस रीति परिपाटी देखि कृपासिंधुजी से निज हिये की जनाई है।
रसिक अली सुनाम पायो रंग छायो हिये मानसी में महल गली की दृष्टि पाई है॥
कनक भवन सप्त आवरण कुंज रंगभवन निकुंज ज्योति पुंज दरसाई है।
झुकी है अटारी मणि रतन संवारी प्रति मन्दिर में आलिन की भीर सरसाई है॥३१२॥
देखि सभा भवन प्रकाश चकचौंधी लागी दया दृग हेरि लली आली निज प्रेरी है।
आय बांह गही ततछिन जूथ जूथेश्वरी सनमुख लाई सो लिवाय छवि हेरी है॥
भूली देह सुधि अंग सात्विक जनायो चरणन शीश नायो परा रति मति घेरी है।
शीश कर फेरि अङ्क लीनी है उठाय हंसि दीनी है जनाय नई आई एक चेरी है॥३१३॥
रसिकन रीति प्रीति लोक बेद बाहरी है ताते यह ठौर कथा थोरे में लखाई है।
नैन खोलि देखे दूरि कृपा सिंधु बैठे समै पाय ढिग जाय बात हिये की जनाई है॥
दया दृष्टि हेरि बोले भई लली लाल कृपा रहौ यही रंग में जो प्रभु मन भाई है।
रह्यो कैसे जाय जो पै प्रगट देखाय स्वामी होउ जो सहाय सोई करौ आज्ञा पाई है॥३१४॥
राउ चिरगांउ गुरुदेव आज्ञाकारी ताहि तुरत बुलाय कही आज्ञा एक कीजिये।
बड़ेई हमारे सब शिष्य में प्रधान जाय इनके समीप भाव भेद जानि लीजिये॥
भयो सतसङ्ग बाढ़यौ रस को उमंग कह्यौ महल प्रसंग सत्य मानिकै पतीजिये।
मुद्रा दश सहस महल हेत लावो तुम ता में पांच सहस तुरन्त हमैं दीजिये॥३१५॥
गुरु आज्ञा पाय शुभ दिन सुधवाय पद कंज शीश नाय इष्ट काज ओर ढरे हैं।
आये कामकाजी तिन मन्दिर कीनी ससाजी सन्त भये राजी जे रहस्य रङ्ग भरे हैं॥
बाजन बजे हैं मृदु रागन सजे हैं तहां काठ ईंट सोरसो कठोर मन परे हैं।
कुंज कुंज आलीन के भूषन उद्दीप कर साधन समूह सब घुंघुरुन जरे हैं॥३१६॥
समै सम भोग को लगावै बहु भांतिन के मेवा पकवान पाग कंद की मिठाई है।
अचवन मधुर सुगंध बहु साज बीरी भोग को लगाय रसिकन बरताई है॥
ताही समै काम छोड़ि पास सब आवै शील पाय कहै लागी भूंख दीजै मन भाई है।
जोइ जोई मांगै ति हैं सोइ सोई देत बर भोजन बसन जेतो लागै सुखदाई है॥३१७॥
जीरन बसन तन मलिन न देखि सकै नूतन बनाय गन्ध बीरी तेहि देत है।
लोकहुं में जेते दरबारी सब स्वच्छ रहै दम्पति समीप कौन प्राकृत को हेत है॥

अष्ट कुंज मन्दिर को द्वार एक बनवायो शोभा सरसायो सों चुराय मन लेत है।
चतुर चूड़ामणिजू बात सब जानी गोप्य लीला हम ठानी ताहि करत सचेत है॥३१८॥
सन्त मुख बोले व्याह लीला क्यों न करो यह समय सोहावन हेमन्त ऋतु आयो है।
इनहूँ के आई मन बात सुखदाई लागी लीला के सरूपहू में मन ललचायो है॥
एक तौ उदारताई महल बनायबे में इतहू में धन मन वांछित लगायो है।
कृपा सिंधु देखि कै एकांत में बुलाय कही ऐसो तुम कियो या में लाभ कहा पायो है॥३१६॥
लाभ हमैं यही सब सन्त सुख पाइहैं महल छवि हेरि इत लोचन सिराइहैं।
अष्टयाम सेवा सब क्रमही सों ह्वै हैं राग रंग गुणी जन सब काल मिलि गाइहैं॥
सावन हिंडोल रास व्याह होरी जन्म दिन उत्सव विधान यश लोकन में छाइहैं।
भक्ति ते विमुख तिन उर शूल व्यापिहैं जो आपु के हृदै में मेरी रीति कछु भाइहैं॥३२०॥
कृपा सिंधु ईश इच्छा औरै पेखि ताही चरण धन को जो आगम सो तुरत मिटायो है।
महल के बासिन सों प्रगट विरुद्ध पेखि सेवा सौज सकल बिलग करवायो है॥
बैठिकै एकांत इन मन में बिचारी यह कियो का विहारी जो प्रतीप दरशायो है।
ऐसो जो पै रह्यो तुम काहे न प्रथम कह्यौ सुनि कै लडैती उर बैठि समुझायो है॥३२१॥
कृपा सिंधु चरण सरोज शीश नायो लली लाल रंग छायो उर हरष न सोक है।
सेवा सौज लीला रूप राघव को सौंपि चले रूप के आवेश में न जान्यौ कहां लोक है॥
जहां जहां रहै तहां कोन इन्हैं चहै तत्व काहू से न कहै आपु रहै निरमोक है।
शरण में आवै तिन्हैं लेत अपनाय कोऊ होय सियाराम की शरण में न रोक है॥३२२॥
अद्भुत कहनि तैसी रहनि बिचित्र देखि केते जग त्यागिकै निवृत्त शिष्य भये हैं।
तिनहीं के संग वर्ष द्वादश बिताय जालवन ते श्रीलाडिलीशरण संग लये हैं॥
अवध में आय रंग महल विराजे मिले रसिक समाज तहां महा सुख छये हैं।
बिरह की पाती लिखि निकट पठाई लाल नीके उर लायकै प्रसाद निज दये हैं॥३२३॥
लली बल राखि उर मिथिला सिधारे मानवती पाछे नायक ज्यों लाल संग चले हैं।
मिथिला की भूमि रमणीयता निहारि सुधि पाछिली बिहारि के रहस्य रंग रले हैं॥
सियाराम शरण के हेतु मुकुतावली सिद्धांत की बनाई पाय मोह दल मले है।
ऐसे ग्रन्थ चौबीस बनाये सन्त मन भाये जिन में उपासना के तत्व धरे भले हैं॥३२४॥
कोई काव्य कला गान कला रस मूल कहै सर्व रस मूल सीताराम निरवारे हैं।
दम्पति उपासना के अंग जेते गाये लखि सीताराम रत्न मंजूषा में सब धारे हैं॥
ललीजू ने चारुशीला अली को जनायो सोई समै इन जाइबे को मन में विचारे हैं।
लोक बिसराये निज दिव्य तन पायो ताको तेज इहां छायो आपु महल पधारे हैं॥३२५॥

* श्रीरामहजूरीजी का जीवन चरित *

मूल श्रीरामहजूरी गुरु कृपा लसे हजूर निकुंजही॥
दयाराम भये दया रूप मिथिलेश लली के।
बसी बुंदेल सु खण्ड मंडि यश अग्र अली के॥
सियादास सुख रासि रसिक रस रंग महल की।
दई कृपा जिन लई भई सुख चहल पहल की॥
विरति सुरति रस रीति मति गति रसिकन रस पुञ्जही।
श्रीरामहजूरी गुरु कृपा लसे हजूर निकुञ्जही॥६७॥

टीका-श्रीरामहजूरीजी बड़े भाविक प्रवर जिन वात्सल्य भावही में रामलाल पाये हैं।
राज पुत्र कौशल्या सुवन रघुचन्द लाल वत्स बालकहिं रघुलाल को रिझाये हैं॥
भोजन प्रकार चारि विधि के सुधारि अष्टयाम अनुसार बर भोग को लगाये हैं।
शरण जे आये तिन्हैं भाव में छकाये सदाचार दरशाय निज धाम को सिधाये हैं॥३२६॥
तिनहीं के शिष्य दयारामजी रसिक जिन सियादासजी से रसराज रीति पाई है।
मिथिला अवध चित्रकूट को परत्व जानि झांसी जाय गुरु पद सेवा अपनाई है॥
नाम धाम रूप लीला सुयश सुनाय सियाराम की उपासना रहस्य को लखाई है।
बालमीक रामायण माधुरी रहस्य गाय भाव की अनन्यता बुन्देलखण्ड छाई है॥३२७॥
अष्टयाम भीतर जो दम्पति मनोज भाव कादम्बिनी धारा भाव भूमि भरि दीने है।
समै अनुकूल होरी झूलन हिंडोल राम रास व्याह लीला करि निज सुख लीने है॥
अग्र स्वामी आदि के प्रबन्ध भाव हेरि हेरि अलिन के संग गोप्य केलि रस भीने हैं।
रसिक समाज परतोषि प्रेम पोषि उर बिरह बढ़ाय कै अवध गौन कीने हैं॥३२८॥

* पुजारी श्रीरामचरणजी का जीवन चरित *

मूल—श्रीरामचरण प्रिय नाम शुचि रसिक पुजारी छाप बर॥
गान कला अति निपुण सरस प्रेमी बड़भागी।
काष्ठ पात्र लौ वित्त आश तृण इव जग त्यागी॥
जानकि बल्लभ कुंज केलि रागिनी सोहाई।
पूर्वाचारय रसिकवर्य बानी सुखदाई॥
श्रीमोहनदास महंत गुरु कृपा लख्यो रस रास घर।
श्रीरामचरण प्रिय नाम शुचि रसिक पुजारी छाप बर॥६८॥

टीका-भाविक प्रवर रामचरण पुजारी नाम गान कला कुशल परम अनुरागी हैं।
त्यागि जग आश मान्यौ अवध सुपास काष्ट पात्र लगि वित्त जग विषय विरागी हैं॥
गावत प्रबन्ध पूर्वाचारज बनाये सब समय सोहाये सन्त जन भीर लागी हैं।
रसिक प्रशंसि तजे तेऊ परशंसत हैं ऐसे धन्वन्तर कोई सन्त बड़भागी हैं॥३२६॥
दच्छिन बुन्देलखण्ड नगर निवास तहां महन्त मोहनदासजी के शिष्य भये हैं।
भाव दिव्य पायो मन पूजा में लगायो दिव्य दम्पति की सेवा में अमित सुख लये हैं॥
सन्त सङ्ग मिलिकै अवध पुरी आये छबि देखिकै लोभाये रसिकन रङ्ग रये हैं।
जानकी सुघाट पूर्व तुलसी की बारी तहां बैठिकै सुमंत्र जाप ध्यान मोद छये हैं॥३३०॥
अवधपुरी की जैसी महिमा बिलोकि तैसी मिथिला की पेखिकै अमित सुख पाये हैं॥
अवध में आय पुनि देखिकै बिहार थली चले चित्रकूट घोटा राम रंग छाये हैं॥
गुरु के समीप जाय चरणन शीश नाय रहे कछु काल फेरि वृन्दाबन आये हैं।
तहां के रसिक जनहूँ की मृदु बांणी सुनि मानिकै अभेद उतहू के पद गाये हैं॥३३१॥
रहे कछु दिन पुनि कोशला निहारी लखि अवध बिहारी छबि महा सुख छये हैं।
रसिक समाज में प्रबन्धन को गान करि समै अनुसार दरशाय भाव दये हैं॥
प्रथम ही जानकी सुघाट सुखसाने पुनि जानकीचरणजी के प्रेम बश भये हैं।
भक्तमाली आदिक को माधुरी लखाय रसराज सरसायकै महल निज गये हैं॥३३२॥
रसिकन अंग सब अंगन में धारे खोज किये अति अगम अथाह से लसत हैं।
काम क्रोध लोभ मद मत्सर रहित ज्ञान भक्ति के सहित राम कथा में निरत हैं॥
आगम निगम पंथ भाव सब जाने सब सन्त सनमाने नहिं द्वेष परसत हैं।
रसिक प्रधान जेते सकल सराहैं ऐसे भाविक रसिक बड़े भागन मिलत हैं॥३३३॥

ॐ श्रीजानकीचरणजी का जीवन चरित ॐ

मूल—श्री पद युत जानकीचरण भाविक आवेशी।
रसिक प्रशंसित विरति गूदरी कुञ्ज सुदेसी॥
छके छकावत भाव दरश देखे बनि आवै।
पद रचना अति चित्र सुनत रसिकन मन भावै॥
क्रिया मानसी भजन बर बहिरङ्ग लहि आश भल।
दयाराम बर कृपा लहि सरयू कुञ्ज सुवास थल॥६९॥

टीका-भाविक श्रीजानकीचरण प्रेम पूरण नवल लली लाल रस ख्याल में लुभाने हैं।
जागत सोवत एक रस रीति प्रीति बिन रूप को जनाये उनमत्त से लखाने हैं॥

समै सम गावत गवावत प्रबन्ध रस भरे उमगत परा दशा में समाने हैं।
रसिक समाज भाव निरखि प्रशंसै तब इनकी समान एई रसिक देखाने हैं॥३३४॥
लोक व्यवहार ते बिराग लायवेटा जाय रसिक मोहनदासजी के शिष्य भये हैं।
सन्तन को संग पाय अवध में आय दिव्य सरयू नहाय शिव मन्दिर में गये हैं॥
सियाराम छवि एक एक ते अधिक देखी कथा कीर्तन सतसंग नये नये हैं।
मिथिला की महिमा सुनत मिथिला सिधारे भूमिका निहारि कछु औरै रंग रये हैं॥३३५॥
संध्या समै नैन मूदि ध्यान के करत रंग भूमिका प्रकाश हिय माँहि सरसायो है।
कनक निकेत मणि महल अटारी नारी नरन की भीर युत मारग दिखायो है॥
महल उजेर दण्डमात्र लौं बिलोकि उर अति सुख पायौ नैन नीर भरि आयो है।
चले शिरनाइ श्रीअवध पुरी आये लली रूप को प्रकाश स्वच्छ मानस में छायो है॥३३६॥
अवध में आय रसिकन मध्य जाय सब दीनी है जनाय बोले कृपा यह भई है।
सीखौ सनबन्ध रीति गुरुन समीप जाय इनहूँ बिचारि मन सीख मानि लई है॥
स्वामी पास गये तिन आज्ञा दीनी जावो दयारामजी से पावोगे रहस्य रसमई है।
सुनत ही जाय तिन आरति सुनाई तिनहूँ के मन भाई सो बताय रीति दई है॥३३७॥
चले सुख पाय चरणन शीश नाय देह मोह को बहाय श्रीअवध फेरि आये हैं।
सरयू नहाय हनुमन्त पद शीश नाय महल में जाय निज लोचन सिराये हैं॥
सावन हिंडोल दिव्य दंपति की पेखि छवि स्तम्भ कंप आदि सब सात्विक जनाये हैं।
सारद बिवाह होरी रास के बिलासन में मानसी प्रत्यक्ष दोउ एक फल पाये हैं॥३३८॥
ओढ़े फटी गूदरी जीरण पट धारे कटि चाल उनमत्त लखि बाउर बखानिहैं।
माधूकरी मांगि सब संग मिले खात लखि बरण बिहीन धर्म कर्म हीन भानिहैं॥
आपुस में बोलत हँसत देत लेत पेखि बिषयी पाखण्डी मनुमुखी उर आनिहैं।
अज्ञ मन्दमति सतसंग ते बिमुख नर रसिक स्वरूप कोऊ कैसे करि जानिहैं॥३३९॥
लोक वेद बिहित विशेष औ समान धर्म कर्म को बिचारि कै प्रधान उर आनिहैं।
जाति विद्या धन आदि मद मतवारेन की संगति को त्यागि सतसंग भले ठानिहैं॥
नाम रूप धाम लीला गुण की प्रधानताई ईशता की हद माधुरी की हद जानिहैं।
भाविक अनन्य के बचन में बिश्वास जाके रसिक स्वरूप सोई नीके पहिचानिहैं॥३४०॥
श्याम गौर रूप सिंधु मीन ज्यों मगन रहैं अन्यथा स्वरूप किये लोभ कोह काम के।
सुत बित्त नारि धन मातु पितु बंधु जन सबै जिन त्यागे नेह देह गेह नाम के॥
आठौयाम दम्पति की सेवा प्रतिपालै जिन औरहूँ बिसारे फल जानि बिन दाम के।
दशधा संपति पाय धनद से राजैं ऐसे भाविक अनन्यन सों अंतर न राम के॥३४१॥

कनक भवन नित दम्पति दरश हेत शीत उष्ण बरषा न रैनि दिन पेखे हैं।
सैन समैहू में पट खुले जिन पाये भयो मन्दिर प्रकाश लली लाल अवरेखे हैं॥
रंग भरो ऊंच नीच भूमि को न भास जिन्हैं राजसुत आपुही बचावत में लेखे हैं।
ग्रंथहूँ में रस अंग सब जिन गाये ऐसे नेम प्रेम पूरण रसिक नहिं देखे हैं॥३४२॥
दरशन किये निज कुञ्ज चले जात खल चोर मिले बीचही बसन लै पराने हैं।
इनके तन कहिये हरष न शोक आयो राजसुत दण्ड दै बहोरि छीनि आने हैं॥
दम्पति के आगे वेश्या आदिहूँ जो गावैं तिनहूँ के संग आपहू गवाय सुख माने हैं।
भाविक प्रधान जेते सकल बखानैं ऐसे परम रसिक नैन एक ही लखाने हैं॥३४३॥
दम्पति के सन्मुख महल मध्य जाय होरी सामा को मगायकै समाज किये ख्यात हैं।
भोग लगवाय बीरी गंध अरपायकै प्रसाद स्वाद पाय भये पुलकित गात हैं॥
लली पद कमल में जीव को बसायो निज रूप सोई पायो जो अलीन में बिभात हैं।
क्रिया काल देह गंधि नेकहू न आयो ऐसे अन्त के समै में कोई योगी जन जात हैं॥३४४॥

* श्रीरामगुलेलाजी का जीवन चरित *

मूल—अवध धाम बासी महत सदा कृतारथ रूप सब॥
गैबीराम पवित्र कथा पुनि राम गुलेला।
धनुर्यज्ञ को नेम लख्यो बनरा अलबेला॥
अमरदास बर शिष्य पौत्र हरिदास उपासी।
मंगलदास महंत टिला सुग्रीव खवासी॥
रिद्धि राम हनुमत कृपा लहिहौं अमल अनूप कब।
अवध धाम बासी महत सदा कृतारथ रूप सब॥७०॥

* श्रीनृसिंहदासजी का जीवन चरित *

मूल—सदा चरण रज सिर धरौं जे महन्त बिमला अवनि॥
जन्म स्थान महंत भले श्रीजगन्नाथ बर।
निर्वेदी बलिरामदास कामदा रास घर॥
आचारी अस्थान पूर्व पीताम्बर दासा।
रघुबरदास अनूप भक्ति पथ अमल प्रकाशा॥
श्रीनृसिंह हरि भजन बर मोहन यश बरणै कवनि।
सदाचरण रज सिर धरौं जे महंत बिमला अवनि॥७१॥

टीका-श्रीनृसिंहदासजी कनक भौन उत्तर में राजत महन्त बिरकत के कहावई।
हरि गुरु सन्त सेवा कथा कीरतन नेम दम्पति पदारबिन्द प्रेम उर भावई॥
दीनबन्धु बंश में प्रसिद्ध हरि भजन महन्त सीतानाथ पदकञ्ज नित ध्यावई।
मोहनदास रतन सिंहासन महन्त भये जिन्हैं राम कथा छोड़ि और न सोहावई॥३४५॥

* पुजारी श्रीरामगोपालजी का जीवन चरित *

मूल—अति धन्य महन्ती पद अटल भाग्य अवध रसिकन सुखद॥
प्यारे राम गोपाल पुजारी महल खवासी।
जानकि बल्लभ टहल अमल रस रीति प्रकाशी॥
धन्य बैष्णवदास रसिक जन सुख उपजावत।
रसिकन की बाणी अलापि मन मोद बढ़ावत॥
प्रेमी जन गावत नटत रसिक सभा जय जयति बद।
अति धन्य महंती पद अटल भाग्य अवध रसिकन सुखद॥७२॥

टीका-कनक भवन लली लाल के उपासी इष्ट सेवा सुखराशी प्रेम पूरण लसन्त हैं।
परम गम्भीर हिये बसै रघुबीर नीति संयुत शरीर तैसे गुणहूँ अनन्त हैं॥
आठौ याम दम्पति बदन को निहारै नैन सबको निहारि काज करत तुरन्त हैं।
रसिक अनन्य जेते सकल प्रशंसत हैं बड़े बड़भागी प्यारे रामजी महन्त हैं॥३४६॥
श्रीगोसाईं कृत नित रामायण पाठ करैं राम आज्ञा ही में सब काम को सुपास है।
जनक लडैती पद कंजही में योग क्षेम और काहू सों न राखैं तृणहूँ लौं आस है॥
सूधी रीति सूधे बैन तिन सों प्रसन्न रहै धर्म ध्वजी पाखण्डी सों रहत उदास है।
सन्तन में सन्त और महन्त में महन्त बड़े प्यारे राम दासन में प्यारे रामदास हैं॥३४७॥
राम गोपालजी बड़े रसिक उपासी पाय महल खवासी रससिंधु में समाने हैं।
तन धन प्राण अर्पि लली पद कंजन में मन बच काय फेरि और नहिं जाने हैं॥
आगम निगम सद्ग्रन्थ को सुसार पाय आठौयाम दम्पति की सेवा में लुभाने हैं।
जागत सोवत इष्ट रुचि पहिचानै ऐसे लाखन में कोई एक चतुर सयाने हैं॥३४८॥
कनक भवन बासी सन्त औ महंत जेते भये और होहिंगे जे अबै बर्तमान हैं।
चरण कमल रज बन्दत हौं सब केरे महल के चेरे तेऊ विश्व के प्रधान हैं॥
अली रूप ह्वैकै अंतरंग सुख लूटत हैं द्विधा रूप सबको कहत जे सज्ञान हैं।
वृत्तलता गुल्मतृण भूमिका लौ चेतन है जिनके हृदै में सदा दम्पति को ध्यान हैं॥३४९॥

बैष्णवदासजी रसिक सियाराम के उपासी उदासी महान गान कला में प्रधान हैं।
अग्रस्वामी आदि के प्रबन्ध को अलापैं सन्त सकल सराहैं जब लेत ऊंची तान हैं॥
नर्म सख्यताई रघुचन्द सुखदाई प्रीति मानस में छाई सोई रैनि दिन ध्यान हैं।
नाम धाम रूप लीला गुण को परत्व श्रीगोसाईं को महत्व प्रतिपादन सयान हैं॥३५०॥

※ श्रीमहान्त बालकृष्णदासजी का जीवन चरित ※

मूल—गान करत गद गद गिरा बालकृष्ण यश युगुल पद॥
अग्रस्वामि बाणी रसाल पद बालअली के।
मधुरचारय हरी आदि रस रसिकवली के॥
प्रेमसखी अरु कृपासखी परिकर की बानी।
प्रेम नेम नित रसिक सभा तिन और न जानी॥
अवध बास थल महत पद सुद्ध भाव सुख बिमल प्रद।
गान करत गद गद गिरा बालकृष्ण यश युगुल पद॥७३॥

टीका—कावरिया स्थान के महन्त बालकृष्णदास बड़े अनुरागी रसिकन सुखदाई है।
जब ते लडैती को स्वरूप बर धार्यो इन तब ते हिये में नित वही छवि छाई है॥
अग्रस्वामी आदि के प्रबन्धन को गान करैं रूप लाल परैं तन सुरति भुलाई है।
रसिकन रीति सन्त सेवा में प्रतीति दोऊ मन बचकाय ते समान बनि आई है॥३५१॥

※ रंगमहल के श्रीसरयूदासजी का जीवन चरित ※

मूल—अवध बिहारी लाल छवि सदा रहत भीज्यो हियो॥
कोशलेश राजाधिराज के महल अंतरी।
रंगमहल प्रतिरूप निहित हित प्रीति यन्तरी॥
बहुत काल ते गुप्त रह्यो तेहि प्रगट करे हैं।
सरयूदास महन्त रास रस रंग भरे हैं॥
कूबा प्रताप श्रीअवध में रसिकन को बहु सुख दियो।
अवध बिहारी लाल छवि सदा रहत भीज्यो हियो॥७४॥

टीका—सरयूदासजी महन्त रसिक सिंगारी सदा अवधबिहारीजू के रंग रस छाये हैं।
रसिकन सुखद बिशाल सब काल मन भायक बिशद रंग महल बनाये हैं॥
किये हैं अनेक उतसाह औ बिवाह लली लाल प्रिय हेत लखि जन सुख पाये हैं।
भाविक अनन्य परिपाटी सरसायवे को परधाम बासी यहि लोक मध्य आये हैं॥३५२॥

रसिक सिंगार सखी जैपुर निवासी सन्त कूबा शुचि साधु सेवी बिदित महान हैं।
तिनहीं के शिष्य श्रीसरयूदास रामदास दोनौं एक भाव पगे रसिक सुजान हैं॥
उठी उतकण्ठा श्रीअवध के दरश हेत चले सुख पाय त्यागि मोह मद मान हैं।
आये मन भाये धाम दरशन पाये जाय सरयू नहाय कियो दम्पति को ध्यान हैं॥३५३॥

हनुमन्त पद शीश नाय जन्म स्थान जाय बसे कछु काल मन अति सुख पायकै।
कनक भवन लली लाल दरशन हेत पूजन पगे हैं रस रूप में लुभायकै॥
बिरह बिकल तन प्राकृत सोहाय नहीं छूटै तन यतन सो करिये बनायकै।
करिकै सलाह जन्मभूमि थल ऊँचे चढ़ि दोनों गिरे इष्ट पद पङ्कज को ध्यायकै॥३५४॥

रामदास त्यागि तन रूप दिव्य पायो भयो निज मन भायो लाल अली निज कीनी है।
इन्है सब सन्त धाय लाये हैं उठाय निज दोय दृग हेरि तन पीड़ा हरि लीनी है॥
कोई दिन बीते सुख पाय मिथिला सिधाये चल्यो नहीं जाय तब अश्वगति लीनी है।
पटना समीप साह पुरा एक ग्राम तहां राम लीला करि भक्ति सबहुन दीनी है॥३५५॥

मिथिला में क्रमही सों तीरथ नहाय रंगभूमि थल जाय बट दरशन कियो है।
करिकै प्रदच्छिणा पिनाक दरशन पाय अवधपुरी को फेरि वही पन्थ लियो है॥
गोलाग्राम निकट ममारखपुरा में आये दम्पति बिरह के बिवश भयो हियो है।
राघव सुजान प्रीति सांची पहिचानि एक रामदास बणिक मिलाय दिव्य दियो है॥३५६॥

मुद्रा पञ्चशत लै अवधपुरी आये जाय वृन्दाबन अवधबिहारीजी को लाये हैं।
महारानी कृपा करि सन्मुख निवास दियो लली रुख पाय रंगमहल बनाये हैं॥
करिकै प्रतिष्ठा सिया लाल पधराये सब सन्तन बुलाय दिव्य भोजन कराये हैं।
दम्पति सनेह सुख शिष्यन जनाय चिर आयुष बिताय निज धाम को सिधाये हैं॥३५७॥

रसिक अनन्यन को रूप आपु धारे औरहू को धनुबान आदि चिन्ह सब देत हैं।
दम्पति के अङ्ग अङ्ग भूषण अनूप साजि माधुरी देखायकै रुखाई हरि लेत हैं॥
सीताराम कथा बिन और न सोहाय बालअली आदि रसिकन रीति सुख हेत हैं।
युगुल प्रसाद बिन और नहीं पावैं ऐसे कोई कोई युगुल उपासना सचेत हैं॥३५८॥

※ भक्तमाली श्रीहरीदासजी का जीवन चरित ※

मूल—रसराज उपासक भक्त यश कथंन निपुण हरिदास भये॥
अर्थ सुबाचा शक्ति भक्ति दशधा रंग भीने।
जानकी बल्लभ कुञ्ज केलि गुण गान प्रबीने॥

श्रोता चातक विपुल रहे आशा स्वाती लहि ।
विपुल बिंदु इमि देत भाव में उक्ति युक्ति कहि ॥
अवध धाम बासी सबै संत सभा आदर दये ।
रसरास उपासक भक्त यश कथन निपुण हरि दास भये ॥७५॥

टीका—भाविक प्रवर भक्तमाली हरीदासजी मधुर जब कहैं बैठि कथा भक्तमाल की ।
श्रोता सब चातक ज्यों भाव स्वाति बिन्दु पाय आश प्यास मेटि लसै बिषै रस ख्याल की ॥
अवध निवासी सब सन्त आदरत जिन्हैं बूझै ते बतावैं हम आली रघुलाल की ।
परम निशङ्क शङ्क औरन की दूरि करैं बन्दौं पदरेणु ऐसे प्रणत दयाल की ॥३५६॥

कथा भक्तमाल की सरस जिन गाई पुनि मानस रामायण की भाव रीति पाई है ।
औरहूँ गोसाईं जी के ग्रंथ अर्थ जे कुशल बिपुल प्रमाण कहि शङ्का लै मिटाई है ॥
बालमीक रामायण भागवत भारतादि चरित अपार पार श्रोत न जनाई है ।
मंदहास संयुत बचन मधुराई पर वारि फेरि डारि दीजै अमृत मिठाई है ॥३६०॥

बेट मध्य रसिक मोहनजी के साधक जो साधूराम तिनहीं को संग भल कियो है ।
अवध में आय रंगमहल बिराजे जब तब ते अनन्त सुख रसिकन दियो है ॥
उमादत्त पास जाय वृहद कोशलखंड पढ़त में उनहूँ को मन हरि लियो है ।
कनक भवन लली लाल को बदन हेरि गान के करत होत पुलकित हियो है ॥३६१॥

ख्यालीराम आदिन को भावना दृढ़ाय हरि इच्छा बल पाय बाराणसी को सिधाये हैं ।
रामलीला मध्य निज लोचन सफल किये बन्दनपाठकहूँ को भाव में छकाये हैं ॥
तीरथ नहाय प्राग सन्तन सहाय पाय चित्रकूट कामद निहारि सुख पाये हैं ।
ललित अहिल्या बाई मन्दिर में जाय सीताराम छबि हेरि बिन दामन बिकाये हैं ॥३६२॥

कथा उपरान्त गान सारंगी बजाय करैं औरहूँ रसिक जन संग में बिराजहीं ।
भाविक प्रबन्धन को गान सिंहनाद सुनि रुच्च मतवादी फेरु स्वान इव भाजहीं ॥
कामद परिक्रमा समाज के समेत करैं उडुगण मध्य पूर्णशशी इव राजहीं ।
नाचै कोई गावै कोई मृदंग बजावै तहाँ देखन को आवै जन त्यागि निज काजहीं ॥३६३॥

जहाँ जहाँ उत्सव समाज होय तहां तहां आदर समेत सब सन्तन बुलाये हैं ।
बदन प्रसन्न मृदुबाणी गान तानन सों शिला उर नवनीत जिमि पिघलाये हैं ॥
आये जे शरण तिन्हैं तुरत सनाथ किये रसिकन रीति वेनी आदि को सिखाये हैं ।
रामायण पारायण मंदाकिनी तीर गाय नश्वर शरीर त्यागि महल सिधाये हैं ॥३६४॥

* पण्डित श्रीउमादत्तजी का जीवन चरित *

मूल—उमादत्त पण्डित विमल अवध कुञ्ज बनबास लिय ॥
नाम रूप लीला प्रताप अरु धाम विशेषी ।
श्रीसरयू तट पुलिन कुञ्ज की लीला पेषी ॥
मानस उज्ज्वल रीति प्रीति रसिकन में प्रीती ।
अति उदार शंसै निवृत्त चित अद्भुत रीती ॥
संस्कृत भाषा काव्य रचि सन्तन को सुखराशि दिय ।
उमादत्त पण्डित विमल अवध कुञ्ज बनबास लिय ॥७६॥

टीका-उमादत्त पण्डित अखण्डित सुनेम प्रेम राजै सभा नित्य चक्रवर्ती महाराज के ।
सीताराम लषण भरत रिपुसूदन के मंगल सुसाजैं मिलि वृन्द द्विजराज के ॥
शील क्षमा दया बातसल्य के तो सागर से सख्य के सहायक भवन रसराज के ।
आगम निगम शास्त्र विद्या सिंधु मन्दर से मथिकै निकासे गुण रत्न रघुराज के ॥३६५॥

सरयू निकट यामदग्नि तपोभूमि ताके पूरब दिशा में जन्मभूमि सुखदाई है ।
द्विज संसकार सब भये काशी गये तहां ब्याकरण शिक्षा भाष्य अन्त लगि पाई है ॥
चले शास्त्र पढ़ि विश्वनाथ पद शीश नाय पेखी सभा जहां तहां कोविद बड़ाई है ।
देखे बहु भूमिपति कोई नहीं नीति रस त्यागि अन्यगति बिन्ध्याचली उर ध्याई है॥३६६॥

लोचन उघारिकै बिलोकी चहुँदिशि भूमि ईश इच्छा प्रेरित पुनीत पत्र पायो है ।
बांचे ते बिलोके श्रीगोसाईं के कबित्त धिक् जीवन जो राम पद नेह न लगायो है ॥
भई अरबरी कहा कियो नरहरी बात सांची देखि परी तब यहै उर आयो है ।
त्यागि जग आश कियो अवध निवास पेखि सकल सुपास क्षेत्र न्यास मन भायो है॥३६७॥

आये अनुरागी जे अवधपुर बासी तिन निज निज भावना की चरचा चलाई है ।
राघव ब्रह्मण्यदेव गुण मन भायो उर अति सुख पायो नैन नीर झरिलाई है ॥
श्रीपरमहंस भक्तमाली आदि भाविक जे तिनके समागम में परारति छाई है ।
अंक में बैठाय शिर घ्राण कर फेरनि में उपमा न पाई कवि मतिहू लजाई है ॥३६८॥

जेतो धन आवै तेतो विप्रन को बांटि देत आपु फलाहार बृत्ति रीति शुचि लई है ।
पाठ जेतो पढ़ै तिन्हैं सबको पढ़ावत हैं ऐसे राम भक्तन सों रीति कछु नई है ॥
नाम रूप धाम लीला न्यूनता न सहि सकै बिमुखी पाखण्डिन को ताड़नाहू दई है ।
आठौयाम बारौमास लीला नई नई करैं सन्त गुण गावैं यह धन्य रसिकई है ॥३६९॥

* श्री रामगुमानीदासजी का जीवन चरित *

मूल—सब संत सराहत वृत्ति भलि राम गुमानी दास की ॥
अवध बास अति प्रीति दृष्टि सरयू तट प्यारी।
लई भ्रमर की वृत्ति संत सेवा दृढ़धारी॥
मधुर भाव गति दास्य रीति निर्वेद बलो हैं।
कथा द्रवत अनुराग श्रवत अखियां जु भली हैं॥
प्रबल उपासक अवध पथ लह्यो भली विधि आश की।
सब संत सराहत वृत्ति भलि रामगुमानीदास की।।७७॥

टीका-ग्रंथ करता के प्रिय साधक गुमानी रामदास सुखदानी सब सन्त मन भाये हैं।
अवध प्रभाव सुन्यो देख्यो पुनि नैन भरि दंपति बदन छबि माधुरी लुभाये हैं॥
कावरिया स्थान के महन्त भगवानदास तिनकी कृपा ते साधु सेवा मन लाये हैं।
आवत औ जात में परिश्रम निहारि बसे सरयू पुलिन में भजन सुख छाये हैं॥३७०॥
माधुर्य उपासना के अंग सजे अंगन में मधुर युगुल सेवा मन अति भाई है।
मधुर भ्रमर वृत्ति नेम को निबाह नित्त मधुर लगावै भोग सन्त सुखदाई है॥
बोलनि मधुर दास भावना मधुर कथा सुनत मधुर नैन नीर भरिलाई है।
मधुर रसिक कोई वृति की सराहै लखि लज्जित ह्वै तिनके चरण शीश नाई है॥३७१॥
कोई जन रुक्ष अति कटुक बचन कहैं तबहु न छोभ कछु निज उर लावहीं।
युगुल प्रसाद रूखो सूखो पै मधुर लागै अनत के छप्पन प्रकारहू न भावहीं॥
अवध निवास तृण कुटीहू महल सम भिन्न ईश पदहू को मिलत नशावहीं।
दंपति सुछबि रागे और तृण तुल्य त्यागे ऐसेन की पदरेणु विधिहु मनावहीं ॥३७२॥

* श्रीरामानुजदासजी का जीवन चरित *

मूल—श्रीराम सखे रसिकेंद्र पथ रामानुज शुभगति लहे ॥
सख्य अंग रस रंग और सुन्दर मृदु बोलनि।
रसिक संत संग सरस सुखद प्रमोद बन डोलनि॥
श्रीसरयू के तीर भीर रसिकन की लागी।
कुटी बांधि तहं बसे तिनहिं सेवत बड़भागी॥
कावरिया प्रिय पौत्र की कथा सरस कलिमल दहे।
श्रीरामसखे रसिकेंद्र पथ रामानुज शुभगति लहे ॥७८॥

टीका-श्रीरामानुजदासजी रसिक सुखदाई सख्य रस सरसाई/मृदु बोलनि सोहाई है।
चित्रनिधि विमल सखेंद्र पथ में प्रसिद्ध तिनकी कृपा ते रघुबंशी रीति पाई है॥
रसिकन मध्य रामलीला में स्वरूप बने सोई छवि आठौयाम उर मध्य छाई है।
मिथिला अवध नेह नाते में सरस ताते रसिक सिंगारिन सों प्रीति अधिकाई है॥३७३॥
मंत्री मित्र सुहृद विभाग चतुरंग दल जानिबे की पद्धति स्वबुद्धि ते बनाई है।
राघव प्रतोष काज विदूषक रीति साजि मानवती आलिन की उन्नता मिटाई है॥
प्रेमसिंधु प्रेम बशं विपिन प्रमोद लखि कुटी मृदु मधुर मनोहर सजाई है।
सरस बिवाह आदि उत्सव अनेक साजि त्यागि लोक गये जहां और सब भाई है॥३७४॥

* परमहंस श्रीशीलमणिजी का जीवन चरित *

मूल—श्री परमहंस बरहंस सम मनन मांझ भीज्यो हियो ॥
पक्ष सख्य संबंध सरस सारांश सुखद बर।
चलनि माधुरी रीति प्रीति संबंधित मनहर॥
भाव अनूपम क्षीर नीर निर्णय नित भावत।
मानस प्रीतम रहसि रमत रंग सहज सोहावत॥
प्रबल उपासक मित्र गुण गण सोइ मुक्ताहल कियो।
श्रीपरमहंस बरहंस सम मनन मांझ भीज्यो हियो ॥७९॥

टीका-श्रीसीताराम रसिक परमहंस भाविक प्रवर सुखदायक सुभायक सरस हैं।
राजपुत्र सख्य सनबन्ध पच्छ धारे रसराज रीति बारेन के प्रेम बरबश हैं॥
मधुर चलनि बर बोलनि हँसनि मृदु माधुरी बिलोकनि में करत स्वबश हैं।
भाव भेद मंडन विरुद्ध पच्छ खण्डन समर्थ काजु पायो बड़े भाग ते दरश हैं॥३७५॥
प्रथम अवस्था माँहि ग्रहण संन्यास कियो बसन कषाय युत वेष शुभ साजे हैं।
हिंगलाज आदि देश देशन अनेक फिरे जहां देखे तहां सीताराम शुभ भ्राजे हैं॥
राघव की प्रेरणा ते अवधपुरी में आये सरयू नहातही सकल दुःख भाजे हैं।
सरल सुभाव देखि रसिकन अपनाये पायकै प्रतोष सन्त सभा में बिराजे हैं॥३७६॥
श्रीपैहारीदासजी की रहस्य पुनीत देखि सहित विनीत जाय शिष्य शुचि भये हैं।
भुजन धनुषबाण कंठ से युगुल कंठी सुंदर तिलक मंत्रराज श्रुति लये हैं॥
नाम सीतारामदास रसिकन मन भायो नाम धाम रूप के परत्व सुख छये हैं।
भाव भेद सकल बिचारि गुरु आयसु लै रामानुजजी से सख्य भाव रंग रये हैं॥३७७॥

सुंदर सुशील देखि शीलमणि नाम दियो वय क्रम यथोचित सकल दरशाये हैं।
रघुबंशी मातु पितु जाति पांति भांति एक राघव मिलन के विवेक सरसाये हैं॥
भयो निज रूप को प्रकाश यही तनहीं में इन्द्रिन के विषम विकार लै नशाये हैं।
रसिक सुजान उर अन्तर की जानि जिय मानि तुल्य प्राण निज महल बसाये हैं॥३७८॥

जब ते महल को निवास सुख छायो उर तब ते लडैतीलाल कृपा अधिकाई हैं।
रसिक समाज बहु आवै सुख पावै देखि सादर बैठाय रस चरचा चलाई है॥
निज निज भाव की अधिकता जनावै धृष्ट बचन सुनावै तहां मति न समाई है।
मानहुँ सिंगार बीर इनहीं को रूप धरे निज निज सैन साजि करत लराई है॥३७९॥

अवध महान मानसर के निवासी लाल क्रीड़ा के भवन कुंजबन में रहत हैं।
नीर क्षीर इमि जीव वृन्द विषे अंबु मिले इष्ट सनबंधिन को न्यारे कै गहत हैं॥
क्षण क्षण नई नई लीला को विवेक गुण चुनि चुनि मुक्ता सम योग को लहत हैं।
औरन की चाल जिन चाल आगे फीकी लागै रसिक परमहंस ताही ते कहत हैं॥३८०॥

※ श्रीरघुबरदासजी का जीवन चरित ※

मूल—कनक भवन मणि कुञ्ज बसि क्रिया मानसी सफलता॥
रघुबरदास अनूप वृत्ति रसराज छके हैं।
रैवासा गुरु धाम नाम युग सुधा जके हैं॥
जानकि बल्लभ मधुर रूप आसक्त हियो है।
युगल चरित बहु ग्रंथ भजन अवलम्ब लियो है॥
अंतर लखि बाहर लषत मधुकरिया मन बिमलता।
कनक भवन मणिकुञ्ज बसि क्रिया मानसी सफलता॥८०॥

टीका- रघुबरदास बड़े भाविक प्रवर नित कनक भवन मणिकुंजन में बसे हैं।
परारति सिंधु में मगन मन मीन जिमि क्षणिक बियोग होत ताप तन लसे हैं॥
युगल चरित्र महा माधुरी को स्वाद पाय श्याम गौर रूप मोह जाल बीच फसे हैं।
जानकीचरण बिरचित ग्रंथ बल पाय मानस छकाय और रंग में न धसे हैं॥३८१॥

प्रथम रैवासे गुरुकुल सदाचार रीति नीके सब सीखि उर बासना मिटाई है।
अवध में आये रसिकन मन भाये सनबंध रीति रघुबर सखे ढिग पाई है॥
मानसी की रीति परतंत्र में न बनै ताते माधूकरी वृत्ति शुचि सहज उठाई है।
रसिकन संग निज आयुष बिताय बहिरंगा रति त्यागि अन्तरंगा सरसाई है॥३८२॥

※ श्री ठाकुर दासजी की जीवन चरित ※

मूल—सब सन्त प्रशंसत बिमल मति ठाकुर मोहन गुरु उदित॥
कनक भवन दृढ़ बास साधु सेवी गुण आगर।
मधुकर वृत्ति प्रधान अनूपम भाव प्रभाकर॥
रसिक एकान्तिन पाइ जाइ बर अशन पवावत।
साधु रूप गुण लखि अभाव रंचक नहिं लावत॥
नित रैनि दिवस शृंगार की नवल भावना रति मुदित।
सब संत प्रशंसत विमल मति ठाकुर मोहन गुरु उदित॥८१॥

टीका- ठाकुरदास रसिक मोहनदासजी के शिष्य भाविक अनन्य रस उज्वल निधान हैं।
कनक भवन बसि माधूकरी वृत्ति गही ताही में रसिक जनहू को सनमान है॥
सन्त चरणामृत के सीसे भरि राखै सन्त भुक्त जो प्रसाद ताको मानत प्रधान है।
शील क्षमा बिरति दया प्रतोष दम सम नीति प्रीति रीति लीने दंपति को ध्यान है॥३८३॥
सरयू अस्नान नित्य नेम सों करत मुख नाम उचरत प्रति मंदिर ह्वै आवहीं।
माधूकरी वृत्ति में अधिक जोई आवै ताहि परम एकान्तिन को जायकै पवावहीं॥
उत्सव समाजन में जुरैं अनुरागी तहां बैठि झीने स्वर तिन संग में गवावहीं।
मिथिला सों आवैं कोई रसिक सजाती तिन्हें उठि हरषाय मिलि हिय में लगावहीं॥३८४॥
एक दिन सरयू अस्नान करैं मोद भरे कर पुट मध्य शालिग्राम को न्हवाये हैं।
हाथ ते छुटकि बड़ी धार में प्रवेश किये तिनके निमित्त महा बिरह बढ़ाये हैं॥
अन्न जल बिन दिन बीते आठ जब तबै रसिकन जाय बहु भांति समुझाये हैं॥
संत आज्ञा मानि राखे कोई दिन प्रण करि दंपति को ध्यान निज रूप सुख छाये हैं॥३८५

※ पुजारी श्रीरामप्रसादजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीरामप्रसाद कृपाल के प्रवर पुजारी छाप सहि॥
कथा श्रवण रोमांच प्रबल श्रोता दृढ़ नेमी।
जानकि बल्लभ रूप युगल पथ पावन प्रेमी॥
सदा प्रवाही नैन बैन गद गद प्रिय बोलनि।
माला कर मुख नाम अवध बर बीथी डोलनि॥
भले अवध पथ लहि सुखद रूप प्राप्ति बर जाय लहि।
श्रीरामप्रसाद कृपाल के प्रबल पुजारी छाप सहि॥८२॥

※ पुजारी श्रीरामदास तथा जैरामदासजी का जोवन चरित ※

मूल—रसिक जानकी लाल के पूजा पर एकै सुजन ॥
श्रीपदयुत जैरामदास जानकी घाट बर।
नितहि लडाये बिबिध बस्तु लै प्रेम हाट कर ॥
अंसुवा झरि झरि जात नाम जब लेत जानकी।
पूजा मधि मुख चूमि उपज वात्सल्य ध्यान की ॥
बालानन्द महंत गुरु कृपा अवध अनुराग धन।
रसिक जानकी लाल के पूजा पर एकै सुजन ॥८३॥

टीका- बालानंदजी के शिष्य नाम शिरीरामदास जानकी रसिक के पुजारी सुखकारी हैं।
अष्टयाम सेवा नित प्रेम सों करत नाना भोग लै धरत लली लाल हितकारी हैं ॥
गोद लैकै चूमैं कर चरण सरोज मुखचंद छबि हेरि हेरि जात बलिहारी हैं।
पुलकित तन नैन अँसुवा झरत जब नाम उचरत लली जानकी बिहारी हैं ॥३८६॥
दूजे और ख्यात हैं पुजारी श्रीजैरामदास कनक भवन बसि पूजा सुख लियो है।
बार बार दम्पति बदनचन्द हेरि हेरि रोम रोम नाँचि उठै पुलकित हियो है ॥
तन मन धन निज आतम समर्पि भले भुक्त अवशेष मात्र माँगि सुख जियो है।
नैन बिन भये तऊ प्रेम नये नये पद गाय ऊँची तान सुख रसिकन दियो है ॥३८७॥

※ श्रीमहासखीजी का जीवन चरित ※

मूल—महासखी मिथिला अवनि जन्म दिव्य शुचि भाव लहि ॥
जनककिशोरी कृपा भक्ति रागी अनुरागी।
पुरुष भाव आवेष नहीं तिय तन शुचि पागी ॥
श्रीसरयू तट कुञ्ज कुटी बसि रसिकन माहीं।
नापित अंग न छुयो षोड़शी बालक चाहीं ॥
चित्र भाव की प्रबलता आशै गूढ़ उपाव कहि।
महासखी मिथिला अवनि जन्म दिव्य शुचि भाव लहि ॥८४॥

टीका-माखनदासजी के सनबंध सुख पाय महासखी लली लाल की परम सखी भई है।
मिथिला अवनि निमि कुल जन्म दिव्य लहि पुरुष आवेश गति कबहुँ न लई है ॥
सरयू के तीर रसिकन भीर मध्य रहैं अवसर पाय बोलै बाणी रस मई है।
नये नये दंपति के भूषन बसन लसैं नये नये भोग सुख योग केलि नई है ॥३८८॥

※ श्रीभद्रवतीबाईजी का जीवन चरित ※

मूल—कलियुग कराल भ्रम जाल तजि भद्रवती निबही भली ॥
राजबंश में जन्म परश मायिक पति नाही।
त्रिगुण पार श्रीरामलाल पति मुख छबि चाही ॥
जनक लड़ैती शरण लई भगि खिरकी के मग।
प्रबल तीव्र अनुराग बसी प्रमोद रसिकन सङ्ग ॥
श्रीसरयू तट कुञ्ज रचि फिरि नाहीं तेहि दिशि चली।
कलियुग कराल भ्रम जाल तजि भद्रवती निबही भली ॥८५॥

टीका-भद्रवतीबाई राजवंश में जनम पाई बारेही ते राघव चरण रति रागी है।
गुणातीत अमल अनूप रूप रघुपति जानकी के पति में सनेह मति जागी है ॥
होन लग्यो व्याह रच्यो सबन उछाह इत भयो उरदाह विधि हमहिं अभागी है।
तिय हठ ठानि कछु रैनि गई जानि हिय अति सुख मानि खिरकी के मग भागी है ॥३८९॥
हिय अनुराग ताते मारग न जानि पर्‌यो राघव सहाय पाय अवध में आई है।
जानकी के घाट श्रीपुजारी सतसंग पाय लली लाल सेवन में सुरुचि बढ़ाई है ॥
रसिकन संग गुण गाय रघुनन्दन के मायिक पुरुष गंध स्वप्नहूँ न पाई है।
सरयू नहाय गुरु पद शीश नाय तन प्राकृत बिहाय प्रभु धाम को सिधाई है ॥३९०॥

※ श्रीगङ्गाबाईजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीगङ्गाबाई गङ्ग सम उज्ज्वल रस यश जल भरी ॥
जनक लली सहचरी भरी तरङ्ग रस लीला।
दर्शन ते अघ दूरि पूरि पावन सम लीला ॥
रङ्ग महल जे खास जासु श्रुति ध्यान धरे हैं।
कनक भवन संज्ञा प्रत्यक्ष रस रङ्ग भरे हैं ॥
पिय जानकि बल्लभ लाल ढिग एकटक करजोरे खरी।
श्रीगङ्गाबाई गङ्ग सम उज्ज्वल रस यश जल भरी ॥८६॥

टीका-गंगाबाई गंगा की समान गौर दिव्य तन उज्ज्वल मधुर रस सलिल सों भरी है।
लीला रति बिबिध तरंग उठै छण छण बचन गंभीरताई पेखे मति हरी है ॥
कनक भवन सुख सागर समानी लली लाल सुखसय्या ओर जासु मति ढरी है।
सिया सिया नाम जीह ऊपर में राखै उर अंतर में लाल ढिग जोरे कर खरी है ॥३९१॥

राज कुल गुरु विप्र नागर पुनीत घर जैपुर शहर में सुजन्म शुचि पायो है।
प्राकृत पुरुष संग दुःख प्रद मानि नित सुखद पुनीत रघुनाथ मन भायो हैं॥
सन्त संग पाय श्रीअवधपुरी जाय चित्रनिधि की शरण में सकल सुख छायो है।
रसिक समाज में बिराजी अनुराग भरी कथा के सुनत नैन नीर भरि आयो है॥३६२॥
श्रीपरमहंस आदि भाविक पदारबिंद रेणु शिर धारि स्वच्छभाव सरसावती।
सावन हिंडोर आदि समय समाजन में अलिन समेत लली लाल छवि छावती॥
भोजन प्रकार चारि भांति के सुधारि रमणीय भरि थार निज हाथ सों पवावती।
सरस सहास चन्द बदन बिलोकि बार बार बलिहारी लै प्रमोद उपजावती॥३६३॥
दम्पति सेवा की सौज बिबिध मगाय निज आसन पै बैठि परा प्रेम में समानी हैं।
जुरि जुरि आई सब नगर लुगाई सुनि बाणी मधुराई भाव रीति में लोभानी हैं॥
पांय परि पूछैं कृपा करिकै बताओ सोई जैसे लाल प्यारी छवि उर में समानी हैं।
सुनिकै बचन हरे हरे समुझाय कहै मिथिला अवध सनबन्ध सुखदानी हैं॥३६४॥
होतहीं प्रभात उठि सरयू नहाय मन्द गति मन्द स्वर ध्यान मंजरी उचारी है।
मन्दिर में जाय छबि दम्पति को पेखि नीके हिय की जनाय पदरेणु सिर धारी हैं॥
व्यारी बनवाय लली लाल को पवाय भुक्तशेष आपु पाय जान्यौ समै सुखकारी है।
शीश नाय जोरिकर मांगि बिदा सन्तन सों बिन श्रम त्यागि तन महल पधारी हैं॥३६५॥

* श्रीकौशल्यादासीजी का जीवन चरित *

मूल—श्रीसरयू कुञ्ज सुबास थल एवाई दशधा रंगी॥
श्रीकौशल्यादासि जानकीदासि महा तप।
राम जिवा लघुरूप भट्ट युग मंत्र महाजप॥
युगल नाम अरु युगल रूप नैना अनुरागी।
श्रीसरयू तट हेरि हेरि गावति बड़भागी॥
अति धन्य उदय सम्बंध पद तिय तन सिय दर्शन पगी।
सरयू कुञ्ज सुबास थल एवाई दशधा रंगी॥८७॥

टीका-श्रीकौशल्यादासी बातसल्य भाव पागी नित जानकी की दासी सों लडैती प्रिय आली है।
रामजीवाबाई को बखान्यो लघुरूप ताकी मंजरी अवस्था ललीजू ने प्रतिपाली है॥
सरयू के तीर कुंज कुंज हेरि गावती हैं कबहुँक नेह नाते देति मृदु गाली है।
धन्य सोई नारी भजै अवधबिहारी ना तौ नारी नहीं जीव खग बन्धन की जाली है॥३६६॥

* श्रीसियारामशरणजी का जीवन चरित *

मूल—सियरामशरण कीरति कथा श्रवण सुखद रसिकन सुमति॥
अनुरागी मति सरस कला बिंद काव्य रसीले।
बिबिध छन्द के बंद पदाबलि चटक रंगीले॥
मानस भजन प्रधान लली लालन रंग राचे।
कठिन काल गति त्यागि तीव्र बिरही सुठि सांचे॥
श्रीराजराघवीदास प्रिय जानकिवल्लभशरण गति।
सियरामशरण कीरति कथा श्रवण सुखद रसिकन सुमति॥८८॥

टीका-श्रीराज राघौदासजी के शिष्य हैं शृंगारी नाम सियारामशरण रसिक सुखदाई है।
मानसी करत मृदु अंगनि परशि तन पुलकि उठत अंसुवन झरिलाई है॥
उर न समाई सोई स्वच्छ अनुराग भरि दम्पति रहस्य की पदावली बनाई है।
सिद्धांत मणि मुक्तावली सिद्ध फल पाय रस रहे हैं लुभाय और बात न चलाई है॥३६७॥
तिनहिं के रघुबीरशरण सुशिष्य भये जिनको युगल महा माधुरी लखाई है।
मिथिला में जाय रसिकाधिराज प्रेम बश निकट बिहार कुंज कुटी मन भाई है॥
कांचन बिपिन कमला नदी के तीर तीर डोलत बिरह बश सुरति भुलाई है।
ऐसे अनुरागिन के चरित सुमिरि मन रह्यो निरालम्ब अवलंब गति पाई है॥३६८॥

* श्री रामजानकीशरणजी का जीवन चरित *

मूल—गुरु निष्ठ नहीं कोउ तीव्रतम राम जानकीशरण सम॥
गुरु आज्ञा जो ऊंच नीच कछु नाहि विचारत।
रैनि दिवस नहिं गनत सुनत प्रिय काज सुधारत॥
जानकि बल्लभ प्राप्ति साधना दूसर नाही।
माला जप तप नेम सबं आज्ञा के माही॥
सब संत प्रशंसत बिमल मति अवध बिहारिणि कृपा क्षम।
गुरु निष्ठ नहीं कोउ तीव्रतम राम जानकीशरण सम॥८९॥

टीका-श्रीरामजानकीशरण भये गुरु निष्ठ बड़े जिनकी समान कोई आवत न ध्यान में।
रैनि दिन ऊँच नीच कछु न बिचार करैं कहै सोई करै प्रिय काज जो जहान में॥
जानकी बल्लभ प्राप्ति साधन अनेक कहे गुरु आज्ञा सरिस न एकऊ प्रधान में।
रसिकाऽवतंस सन्त सकल प्रशंसत हैं ऐसे गुरु निष्ठ कोई नहीं बर्तमान में॥३६९॥

* श्री अयोध्याप्रसादजी का जीवन चरित *

मूल—कान्यकुब्ज बर विप्र कुल प्रगटि रसिक मत उर धरयो।
प्रथम बयक्रम लाग भाग वश गुरु के शरणै।
वारि अपनपौ सबं अंग दृढ़ नेम जु धरणै॥
जाल तज्यौ जालवन गवन सरयू तट कीनो।
श्रीप्रमोदबन बास रास रस सुमिरन लीनो॥
मातृ बंधु सब सङ्ग लै बर्यो अयोध्यापुर बस्यो।
कान्यकुब्ज बर बिप्र कुल प्रगटि रसिक मत उर धर्यो॥९०॥

टीका-कान्यकुब्ज विप्र श्रीअयोध्यापरसाद नाम रसिकअली पदारबिंद के शरन है।
जालबन जाल तजि अवध में आये जहां दम्पति बिहार योग श्रीअशोक बन है॥
माता बंधु भगनी तिया समेत लालन के ख्याल में लुभाने जहां क्रीड़ा के सदन हैं।
ऐसे अनुरागिन को गावत सुयश उर छावत प्रमोद जिन लीनो नाम धन है॥४००॥

* श्री जनकदुलारीशरणजी का जीवन चरित *

मूल—विप्र सनावट सुवन बर रसिक जनकजा शरण गुरु॥
गुरु शराप घर तज्यो भज्यो कोशलपुर आयो।
परम उपासक राम रास रस रसिक सोहायो॥
संग नारि सुकुमारि लली की चतुर अली बर।
जानकी बल्लभ कनक भवन छबि पली भली पर॥
जनकदुलारी शरण सुचि रसिक सन्त रज चरण उर।
बिप्र सनावट सुवन बर रसिक जनकजा शरण गुरु॥९१॥

टीका-जनकदुलारी के शरण अनुरागी बड़े रसिक बिरागी दयासिंधु अपनाये हैं।
सरबसु वारि गुरु चरण सरोजन पै लली लाल रति रस सिंधु में समाये हैं॥
पाछे तिया आई शुद्ध जानि अपनाई सन्त सेवा में लगाई भक्ति भेद सिखराये हैं।
दम्पति चरण गुण गाय मन लाय प्रिय पुत्र के समेत दिव्य धाम को सिधाये हैं॥४०१॥

* श्रीरामानुजदासजी का जीवन चरित *

मूल—रामानुज के दास युग अवध मध्य गुरु धाम लहि॥
श्री बेंकट बर शिष्य दुतिय श्री रत्नसिंहासन।
पण्डित कला प्रवीण उपासक रींवा प्रासन॥

गङ्गाबाई बंधु राम पर रामदास हैं।
दुतिय कुबावत रामदास लहि महल बास हैं॥
बसे बसत पदरज धरौ शीश सुमिरि गुण ग्राम कहि।
रामानुज के दास युग अवध मध्य गुरु धाम लहि॥९२॥

टीका-रामानुजदास युग छप्पै में गनाये एक अच्युत रामानुज जो सन्तन हंसावहीं।
जहां जहां होरी आदि उत्सव समाज तहां बिबिध बिचित्र स्वांग साजिकै देखावहीं॥
रामानुज दूसरे सो रतन सिंहासन के बिश्वनाथ भूप ढिग रींवा में बिराजहीं।
रामदास एक गंगाबाई गुरु भाई कहे दूजे रंग महल की सेवा योग साजहीं॥४०२॥

* श्रीमनीरामदासजी का जीवन चरित *

मूल—प्रिय भूमि अवधमणि कांचनी अनुरागी ए जन भये।
मधुर छाप लहि रामदास प्रिय मनीराम बर।
लछिमनदास उदार जानकीदास प्रेम घर॥
श्रीमुरारि बक्ता प्रधान तुलसी कृत नागर।
प्रेमदास चौबीस सहस कण्ठस्थ उजागर॥
ये प्रबल उपासक एक ते एक अनूपम रस लये।
प्रिय भूमि अवध मणि कांचनी अनुरागी ए जन भये॥९३॥

टीका-श्रीअवध भूमि मणि कांचनी के अनुरागी जे जे जन भये तिन्हैं बन्दना सदाई है।
रामदास मधुकर पर्शा में अस्थान गहे चित्रनिधिजी के सतसंगी सुखदाई है॥
दीनबंधु बंश ही में लछिमनदास भये रामघाट उत्तर में नाम धुनि लाई है।
जानकी के दास बड़े रूप के आवेशी जिन माधुकरी पाई माधुरी की रीति पाई है॥४०३॥
दीनवन्धु शिष्य प्रति शिष्य मनीराम जिन्हैं बालमीक रामायण पारायण भाई है।
मंदाकिनी निकट चौबीस पाठ किये जिन चित्रकूट कामद परिक्रमा लगाई है॥
श्रीअवध आय जानकी के घाट जाय बैठि पारायण तीनि एक मास ही में गाई है।
पूरे जब होत हैं रामायण चौबीस पाठ भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य सन्तन जिवाई है॥४०४॥
दिन दिन सन्त जेते आवैं ते कुटीर छाय बसैं सुख पाय कथा सुनै मन लाय कै।
जेती सीधो लागै ताको आगम न जानि परै पंगति में सन्त सब जेंवत अघाय कै॥
सन्त सेवा इन फल प्रगट दिखायो येहु लोक में बड़ाई परलोकहू बनाय कै।
हरि गुरु सन्तन में अन्तर न राखै जोई ताही को सफल जन्म जानौ सचुपाय कै॥४०५॥

* श्रीमुरारिदासजी का जीवन चरित *

टीका-श्रीमुरारि बक्ता बड़े मानस रामायण के सन्तन के मध्य कथा ललित सुनावहीं।
दूसरे मुरारि रत्न सिंहासन सभा मध्य बालमीक भागवत कथा भले गावहीं ॥
जैसो पाठ अर्थ ताको भाव समुझाय कहैं सुनिकै सकल श्रोता जन सुख पावहीं।
प्रेमदास दो दिन में बालमीक पाठ करैं ताही ते तपस्वी रामदास मन भावहीं ॥४०६॥

* शृंगारी श्रीअयोध्याशरणजी का जीवन चरित *

मूल—मणि भूमि सरस छवि कोशला आस्वादक ए जन सुखद ॥
रसिक अयोध्याशरण चुटकिया लछिमन शरणा।
रघुनन्दन के शरण प्रीति गुण जाइ न बरणा ॥
राघवशरण पुनीत रामनिधि चित्रसिंधु प्रिय।
प्रेमसिंधु प्रिय अवध रंग सम्बन्ध सख्य हिय ॥
रामानुज के प्रिय शरण रामचरण साधक विशद।
मणि भूमि सरस छवि कोशला आस्वादक ए जन सुखद ॥९४॥

टीका-श्रीअयोध्याशरण शृंगारी चित्रनिधिजी के अंतर की प्रीति शिष्य ह्वै के जिन पाई है।
दूजे रामनिधि पूर्व नाम है गणेशराम पण्डित कोसलखण्ड भाव रीति भाई है ॥
तीजे शिष्य राघवशरण दक्षिणादी शिष्य साधक ह्वै माधुरी रहस्य उर लाई है।
शीलनिधि शिष्य रघुनन्दनशरण दूजे लछिमनशरण की नर्म रीति गाई है ॥४०७॥
प्रेमसिंधु प्रिय जे अवध रंग कहे तेतो नर्म सखा राघव के प्राणहू ते प्यारे हैं।
रसिक शृंगार सखीजी के ख्यात शिष्य पुनि प्रेमसिंधु ढिग सख्य भाव उर धारे हैं ॥
यद्यपि सखेन्द्रजू ने आदि रामायण मध्य रीति स्वच्छ देखी सोई इतहू संवारे हैं।
ग्रन्थ के विचारे बिन परकीया रीति भाषैं सहजा प्रसंग जानैं सबै निरवारे हैं ॥४०८॥
सदा रामसखे प्रेमसिंधुजू की बानी उर अन्तर समानी सोई रसिकन सों कहै।
अन्य मत मध्य उरझानी ताहि भिन्न करि द्वैत सम्प्रदाय जीव ईश सख्य को गहै ॥
राघव के आगे रुचि राखे सब बात भाषैं जनकलडैती आगे बालभाव ज्यों रहै।
राघव के आगे सर्बरङ्ग की अवधि नाना रङ्ग दरशाय अति मोद उर में लहै ॥४०९॥
रामचर्ण रसिक महन्त साधु सेवी बड़े साधुताई मानौ सब इनहीं जु पाई है।
रैनि अवशेष घटी दोय जब रहै उठि नाम धुनि करौ कहि सबन सिखाई है ॥
सरयू नहाय मंत्रराज जाप नित्य नेम ठानि पूजा भोग हेत आलस न लाई है।
सन्त सेवा हेत अन्न धन तन प्राण सन्त सुख सुखी रीति इनहीं की रीति गाई है॥४१०॥

* श्री सियारामशरणजी 'प्रेमी' का जीवन चरित *

मूल—श्रीप्रमोदबन माधुरी आस्वादक ए जन छके ॥
श्री पद युत सियरामशरण प्रेमी बर नामा।
रामद्याल सिय रामरतन अरु श्रीबलरामा ॥
कृपाराम हित बंश प्रशंसित अलि जैरामा।
जैसे अलि भगवान पलटि प्रगटी यहि धामा ॥
मोहनदास पवित्र मन बन तजि यहि बन छवि थके।
श्रीप्रमोदबन माधुरी आस्वादक ए जन छके ॥९५॥

टीका-श्रीराम चर्ण भावुक प्रबर जू के शिष्य प्रेमी सियारामशरण रसिक अनुरागी हैं।
बारेही ते राम नाम स्वाद में लुभाय लोक लाज को बिहाय सतसङ्ग मति जागी है ॥
मिथिला अवध सनबन्ध को बिचारि लाल माधुरी निहारी युवती ज्यों मन पागी है।
एक छिन भूलै तौ जनम व्यर्थ मानि लजै बिरह बटाय भजै ताते बड़भागी है ॥४११॥
रसन के भाव भेद जानिबे के हेत किये यतन अनेक नीके काहू न बुझाये हैं।
वृन्दाबन बासिन के ग्रन्थ सुनि जानि मानि इष्ट में अभेद सिया नाथ गुण गाये हैं ॥
निज उतकर्षता सुनाई न सुहाई सुनि पेखिकै विषमताई मन विलगाये हैं।
अवध में आइकै अनन्य चिन्तामणि आदि ग्रन्थ के सुनत परितोष उर छाये हैं ॥४१२॥
अग्रस्वामी आदि के प्रबन्धन को गाय परा प्रेमा में समाय लाल माधुरी लुभाये हैं।
गद गदे बैन नैन अंसुवा झरत नृत्य करत प्रत्यक्ष भाव गुप्त लखि पाये हैं ॥
रसिक समाज प्रेम निरखि प्रशंसैं निज सुनत बड़ाई उर अति सकुचाये हैं।
राम घाट बास करि भावना दृढ़ाय इष्ट सेवा सुख मूल साधु सेवा अपनाये हैं ॥४१३॥
आगम निगम सब शास्त्रन को सार यही नर तन पाय सियाराम रंग भीजिये।
सोई हेतु रहित कृपा कटाक्ष पावै ताते हरि गुरु संत की समान सेवा कीजिये ॥
ईश जीव माया के स्वरूप को बिचारै नेह नाते को निहारि तन मन वारि दीजिये।
चाहै जो अनूप निज रूप के उचित लाभ संत पद सेइकै प्रत्यक्ष क्यों न लीजिये ॥४१४॥
रामद्याल राम रत्न मूल में जनाये दोऊ करुणानिधानजी के शिष्य सुखदाई हैं।
बलरामदासजी बड़े बिदेहीजी के शिष्य राजराघौजी से जिन भाव रीति पाई है ॥
कृपाराम मिथिला निवासी अली भाव पगे विपिन प्रमोद बसि भावना दृढ़ाई है।
गारी देत अवध निवासिन को नेह भरे रसिक अथाई रस बातन हँसाई है ॥४१५॥

हित बंश बिदित जैरामदास वृन्दावनी स्वच्छ भाव पेखि ललीजू ने अपनाई है।
अलि भगवान रीति और जैसे भई तैसे विपिन प्रमोद कुंजगली में भुलाई है॥
चित्रनिधिजी से दश आठ दिन चर्चा करि हियो भरि भावना सों सेवा रीति पाई है।
औरहू मोहनदास वृन्दावन रास तजि विपिन अशोक रास लीला लव लाई है॥४१६॥

*** श्रीरामबिहारीदासजी का जीवन चरित ***

मूल—अति नेम प्रेम सत्या अवनि ए जन दशधा रंग रसे॥
रामबिहारीदास राम किङ्कर सुख रासी।
सरयुदास अति प्रीति मत्त सरयू तट बासी॥
ज्ञानदास बर वृत्ति सन्त सेवी जु उपासक।
सरयू कुञ्ज सु ओक घोष बसि खल गण त्रासक॥
पुरबासी परिजन सुखद नित अवध भूमि धनि जे बसे।
अति नेम प्रेम सत्या अवनि ए जन दशधा रङ्ग रसे॥९६॥

टीका-सत्या सत्य नाम श्रीअवधमणि भूमि बसे नेम करि तिनके सुप्रेम की बड़ाई है।
श्रीरामबिहारीदास छेदारामजी के शिष्य ग्रंथ कर्त्ताजी से जिन भाव रीति पाई है॥
त्यागि कै सिसोन श्रीअवध बास नेम लियो रामायण भाव रीति सबन सोहाई है।
संग मोतीबाई गुरु बहिन बिराग मती सरल सुभाव सब सन्त सुखदाई है॥४१७॥
श्रीराम किङ्कर जगन्नाथदासजी के शिष्य पताही ते आय श्रीअवध बास लियो है।
नाम धुनि राम कोट परिक्रमा दरशन मानसी में दम्पति के प्रेम भीज्यो हियो है॥
सरयूदास भाविक प्रशंसित बिरक्त जिन माधूकरी माँगिकै भजन दृढ़ कियो है।
मानुष को जन्म दूजे अवध निवास लियो रूप सुधा पियो जानै सोई जग जियो है॥४१८॥

*** श्रीज्ञानदासजी का जीवन चरित ***

टीका-ज्ञानदास सिद्ध बड़े भाविक विरक्त सोनाडीह में निवास करि साधु सेवा कीनी है।
सरयू के सोत तट पीपर को वृक्ष तहाँ बैठि राम मन्त्र जाप ध्यान वृत्ति लीनी है॥
भूत दिन सात लौं उचाट करि मानी हारि दया दृष्टि हेरि ताहि दिव्य गति दीनी है।
हरि इच्छा मानि तहाँ थापे हनुमान पाय पूजा सनमान राम कृपा मति भीनी है॥४१९॥
राम कृपा फल सन्त संग वेद गावत हैं सन्त जन आवैं जोई तिन्हैं बिरमाइये।
सन्त कृपा राम कृपा दोऊ निरहेतुकी हैं ताते मिलि सन्तन सों राम गुण गाइये॥
सन्त सदा भावही के भूखे और रीति रूखे राम रूप मानि इन सन्तन लड़ाइये।
राम पद प्रीति जो पै सन्त पद प्रीति नहीं बड़ोई अभागी जन्म वृथा ताको जाइये॥४२०॥

सन्तन को दूरिहूँ सों आवत जो देखै तिन्हैं इष्ट सम लेखै करजोरि होत खरे हैं।
ज्यों ज्यों ढिग आवैं त्यों त्यों आपहू सिधावैं आवो गुरु कहि दण्डवत पायन में परे हैं॥
आशन बिछाय देवैं पादोदक धोय लेवैं पूंछत कुशल दृग अँसुवन भरे हैं।
इच्छित पवावैं सन्त चाहैं सो मँगावैं सुख पावैं सोई भाव सदा मानस में धरे हैं॥४२१॥
राम कथा सुने नैन धर धर आँसू बहै भरे जल जनु युग श्रवत पनारे हैं।
सन्त जे रंगीन सेवा भजन प्रवीण रहै तिनके आधीन निज सरबसु वारे हैं॥
दीन देखी आवै तिन्है भोजन पवावै सन्त पदरज देइ दुष्ट बाधा निरवारे हैं।
शरण में आये तिन्हैं लोक सुख दिये सब अन्तहूँ में परलोक सम्पति संवारे हैं॥४२२॥
सन्त सेवा ही में सब आयुष बिताय अन्त समै गति जानि श्रीअवधपुरी आये हैं।
हरीदासजी महन्त सन्त सभा जाय शेष आयुष बिताय परधाम को सिधाये हैं॥
ऐसे सन्त जानौ अवतार सम मानौ तिन्हैं सन्त सेवा रीति प्रीति करिकै दिखाये हैं।
सन्तन की महिमा अनन्त आप गाई हरि पद रेणु शीश धरि अधिक बिताये हैं॥४२३॥

*** श्रीरामकिङ्करदासजी का जीवन चरित ***

मूल—तुलसीदल प्रतिकुञ्ज में अवध बस्यो बांटत मुदित॥
नाम राम सम्पन्न सुभग किङ्कर गुण आगर।
प्रियता युत नव नर्म सख्य सम्बंध उजागर॥
बालमीक अवलीक छटा अनुभव बल भाषे।
रसिक मण्डली मध्य प्रतिष्ठित प्रिय रस चाषे॥
सदा प्रसन्न बदन कमल निरखि भानुकुल रवि उदित।
तुलसीदल प्रतिकुञ्ज में अवध बस्यो बांटत मुदित॥९७॥

टीका-भाविक प्रवर रामकिङ्कर उजागर अनन्य गुण सागर प्रसन्न मुख देखिये।
राघव के नर्म सखा बाल ज्यों मधुर भाषै बालकाण्ड पाठ नित्य प्रेम युक्त पेखिये॥
अर्थ भाव नूतन रहस्य समुझाय कहै चित्र दरशायबे की मूरति बिशेषिये।
रसिक सभा में बैन मधुर गंभीर कहै गहै सोई टेक जो उपासक के लेषिये॥४२४॥
तुलसी बाँटन मिसि कुंज कुंज जाय प्रभु बदन मयंक पेखि हर्ष उर माने हैं।
रसिक उपासक मिले जो करि दण्डवत भाव भेद बूझि परमानंद समाने हैं॥
कनक भवन बाग करि अनुराग निज भाव सेवा लागि मंत्र जाप सुख साने हैं।
करिकै उपाय स्वर्ग द्वार पर जाय दिव्य मंदिर बनाय रस सम्पति लुभाने हैं॥४२५॥

*** करवाधारी श्रीजानकीदासजी का जीवन चरित ***

मूल—श्रु ति प्रतिपाद्य अनादि थल बन प्रमोद सज्जन बस्यो ॥
श्री सरयू तट रसिक जानकीदास महत जन ।
करवाधारी बृत्ति कुञ्जरति बरणत सज्जन ॥
युगुल नाम अनुराग रटनि प्रिय अटनि बीथिकनि ।
शील क्षमा सन्तोष विरति सुमिरत प्रिय रसिकनि ॥
ते धन्य जन्म जग त्यागिकै बास अवध भू में लस्यौ ।
श्रु ति प्रतिपाद्य अनादि थल बन प्रमोद सज्जन बस्यौ ॥९८॥

टीका-रसिक जानकीदास करवाधारी नाम ख्यात दम्पति उदार रसराज बृत्ति धारी है।
सियाराम नाम बिन और नहीं भाषै और संग्रह न राखै माधुकरी सुखकारी है ॥
सरयू की रज सब अंग में लगाये सरयू के रजही को कर करवा सुधारी है।
अज्ञ जन नेम को छुड़ायो तऊ छोड्यो नहीं गही दृढ़ टेक सो जो इष्ट प्रियकारी है ॥४२६॥
अष्टयाम विशद मनायो निज तोष हेत जाके मध्य रसिक सिद्धान्त सब धरे हैं।
कुंज कुंज अवध की बीथिन में डोलत न बोलत काहू से कछु प्रेम रस भरे हैं ॥
जिनके समीप सियाबल्लभशरण आदि भाव रीति पाइ दुःख संसृति ते तरे हैं।
स्थूल तन जरौ मरौ चहै जहां परौ ऐसो किये पन इष्ट पद कंज ते न टरे हैं ॥४२७॥

मूल—ते धन्य बसे जग त्यागिकै बन प्रमोद थल अघट घट ॥
शिष्य भले बलरामदास के सियादास बर ।
कमलदास अति अमल हृदय नित ध्यान रास कर ॥
श्रीपुरुषोत्तम दास मानसी अमल दृढ़ाई ।
सरयू मज्जत प्रात दुग्ध धारा जिन पाई ॥
मधुकरिया मो मन बस्यो माधौ सरयू तट निकट ।
ते धन्य बसे जग त्यागिकै बन प्रमोद थल अघट घट ॥९९॥

*** श्रीरोशनलालजी बकसी का जीवन चरित ***

मूल—बंगला में रंग लाल की छवि बकसी रोशन लही ॥
दम्पति अली सुजान लली मिथिलापति की है ।
श्रीप्रमोद बन लता रता मति कीरति की है ॥

नृपा दया ज्यौं एक टेक रसिकन की संगै ।
जानकी बल्लभ कुञ्ज केलि सरि उठत तरंगै ॥
झूलत सावन मास की सारी छवि लटक्यौ सही ।
बंगला में रंग लाल की छबि बकसी रोसन लही॥१००॥

टीका-बकसी रोसनलाल बड़े अनुरागी सदा जाके लली लाल छवि उर में समानी है।
स्वर्ग द्वार जायकै बिदेहीजी के शिष्य भये पैहारी समीप सनबन्ध रीति जानी है ॥
जब ते सम्बन्ध रीति पाई सुखदाई लगी तियाहू लली के पदसेवा में लुभानी है।
जग चतुराई सब दीनी है बहाइ रहे छबि में लुभाइ परा रति हुलसानी है ॥४२८॥
सावन हिंडोल छबि नवल निहारि तन मन धन वारि पद ललित बनायकै।
मधुर गवाय निज हिये की जनाई लाल मति ललचाई सोऊ दीनी है जनायकै ॥
लली लाल बागहू में छायो अनुराग सोई रस अनुरागिन की मण्डली सजायकै।
लोक लाज मेटिकै बढ़ायो रंग सोई जामें रूप माधुरी स्वतन्त्र पीजिये अघायकै ॥४२६॥

*** श्रीमोहनलालजी का जीवन चरित ***

मूल—लली मोहनी की कृपा मोहन मोहनिगुण लह्यो ॥
मोहनि रसिक समाज रंग मणि महल मोहनी ।
बन प्रमोद प्रति कुञ्ज मोहनी भूमि सोहनी ॥
जब जहं होत समाज तहां मोहनी लखाई ।
ममता रति निज ठौर कनक मणि महल सदाई ॥
जग नाच्यो तेहि वृथा लखि नटनि मोद सब जन चह्यो ।
लली मोहनी की कृपा मोहन मोहनि गुण लह्यो ॥१०१॥

टीका-मोहन लाल अवधपुरी में लली लालन की मोहनी लखाई सो कहै में नहिं आई है।
कनक भवन में समाज रङ्ग होत तहां जाय शीश नाय निज मण्डली बुलाई है ॥
कोई तानपूरा औ मंजीरा करताल ढोल मधुर मृदंग संग सारंगी बजाई है।
करिकै अलाप चारि राग रागनी उचारि तरल तिलानेन की झरी सी लगाई है ॥४३०॥
घुंघुरू पगन बाँधि नृत्य जब करै फूल झिमि पग परै तन श्रम न लखे परै।
भाव में अनेक भेद सैनन जनावै जन बैठे कोऊ ठाढ़े सब चित्र सों लख्यो करै ॥
दम्पति की छबि पेखि वारि वारि जावै परा रति को जनाय नैन अंसुवन सों भरै।
रिसक समाज निरमोही तेऊ मोहि रहैं मोहन की मोहनी में और धीर को धरै ॥४३१॥

लक्ष्मणपुरी में रास मण्डल को भेद पायो रसिक गुरु की दाया सोऊ इतही लही।
रही कछु बासना वृन्दावनबिहारी ओर अवध बिहारी रति सागर में सोवही॥
संग में सहाई जे सहाई राम तेऊ प्रेमी संग पाय राम घाट मन्दिर सुधा गही।
कनक भवन लली लाल पद कंज छोड़ि मोहन की प्रीति रीति और ठौर ना रही॥४३२॥

* श्रीहरिनारायणजी का जीवन चरित *

मूल—सदाव्रती एकादशी हरिनारायण की बनी॥
बंगला अवध निवास मनोहर मङ्गल करणी।
परकर्मा मज्जन सरयू तट उत्तम धरणी॥
क्षत्री शुद्ध बच्यो ब्राह्मण घर कुल सोइ पायो।
पुत्र कलत्र सुसङ्ग रङ्ग भींज्यो मन भायो॥
अनुरागी मति एक रस ब्यालि सबर्षा बधि सनी।
सदाव्रती एकादशी हरिनारायण की बनी॥१०२॥

टीका-एकादशी व्रत को निवाह सदा एक रस बंगला में एक हरिनारायण भये हैं।
तिय मात बंधु परिजनहू की व्रती राखै सीताराम पद कंज प्रीति टेक लये हैं॥
सरयू नहाय प्रति मन्दिर में जाइ सब सन्तन को फलाहार बाँटि बाँटि दये हैं।
ब्यालिस बरष लौं निबाहिं नेम एक रस प्राकृत शरीर त्यागि हरि पुर गये हैं॥४३३॥

* श्रीगोपालदासजी का जीवन चरित *

मूल—गौड़ेश्वर झारू दई अवध भूमि मणि कांकरी॥
उत्तम श्रीगोपालदास वृन्दावन बासी।
दरश चह्यौ नहिं लह्यौ भयो स्वपनो सुखरासी॥
श्रीप्रमोद बन भूमि अवध सरयू की कुञ्जै॥
युगल नाम धुनि बैन भृंग छबि चाखि सु गुंजै।
सौ चाल्यो सु तर्यो भलो एक युगल सोभा भरी॥
गौड़ेश्वर झारू दई अवध भूमि मणि कांकरी॥१०३॥

टीका-श्रीगोपालदास बड़े रूप के उपासी जिन वृन्दाबन बीथिन में प्रेम झारु दीनी है।
एक दिन स्वपन जनायो जावो अवध को ह्वै है काम पूरण तुरंत मानि लीनी है॥
कोशला में आय वही कीनो है उपाय परिक्रमा देत झारू कर मणि भूमि चीन्ही है।
विद्याकुण्ड सुनखर मध्य मन भायो भायो मांगु वर बानी सुनि भक्ति मांगि लीन्हीं है॥४३४॥

जप तप तीर्थ व्रत साधन कहत कोऊ ज्ञान भक्ति भेद सत संग को कहत हैं।
शम दम कर्म फल त्याग नीके करै स्वच्छ प्रेम उर भरै तब रामजी मिलत हैं॥
सब एक ओर कृपा फल एक ओर जैसे त्यागि कैसो चास को सुता रहि गहत है।
जल के भरे सों जल पात्र जैसे भरे लगै तैसे कृपा संग शोभा सबही लहत है॥४३५॥

* श्रीकृपासखीजी का जीवन चरित *

मूल—रस उज्ज्वल दशधा रति बिशद कृपासखी मति गति सरस।
कृपा सरस लहि अग्रस्वामि गुरु कृपा निधाना।
मिथिला अवनि निकुञ्ज जानकी नगर ठेकाना॥
बिरह अंग दरशन कांक्षी आये तेहि ठामा।
लता लपटि नव द्रुम रसाल सर अति सुख धामा॥
श्रीमिथिलेंद्र लली कृपा युगल चरण अम्बुज परस।
रस उज्ज्वल दशधा रति बिशद कृपा सखी मति गति सरस॥१०४॥

टीका-ग्रंथकर्ताजू ने श्रीअवधपुर बासिन के चरित पुनीत गाय जन सुख दये हैं।
आगे मिथिला निवासी देशपुर बासी जन तिनहूँ के गाय गुण कृत कृत्य भये हैं॥
कृपासखी रैवासा ते मिथिला सिधाये देखि सोभा सुख पाये कौसिकी के तट गये हैं।
तहाँ गुल्म लता द्रुम संयुत सुथल पेखि मोद उर मानिकै निवास तहां लये हैं॥४३६॥

करिके सुनेम मंत्रराज जप ठान्यौ मन दम्पति के रूप में लगायो सुख पायकै।
तेही समै ललीजू के अंग को प्रकाश भयो चहुँओर चन्द सूरहू ते अधिकायकै॥
सन्मुख पदारबिन्द नखन को भास ताते भयो उर बास नैन खोले सुख पायकै।
जो स्वरूप मानस में सोई दृष्टि आगे लख्यो गिरे दण्डवत पद कंज शीश छायकै॥४३७॥

ललीजू उठाइकै बैठायो शीश धर्‌यो कर भृत्य निज जानि दीनी भक्ति निज पिय की।
ताही ठौर परतर धाम लै दिखायौ जहां कोटिन बिलास करैं आली निज हीय की॥
बीच श्याम सुन्दर की सोभा सुख खानि लखी अंग अंग छाई मन भाई रति सीय की।
उज्जल शृंगार सर उर न समाय तब गाये पद सुखन रसिक मति तीय की॥४३८॥

कौशिकी के तट अभिराम धाम अजहूँ लौं राजत सो जानकी नगर लोक ख्यात है।
सीताराम पाद पद्म अङ्कित अवनि द्रुम गुल्म लता साखा फल फूल नव पात हैं॥
सन्त जन भजन सुपास पेखि रमै तहां उत्सव समाज सुख पाय हरखात हैं।
रसिक सुजन जाय निरखि प्रशंसत हैं याही ठौर मानौ सर्ब जीव कुशलात है॥४३९॥

* श्रीरघुनाथदासजी का जीवन चरित *

मूल—मणि भूमि निरखि मिथिला बसे अनुरागी शुचि विमल मति ॥
भजनानन्द विचित्र साधु सेवी जग जानी।
रतनाकर मिथिला नरेन्द्रपुर कोश बखानी ॥
तहां बसे रघुनाथदास अति धन्य धन्यतर।
शाली खेत प्रकाश लली दरशी अनन्य बर ॥
चले उमगि मूर्छा भई लहि दशधा सेवा सुगति।
मणि भूमि निरखि मिथिला बसे अनुरागी शुचि विमल मति ॥१०५॥

टीका-भाविक प्रवर रघुनाथदास मिथिला के वासी रत्नसागर पै लाल रत्न पायकै।
करि अनुराग सन्त सेवत बिमल मति दम्पति पदारबिन्द राग को बढ़ायकै।
एक समै शाली खेत आलीन समेत लली दरश दिखायो लह्यो आनन्द अघायकै।
हरे राम जीवन जो भाव में लखायो नैन गोचर सो आयो कैसो कहै छबि गायकै॥४४०॥
करिकै प्रणाम भक्ति यांची अनपायनी जो शंभु मन भावनी रसिक सुखदाई है।
छण छण उमंग उछाह अभिलाष नई सुखमा बिलोकि तन सुरति भुलाई है॥
श्याम गौर सम्पति निधान भरि पाये निज शिष्यन में हयग्रीवदास को जनाई है।
हरि गुरु कृपा फल सन्त सेवा गावै वेद ताको फल राम रूप परा रति पाई है॥४४१॥

* श्रीसीताप्रसादजी का जीवन चरित *

मूल—शुचि ममता श्रीमिथिला अवनि रवनि कृपा अविरल जगी॥
सीय प्रसाद महात्म आनि थापी परिकर्मा।
मिथिला भूमि अनादि लहे रसिकन के धर्मा॥
अद्भुत कुञ्ज प्रकाशि रास रस रीति उपासी।
दयाराम की कृपा भये रसिकन सुखरासी॥
रति अनन्य मति गति सरस मिथिला मिथिला रट लगी।
शुचि ममता श्रीमिथिला अवनि रवनि कृपा अविरल जगी॥१०६॥

टीका-भाविक सीताप्रसाद मिथिला निवासी दयारामजी की कृपा सुखरासी जिन पाई है।
सीतामढ़ी आदि गुरु कृपा अधिकाई रीति दंपति सेवा में सदाचार की चलाई है॥
चित्रकूट जाय मिथिला माहात्म लाये कथा सबन सुनायकै परिक्रमा लखाई है।
ज्ञान कूप आदि गुप्त तीरथ प्रगट किये सीताराम ब्याह वेदी बास मन भाई है॥४४२॥

जानकी रमण कथा बिना और भावै नहीं नाम रूप धाम की अनन्यता सुहावहीं।
दंपति प्रसाद स्वाद लहि सुख पावै सीताराम जन्म दिन व्रत उत्सव बढ़ावहीं॥
दंपति बिवाह राम रास कुंज केलि कल कीरति कहत औ सुनत सुख पावहीं।
जिनके अनेक शिष्य साधक अनन्य भये तिनहूँ के और जे भये ते यश गावहीं॥४४३॥

* श्रीमिथिलादासजी का जीवन चरित *

मूल—मति गति रति अटल अनन्यता मानस विमल सुजान जन॥
रसिक गुरू उपदेश बसे मिथिला सुख रासी।
राम रसिक यह भूमि उपासक लखै उपासी॥
ताते मिथिलादास सब सन्त कहत हैं।
प्रगट्यो कुञ्ज अनादि जहां सुख रसिक लहत हैं॥
सिया सेवा सुख अनुपम लह्यो सारी ध्यान अमान मन।
मति गति रति अटल अनन्यता मानस बिमल सुजान जन॥१०७॥

टीका-मिथिलादास नाम बड़े रसिक अनन्य ग्रंथकर्त्ताजी से भाव पाय मिथिला में बसे हैं।
सारी राम द्वारा ताते सारी राम ध्यान लह्यो चन्द्रकला कुंज लली लाल प्रेम फसे हैं॥
कमला निकट मंत्रराज जप ठान्यो तहां भई कृपा कलि के कलुष सब नसे हैं।
दंपति की माधुरी रहस्य स्वाति बुन्द लागि चातक ज्यों रसिक समाज मध्य लसे हैं॥४४४॥

* श्रीसियादासजी का जीवन चरित *

मूल - सोई धन्य बिमल मति सन्त जो मिथिला छबि छाक्यो हियो॥
सियादास सुख मानि भजन मिथिलापुर ठानी।
मटिहानी ऐश्वर्य विरति बर तुच्छ दिखानी॥
गुरु आयसु लै बसे महल श्रीजनकलली के।
रसिक सन्त ते बूझि लहे रस भेद गली के॥
श्रीभरतदास मिथिला बसे संग रसिक जन सुख लियो।
सोइ धन्य विमल मति धन्य जो मिथिला छबि छाक्यो हियो॥१०८॥

टीका-सियादास छप्पै मो बखाने ते बड़े बिरागी भये अनुरागी ग्रंथ कर्ता बल पायकै।
श्याम गौर भास जब उर में प्रकाश भयो त्यागि जग आश मिथिला में बसे जायकै॥
सीतापरसादजी के साधक भरतदास पाय रस स्वाद भये रसिक बनायकै।
ऐसे अनुरागिन को धन्य है जनम जग त्यागि विष पान पीवै अमृत अघायकै॥४४५॥

* श्रीरामगुलेलादासजी का जीवन चरित *

मूल—सुख मानि बसे मिथिला पुरी तिन पदरज हौं शिर धरौं ॥
रामगुलेलादास जानकीदास उपासी ।
प्रागदास रघुबीरशरण अरु श्री रामदासी ॥
कावरिया प्रिय पौत्र शिष्य श्रीरामदास है ।
दुतिय महन्त श्रीरामदास लहि महल बास है ॥
जे और बसे स्वाभाविके पुरबासी सुमिरन करौं ।
सुख मानि बसे मिथिला पुरी तिन पदरज हौं सिर धरौं ॥१०९॥

टीका-मिथिलापुरी में जे बसे हैं सुख मानि तिन पदकंज रेणु निज माथे पर राखी है ।
जानकी महल राम गुलेला महन्त जिन रंग भूमि मध्य ब्याह लीला अभिलाषी है ॥
रसिक जानकीदास रास के उपासी राम दूलह की माधुरी बिशेष जिन चाखी है ।
नूपुर पगन बाँधि रूप के आवेष भरे कविन को अगम अलख बानी भाखी है ॥४४६॥
प्रागदास दीनबन्धु बंश में विदित पेखि मिथिला प्रभाव रत्नसागर पै बसे हैं ।
सियरामशरण के शिष्य रघुबीरशर्ण एक रस दम्पति सनेह गेह लसे हैं ॥
रामदासी करुणा निधान भाव पाय जाय मिथिला बिलोकि कै सकल दुःख नसे हैं ।
जानकी महल के महन्त एक रामदास दूसरे तमूरा लिये गान प्रेम फसे हैं ॥४४७॥

* श्रीरामललाजी का जीवन चरित *

मूल—नित सुखद भूमि मिथिलापुरी बसे महत अति धन्यतर ।
राम लला बैर बंश बिदित जैकृष्ण दास बर ॥
मटिहानी मटिकौड़ सन्त सुख राशि बास कर ॥
घनाराम घन बोध बराही श्रीबनवारी ।
ऊग्र रीति बर महत निरन्तर भजन अहारी ॥
जहं आशपास वा बगर के ब्रह्मादिक ते मन्यबर ।
नित सुखद भूमि मिथिलापुरी बसे महत अति धन्यतर ॥११०॥

टीका-बालानन्दजी के गुरु भाई बड़े राम लला बघनगरी में बैठि भजन दृढ़ाये हैं ।
तिनहीं के बंश में जैकृष्णदास भये तिन मटिहानी बैठि सन्त सेवा सुख पायो हैं ॥
घनाराम ज्ञान घन बिमल बराही जाय भजन प्रभाव सर्ब लोगन जनायो है ।
कृष्णदासजी के बनवारीदास नाती शिष्य गादी पर बैठत प्रताप अधिकायो है ॥४४८॥

* श्रीसूरदासजी का जीवन चरित *

मूल—श्रीसूरदास मिथिला अवनि पिपरा स्वपर सुजान भल ॥
सीताराम पवित्र कथा संहिता प्रधानो ।
भक्ति भेद बर भाव दसा सज्जन सुख मानो ॥
मिथिला भूमि प्रताप रूप गुण प्रगट बखान्यो ।
सुन्यौ संत सुख मानि दरश प्रिय लहि सब जान्यो ॥
प्रभु भजनानन्द सुबोध घन अमल साधु सेवी प्रबल ।
श्रीसूरदास मिथिला अवनि पिपरा स्वपर सुजान भल ॥१११॥

टीका-सूरदास मिथिला अवनि में प्रसिद्ध भये पिपरा निवास करि साधु सेवा कीनी है ।
पण्डित प्रवर निज रूप पर रूप बोध शोधि निज हिये सीय पद रति लीनी है ॥
मिथिला महातम जो किशोरसूर पायो ताही अनुसार मिथिला परिक्रमा सु दीनी है ।
गयो वायुकोण तहाँ पुरी को प्रकाश भयो खुले नैनही के कोट शोभा मति भीनी है॥४४९॥
नगर बजार रंगभूमि को पसार मिथिलेश परिवार युत मन्दिर निहारे हैं ।
बाहर शहर के प्रकाश राशि छाई उपबन अमराई बीच बीच ह्वै सिधारे हैं ॥
परिक्रमा पुरी की प्रत्यच्छ एक कीनी हिये भक्ति मति भीनी तन सुधिहूँ बिसारे हैं ।
दण्डवत करत युगल छबि देखी मार रति ते बिशेषी सोई तत्व उर धारे हैं ॥४५०॥
ग्राम निज आये सोई शोभा मन लाये तहाँ मंदिर बनाय लली लाल पधराये हैं ।
रसिक समाज कथा रामायण गाय सब श्रोतन सुनाय परा रति सरसाये हैं ॥
नाम रूप धाम लीला महिमा सुनाय सन्त सेवा मन लाय मृषा काल न बिताये हैं ।
पर धाम जायबे को आगम जनाय तन प्राकृत विहाय रामलोक को सिधाये हैं ॥४५१॥

* श्रीहरिजनदासजी का जीवन चरित *

मूल—नरघोघी गादी प्रचुर हरिजनदास महन्त वर ॥
प्रबल उपासक भजन सुरति महली अनुरागी ।
सुमति सहचरी जनक लली शुचि रसिक बिरागी ॥
सेवा सरस उदार भक्ति दशधा अधिकारी ।
शास्त्र विहित बर बोध काव्य रस रीति सुधारी ॥
नास्तिक पाखण्डी दुखद सुखद भक्त बुधिवंत बर ।
नरघोघी गादी प्रचुर हरिजनदास महंत वर ॥११२॥

टीका-नरघोघी गादी तिरहुत में प्रसिद्ध तहाँ हरिजनदासजी महन्त बर भये हैं।
ऊपर बिराग उर अन्तर में अनुराग लीने अली भाव लली लाल रंग रये हैं॥
सन्त सेवा हरिहूँ ते अधिक जनाय गुण दम्पति के गाय परा रति सुख छये हैं।
बिषयी पाखंडिन को चर्चा में हराय भक्ति पथ दरशाय कै शरण केते लये हैं॥४५२॥
याम एक यामिनी निहारि उठि मानसी की क्रिया को संवारि दिव्य दम्पति रिझावहीं।
मंगल अनूप श्याम गौर रूप पागी मति परा दशा जागी सो कहे न बनि आवहीं॥
गंधपुष्प धूप दीप भोजन तांबूल शुभनीराजन साजि नीके लाड को लडावहीं।
ऐसे शुचि सन्तन के कहत सुनत दिब्य चरित विमल कलि कलुष नशावहीं॥४५३॥

※ श्रीअलखरामदासजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीहरिजन गुरु कृपा ते अलख राम बर अलख गति।
प्रबल महंत उदार योग गुण बिस्तर भारी।
भक्ति योग उपयोग सन्त सेवा व्रतधारी॥
टेक सुचातक हंस बिवेकी राम भक्त वर।
राम कथा दृढ़ प्रीति रीति नहिं त्रास जक्त कर॥
व्याह समै सुबितान छवि युगल ध्यान बर झलक रति।
श्रीहरिजन गुरु कृपा ते अलख राम बर अलख गति॥११३॥

टीका-हरिजनदासजी के शिष्य श्रीअलखराम लखी जिन महिमा सुलोचन बिशाल की।
मिथिला शहर राज मारग में चले जात कुंवर सुजान चारो चढ़े बर नाल की॥
व्यजन चमर छत्र आदि सौज लीने जन संग भीर भारी रथ हाथी घोड़ा पालकी।
मण्डप के भीतर बिलोकी छवि दूलह की रैनि दिन सोई उर बसी रघुलाल की॥४५४॥
इष्ट कृपा रिद्धि सिद्धि सम्पति प्रकाश पेखि राघव बिवाह योग सामा बहुतेरी है।
श्रीगोसाईं रामायण भनित विधान पेखि कियो है समाज ताकी महिमा घनेरी है॥
अवध निवासी जेते आये सुख पाये पेखि मण्डप बितान जनु सुखमा की ढेरी है।
दान मान भोजन उदारता बिलोकि कहै मिथिला की संपति प्रत्यक्ष यहाँ हेरी है॥४५५॥

※ श्रीषड्गदासजी का जीवन चरित ※

मूल—षड्गदास ब्रत षड्ग लहि अमल सन्त सेवन विशद॥
जानकि बल्लभ इष्ट और नहिं जान्यो मान्यो।
धर्म सु पुर नव बास नवल मंदिर छवि आन्यो॥

अधिकारी हरिजन महंत बर शिष्य सुजाना।
राम प्रसन्न सु बंधु संत सेवा मनमाना॥
पौत्र शिष्य हरि भजन भट मति अनन्य रसिकन सुखद।
षड्गदास ब्रत षड्ग लहि अमल संत सेवन विशद॥११४॥

※ श्रीभिक्षुकरामजी का जीवन चरित ※

मूल—भिक्षुक राम प्रताप ते भिक्षा भक्ति लही भली॥
बलहा बिमला तीर भीर संतन की लागी।
चारि सम्प्रदा एक भाव सेवत छल त्यागी॥
सेवत सीताराम गाय रामायण रिझवत।
जाति पाँति के तर्क ग्रस्यो नहि निज रंग भिजवत॥
रसिक सन्त सङ्ग लहि सरस दरशी दशधा रस गली।
भिक्षुक रामप्रताप ते भिक्षा भक्ति लही भली॥११५॥

टीका-भिक्षुक राम बड़े रामभक्त मिथिला समीप बिमला नदी के तीर बलहा निवासी हैं।
ग्रंथकर्ताजी से सनबन्ध रीति पाय परा रति में लुभाने श्याम गौर छवि भासी है॥
अष्टयाम रीति सो करत सियानाथ सेवा रामायण गान कथा श्रवण बिलासी है।
सन्तन को देखिकै प्रसन्न मन होत लेत पादोदक महिमा सुनायकै प्रकासी है॥४५६॥

※ श्रीहरेरामदासजी का जीवन चरित ※

मूल—हरे राम प्रिय पुत्र जेहि शुभ गुण छप्पै नहिं त्रुटी॥
बूंदी राम रसाल मंजरी ध्यान की लागी।
ऋतु बसंत जेहि सदा संत सेवन बड़भागी॥
सो फल चाखी बहू सुखद मंदिर पधराई।
मातु सुमित्रा सरिस सुकृत राशी जनु पाई॥
मैथिल ब्राह्मण कील पथ अटल रास रस रति ठटी।
हरेराम प्रिय पुत्र जेहि शुभ गुण छप्पै नहि त्रुटी॥११६॥

टीका-भिक्षुकराम पुत्र हरेराम राम भक्त सन्त सेवा में निरत बूँदीराम जाके भाई हैं।
तिनको सुवन तन त्यागि राम धाम गयो भक्त बधू शोच भयो जाइ समुझाई है॥
मुद्रा शत चौदह मगाय आगे राखि कह्यो तजौ भ्रमजाल भजौ राम सुखदाई है।
सुत वित नारि देह गेह बार बार होत अन्त में न कोई ताते सब दुख दाई है॥४५७॥

बोली भक्त बधू सब जो पै न समान करौ राम गुण गान हमहूँ को प्रिय राम हैं।
धन को उठावो राम सेवा में लगावो एक रामही सुपुत्र प्राण रामहीं सों काम हैं॥
सुनि प्रिय बाणी राम भजन सहाय मानी मन्दिर बनाय पधराये सीताराम हैं।
कौशल्या सुमित्रा जिमि उर सुख पाय लली लाल को लडाय गये अन्त परधाम हैं॥४५८॥

❊ श्रीरामदासजी का जीवन चरित ❊

मूल—बसि उलाव संतन सुखद रामदास लक्ष्मण धनी॥
मिथिला अवनि प्रबेश नगर प्रति बिरद प्रकासी।
कोविद गुण गण गेह नेह रस रीति उपासी॥
बालमीक की कथा सदा गंगा तट भावै।
बक्ता प्रबल प्रधान नाम रटि प्रीति बढ़ावै॥
चिल्का राम पुनीत जन सकरपुरा लहि भक्ति मनी।
बसि उलाव सन्तन सुखद रामदास लक्ष्मण धनी॥११७॥

टीका-रामदास लछिमनदास जो बखाने तेतो बड़े साधु पण्डित उलाव ग्राम बासी हैं।
बालमीक रामायण पाठ के प्रभाव जात मिथिला को जिन्हैं दिव्य मिथिला प्रकाशी हैं॥
शील छमा विरति भवन साधु सेवी पूजैं देवता न देवी सीताराम के उपासी हैं।
चिल्काराम सकरपुरा में साधु सेवा करि पाई सुखदाई रामभक्ति मणि रासी हैं॥४५९॥

❊ चतुर्भुजी श्रीतुलसीदासजी का जीवन चरित ❊

मूल—चतुर्भुजी तुलसी सुजन जै धुनि बाणी प्रेम भल॥
श्रीनारायणदास बीरना मिथिला भूमै।
प्रचुर संत सेवा सुजान नवधा रस भूमै॥
राम भजु नगुराव पगनि नूपुर लै नाचै।
संत आनि घर मांहि प्रीति किमि कहिये सांचै॥
अच्युत कुल बसीकरन लह्यो यह जन्म फल।
चतुर्भुजी तुलसी सुजन जै धुनि बाणी प्रेम भल॥११८॥

टीका-तुलसीदास चतुर्भुजी मिथिला अवनि मधि रमत फिरत मोह रहित बिरागी हैं।
जहां थिर होय तहां करै नाम रट प्रति नाम में अनेकन जपति धुनि लागी है॥
बीरना चौकी में सन्त सेवी नारायणदास सियाराम सेवा मध्य परा रति जागी है।
श्रवणादि नवधा के अंग सब साधे नीके हरि अवराधे और आश सब त्यागी है॥४६०॥

रामभजू वैष्णव बसत नगुराव ग्राम राम प्रेम धाम ताकी सरिवर को करैं।
षोड़शो पचार करि नूपुर पगन बांधि नृत्य गान करैं अति मोद उर में भरैं॥
सन्त मिले होत हैं प्रसन्न राम भेटे जनु परम पुनीत बन्धु मानि अति आदरैं।
राम कथा रूप गुण माधुरी सुनत जबै भूलै सुधि तन की नयन अंसुवा झरैं॥४६१॥

❊ चतुर्भुजी श्रीसाहेबरामजी का जीवन चरित ❊

मूल—बिदित पचाढ़ी संत घर साहेब साहेब राम जन॥
मिथिला अवनि पुनीत भजन ततकाल सफलता।
नव योगेश्वर भरत तथा तप तेज अमलता॥
त्यों महिमा प्रगटी अनादि थल की प्रभुताई।
सांच भक्त गुण गण अपार संतन सुखदाई॥
रामभद्र से शिष्य बर रामभद्र पद ध्यान मन।
बिदित पचाढ़ी सन्त घर साहेब साहेब राम जन॥११९॥

टीका-साहेबराम चतुर्भुजी बिदित पचाढ़ी मध्य विद्यापति मैथिल ज्यों सिद्ध कवि भये हैं।
सन्त सनमान सियाराम गुण गान कीये पद निरमान देश मिथिला में छये हैं॥
तेज पुंज भजन को दूरिही ते देखि परै उपमा भरत नव योगिन को लये हैं।
तिनके सुशिष्य रामभद्र रामचन्द्र पद पङ्कज पराग अनुराग रंग रये हैं॥४६२॥

❊ चतुर्भुजी श्रीहरिनामदासजी का जीवन चरित ❊

मूल—सुखद संत मिथिला अवनि बखरी श्रीहरिनाम के।
बमन कटोरा भोग मानसी सब जग जानी।
परम उग्र रघुनाथदास मिथिला के ध्यानी॥
अनुभव गम्य अखण्ड भूमि जो बेद बतायो।
भक्ति योग करि कृपा दृष्टि पथ कवित सो गायो॥
सुभट चतुर्भुज बंश बर सेवक सीताराम के।
सुखद संत मिथिला अवनि बखरी श्रीहरिनाम के॥१२०॥

टीका बखरी में चतुर्भुजी हरिनामदास सिद्ध मानसी प्रत्यक्ष सियाराम की देखाई है।
सन्त अपचार ते इतर कुल जन्म पायो तऊ वही पूर्व जन्म रीति चलि आई है॥
कोई विप्र घर नित खेती को उपाय करै एक दिन भोर भये मानसी ढ़ढ़ाई है।
आयो ग्रहपति तिन प्रष्ठि में प्रहार कियो प्रगट कटोरा दूध भात ढरकाई है॥४६३॥

बड़ो अचरज देखि पूछे ते बतायो सुनि मन पछितायो अहो साधु को दुखायो है।
कृपा करि घर ही बिराज्यो सब काम त्यागौ भजौ नीके राम को जो ऐसो तत्व पायो है॥
लोक में विदित बात भई यह नई राम कृपा सिद्धि छई सन्त सेवा मन लायो है।
सोइ बड़भागी लोक बिदित बिरागी योगी सोई बड़ो सिद्ध जाको राम अपनायो है॥४६४॥

तिनके जो शिष्य रघुनाथदास योग ध्यानी मिथिला प्रत्यक्ष जिन नैननि निहारी है।
रंग भूमि शिव को पिनाक पाणि परशत तोर्‌यो रघुनाथ छबि वही उर धारी है॥
आलिन समेत ढिग जाय पहिराई जयमाला जिमि भयो व्याह जन सुखकारी है।
सोई सुख आठौयाम हिये बीच छायो वही कबित में गाय प्राण कीने बलिहारी है॥४६५॥

※ श्रीमगनीरामदासजी का जीवन चरित ※

मूल—छठी समै पितु तन हर्‌यो तब ते मगनीराम जन॥
कायथ कुल अनुराग सैदपुर ग्राम विशाला।
मडुबा तङ्गी तीनि सन्त सेवा प्रतिपाला॥
जेवर अटक्यो बनिक ऐन तेहि श्याम छुड़ायो।
नृप दशरथ के लाल बाल को दरश दिखायो॥
ख्यात बात कछु काल गत भक्त सुखद तन धाम तन।
छठी समै पितु तन हर्‌यो तब ते मगनीराम जन॥१२१॥

टीका-मगनीराम पिता रामदास कुल कायथ बिमल सन्त सेवी सैदपुर में निवास है।
श्रीगोसाईं रामायण तिनहीं प्रथम पाई पाछे तिरहुत देश भयो सु प्रकाश है॥
तिनके सुवन छठी समै राम भक्त बानी सुनतही हर्‌यो जानी होयगो बिनाश है।
छठयो सुपुत्र सुनि बचन बिहंसि उठ्यो तिया को जनाई यह जीवैगो सहास है॥४६६॥

मगनीराम बढ़े त्यौं त्यौं और रंग मढ़े राम भक्ति पथ चढ़े लागी संगति पियारी है।
अन्न धन आवै सब सन्तन पवावै भुक्त शेष आपु पावै मिलि बन्धु सुत नारी है॥
साधुन के हेत मोटो अन्न बेचि आवै गोहूँ चाउर मगावैं सब सन्त सुखकारी है।
बैलन पै लादि लादि और देश लिये जात दूत रोकि घाट कहीं देवो कर धारी हैं॥४६७॥

तीन तंगी मंडुवा की संग हैं हमारे और तंगिन में थोरो थोरो अन्न लिये जात है।
बोल्यो घटवारो तुम तीन भरि लेवो और बढ़ै ताको देवो करि यामें कुशलात है॥
खेती रही तंगी सब तीन में समाय गई पार जाय भरी सब अचरज आत है।
देखके प्रभाव सब पायन में परे धाय दोहा को सुनाय कही सन्त सुख आत है॥४६८॥

गुरु पितु मातु सुत बन्धु एक सन्त जन सन्तन के सरवसु एक सीताराम हैं।
सन्त बहु आये दाम घर में न पायो तिया जेवर को धरि सीधो लाये अभिराम हैं॥
देखि प्रेम भक्त रूप धरि हरि आपु गये जेवर छुड़ाय चले चीन्हें गुण ग्राम हैं।
पायन पर्‌यो सुनार दीनी निज भक्ति सार पीछे भक्त जानो ताहि दीनो निज धाम है॥४६९॥

※ श्रीबैजूलालजीका जीवन चरित ※

मूल—लाल लख्यो जाको धनी सो बैजू लाला भलो॥
मोहनपुर महतो सुजान हरि कृष्ण उजागर।
अटल भक्ति घर माहिं पुत्र पोता अति नागर॥
सदन आनि बहु विनय पूजि भोजन बिधि साजै।
संत चलत ज्वर अङ्ग नैन आंसू छबि छाजै॥
खेती राख्यो श्याम जू राम भक्त रक्षक बलो।
लाल लख्यो जाको धनी सो बैजू लाला भलो॥१२२॥

टीका-बैजूलाल कायथ वकील काहू भूपति के ऐपै राम भक्ति सतसंगति पियारी है।
सन्तन को वांछित पवावै मनमें न लावै घटि बढ़ि सम्पति की सुरति बिसारी है॥
बनिया के घर नौसै रुपिया करज भये राघव छोड़ाय लाये भक्त रूप धारी है।
जानी जब बात सब त्याग्यो जग नात रामधनी मिले बात सब बिगरी सुधारी है॥४७०॥

महतो सुजान हरि किसुन मोहनपुर गंगा के निकट भयो भक्त सुखदायकै।
सन्त जन आवैं तिन्हैं निज घर लावैं पूजि भोजन करावैं बर बाणी को सुनायकै॥
सन्त जब चलैं तब पाँयपरि राखै मृदु बचन सुभाषै दीजै दरश अघायकै।
भक्त प्रेम बस सन्त फेरि फेरि रहैं सियाराम कथा कहैं सुनै अति सुख पायकै॥४७१॥

शाली खेत पक्यौ काटिबे को नहीं सावकाश सन्त सेवा ही में रैन दिवस बिताने हैं।
चोर चोरी करै खेत काटिकै लगायो ढेर आये धनुधारी श्याम निरखि पराने हैं॥
भोर भये पूछे वेई सांवरो सिपाही कौन सुनी गूढ़ बाणी परा प्रेम में समाने हैं।
कीनो बड़ो काम खेत काटे की मंजूरी लेवो सन्त पद सेवो बैन सुनत लजाने हैं॥४७२॥

देखिकै प्रभाव सब चोर साधु भये सन्त सेवा गति लये सो सुभाव तजि दयो है।
संगति प्रभाव ते असाधुहू सुसाधु होत नीचहूँ सलिल गंग मिले होत नयो है॥
काक खल पिक होत बकहू मराल होत मलय प्रसंग सब वृच्छन ज्यौं लयो है।
पारस प्रसंग ते कुबर्णहूँ सुबर्ण जैसे सन्तन को संग पाय सन्त को न भयो है॥४७३॥

※ श्रीहरिजनदासजी का जीवन चरित ※

मूल—परम तत्व श्रीराम के नाम रूप हरि जन भज्यौ ॥
सिरसीधाधी राम कबीर के बंश प्रधाना।
राम उपासक सन्त छाप सेवा मन माना ॥
प्रति सम्बत श्रीराम जन्म दिन मिथिला जाही।
अनुरागी निमिराज मंत्र जपि निशा सिराही ॥
जन्म भूमि मिथिला अवनि मोरसण्ड इछुमति सज्यौ।
परमतत्व श्रीराम के नाम रूप हरिजन भज्यौ ॥१२३॥

टीका-हरिजनदास सन्त भाविक प्रवर राम कबीर के बंश में श्रीराम तत्व लह्यो है।
तिरहुत देश धाधी सिरसी प्रसिद्ध ग्राम गुरु कुल गादी सेवा अधिकार गह्यो है ॥
राम जन्म दिन प्रति सम्बत जनकपुरी यात्रा करि आवै सन्त सेवा सुख चह्यो है ॥
श्रीराम जैराम जै जै राम निमिराज मंत्र जाप के प्रताप कलि दोष मूल दह्यो है ॥४७४॥

※ श्रीराघौदासजी श्रीघनश्यामदासजी का जीवन चरित ※

मूल—हरि ब्यास बंश उद्भव बनी राघव श्रीघनश्याम की ॥
सेवा सन्त अमान मान प्रद पर उपकारी।
साधक-सिद्ध सुजान ध्यान मति शुद्ध बिचारी ॥
युगल प्रशंसित भक्त जक्त आशा नहि राखी।
फतेहचन्द के प्रेम बँधे अभिमत अभिलाखी ॥
मोद फर्‌यो सुरतरु अधिक लही भक्ति सुख धाम की।
हरि ब्यास बंश उद्भव बनी राघव श्रीघनश्याम की ॥१२४॥

टीका-राघौदास घनश्यामदास सिद्ध साधक उपासक नगर के पुजारी कृपा अैन हैं।
सन्त हरि व्यासी मिथिला की छवि भासी विप्र साधु सुख रासी सर्व जीव सुख दैन हैं॥
गण्डकी निकट मुदफरपुर बसे फतेचन्द प्रेम फसे जाहि दीनो सुत चैन हैं।
छोड़ि जग आश सन्त मण्डली निवास राम कथा गुण राशि पाय भरे उर नैन हैं ॥४७५॥

※ श्रीमूरुखदासजी का जीवन चरित ※

मूल—मूरुख जेहि संसार कह सो महान मानस बिमल ॥
दास अनन्य उदार पार संसार उधारक।

बोधराम बर शिष्य भक्ति दशधा बिस्तारक ॥
कील स्वामि के बंश प्रगट उत्तम बड़भागी।
राम नाम धुनि मंत्र राम तारक अनुरागी ॥
मिथिला भूमि अनादि थल सिद्धाई महिमा प्रवल।
मूरुख जेहि संसार कह सो महान मानस बिमल ॥१२५॥

टीका-कील स्वामी बंश में प्रसिद्ध भये नाम मात्र मूरुख कहत पै ए बड़े ज्ञानमान हैं।
बोधराम द्वारा जिन भक्ति को बिस्तार कियो जनक लडैती कृपा पायो राम ध्यान है ॥
राम मन्त्र तारक की धुनि आठौयाम रोम रोम ररंकार बानी उठत प्रधात है।
योग आठौ अंग गति सहज देखाई सदा चेतन समाधि की बड़ाई को बखान है ॥४७६॥

※ श्रीहंसरायजीका जीवन चरित ※

मूल—हंसा हंस बिवेक लहि खुद बखरा निधि भक्ति लियो ॥
चारि सम्प्रदा संत सकल सेवत सम जानी।
रसिक भक्त तिन माहि बसे तिहि दरशत ध्यानी ॥
कलि पाखंडी वेष मात्र जो जाय दुवारे।
भली भांति समुझाय देत सुख परम पियारे ॥
कील बंश गुरु लहि सरस राम भक्ति पथ दृढ़ कियो।
हंसा हंस बिवेक लहि खुद बखरा निधि भक्ति लियो ॥१२६॥

टीका-खुद बखरा में हंसराय रामभक्त कीलबंशी रामकिंकर के शिष्य सुखदानी है।
चारि सम्प्रदाय मध्य कोई सन्त होय तिन्हैं सेवै सम मानिकै बिखमता बिहानी है ॥
भेषधारी कलि के पाखण्डी जिन आवै तिनहू को मृदु बानी कहि देत अन्न पानी है।
रसिकन रीति भांति हंस ज्यौं बिमल गहै तिनही को संग चहै जानै राम ध्यानी है॥४७७॥

※ श्रीजनगोविन्ददासजी का जीवन चरित ※

मूल—जनगोबिंद बर संत पद ध्यान धरत जन बिमल मति ॥
जनगोबिंद बर ग्राम बस्यो बर भजन प्रतापी।
सीताराम पवित्र नाम धुनि मंत्र सुजापी ॥
गंगा तट बट निकट समाधी निरुपम ध्यानी।
राम कहत बलबीर दरश यह अकथ कहानी ॥

साखी बिपुल बिचित्र पद सदाब्रती सत सुखद गति ।
जनगोबिंद बर संत पद ध्यान धरत जन विमल मति॥१२७॥

टीका-सुरसुरानन्दजी के द्वारा में प्रसिद्ध जनगोबिन्द महान गङ्गाजी के तट भये हैं।
बट के निकट राम मंत्र जाप ठान्यौ उर ध्यान के धरत कृष्ण दरशन दये हैं॥
अकथ कहानी बिन कहे न रह्यो परत राघव स्वभाव कल्पतरु को सो लये हैं।
जाको जैसो भाव ताको तैसो हरि भासत है कहूँ निज इच्छा बहु रूप निरामये हैं॥४७८॥
चले जगन्नाथजी के दरशन हेत इहां शिष्य दास पूरण के हाथ सेवा राखी है।
तखत बिहार सूबे नायक ने ग्राम छेक्यो पाई सुधि लिखी जनगोबिन्द जू साखी है॥
बांचत ही पाती लागी आग दुष्ट नष्ट भये राम राखै सन्त जो प्रतिज्ञा मुख भाषी है।
आये निज धाम बैठि पायो बिसराम संत सेवा सुख हेत लोन अन्न अभिलाषी है॥४७९॥

※ श्रीपूरणदासजी का जीवन चरित ※

मूल—जनगोबिन्द गुरु कृपा ते पूरण पूरणता लह्यो॥
आज्ञाकरी सुभट सुसेवक नाम अहारी।
सूबे तख्त बिहार गर्द्दि मर्द्यो अधिकारी॥
सहज राम सेवक सुजान सेवा में नागर।
श्रीमोहन बर दास भक्ति दशधा के आगर॥
सुन्दर परम विचित्र जन निर्व्यलीक सब जन कह्यो।
जनगोबिंद गुरु कृपा ते पूरण पूरणता लह्यो॥१२८॥

टीका-शिष्य जन गोबिन्द के पूरण सुदास भये गुरु आज्ञा पाय सब कारज सुधारहीं।
नाम को प्रभाव सन्त सेवा को प्रभाव मूढ़ जन जैसे जानै सोई यतन बिचारहीं॥
सुजन सहज राम रामजी के दास भये मानद असार तजि गहत सुसारहीं।
तिनके मोहनदास गादी पै महंत लसैं आठोयाम लखैं उर दम्पति बिहारहीं॥४८०॥
सन्तदासजी के शिष्य अमल सुन्दरदास राजैं श्याम सुन्दर सुरूप ध्यान पायकै।
त्यागि लोक संग्रह सुनिर्मल बैराग्य गह्यो राम कथा कहै सुनै दुबिधा मिटायकै॥
परम एकान्त थल बसत सुसांत लही भक्ति योग बल भये लोक सुखदायकै।
गोधन सुखद सिंह मार्‌यो बानी बदतही सन्त गिरा सबै काल अचल बनायकै॥४८१॥

※ भक्तमाली श्रीरामचरणदासजी का जीवन चरित ※

मूल—बैराग्य लह्यो संसार तजि राम चरण प्रिय दास भयो॥
जानकि बल्लभ कुञ्ज महल रस रीति उपासी।

रसिक सन्त जन सकल प्रशंसत अति सुख रासी॥
भक्तमाल की कथा सन्त जन मन आकर्षत।
नाभाजू की कृपा भाव की बर्षा बर्षत॥
अनभीनंद द्वारा प्रगटि अग्रस्वामि रस पथ लयो।
बैराग्य लह्यो संसार तजि रामचरण प्रिय दास भयो॥१२९॥

टीका-भक्तमाली नाम रामचरण सुदास बड़े भाविक रसिक ज्ञान भक्ति के निधान हैं।
शम दम बिमल बिचार तोष शील क्षमा दया बपु धारे सन्त सेवक महान हैं॥
रसिक समाज बैठि भक्तमाल गावैं पद भाव मन हरन लखावै में सुजान हैं।
बाणी मन हरन रहस्य मन हरन दम्पति मन हरन को सदा उर ध्यान हैं॥४८२॥

※ श्रीरामदयालजी का जीवन चरित ※

मूल—रामद्याल भागवत मति बिप्र भक्त जन मन सुखद॥
तेघड़ामऊ सुजान भक्ति बिस्तार क्षेम कर।
राम उपासक छाप सरस गुण गान प्रेम भर॥
भक्तमाल अनुराग आरषी कथा निरंतर।
भक्त चरण अनुराग महाशय स्वच्छ स्वतंतर॥
बेनीमाधव सुवन बर रामभक्त सज्जन विशद।
रामदयाल भागवत मति विप्र भक्त जनमन सुखद॥१३०॥

टीका-रामद्याल विप्र साधु सेवा में निरत बेनीमाधव सुवन रामभक्ति मति भीजिये।
तेघड़ामऊ में जन्म पर उपकारी बालमीक भक्तमाल गाय जीव सुख दीजिये॥
आवैं जे रसिक सन्त राखै बिरमाय करजोरि कहै जग ते बचाय हमैं लीजिये।
कहै राम प्यारे सीताराम के दुलारे करौ राम गुण गान चिन्ता मन में न कीजिये॥४८३॥

※ श्रीजोरीसिंहजी का जीवन चरित ※

मूल—परम भक्त सेवक सुजन मगह धरा पावन करी॥
बस्यो अमारी सन्त सुखद जिमिदार अनुठो।
सेवत प्रीति समेत गुप्त गति पावत जूठो॥
निशा गई तब संत बिपुल आये दरवाजे।
मालपुवा तस्मई श्याम सजि दियो समाजे।

परि उपास भोरहिं लख्यो जोरी भल दावन धरी।
परम भक्त सेवक सुजन मगह धरा पावन करी ॥१३१॥

टीका-सन्त सेवा सुभट अमारी जिमिदार एक जोरीसिंह नाम देश मगह में भये हैं।
सीताराम चरण कमल रस लुब्ध भृङ्ग रैनि दिन श्याम गौर रूप रंग रये हैं॥
एक दिन सन्ध्या समै सन्त बहु आये सुनि चरणन शीश नाये बास शुभ दये हैं।
भोजन की ईच्छा जोई होय सोई लावैं बोले मालपुवा खीर बिन दिन बहु गये हैं ॥४८४॥
सन्तन को आयसु लै मन्दिर में आये लाल बिनय सुनाय कही कैसो अब कीजिये।
जानि भक्त हीकी प्रभु आपही सुधारे जोरीसिंह रूप धारे तीनौ भाग सम लीजिये॥
मालपुवा खीर आप भोग को लगावो निज जूठनि प्रभात हम आवैं तब दीजिये।
भोर सीधो लिये सन्त निकट पधारे पाहि पाहि कै पुकारे अपराध क्षमा कीजिये ॥४८५॥
सन्त बोले लेवो चरणामृत प्रसाद भलो भोग लगवायो सब जैति भनै तेरी है।
पूजा पाठ लगे भोग वेला नहिं आई क्षुधा लगैहू न पाई रिद्धि लाय करी ढेरी है॥
जानी जब बात भये पुलकित गात अहो करुणा निधान जो पै कृपा दृष्टि हेरी है।
दीजै सतसंग निज भक्ति भाव रंग जाते होय मेरी मति सियानाह पद चेरी है ॥४८६॥

॥ श्रीहरेराम हरिलालजी का जीवन चरित ॥

मूल—अति मधुर कथा बर मित्रता हरेराम हरिलाल की॥
एक लली मिथिलेश लली वृषभान सुता की।
प्रीतम नव घनश्याम राम श्रीकृष्ण हैं जाकी॥
श्रीसरयू तट कुञ्ज एक यमुना तट एका।
रसिक सजाती युगल ध्यान की टेक बिवेका॥
एक लसै हरिबंश पथ एक मलूक कृपाल की।
अति मधुर कथा बर मित्रता हरेराम हरिलाल की ॥१३२॥

टीका-पटना में हरेराम हरिलाल भक्त भये रसिक श्रृङ्गारी मिलि मित्रता बढ़ाई है।
हरेराम बिदित मलूकजी के द्वारे हरिलाल हरिबंशजू की भाव गति पाई है॥
एक रघुचन्द मिथिलेस लली अली रास विपिन प्रमोद सरयू के तट भाई है।
एक बृजचन्द बृषभान लली अली मिलि यमुना पुलिन बंशी धुनि मन लाई है ॥४८७॥

॥ श्रीदेवादासजी का जीवन चरित ॥

मूल—हरेराम गुरु कृपा ते देवा गुणगण विमल मति॥
श्रीमिथिलेश कुमारि चरण पंकज उरधारी।

उत्तम पथ श्रृङ्गार भक्ति दशधा अधिकारी॥
पंचाध्याई राम रास पाठक नित नेमी।
अग्रस्वामि बाणी रसाल बरणत बर प्रेमी॥
बाल अली बिस्तर सरस ध्यान मंजरी कंठ गति।
हरेराम गुरु कृपा ते देवा गुण गण विमल मति ॥१३३॥

गुरु सतगुरु को इष्ट दोउ एक समुझि दोनौ लख्यौ॥
हरेराम जीवन सु छाप पद एक जु राखै।
बृज जीवन की छाप इष्ट हरिलाल जु भाखै॥
कबहुं लखै यमुना सुकूल सरयू तट कुञ्जै।
बरसाने लखि कबहुं सरस मिथिला छबि पुञ्जै॥
युग अनन्य बर संत पद सेवत रस लीनौ चख्यो।
गुरु सतगुरु को इष्ट दोउ एक समुझि दोनौं लख्यो ॥१३४॥

टीका-हरेरामजी के कृपा पात्र देवादास भये मिथिलेस लली रघुचन्द जिन ध्याये हैं।
पंचाध्याई राम रास अग्रस्वामी बालअली भणित प्रबन्ध पाठ मन अति भाये हैं॥
छोटे शिष्य भये रामजीवन रसज्ञ जिन्हैं हरेरामजी से हरीलाल मांगि लाये हैं।
तिन्हैं निज ओर की उपासना लखाई तिन मानिकै अभेद दुहुँ ओर यश गाये है ॥४८८॥

॥ श्रीजीवनरामजी तथा श्रीगोपीनाथठाकुरजी का जीवन चरित ॥

मूल—जीवनराम सु जानकी नाम सृङ्खला जुरि भली॥
हरेराम हरिलाल इष्ट को ध्यान धरत हैं।
जीवन गुरु के चरण शरण बाणी उचरत हैं॥
संतन के वल्लभ ठाकुर मंदिर पधराये।
श्रीप्रमोद वृन्दाबन दोऊ मन अति भाये॥
युगल ध्यान सेवा युगल युगल सुयश कवितावली।
जीवन रामप्रसाद की नाम श्रृङ्खला जुरि भली ॥१३५॥

मूल—ठाकुर गोपीनाथ के पूजा पर द्विज बिमल जन॥
बल्लभजू के बंश उदित गुरु पाय उजागर।
रूपवंत गुण शील भलो सेवा बिधि नागर॥

बसीकरण मनहरण सकल गायक जन आवैं।
तिनमें श्रीगोपालचन्द अद्भुत गुण गावैं॥
कीर्तन यश अनुपम रहनि ठाकुर जन गुण कुशल मन।
ठाकुर गोपीनाथ के पूजा पर द्विज विमल जन॥१३६॥

टीका-पटना में गोपीनाथ पूजा पर बिप्र एक बल्लभ के बंश में विदित गुरु पाये हैं।
रूप गुण शील बुद्धि इष्ट अनुकूल जानि परा रति ठानि लली लाल को रिझाये हैं॥
गान में निपुण श्रीगोपालचन्द ठाकुर अगरवाले दोऊ महा माधुरी समाये हैं।
समै सम उत्सव समाज रास लीला करि नर तन पाये की सफलता जनाये हैं॥४८६॥

※ महान्त श्रीनत्थूदासजी का जीवन चरित ※

मूल—पुत्र सुपाटलि प्रगट थल शुचि महांन रसिकन सुखद।
नत्थूदास महंत अमित गुण गान प्रवीना।
दशधा बिमल बिनोद रास रस ज्यों जल मीना॥
सीताराम निकुंज केलि रसिकन की बानी।
बिबिध पदावलि कण्ठ सावनी छबि सरसानी॥
ब्याह बितान लह्यो सरस सारी रामकृपा बिशद।
पुत्र सुपाटलि प्रगट थल शुचि महान रसिकन सुखद॥१३७॥

टीका-पटना में नत्थूदास भाविक महन्त भये सारो राम भाव अंग अंगन में लेखिये।
दम्पति बिहार सुधा सागर के मीन सदा परा दशा नैन में प्रगट ही विलोकिये॥
दम्पति निकुंज केलि कलित रसिक बाणी बिबिध प्रबन्ध कंठ पाठ अवरेखिये।
सावन बिवाह होरी जन्म दिन उत्सव बिधान के रसज्ञ एक इनहीं को देखिये॥४६०॥

※ श्रीजगन्नाथदासजी का जीवन चरित ※

मूल—जगन्नाथ हरि भक्ति पथ बोधक सज्जन बिमल मति।
सीताराम रहस्य कथा उर अंतर राखै।
श्रीभागवत प्रमाण भक्ति की परता भाखै॥
वक्ता प्रबल रसज्ञ भव्य भाविक बर पंडित।
आपाटली महंत प्रबर अनवद्य अखण्डित॥
निपुण विशिष्टाद्वैत मत पोषक शोषक काल गति।
जगन्नाथ हरि भक्ति पथ बोधक सज्जन विमल मति॥१३८॥

टीका-नत्थूदासजी के शिष्य जगन्नाथदास भये पंडित प्रबर नेम प्रेम एक सारे हैं।
मासिक पारायण भागौत पाठ नित्य करैं पूजा राजभोग निज हाथ सो संवारे हैं॥
सीताराम माधुरी रहस्य उर अन्तर में प्रौढ़ताई हेत बहु ग्रन्थ मन धारे हैं।
अष्टोतरशत वर्ष आयुष बिताय अन्त कालहू में लखनाम नेम न बिसारे हैं॥४६१॥

※ श्रीजानकीदासजी का जीवन चरित ※

मूल—जानकीबल्लभ प्रेम पथ रसिक जानकीदास लह्यो॥
पुर पाटलि के सुवन मध्य बसि भक्ति दृढ़ायो।
रसिक गुरू निज पाय भाय सारी तन पायो॥
बिरह अंग नैना कज्जल आंसू सङ्ग आयो।
भाविक सकल प्रशंसि अली चरणन शिर नायो॥
पुरुषतनी मण्डपतनी उत्सव तन रसिकन कह्यो।
जानकीबल्लभ प्रेम पथ रसिक जानकीदास लह्यो॥१३९॥

टीका-नत्थूदास शिष्य लघु जानकी सुदास जिन रामानुजजी से रसराज रीति पाई है।
पुरुष आवेश बिसरायो अली भाव पायो रैपुरा बिवाह लीला मध्य दरशाई है॥
दूलह स्वरूप जब देख्यो निज नैन भरि कज्जल समेत दृग आंसू झरिलाई है।
मंडप बितान रचनादि पेखि कहै जन प्रेम चतुराई रसिकन सुखदाई है॥४६२॥

※ श्रीमस्तरामजीका जीवन चरित ※

मूल—पूर्बकाल परभक्त ए अच्युत कुल पालक भये॥
केवलरामहि मस्तराम रौजा सुख रासी।
विष्णु स्वामी सम्प्रदा रैपुरा सन्त उपासी॥
लक्ष्मणदास महन्त सन्त कांधर अति नीको।
तुलसी आरख कथा राम अनुरागी जीको॥
जिनके सहज स्वभावही राम भक्ति ठाकुर लये।
पूर्व काल पर भक्त ए अच्युत कुल पालक भये॥१४०॥

टीका-केवलरामजी के शिष्य मस्तराम रौजा बसि सन्तन की सेवा करि भये सुखरासी हैं।
रैपुरा में विष्णु स्वामी लछमणदास दास कान्हर महन्त साधु सेवा के प्रकाशी हैं॥
तुलसीदास बसत सलेमपुर सन्त सेवी बालमीक रामायण कथा के बिलासी हैं।
तिनके सहज राम बड़े रामभक्त दास ठाकुर श्रीरामभक्त मारग सुपासी हैं॥४६३॥

* श्रीधरणीदासजी का जीवन चरित *

मूल—धरणी पर धरणी कथा महराई बाणी भली ॥
माझा सरयू निकट भजन अनुभवो महाशय ।
द्वादश गादी सुभट शिष्य जग विदित पराशय ॥
तिनहीं के करुणा निधान जन केवल रामा ।
श्री परसादी राम भये परसा सुख धामा ॥
राम प्रेम मूरति प्रगट राम सेवक दानी बली ।
धरणी पर धरणी कथा महराई बाणी भली ॥१४१॥

टीका-धरणीदास प्रथम भये हैं स्वयं सिद्ध पाछे विमल विनोदानन्द गुरु मन भाये हैं ।
सरयू के तट मांझा बसिकै भजन बल लहराई बाणी मध्य अनुभव गाये हैं ॥
द्वादश प्रसिद्ध गादी शिष्य समरत्थ भये राम भक्ति साधु सेवा सुरुचि बढ़ाये है ।
बड़े शिष्य करुणा निधान को बुलाय निज गादी पै बैठाय परधाम को सिधाये हैं ॥४९४॥
तिनके केवलराम शिष्य समरत्थ भये तिनके प्रसादीराम पर्सा में बिराजे हैं ।
तिनके सुशिष्य रामसेवक प्रसिद्ध भये राम प्रेम मूरति प्रगट जनु राजे है ॥
धरणीदासजी के दूजे शिष्य रामदास पारू भजन दृढ़ाय सन्त सेवा सुख साजे हैं ।
ऐसे बहु शिष्य सम्प्रदाय के प्रकाशी राम भक्ति के सुपासी ठौर भले भले भ्राजे हैं ॥४९५॥

* श्री श्यामदासजी का जीवन चरित *

मूल—पदकञ्ज द्वन्द बन्दौं सदा जे नियता दशधा भक्ति के ।
श्यामदास एक प्रवर शिष्य श्रीअग्रस्वामि के ॥
पै हारी जेहि दरश परश मति पलटि नाम के ।
मृत्युञ्जय गति लही क्रिया मानसी लखाई ॥
नातो मिथिला धाम अवध की रीति दृढ़ाई ।
उन्मत्त दशा बिचरत अवनि बसि चिरान सजि सुगति के ॥
पदकञ्ज द्वन्द बन्दौं सदा जे नियता दशधा भक्ति के ॥१४२॥

टीका-श्यामदास अग्रस्वामीजी के प्रिय शिष्य जिन नगर चिरान बसि भजन दृढ़ायो है ।
हरि इच्छा प्रथम संन्यासिन को संग पाय हिंगलाज गये देवी स्वपन दिखायो है ॥
पुष्कर की छाया में प्रसिद्ध श्रीपैहारी सिद्ध तिनके मिले ते सब ह्वैहैं मन भायो है ।
आज्ञा पाय स्वामी के भजन भूमि आये तहां बैठि ध्यान मञ्जरी के पाठ मन लायो है॥४९६॥

बोले हैं प्रत्यक्ष तुम कौन के हो बैन सुनि चिन्ह पहिचानि परे दण्डवत आयकै ।
अग्र शिष्य जानि शिर दीनो निज पाणि मांगु बर भई बाणी तब बोले शिरनायकै ॥
सीताराम भक्ति बर दीजै अनपायिनी जो जीव सुखादायिनी बचन मन कायकै ।
एवमस्तु बोलि काल जीतिवे की शक्ति दीन्हीं रहौ तहां अभिमत पाय हौ अघायकै ॥४९७॥
रैवासे में आय अग्रस्वामी पद शीश नायो पूछत कुशल बात सब कहि दीनी है ॥
आशिष पुनीत पाय रहे कछु काल तहां ईश प्रेरणा ते श्रीअवध गति लीनी है ।
आवत प्रत्यक्ष राम धाम को प्रभाव लख्यो मिथिला बिलोकि जाय द्विगुण नवीनी है ॥
दोऊ धाम में जो प्रभु मूरति निहारी श्याम गौर छबि वारी सोई मानसी में कीनो है॥४९८॥
गंगाजी के निकट बिलोकि रमणीय भूमि नगर चिरान सिद्ध पीठ मन भाये हैं ।
बैठि गुफा अचल समाधि वर्ष एक साधी यमन फकीर आये पेखि सुख पायो है ॥
एक गुरु कृपा को प्रसंग सुनि रंग बढ्यो सर्बसु समर्पि कै प्रसाद अपनायो है ।
योग बल इनही के समकाल राख्यो तन अन्त समैं राम धाम संगही सिधायो है ॥४९९॥
भये बहु शिष्य साधु सेवाहूँ प्रसिद्ध भई रिद्धि सिद्धि छई मही मण्डल में ब्यापी हैं ।
गूजरी को दूध दही सन्तन पवायो वाहि गंगा पार कीनी जाने बड़े मंत्र जापी है ॥
करत बिदित बात मरी पति ने जनाई फेरिकै जियाई ग्वाल मति अति कांपी है ।
जिनै सुनि शिष्य कियो सन्त सेवा प्रेम दियो ऐसे कोई कोई सिद्ध अजहूँ प्रतापी है ॥५००॥

* श्री चिन्तामणिदासजी का जीवन चरित *

मूल—श्यामदास गुरु कृपा लहि शिष्य उजागर भये प्रबल ।
चिन्तामणि सुख राशि मनोहरदास गुणाकर ॥
बन्धु प्रीति निर्दोष युगल दशधा के आकर ।
बाहर पूजा नाहि मानसी ध्यान समाधी ॥
गुफा बसे दोउ बन्धु सुरति महली निरुपाधी ।
रसिक जानकी बल्लभी प्रबल काल कीनो अबल ॥
श्यामदास गुरु कृपा लहि शिष्य उजागर भये प्रबल ॥१४३॥

टीका-श्याम दासजी के शिष्य चिन्तामणिदास दूजे मनोहरदास सर्ब सद्गुण खानी है ।
दोनों गुरु भाई गुफा बैठि मानसी दृढ़ाई तारक जपत श्याम गौर रूप ध्यानी है ॥
अष्टयाम एक रस भजन प्रताप काल विषम कराल गति जात नहि जानी है ।
सन्त मिले राम गुण सुनै औ सुनावै गूढ़ रीति प्रीति कोई राम रसिकन जानी है ॥५०१॥

※ श्री ऐनीरामजी का जीवन चरित ※

मूल—कलि में अन्न सु दान है नाम जानकी रमण के।
लेना नाम रसाल सुफल देना अन दाना॥
ऐनीराम प्रताप संत जन करहिं बखाना।
बाणी की जेहि टेक जानकी बल्लभ नामा॥
लीन्हे बरण जकार आदि सुन्दर दुइ ग्रामा।
सदाबर्त थापी अघट सब जीव सुख भवन के॥
कलि में अन्न सु दान है नाम जानकी रमन के॥१४४॥

टीका-ऐनीराम कोई बादसाह कामदारहु ते आज्ञा पाय सेना सजि नाव चढ़ि चले हैं।
अटकी सो आइकै चिरान उर शोच भयो पूजा जब मानी शोक मूल सब दले हैं॥
शत्रु को हराय बहु द्रब्य सों भराय फेरि आये शिर नाय बोले वाचा शुभ फले हैं।
चलै की तैयारी सुत मृतक की पाती आई धरि उर धीर महा मोह दल मले हैं॥५०२॥
धन परिवार बिदा करि गुफा पास आये दरशन पाय दीर्घ दण्डवत कीनी है।
जोरि कर बात निज हिये की जनाई उनहूँ के मन भाई मंत्र दीक्षा शुभ दीनी है॥
भूमिपति हाल सुनि खबर पठाई तुम कीनो बड़ो काम भूमि लेवो नहीं लीनी है।
पेखि हठ इष्ट आदि अक्षर के नाते जलपुरा औ जलालपुर ग्राम मति भीनी है॥५०३॥
मनोहरदासजी के मानसी प्रधान पूजा राजस संक्षेप करैं सहित बिवेक है।
सेर युग चना धरि बांटै अंजुरी सो भरि आवैं तिन्हैं देत तऊ घटत न नेक है॥
ऐनीराम ग्राम युग स्वामी को जनाये भई आज्ञा सन्त सेवो राखौ भजन की टेक है।
इनको अनूप यश छायो कहैं देखे जिन सन्तन में राम अनुरागी सन्त एक है॥५०४॥

※ श्रीभगवानदासजी का जीवन चरित ※

मूल—शिष्य सु ऐनीराम के युगल प्रवल समता कथा।
मगनी रामप्रताप संत सेवा रति लीनी॥
आरति करि भगवानदास गंगा बश कीनी॥
कृपाराम प्रिय लाड नाम तेहि शिष्य प्रतापी।
बहिरङ्ग प्रिय भक्ति प्रगट पूजा जिन थापी॥
मौजी रामकृपाल भे भक्ति मौज नाहिन तथा।
शिष्य सु ऐनीराम के युगल प्रवल समता कथा॥१४५॥

टीका-ऐनीरामजी के शिष्य युगल प्रवल भये एक भगवानदास दूजे कृपाराम है।
कोई विमुखी ने गंगा मध्य भूमि छेकी सुनि बोले भगवान नहीं कीनो भलो काम है॥
गङ्गाजी की आरती उतारि सो जनाई भूमि तुरत ढहाई तहां कीनो निज धाम है।
देखिकै प्रभाव खल पायन में परे आय लीने अपनाय कही भजौ सीताराम है॥५०५॥
मगनीराम ही को कृपाराम हैं दुलार नाम बहिरङ्ग सेवा जिन सरस दृढ़ाई है।
तिनके सुशिष्य मौजीरामजी महन्त भये सन्त गुरु कृपाराम भक्त मौज पाई है॥
सन्त चरणामृत प्रसाद में अनन्त प्रीति सीताराम रसिकन रीति मन भाई है।
रामकथा श्रवण सुखद आठौयाम नाम कीरतन नेम प्रेम उर अधिकाई है॥५०६॥

※ श्रीश्यामदासजी की शिष्य परम्परा ※

मूल—दास चित्त चिन्ता शमन चिन्तामणि गुरु ध्यान धरि॥
तेजाराम सुतेज सकल मण्डल में व्यापी।
अग्रस्वामि के वंश अमित गुण भजन प्रतापी॥
सूरदास प्रिय शिष्य भजन बल कालहिं टारे।
बहुत काल बपु राखि जानकी बल्लभ प्यारे॥
चरणदास पालक भये सन्त सभा सनमान करि।
दास चित्त चिन्ता शमन चिन्तामणि गुरु ध्यान धरि॥१४७॥

टीका-श्यामदासजी के शिष्य चिन्तामणिदास लघु तिनके सुशिष्य प्रिय तेजाराम भये हैं।
रही कछू आश गुरु ध्यान ते शमन भई सहित बिवेक खलपुरा बास ठये हैं॥
तेजाराम शिष्य सूरदास चिरंजीवी श्री चरणदासजी को निज ओल जिन लये हैं।
ऐसे अग्रस्वामी परिवार में समर्थ सन्त विदित अनेक साधु सेवा सुख छये हैं॥५०७॥

※ श्रीरामेश्वरदासजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीचरणदास गुरु कृपा ते रामेश्वर अनुभव फल्यो॥
राम भक्ति में लीक नीक सन्तन की सेवा।
रसिक अनन्य सुगण्य मान्य देवी नहि देवा॥
परम सती प्रिय नारि यथा अनसूया जानौ।
अत्रि आप उपमा सम्भव त्रै पुत्र जु मानौ॥
अथवा देवहुती सरिस कपिल प्रगट सुखमा पल्यो।
श्रीचरणदास गुरु कृपा ते रामेश्वर अनुभव फल्यो॥१४७॥

टीका-श्रीचरणदासजी के रामेश्वरदास शिष्य कान्यकुब्ज बंश में सुपुण्य जन्म पाये हैं।
श्रीगोपाल पशु राम कपिल सुपुत्र तीनि अनुसूया अत्रि मुनि तुल्य जिन्हैं गाये हैं॥
त्यागि ग्रह मोह जाय बन में भजन कियो याते देवहूती की समानता बताये हैं।
भजन प्रभाव पूर्व राम दरशन भयो पाछे भाव पाय गूढ़ी बास मन लाये हैं॥५०८॥

※ श्रीब्रजमोहनदासजी का जीवन चरित ※

मूल श्रीचरणदास के शिष्य बर ब्रजमोहन मोहन भले॥
सीताराम उपास्य सुदृढ़ सेवक रति लीने।
करि खलपुरा निवास सन्त सेवन भल कीने॥
देवादास अनूप शिष्य बर ब्रजमोहन जू के।
त्यागि बसे अस्थान चिरान कथा ज्यों ध्रू के॥
कृपा जनकजा कर दिये चूड़ा अलि रंगत रले।
श्रीचरणदास के शिष्य बर ब्रजमोहन मोहन भले॥१४८॥

टीका-श्रीचरणदासजी के दूजे प्रिय शिष्य ब्रजमोहन रसिक बड़े सन्त हितकारी है।
गुरु परधाम गये गादी के महन्त भये ऊँच नीच सेवा निज हाथ ते संवारी है॥
तिनके सुशिष्य देवादासजी चिरान बसे ध्रुव ज्यों बैकुंठ द्वार मान्यो सुखकारी है।
रामदासजी से भेद पाय ध्यान कियो लली चूड़ा करि दिये जानि आलि निज प्यारी है॥५०९॥

※ श्रीरामगुलेलाजी का जीवन चरित ※

कृपा सु मौजीराम गुरु रामगुलेला दयानिधि॥
परम अनुग्रह रूप सुखद सुन्दर मृदु बोलनि।
भूखे जन को देखि द्रवै तेहि देत अतौलनि॥
बाणी रामगोपाल सरस रसना अनुरागी।
कथा कीर्तन भीर सन्त सेवन बड़भागी॥
परम उदार सुकल्पतरु सरस आन उपमान विधि।
कृपा सुमौजीराम गुरु रामगुलेला दयानिधि॥१४९॥

टीका-मौजीरामजी के शिष्य रामगुलेलाजी बड़े भक्ति के निधान मृदु बोलनि सुखारी है।
कथा कीरतन सन्त सेवा अनुरागी बड़भागी दयावन्त सर्व जीव हितकारी है॥
तिनके रामगोपालदास प्रिय शिष्य भये रसिक गुरू से रस भावना विचारी है।
निज माया प्रभुता देखाई रघुनाथ सोऊ माथे पर धारी रहो रीति न बिसारी है॥५१०॥

※ श्रीगङ्गादासजी का जीवन चरित ※

मूल—कलियुग काल कराल में भजन नेम निवह्यो सुगम॥
गङ्गादास अनूप सुयश रामायण गावत।
सीताराम उपास्य नाम रसना जु लड़ावत॥
सर्बकाल चैतन्य भजन सिद्धांत बिचार्यो।
सेवा आलस रहित गुरुदेवा उर धार्यो॥
अग्रस्वामि के बंश गुण कथा अमित गुण गति अगम।
कलियुग काल कराल में भजन नेम निवह्यो सुगम॥१५०॥

टीका-देवादासजी के शिष्य गंगादासजी अनूप बड़े गुरु भक्त सीताराम के उपासी हैं।
श्रीगोसाईं रामायण मोद भरि बैठि नाम धुनि लावैं जग विषै ते सदा उदासी हैं॥
सन्त गुरु हरि सेवा रहत चैतन्य अति धन्य पुण्य जन जाकी लोक मति नासी हैं।
रसिक अनन्य मिले अधिक प्रसन्न होत मिली जनु महा सुख सम्पति की रासी हैं॥५११॥

※ रामायणी श्रीश्यामदासजी का जीवन चरित ※

मूल—श्यामदास रामायणी छाप महन्त सुजान जन॥
डोरीगंज अकाश वृत्ति गङ्गा तट बासी।
तुलसी कृत पर नेह देह भरि कथा उपासी॥
रामदास बर शिष्य सुभट रामायण गायो।
नेम प्रेम निर्वाहि राम पद छेम सोहायो॥
भक्ति योग अनुभव फर्यो धरनेस्वरी अमान मन।
श्यामदास रामायणी छाप महन्त सुजान जन॥१५१॥

टीका-धरणीदासजी के बंश श्यामदास रामायणी बिदित महान सियाराम अनुरागी हैं।
नगर चिरान डोरीगंज गंगाजी के तीर बैठे साजि मन्दिर अकाश बृत्ति लागी हैं॥
रामायण पाठ सतसंग रंग रैन दिन रामदास शिष्य मिले तेऊ बड़भागी हैं।
तिन्हहूँ के शिष्य रघुनाथदास विद्यमान साधु गुण पूरण असाधु गुण त्यागी हैं॥५१२॥

※ महंत श्रीधर्मदासजी का जीवन चरित ※

मूल—प्राचीन बस्यो प्राचीन थल धर्मदास गङ्गा निकट॥
सीतामढ़ी महन्त पूर्व मति भजन परायन।
सर्प मिल्यो मग माहि मंत्र दीन्हो गति दायन॥

राम मंत्र सब यंत्र मंत्र तंत्रन पर जान्यो।
जहां प्रगट भइ लली ठौर दोऊ मन मान्यो॥
श्रीसरयू गङ्गा अमल सोनभद्र जहं एक तट।
प्राचीन बस्यो प्राचीन थल धर्मदास गङ्गा निकट॥१५२॥

टीका-धर्मदास बड़े सीताराम अनुरागी सीतामढ़ी के महन्त भक्ति योग के निधान हैं।
इतै भूमि सुता ऊतै जन्हुसुता प्रेम नेम दोऊ ठौर को निवाह कियो अनुमान है।
पालकी में बैठि गंगाजी को चले जात मिल्यो सर्प मग माझ ताते दीनो दहि जान है॥
बूझे ते निकट चलि आयो मंत्र को सुनायो दिव्य रूप पायो चढ़ि चल्यो सुरयान है॥५१३॥
आयकै चिरान सर्प देह को जराये भागीरथी में नहाय ताकी क्रिया शुभ कीनी है।
ऐसे सन्त पर उपकारी जीव सुखकारी शरण गये पै अगतिन गति दीनी है॥
रहि कछु काल राम रूप उर ध्याय पद कञ्ज मकरन्द परा रति मति भीनी है।
पंचतत्व रचित बिहाय पर धाम जात दिब्य तन पाय लली लाल सेवा लीनी है॥५१४॥

* श्रीहनुमानसिंह तथा नरसिंहनारायणसिंहजी का जीवन चरित *

मूल—युगल भक्त गङ्गा निकट एक पार एक बारही॥
भोपतिपुर हनुमानसिंह सन्तन सुख साजै।
श्रीनरसिंह उदार सन्त मण्डली बिराजै॥
मति गति रसिकन सङ्ग भक्ति दशधा अधिकारी।
जनक लली पद कञ्ज मंजु भ्रमरी अति प्यारी॥
निज निज कुल अवतंस दोउ सज्जन गुण आगारही।
युगल भक्त गङ्गा निकट एक पार एक बारही॥१५३॥

टीका-गंगाजी के पार एक बार युग भक्त कहे दोनों सन्त सेवी रघुनाथ अनुरागी है।
हनुमानसिंह भये कायस्थ भोपतिपुर तीस गांव पाये सन्त सेवा मति जागी है॥
ब्राह्मण की बेटी ताको लाग्यो एक जिन्द ताने गाथा निज गाय प्रेत योनि मुक्ति मांगी है।
भक्त दरशन पाय मंत्र सुनि मुक्त भयो सन्त की कृपा ते को न होत बड़भागी है॥५१५॥
नरसिंहनारायण बाबू चैनपुर भये आठोयाम लली पद कंज चित लाये हैं।
सन्त जे रसिक तिन संग में निरत तिनकी जो रुचि होय सोई काज मन भाये हैं॥
मोदक लै थार भरि भोग हेत लिये जात साधु को न दियो ताते भूमि पै गिराये हैं।
देखि दशा बाबू की रिसाने साधु पै महन्त बाबू उठि तिन्हैं गंगा रेणुका फकाये हैं॥५१६॥

मूल—श्रीप्रशादि राम गुरु कृपा ते राम सेवक मङ्गल स्वरूप॥
सीताराम स्वरूप युगल छवि नैन लड़ायो।
बैन अमृत जल सींचि राम यश मण्डल छायो॥
लहि समस्त पुर निकट गङ्ग सरयू को धारै।
रचि विवाह मण्डप समाज सुख लह्यो अपारै॥
सीथ प्रसादी चरण जल सन्त समागम रुचि अनूप।
श्रीप्रसादि राम गुरु कृपा ते राम सेवक मङ्गल स्वरूप॥१५४॥

मूल—राम कृपा को पर लह्यो रघुबर मन अनुराग धन॥
प्रथम योग अष्टांग साधि बहु दिवस बिताये।
तब श्रीसीताराम रूप नैनन प्रबिसाये॥
निज अनुभव के पद अनूप शृङ्गार चेम छवि।
गान करत खञ्जरी मनौ नव तान प्रेम कवि।
प्रिय पौत्र प्रसादीराम के शिष्य प्रशंसत भाग जन।
श्रीराम कृपा को पर लह्यो रघुबर मन अनुराग धन॥१५५॥

* श्रीभगवानदासजी का जीवन चरित *

मूल—भोज्य नृपति के देश में आरे श्रीभगवान भल॥
दास अनन्य महन्त सन्त सेवा ब्रतधारी।
परम धरम आराध्य राम चरितामृत प्यारी॥
वृत्ति अकाशी भ्रमर संत प्रिय पूज्य गुनाकर।
बालकृष्ण से शिष्य भक्ति नवधा के आकर॥
वैष्णव जाति न दृष्टि जेहि इष्ट समष्टी ज्ञान बल।
भोज्य नृपति के देश में आरे श्रीभगवान भल॥१५६॥

टीका-भोजपुर देश आरे सहर महान भगवानदास नाम सीताराम के अनन्य हैं।
मंत्र जाप निरत चरित सुधा पान आठौयाम राम ध्यान ब्रत बड़े कृत पुन्य है॥
सन्त जन आवैं तिन्हैं लखि सुख पावै बर भोजन पवावै जानि सर्व अग्रगन्य है।
वृत्ति है अकाशी राग भोग के बिलासी रामभक्ति के प्रकाशी सन्त कहैं सब धन्य है॥५१७॥
तिनके सुशिष्य बालकृष्णदासजी महन्त प्रबल उपासक अनन्य सियाराम के।
आठौयाम दम्पति के रूप लवलीन मन मीन ज्यों रहत पाय स्वाद इष्ट नाम के॥

चारि सम्प्रदाय सन्त मध्य कोई आवै तिन्हैं सादर टिकावै औ पुजावै मन काम के।
योग बल सत्य सब आगम बखानै उर प्रीति पहिचानि बैन कहै सुख धाम के ॥२१८॥

❋ श्रीछेदारामजी का जीवन चरित ❋

मूल—लहि सुभाव गुरु राम पर खेद सुछेदनदा अभय ॥
सीताराम चरित्र सुधा धारा जनु बरषत।
उतकट प्रबल अनन्य बिमल बाणी मन करषत ॥
हाव भाव अनुभवी महाशय कविता नागर।
गिरा मेह अति नेह लह्यो तुलसी कृत सागर ॥
श्रीगुरु के साधक प्रचुर नाम माल आलाप लय।
लहि सुभाव गुरु राम पर खेद सुछेदनदा अभय ॥१५७॥

टीका-सुन्दर सुभाव श्रीसुभावरामजी महन्त छेदाराम तिनहीं के शिष्य शुचि भये हैं।
पाछे शङ्करदासजी को संग सुभ पाय हिये अति हुलसाय नाम माला कण्ठ किये हैं॥
राम चरितामृत की धारा बरसाय जन पोखे साली खेत ज्यौं अनन्त सुख दये हैं।
रसिक प्रतोष बानी राम गुण गाय भक्ति मारग देखाय सीताराम धाम गये हैं ॥२१६॥

मूल—शाक द्वीपी दुज कुली श्रीसन्तोष मनी सरस ॥
हित कुल गुरु अनुराग सिंधु श्रीचतुर शिरोमणि।
भक्तन के धन मुख्य नाम पायो भायो गणि ॥
बक्ता प्रचुर प्रधान भागवत रस के वेता।
अस्मारत अद्वैत विपुल मत बाद सुछेता ॥
सुखदेव प्रगट सन्तन कह्यो लह्यौ मगह धरणी दरश।
साक द्वीपी दुज कुली श्रीसन्तोष मनी सरश ॥१५८॥

मूल—खेमाल रतन ज्यौं कुंवर बर भक्ति आतमा अटल घर।
पुण्य पताका सदन मांहि थापी अति नीकी ॥
सेवा पथ दरसाइ दई सबहिंन के जीकी ॥
भक्ति योग अरु ज्ञान सार वेदांत बिचार्यो।
बिष्णु सखी जीवन सु बिहारी छवि उर धार्यो ॥
लखि कदम्ब पर बिरह लहि वृन्दाबन थल अमर पर।
खेमाल रतन ज्यौं कुंवर बर भक्ति आतमा अटल घर ॥१५९॥

मूल—कुञ्जबिहारीशरण मति दशधा बिमल बिनोद लहि ॥
जानकि बल्लभ मधुर कथा रसिकन के बानी।
संस्कृत अरु भाषा बिलास रस रास प्रधानी ॥
बिपुल ग्रंथ कण्ठस्थ नेह नित उदित नवीनो।
आत्मा पूरि प्रकाश युगल छबि बहुतन दीनो ॥
बाणी रसिक नरेश की बिपिन अशोक प्रमोद महि।
कुञ्जबिहारीशरण मति दसधा बिमल बिनोद लहि ॥१६०॥

मूल—बसत गुनावा गुप्त मत खूबलाल छवि उर धरचो ॥
सज्जन सरस उदार सन्त सेवक बिख्याता।
प्रगट वेख नहि रुचि रसाल अनुपम सुखदाता ॥
समै लक्ष प्रतिपाल बिरद भक्तन मन भावन।
गुप्त देत प्रति बास आश नहि जगत जनावन ॥
सीताराम स्वरूप लखि मोद पाटलीपुर अरयो।
बसत गुनावा गुप्त मत खूबलाल छवि उर धरचो ॥१६१॥

मूल—बक्तृत्व शक्ति हरि यश कथन सुखद विप्र जन बिमल मति॥
रामचाल पण्डित प्रवीन श्रीकृष्ण दत्त बर।
लोकनाथ बर बिजय सुयश हरि भक्त सत्य पर॥
व्याघ्र अम्बरी ब्रह्मचर्य वैष्णव सम तारक।
गौतम आश्रम बासदास आशा ममता गत॥
एक एक बर सुष्ठुमति श्रुतिपथ या जल कमल गति।
बक्तृत्व शक्ति हरियश कथन सुखद विप्र जन बिमल मति॥१६२॥

मूल—विप्र एक पण्डित बिमल टेक भागवत धर्म धर ॥
विद्या विनय विवेक भक्ति पथ बोधक पावन।
नवधा मति अनुरक्त चित्त भक्तन मन भावन ॥
कष्ट हरण प्राचीन पूर्व थल गङ्गा तट पर।
कथा घोख विद्या बिलास कोउ नाहिन पटतर ॥
दिगपति राम कृपा लह्यो अन्त समै सदकर्म पर।
विप्र एक पण्डित बिमल टेक भागवत धर्म धर ॥१६३॥

मूल—गोदना गङ्गा तट निकट माधवदास पवित्र मति ॥
सांख्ययोग मत समुझि भक्ति सिद्धांत विचारयो ।
सेवा शुद्ध स्वरूप राम सिय छबि उर धारयो ॥
मंदिर नवल पुनीत थापि निज बोध ग्रंथ पर ।
प्रगट कियो इतिहास विपुल सतसङ्ग अंत पर ॥
श्रीरामप्रसाद कृपाल के बंश प्रगट सु विचित्र गति ।
गोदना गङ्गा तट निकट माधवदास पवित्र मति ॥१६४॥

मूल—परम धर्म पोषक सुभट विप्र भागवत जन सुखद ॥
रामभक्त श्रीप्राणनाथ भल राम नरायण ।
विष्णुदत्त हरिनाथ रोहिणी कृष्ण नरायण ॥
ठाकुर पण्डित पुर प्रधान बिश्वेश्वर नीको ।
छिति ईश्वर अंभोज चरण मुकुन्द सरसी को ॥
माधवराम उपासना दिव्य ध्यान गति मन बिशद ।
परम धर्म पोषक सुभट बिप्र भागवत जन सुखद ॥१६५॥

मूल—परम धर्म रुचि राम यश संन्यासी ये भक्ति मति ॥
प्रिय सुखराम गिरि संतत गिरि के शिर इच्छा ।
संतन ते अति प्रीति निरंतर मणि गिरि सिच्छा ॥
पयहारी प्रिय पौत्र शिष्य बर हर्ष भारथी ।
कस्तूरी गुरु बक्स प्रबल वक्ता यथारथी ॥
एक एक भागवत जन मति विवेक नहि जगत रति ।
परम धर्म रुचि राम यश संन्यासी ये भक्ति मति ॥१६६॥

टीका-नाभास्वामी कहें हैं संन्यासी ये मुकुटमणि तैसे रामभक्त येते संन्यासी प्रधान है।
शालिग्रामी तट सुखरामगिरि भये ग्राम मोरिया में रामभक्त जानत सज्ञान है ॥
तंत गिरि टेढ़ा गांव दच्छिण अगोथरि कै मंडुवा में केसरि गिरी को सुभ थान है।
केशरिगिरि के गुरु भाई हैं कस्तूरीगिरि रामभक्त मिलै तिन्हैं मानै निज प्राण है ॥५२०॥
मणिगिरि रामभक्त बसत सिसोनी ग्राम सन्तन में प्रीति राम भक्ति सिखरावहीं ।
कचनारि ग्राम में पैहारि बड़े सिद्ध भये तिनहीं के नाती हर्ष भारती कहावहीं ॥

अमनौरि ग्राम गुरु बक्स भारतीथी भये हंस ज्यौं विवेकी नाम रसना लड़ावहीं ।
श्रीगोसाईं रामायण राम यश गावै एते प्रवर संन्यासी राम रूप नित ध्यावहीं ॥५२१॥

※ श्रीआत्मारामजी का जीवन चरित ※

मूल—रामगुलेला गुरु कृपा आत्मा राम पवित्र जन ॥
कायथ कुल में जन्म भक्ति उत्तम पथ रांचे ।
परम धरम आरूढ़ सन्त सेवा सुठि सांचे ॥
रामायण की कथा नेम अरु प्रेम विशेषी ।
राम जनम अङ्कित फुलेल युत पुस्तक देखी ॥
सीताराम स्वरूप हिय सीताराम चरित्र धन ।
श्रीरामगुलेला गुरु कृपा आत्माराम पवित्र जन ॥१६७॥

टीका-आत्माराम कायस्थ अनन्य रामभक्त जिन महन्त गुलेलारामजी से भक्ति पाई है ।
सीताराम पूजा सन्त सेवा प्रेम सो करत रामायण गान नित्य नेम सुखदाई है ॥
भोर होत मन्दिर में पुस्तक निहारी सीताराम पद अङ्कित फुलेल गंधछाई है ।
कीनो उर ध्यान देख्यो रूप सो प्रधान भये प्रेम गलतान चरनन शीश नाई है ॥५२२॥

※ श्रीरामशरणजी का जीवन चरित ※

मूल—श्री गुरु कृपा प्रताप ते रामशरण लहि गूढ़ गति ॥
नाम रूप लीला प्रताप शृङ्गार उपासी ।
मिथिला अवध पुनीत भूमि कांचनी प्रकाशी ॥
रति अनन्य रस रासि मानसी अङ्ग संभारी ।
नित नव चाह बिवाह आदि लीला बिस्तारी ॥
विपुल कला नय निपुनता बिचरत महि जन बिमल मति ।
श्री गुरु कृपा प्रताप ते रामशरण लहि गूढ़ गति ॥१६८॥

टीका-ग्रंथकर्ताजी के गुरु भाई रामशरण रसिक सुखदाई रामलीला जिन्हैं भाई है ।
मानस में डूबे रसराज रति पाई राम रास आदि उत्सव में प्रगट दिखाई है ॥
तन मन बानी बुद्धि में जो निपुनाई लली लाल सेवकाई में अली ज्यौं छवि छाई है ।
मिथिला अवध शोभा नैन में समाई दृष्टि दुहूँ ओर लालची फिरति धाई धाई है ॥५२३॥
मिथिला की कांचनी अवनि रङ्ग भूमि शोभा व्याह लीला साजि बर दम्पति रिझाये हैं ।
महारासलीला रङ्ग रसिकन मध्य जाय नगर चिरान में प्रगट दरशाये हैं ॥

अवधबिहारी के शरण श्रीपुजारी अधिकारी आदि प्रेमिन के प्रेम सरसाये हैं।
अन्त में समर्पि भाव युगुलअनन्यजी को त्यागि तन इष्ट गुरु सेवा सुख छाये हैं ॥५२४॥
अवधबिहारी के शरण श्रीपुजारीजू की प्रेम दसा रीति यही ठौर लखि लीजिये।
ग्रन्थकर्ताजू के मन भाई लिखि आई नहीं शिष्य की बड़ाई निज मुखन करीजिये ॥
आठौयाम भाव की प्रत्यक्षता लखाई लोक वेद रीति साधन जो सिद्ध में न दीजिये।
हरि गुरु सन्त में अभेद भाव पायो सो प्रगट दरशायो करि सुमिरन जीजिये ॥५२५॥
गुरु भाव रत्न के निधान अधिकारी रामजानकीशरण सदावर्त सुख लेत हैं।
जोई जन आरत ह्वै शरण में आवै ताकी छुधा को मिटाइ सुधा पूर करि देत हैं॥
प्रेमी रामरतनजी आदि रस छाके त्यागि थल तन ताके सीताराम के निकेत हैं।
श्रीकिशोरीबाई भाव निधि कछु पाई लैकै अवध सिधाई जाको लोक में न हेत हैं ॥५२६॥
युगलअनन्य श्रीरसिक गुरु पाय श्रीअवधपुर जाय फेरि कहूँ नहिं गये हैं।
कनक भवन लली लाल छवि देखि सदग्रंथन में पेखि रति परा रङ्ग रये हैं॥
धाम ही में आतम समर्पि सरयू के तट साधन सकल त्यागि नाम बल लये हैं।
दरशनही ते दुःख देत हैं बहाय बैन सरस सुनाय सुख सबहुन दये हैं ॥५२७॥

* श्रीरामप्रियाशरणजी का जीवन चरित *

मूल—प्रियाशरण की प्रिय कथा दशधा रति श्रृङ्गार रस ॥
श्रीमिथिलेन्द्रकुमारि कुञ्ज कांचन बन माही।
मिथिलापुर चहुं ओर कांचनी भूमि सोहाही ॥
भाव जन्म निमि बंश माहि मान्यो निज नाता।
प्रगट भांवरी माहि तांवरी गति बिख्याता ॥
कवितावलि अनेक पद सरयू कुञ्ज अपार यश।
प्रियाशरण की प्रिय कथा दशधा रति श्रृङ्गार रस ॥१६९॥

टीका-रामप्रियाशरण बसत माधौपुर जिन रामायन सरिस सीतायन बनाई है।
भाव जन्मभूमि मान्यौ जनक लडैती सङ्ग एकै तात मात बर एक रघुराई है॥
भाँवरी परत छवि दूलह की देखि भयो सात्विक विशेषि तन सुरति भुलाई है।
अवध में जाय पुनि मिथिला में बसे आय त्यागि तन लली प्रिय आली गति पाई है॥५२८॥

* श्रीभवानीसहायजी का जीवन चरित *

मूल—सांत प्रगट श्रृङ्गार रति भव भामिनी सहाय भल ॥
सेवा संत प्रधान कनौली गुन गन पावन।

धोय चरण रज पियत रसिक भक्तन मन भावन ॥
नेम प्रेम अति अघट सुभट सेवक सुत जायो।
विप्र भागवत सन्त प्रसंसत जग यश छायो ॥
परम उदार बिवेक निधि ब्रज मानी समुदाय फल।
सांत प्रगट श्रृङ्गार रति भव भामिनी सहाय भल ॥१७०॥

टीका-भवानीसहाय भक्त बिदित कन्हौली मांझ माता ब्रज मानी को सुकृत जनु उयो है।
सन्त चरणामृत पियत धोय धोय लोक जाति पाँति खोय एक भक्ति बल लियो है॥
जेते सन्त आवै प्रिय बन्धु तिन्हैं जानै सब भाँति सनमानै लखि पुलकित हियो है।
राम कथा कीरतन सुनै मनलाय रूप माधुरी सुपाय कै मरत जनु जियो है ॥५२९॥
रसिक अनन्यन की रीति अब पाई और देवी देव पूजन की सुधि बिसराई है।
बधू शिर प्रेत कोई आगम सुनायो माता पुत्र को जनायो घर आये रघुराई हैं॥
बिधिवत पूजा साजि आरती उतारी संका सब की नीवारी फेरी राम की दोहाई है।
वेश्या एक आई संज्ञा इष्ट की जनाई मानि मातु समताई बिदा कीनी मनभाई है ॥५३०॥

मूल—विप्र एक भागवत मति विष्णु पुरा नंदलाल बर ॥
सेवक मानस बिमल संत जन पद आराधक।
वृति पुरोधा रसिक भक्ति दशधा के साधक ॥
मति सम्बत सरयू प्रमोद बन दरशन जाही।
कनक भवन मणि कुञ्ज भवन छवि लखि हरषाही ॥
बालगोबिन्द प्रभृति नृहरि रैवा सारस ख्याल घर।
विप्र एक भागवत मति विष्णु पुरा नंदलाल बर ॥१७१॥

* श्रीरामदयालजी का जीवन चरित *

मूल—राधा बल्लभ प्रेम पथ रामद्याल अनुपम लह्यो ॥
हित कुल बंशीलाल रसिक गुरु लहि संस्कारै।
बोध यथारथ भक्ति भेद रस रीति अपारै ॥
भक्तन ते अति प्रेम नेम गुण गान प्रवीना।
उत्सव साज समाज सदा दशधा रस लीना ॥
जमिरा भोज्य सुदेश में कृपा पात्र सब जन चह्यौ।
राधा बल्लभ प्रेम पथ रामद्याल अनुपम लह्यो ॥१७२॥

टीका-जिमिरा में रामग्वाल भक्त बड़भागी सन्त सेवा अनुरागी सब अङ्गन ते देखिये।
चार्‌यो सम्प्रदाय सन्त इष्ट सम मानै राम कृष्ण आदि रूप में अभिन्न भाव पेषिये॥
कोई खल पनस को वृक्ष छेक्यो आनि सन्त विमुख पिछानि तरु फर्‌यो न विशेषिये।
इनहीं को दियो सन्त हेतु लखि जियो फूल्यो फल्यो भरि हियो जग भिन्न रीति लेखिये॥५३१

❋ श्रीअभयसिंहजी का जीवन चरित ❋

मूल—राधावल्लभ भजन मति अभयसिंह भय रहित जन॥
हित कुल गुरु संस्कार लह्यो सेवा पथ जानी।
वृन्दावन धन कुञ्ज ध्यान गति रति ठहरानी॥
भक्तन के सेवा प्रधान उपदेश नरनि को।
दशधा सम्पति जोरि लियो दुर्लभ अमरनि को॥
गयो ठौर निज भाल थल रसिकन बिरह प्रयोग मन।
राधा बल्लभ भजन मति अभयसिंह भय रहित जन॥१७३॥

मूल—श्रीरामदास गुरु कृपा ते कृपा लह्यौ दसधा अमल॥
श्याम गौर युग रूप अनूपम नित हिय माही।
ध्यानदास गुरु बन्धु सु छवि आशक्त सदाही॥
सीताराम उपास्य दास्य सख्यत्व रसालय।
श्रीरामायण गान सुहृद सुठि शील सुचालय॥
रामानंद अमल हियो रामग्वाल लघु बंधु भल।
श्रीरामदास गुरु कृपा ते कृपा लह्यौ दसधा अमल॥१७४॥

टीका-रामदास गङ्गा तट बर्जा ग्राम बासी तिनही के कृपा रासी कृपा नारायण भये हैं।
ध्यानदास बड़े गुरु भाई के प्रसंग पगे श्याम गौर रंग और संग तजि दये हैं॥
जिमिरा के रामग्वाल तिनहीं के भाई लघु रामानन्द नाम सतसंग सुख छये हैं।
सन्त सेवा रामायण अर्थ भाव भेद जानि तत्व पहिचानि मौन वृत्ति गहि लये हैं॥५३२॥

❋ श्रीजगन्नाथदासजी का जीवन चरित ❋

मूल—चैन राम गुरु कृपा ते जगन्नाथ उत्तम रहनि॥
छत्री कुल अनुराग प्रथम गुण गान कला की।
साध्य भई जो सफल रसिक बानी अमला की॥

चित्रकूट में रमत लह्यौ सतसंग प्रवीना।
राम रास के ग्रंथ पदावलि गान जु लीना॥
महत पाल महदास या रसिक रीति सूछम लहनि।
चैन राम गुरु कृपा ते जगन्नाथ उत्तम रहनि॥१७५॥

टीका-पर्शा के प्रसादीराम शिष्य रामचैनजी के जगन्नाथदास शिष्य राम के उपासी हैं।
प्रथम जो गान स्वर कानन में सिद्ध कियो सोई कला रसिकन बानी में प्रकाशी है॥
मिथिला अवध चित्रकूट नित्य रास लीला रहस्य प्रमान ग्रन्थ कला सुनि भासी है।
रसिकन सङ्ग पाय पद समुदाय गाय भूषन ज्यों कण्ठ किये फिरै सुखरासी है॥५३३॥

❋ श्रीताताचारीजी का जीवन चरित ❋

मूल—बगसर विश्वामित्र थल बिपिन चरित्र सुजान जन॥
ताताचारी राम उपासक सरस महानै।
रति बात्सल्य उदार बाललीला कै ध्यानै॥
नृपति सख्य रस ध्यान माध्व मतराम उपासी।
रामतापनी यंत्र पीठ पूजा सुखरासी॥
श्रीगोपालशरण सुवन उदित विनैटीकाचु तन।
बगसर विश्वामित्र थल विपिन चरित्र सुजान जन॥१७६॥

टीका-ताताचारी स्वामी बगसर में महान भये बालमीक माधुरी रहस्य जिन पाई है।
जनक लली को निज लली सम ध्यान राखैं ताही अनुकूल छवि राघव की ध्याई है॥
श्रीगोपालसिंह राउ सख्य अनुकूल भाउ मानस रामायण की टीका जिन गाई है।
तिनके सुवन प्रिय उदित प्रकाश जिन बिनैपत्रिका की टीका नवल बनाई है॥५३४॥

❋ श्रीरामप्रतापजी का जीवन चरित ❋

मूल—चतुरदास श्रृङ्गारपथ भेदी रास प्रमोद बन॥
रामरास की कथा सुनी कहु रसिकन संगै।
उर प्रवेश ह्वै गई बचन में उठति उमंगै॥
नैन रसीले राम रास रस के मतवारे।
गुप्त लखत कोउ नांहि लखत जो जाननि हारे॥
रसिक सङ्ग महिमा प्रबल भयो सुबोध बिनोद मन।
चतुरदास श्रृङ्गारपथ भेदी रासप्रमोद बन॥१७७॥

मूल—श्यामदास दसधा लही भक्ति विमल अनपायिनी ॥
राधाकृष्ण उपास्य रसिक गौड़ेश्वर नीको ।
गान कला गंधर्व काव्य रचना भल जीको ॥
छन्द प्रबन्ध कवित्त आदि कीर्तन की रीती ।
उत्सव साज समाज सन्त पद प्रीति प्रतीती ॥
लक्ष्मण संकर्षण भलो जमुना जन सुखदायिनी ।
श्यामदास दसधा लही भक्ति विमल अनपायिनी ॥१७८॥

※ श्रीरामप्रतापजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीरामप्रताप चरित्र बन महिमा लहि थापी धुजा ॥
परिकर्मा अनुराग संत बहु मेला जोरी ।
सब ते बिनै असीस लही नवधा मति बोरी ॥
भक्त बड़ो ऋतुराज साज बन माहि बिराज्यौ ।
विप्र भागवत कथा कह्यो बहुतन सुख साज्यौ ॥
भृगु आश्रम बहु भक्त सुख भूप राम अद्भुत सजा ।
श्रीरामप्रताप चरित्रबन महिमा लहि थापी धुजा ॥१७९॥

टीका-रामपरताप भये राजा के दिवान जिन महिमा चरित्र बन की जो कहुँ पाई है ।
सन्त वृन्द संग लै परिक्रमा प्रकाश कीनी भरी सभा सबन प्रसंसा करिलाई है ॥
ऋतुराज मिश्र बड़े पंडित प्रवर तिन रामकथा बैष्णव समाज में सुनाई है ॥
ठौर ठौर सङ्ख धुनि राग भोग नित्य होत जैति शब्द सुने सैना कलि की पराई है ॥५३५॥

※ श्री पं० शिवलालपाठकजी का जीवन चरित ※

मूल—शंभुपुरी श्रीराम पर पाठक जो शिवलाल बर ॥
श्रुति संहिता प्रमाण माध्व भाष्यादिक देखी ।
परत रसद श्रीरामकथा टीका जु विसेषी ॥
नित्य जु नृप के अङ्क बङ्क छबि उर में धारी ।
मति वात्सल्य रसाल भक्ति रागा अति प्यारी ॥
अलरक श्रीगोपाल प्रिय सुभटन लीनो ढाल कर ।
शम्भुपुरी श्रीराम पर पाठक जो शिवलाल बर ॥१८०॥

टीका-शिवलाल पाठक जो कासी में प्रसिद्ध भये बालमीकरामायन टीका जिन गाई है ।
आगम निगम तीर्थ भूषन नागेस आदि सबके प्रमान पद अर्थ में लखाई है ॥
नृप अवधेस अकबाल रूप राम सोई मूरति मधुर नित हृदै कंज ध्याई है ।
रामतापिनी प्रसिद्ध पूजा विधि सिद्ध करी मानस चरित्र रीति सिष्यन जनाई है ॥५३६॥

अलरकसिंह छत्री कासी के निवासी श्रीगोपालसिंह बगसर भूप ढिंग बासी हैं ।
बड़े सतसंगी सख्य रस के प्रसंगी आठौजाम रूप माधुरी तरंग के बिलासी हैं ॥
पाठकजी राजसभा मध्य में बिराजै दोनौ दुहुँ ओर ढाल ज्यों सहायक सुपासी है ।
चर्चा जब करैं बानी खड्गधारा परै खल विमुख पाखण्डिन की मति गति नासी है ॥५३७॥

मूल—जुगलभक्त पण्डितप्रवर नाम जु रामगुलाम वर ॥
असनी मिरजापुर प्रधान दोउ राम उपासक ।
बालमीक वक्ता जु एक तुलसीकृत भाषक ॥
भाविक प्रवर सुजान सन्त जन श्रोता जिनके ।
लोक प्रसंसित बिभव विरद किमि कहिये तिनके ॥
परमहंस गुरुकृपा लहि रामायन सुख धाम पर ।
जुगल भक्त पण्डित प्रवर नाम जु रामगुलाम बर ॥१८१॥

मूल—काष्ठ जिह्व सन्यासनिष्ठ सियराम उपासी ।
राम सुधा जानकीबिन्दु सिद्धान्त प्रकासी ॥
निरखि लोक भये मौन तदपि सब की सुनि लेहीं ।
आगम निगम पुरान बचन लिखि उत्तर देहीं ॥
रघुनन्दन लीला रूप रति काय बचन मन दृढ़ गही ।
श्रीराम तत्व पूरण कृपा काशिराज जिन सो लही ॥१८२॥

※ श्रीस्वामी हरिदासजी का जीवन चरित ※

मूल—अति अद्भुत रसिक विचित्र मति हरीदास भाविक प्रगट ।
बसि कासी विद्या बिनोद बर सफल करी है ॥
रामतापिनी वेद भाष्य करि भाव करी है ।
उक्ति जुक्ति अनुप्रास ब्यंग्य अवरेव प्रकासी ॥
मत मतान्त पूरन प्रताप अति सुदृढ़ उपासी ।
भाष्य जानकी बल्लभी नाम धरचो अनुपम अघट ॥
अति अद्भुत रसिक विचित्र मति हरीदास भाविक प्रगट ॥१८३॥

टीका-दीनबन्धुजी के बंसही में हरीदास भये राम तापिनी पै महाभाष्य जिन करी है।
आगम निगम सर्व शास्त्र औ पुरानन के प्रबल प्रमान धरि परा रति भरी है॥
नाम धाम रूप को परत्व सरसाय उक्ति जुक्ति दरसाय पण्डितन मति हरी है।
रसिक समाज में रहस्य कछु भनै रसरीति कै बिहीन को अगम लखि परी है॥५३८॥

मूल—नृप कोसलेस जिमि एकरस रति वात्सल्य उदार मति॥
दुनियापति अतिधीर सरल चित नेह नवीना।
अङ्क लसै रघुलाल बाल छवि जल मन मीना॥
कौसल्या केकई सुमित्रा सम सब रानी।
लली अली जे मिलीं बधू जिमि सब सनमानी॥
नित तीरथराज प्रयाग मधि अत्रनसूया अवनि तिथि।
नृप कोसलेस जिमि एक रस रति वात्सल्य उदार मति॥१८४॥

* श्रीदेवादासजी का जीवन चरित *

मूल—राम उपासक छाप सुचि दिगविजयी देवा सुभट।
दास अनन्य जु सख्य सन्धि प्रिय भक्त सुहाये॥
हस्तामल बहु ग्रंथ वेद विधि चर्चा भाये॥
पर उतकृष्ट सुबोध धरा पर ध्यान लखावै।
प्रतिपक्षी नहिं जुरै मुरै मृदु बचन सुनावै॥
बसि बुन्देल बर खण्ड कहि चित्रकूट मण्डल प्रगट।
श्रीराम उपासक छाप सुचि दिगविजयी देवा सुभट॥१८५॥

टीका-श्रीदेवादास भाविक उपासक अनन्य जिन रामभक्ति भूमि पाई जन सुखदाई है।
रच्छा हेत सीमा चढ़ि सुभट ज्यों आयुध लै अन्य मतवारेन की वाहिनी भगाई है॥
जो पै धरि धीर कोऊ सन्मुख प्रचार करै ताके हेत प्रौढ़ कोट किला रची खाई है।
बिरचि तमंचा तोप खड्ग बान वृष्टि करि उत्तमांग खण्डि कै विजै की सिद्धि पाई है॥५३९॥
चित्रकूट दूर दूर बसत बुन्देलखण्डी विमुख पाखण्डी तिन्हैं चर्चा में हराय कै।
मधुर मधुर समुझाय रामभक्त किये दुविधा में परै तिन्हैं त्रिसंकू बनाय कै॥
लिये कर दण्ड औ कमण्डल फिरत प्रतिपच्छी जो मिलत तासों भिरत बजाय कै।
नाम धाम रूप के प्रतापजुक्त बानन सों शत्रुपच्छ छेद भेद छाँड़त नसाय कै॥५४०॥
चित्रकूट पर्वत विपिन तरु गुल्म लता रम्यताई पेखिकै सहजही लुभाने हैं।
सुन्यो है महत्व पुनि देख्यो निज नैनन सों ताके बहु ग्रंथ में प्रमान लै बखाने हैं॥

राम मन्त्र तारक प्रदाता को जो त्याग करै अन्य गुरु करै तापै दण्ड बड़ भाने हैं।
मन बच कर्म जिन्हैं रामदास जाने तिन्हैं भले सनमानि निज प्रान सम माने हैं॥५४१॥
भये बहु सिष्य तिन्हैं प्रौढ़ रामदास किये भक्तमाली आदि गुनग्राही पुनि भये हैं।
सेवा सावधान नाती सिष्य को प्रधान जानि बिमल उपासना के अङ्ग सब दये हैं॥
और जेते चित्रकूट भूमिका के बासी सीताराम के उपासी तिन्हैं मिलि सुख लये हैं।
धरि अवतार ज्यों बिमल तन सन्त देवकारज सुधारि निज इष्ट धाम गये हैं॥५४२॥

मूल—श्रीदेवा गुरु कृपा ते भरतदास रसिकन सुखद॥
जानकी बल्लभ मधुर कथा रस ग्रंथ उपासी।
अग्रस्वामि की रीति प्रीति प्रतिपाद्य हुलासी॥
चित्रकूट बन कुञ्ज कबहुं मिथिलापुर आवै।
कबहुं लसै श्रीबनप्रमोद सरजू तट भावै॥
रसिक सजाती जन मिले उमगत हिय गुनगन बिसद।
श्रीदेवा गुरु कृपा ते भरतदास रसिकन सुखद॥१८६॥

मूल—चित्रकूट बन कुञ्जथल बिरति पुञ्ज ये भजन तट॥
श्यामदास बर बृत्ति गूदरी करवाधारी।
सीताराम उपास्य नाम रत दास बिहारी॥
नातो दृढ़ बिस्वास रसिक जन प्रिय मन भाये।
कृष्णदास अनुराग कथा बर बिरद सुहाये॥
गान सरस बर मधुर पद हरीदास भाविक प्रगट।
चित्रकूट बन कुञ्ज थल बिरति कुञ्ज ये भजन तट॥१८७॥

मूल—श्रीराम उपासक बिमल मति पण्डित माधवराम भल॥
गौड़ेश्वर अवतंस प्रसंसित पण्डित मण्डित।
क्षमा दया गुणसिंधु सियाबर भक्त अखण्डित॥
श्रीरामायन सुधा वृष्टि रसिकन सुखदाई।
श्रीअनसूया सरण सुवन महली गति पाई॥
चित्रकूट रासस्थली उत्तर श्रीसरजू सुथल।
श्रीराम उपासक बिमल मति पण्डित माधवराम भल॥१८८॥

मूल—श्रीरामदास इक सुजन भल रामधाम के निकट ही ॥
चित्रकूट पयतीर प्रथम बसि नाम राम धुनि ।
बालमीक नित पाठ करत प्रिय कथा श्रवण सुनि ॥
दृढ़ बिस्वास उदार संत सेवा में प्रीती ।
सीताराम स्वरूप जुगल पथ रसिक प्रतीती ॥
श्रीपरमहंस साधक निपुण विपुल रहस्य न प्रगट ही ।
श्रीरामदास इक सुजन भल रामधाम के निकट ही ॥१८९॥

※ श्रीमोहन रसिकजी का जीवन चरित ※

मूल—कृपा जनकजा लहि सुखद मोहन रसिक उपासना ॥
लली ललन बर ध्यान कुञ्ज महलन के बासी ।
जुगल केलि पद ललित रच्यो रस ग्रंथ प्रकासी ॥
उग्र बोध रस रीति प्रचुर मति रसिकन भावत ।
क्रिया मानसी वृत्ति निरत मनमोहन मावत ॥
सिष्य बिमल ठाकुर सरिस बास अवध जग आसना ।
कृपा जनकजा लहि सुखद मोहनरसिक उपासना ॥१९०॥

टीका-मोहनरसिक श्रीमुरारिदेव बंस भये बैठ ग्राम गुरु कुल बसे सुख पाय कै ।
उठी उतकण्ठा बृन्दाबन भूमि देखिवे की ललित निहारी छवि ठौर ठौर जाय कै ॥
भगवत रसिक समीप रास ध्यान पायो हिय हुलसाने जैसे रंक निधि पाय कै ।
जनक लली जू स्वप्न चूरा पहिरायो उर अति सुख पायो दुहूँ ओर पद गाय कै ॥५४३॥

मूल—जुगल जुगल मन भाव ते रसिक सजाती जुगल बर ॥
पूर्बकाल यक रीति बिलच्छन हाल भये हैं ।
पद रचना इक दच्छ स्वच्छ एक प्रेम लये हैं ॥
वृन्दाबन अनुराग ध्यान यक खास निवासी ।
ब्रह्मावर्त्त सुवास जुगल रस रीति उपासी ।
जुगल कथा प्रिय जुगल जुग चरण कमल हिय बिमल सर॥
जुगल जुगल मन भाव ते रसिक सजाती जुगल बर ॥१९१॥

टीका-रसिक गुरुजी निज ग्रंथ में अनन्यताई नीके कै जनाई रसिकन सुखदाई है ।
रस के अनन्य कोई रूप के अनन्य सन्त सेवा में विषमताई दोनौ की मिटाई है ॥

चारौं सम्प्रदाय कथा जीव गति दाई लवमात्र के प्रसङ्ग तुला मुक्तिहूँ न पाई है ।
रस के बिहीन रूप माधुरी बिहीन सन्त लच्छन बिहीन की न चरचा चलाई है ॥५४४॥

मूल—श्रीबिहारिणीदास की बानी रसिक समाज प्रिय ॥
उत्तम तत्सुख देत बिरह भ्रम कहि समुझायो ।
महा मधुर शृङ्गार भक्ति पर कथन सुहायो ॥
राधाकृष्ण निकुञ्ज केलि के पर अधिकारी ।
गौर श्याम छवि नैन बैन भक्तन सुखकारी ॥
श्रीवृन्दाबन बास थल लह्यो जहां रसराज हिय ।
श्रीबिहारिणीदास की बानी रसिक समाज प्रिय ॥१९२॥

मूल—हरिबंस चरण उर ध्यान धरि हित ध्रुव बानी बिसद रुचि ।
बर बिराग अनुराग कुञ्जबर दरस मानसी ।
ताको फल बर उमंग बिपुल छन्दन सु प्रानसी ॥
ब्यालिस लीला ध्यान रसिक जन के हितकारी ।
राधावल्लभ छबि सुजोग जोगी बलिहारी ॥
चली बिरति सरि कुल निसरि मिलि अच्युत निधि सुखद सुचि ।
हरिबंस चरण उर ध्यान धरि हित ध्रुव बानी बिसद रुचि ॥१९३॥

मूल—सिष्य मानसी विमल मति हितसेवक सेवक भये ॥
सेवक बानी सरस पुत्रवत चन्द सुजाना ।
दामोदर हित कृपा सुयश बिस्तार प्रधाना ॥
हित गुलाब अलि फौज रसिक बानी रस सानी ।
चंद सखी अनुराग सरस किमि कहौं बखानी ॥
रीति किशोरी अली बर सन्त बिरद गायक नये ।
शिष्य मानसी बिमल मति हितसेवक सेवक भये ॥१९४॥

मूल—रूपलाल हित कृपा लहि रसिकलाल आनंदघन ॥
धीरजलाल उदार बैन उज्जल रस गाये ।
प्रियालाल अनुराग कथा बर कहनि सोहाये ॥
हिय हुलस उल्लास रास रस गायक जेते ।
लाल पदन की छाप लली पद ध्यायक तेते ॥

विपुल भक्त हित कुल प्रगट जमुना कूल सुजान जन।
रूपलाल हित कृपालहि रसिकलाल आनंदघन ॥१९५॥

मूल—भगवत रसिक उपासना श्रीजमुनातट पुलिन रज ॥
टट्टी कुञ्ज प्रधान तीव्र अनुराग बिरागी।
बानी विमल उदार काव्य निर्दोष बिभागी ॥
विपुल रसिक जन सङ्ग रङ्ग निज तीव्र लखायो।
कहनी रहनी एक टेक मेरे मन भायो ॥
गायो रसिक सुजान रति मति मेरी गति मलिन तज।
भगवत रसिक उपासना श्रीयमुना तट पुलिन रज ॥१९६॥

※ श्रीगिरधरलालजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीबल्लभजू के बंश में पुरुषोत्तम अनुराग बर ॥
तिनके श्रीकल्यानराय रसराज उपासी।
उत्सव साज समाज सजत रसिकन सुखरासी ॥
श्रीरनछोर उदार बधाई गोकुल बाजै।
मनहुं प्रगट श्रीनन्दराय यहि समय बिराजै ॥
अद्भुत श्रीगोपालजू मन्दिर गिरधर लाल पर।
श्रीबल्लभजू के बंस में पुरुषोत्तम अनुराग बर ॥१९७॥

टीका-गिरधरलाल कासी बसत गोपाल पद पूजा बिधि नीके सब अंगन संवारी है।
कन्या दोष माता ने जनायो सुनि त्याग्यो ग्रह चले नाथ सेवा निज मन में बिचारी है ॥
दामोदरजी सुनाई सेवा न मिलैगी भाई इनहूँ जनाई रुचि हिये जो बिचारी है।
त्यागि तन तिनहीं के अनुकूल पुत्र भये पाय निज नाथ सेवा स्वकर सुधारी है ॥५४५॥

※ श्रीलालाबाबू का जीवन चरित ※

मूल—धनधाम काम तजि बिरति शुचि लाला वृन्दाबन बस्यो।
अद्भुत सुमति प्रकाश लता कुञ्जन प्रति छाई।
रसिक सन्त जन सर्व प्रसंसित बिरद सुहाई ॥
गोचारन बन लखे छके जमुना की कूलै।
दंपति चरण सनेह लहयो तिहि सब सुख मूलै ॥

वृत्ति मधुकरी उत्तमा दसधा पावन धन रस्यो।
धन धाम काम तजि बिरति शुचि लाला वृन्दाबन लस्यो ॥१९८॥

टीका-लाला बाबू भाविक सुधन्य जन्म जासु तजि बंग देस आस वास वृन्दाबन लीनो है।
ब्रज भूमि गुल्मद्रुम लतान की सोभा घूमि ललित निहारि वारि सरबसु दीनो है ॥
गोबर्द्धन मानसर निकट बिहार थल द्रुमन की छाया में बिश्राम तहाँ कीनो है।
गौवन के मध्य श्याम सुन्दर की पेषी छबि करुना कटाच्छ लहि इष्ट निज चीन्हो है॥५४६
देखतही देखत सो मूरति अदृश्य भई गिरे मुरझाय तन सुरति भुलानी है।
भूली भूख प्यास फेरि मिलन की लागी आस दसा सो कहत कवि मतिहु हिरानी है ॥
बीते दिन तीनि वही रूप लवलीन तहाँ मिल्यौ कृष्णदास तिन सीस धर्यो पानी है।
दया दृग हेरि निज आश्रम गये लिवाय पेषि स्वच्छ भाव किये सिष्य सुख खानी है॥५४७
पञ्च संसकार भक्ति भाव रस भेद लहे पाय दृढ़ बोध फेरि वृन्दाबन आये हैं।
बंशी बट रास ऐन पेषि मन मान्यौ नैन सफल उठाय ठान्यौ सन्तत बुलाये हैं ॥
विप्र गुरु आयसु लै मन्दिर बनाये निज सर्बसु लगायौ लली लाल पधराये हैं।
आठौयाम पूजा बिधि भोग राग रिद्धि सिद्धि प्रगट निहारि धाम बासी सुख पाये हैं ॥५४८॥
भये कृत कृत्य मन सब ते निवृति कियो माधूकरी वृति जिन सुहज उठाई है।
आठौजाम रूप लवलीन जल मीन जैसे भाविक नरेसन की बानी मत भाई है ॥
सुनी मन लाइ कथा ज्ञान भक्ति अंग तथा परा दसा छाके तन सुरति भुलाई है।
बाढ्यो उर बिरह बिहाय तन दिव्य रूप पायो जो अनूप लली लाल सुखदाई है ॥५४९॥

मूल—पारख परख्यो भक्ति मनि लहि प्रकास सेवा सच्यो ॥
हरि गुरु भक्तनि सांच प्रेम परतीति दिखायो।
नर तनया से पैत सुठर भल परचो सुहायो ॥
उत्सव मेला सन्त समागम बिरद उजागर।
मथुरा ब्रज में आनि द्वारिका पेख्यो नागर ॥
सारङ्ग सुदर्शन सङ्ग लहि रच्छक जन कालहि बच्यो।
पारख परख्यो भक्ति मणि लहि प्रकास सेवा सच्यो ॥१९९॥

टीका-पारख जवाहिरी ने पाई हरि भक्ति मनि परखि निहाल भये परारति जागी है।
हियो हुलसायो दिव्य मन्दिर बनायो अनुपम छवि छायो लोक लाज सब त्यागी है ॥
सन्तन को सङ्ग नित्य रास लीला रङ्ग मति मानसी तरङ्ग में अनङ्ग रति रागी है।
अजहूँलों विश्व में उदित जाको जश जाने पीयो हरि रस सोई जन बड़भागी है ॥५५०॥

❋ मौनी श्रीजानकीदासजी का जीवन चरित ❋

मूल—अग्रस्वामि रस रीति मति मौनी बृन्दा बिपिन बस ॥
बिरति उग्र सुठि बोध सुहृद अनुमोद भावही ।
मति अनुकूल अनूप चरित उज्जल जु ध्यावही ॥
ध्यान मञ्जरी आप आय निज ठौर संवारे ।
बिमलादिक अलि पुञ्ज सहित दम्पति उर धारें ॥
गोप्य केलि मत गोप्यरस रसिक सनेही निपुन जस ।
अग्रस्वामि रस रीति मति मौनी बृन्दा बिपिन बस ॥२००॥

टीका-अग्रस्वामी रीति रत मौनी जानकी सुदास वृन्दाबन बास करि राम रंग रागे हैं ।
बिमल बिराग बर बोध अनुराग उर रैनि दिन दम्पति सनेह सुधा पागे हैं ॥
अग्रस्वामी आदि के प्रबन्धन को गाय ध्यान मंजरी नवल ध्यान आठौजाम जागे हैं ।
रसिक समाज सतसङ्ग सुख पायकै अनन्यता दृढ़ाय और ओर नहिं लागे हैं ॥५५१॥
रसिकन वृन्द मिलि नाम धुनि कियो करै माधुर्य कथा के बिन और न सुनत है ।
जानकी हरन रनू लीला जो पै सुनै उर बढ़त बिषाद तन ताप ते जरत है ॥
दम्पति बिवाह लीला पेषि सुख पावै नित गोप्य केलि सुधासिन्धु मीन ज्यौं फिरत हैं ।
रुखे बिषे रस उर अन्तर सरस ऐसे सन्त के चरित सब पातक हरत हैं ॥५५२॥

मूल—सन्त सुखद सुख राम राम सेवक बर केसो ।
सुहृद प्रीति रसिकन प्रकास कछु नांहि अँदेसो ॥
अधिक सन्त पद प्रीति सन्त सो नाहिन परदो ।
जानकीशरण महन्त भली बिधि सेवा करदो ॥
अग्रस्वामि गादी प्रबल रैवासा महती कथा ।
ठकुरानी श्रीजानकी सुनत श्रवण छूटै व्यथा ॥२०१॥

मूल—श्रियाचार्ज अति प्रीति रीति रस रास उपासी ।
राम रास की नेम जथा बिधि प्रेम प्रकासी ॥
सीतारामाचार्ज मानसी श्रवन रास जस ।
तिनकी बहू सुजान रसिक मतधारि सङ्ग बस ॥
गादी पर तिनके सुवन लघुलोने बपु उग्रमति ।
चहत रसिक जन सङ्ग नित बिमल बंस सिय कृपा रति ॥२०२॥

मूल—धन्य धना के भजन ज्यौं त्यौं दाना तुम्बा फरयो ॥
उग्र कथा बिश्राम काढ़ि या बाड़ निवासी ।
निह कञ्चन श्रीकृष्ण ठगे जे राम उपासी ॥
कौसल राजकुमार छैल घोड़े असवारी ।
बिपुल द्रव्य दरसाय चले बन सघन भंभारी ॥
तीर सज्यो छवि सरस लषि सर्बसु लै मुद्रिका हरयो ।
धन्य धना के भजन ज्यौं त्यौं दाना तुम्बा फरयो ॥२०३॥

मूल—सन्त सम्पदा चतुर सम सेवक प्रबल सुघट सुजन ॥
लाला भक्त उदार सोनी भागवत पाई ।
घुरी सुदामा दाम भरी भक्तन सुखदाई ॥
प्रिय कुलाल सेवक रसाल तुलसी बिख्याता ।
प्रेम नेम अति अघट भयो अगनित गति दाता ॥
मारवाड़ तिंग नाचे थरु लदुरी बर अनुपम सुधन ।
सन्त सम्प्रदा चतुर सम सेवक प्रबल सुभट सुजन ॥२०४॥

मूल—अच्युत कुल सेवत बिसद प्रिय पालक ये जन भये ॥
बास अटल कुड़की प्रधान पुहकर की छाया ।
रामदास श्रीरामनाम बर भजन अमाया ॥
ब्राह्मण कुल बिश्राम भक्त भक्तन सुखदाई ।
सम्प्रदाय श्रीपाल घाट बर बास सुहाई ॥
भूरिया बाबा गोमती कांगड़ो देस टीकम लये ।
अच्युत कुल सेवन बिसद प्रिय पालक ये जन भये ॥२०५॥

परम धरम पालक सुभट अच्युत कुल सेवक प्रबल ॥
काम कामवत रूप अलख गोबर्द्धन नामा ।
हाथी राम कृपाल बसे से साचल धामा ॥
श्रीचेतन बर दास खानवर देस निवासी ।
गोदावरि तट सेत राज रामेश्वर बासी ॥
भुवनसिंह बाबू भलो ब्रह्म पुत्र महि अमल थल ।
परम धर्म पालक सुभट अच्युत कुल सेवक प्रबल ॥२०६॥

मूल—प्रगट ओड़ैसा भक्त बर कन्दरा पारी बिमल थल ॥
गौड़ेश्वर अति उग्र उपासक सन्त सनेही।
राधाकृष्ण निकुञ्ज केलि कीर्तन प्रिय जेही ॥
राधाश्याम सु पुत्र सदा सीमान सजेना।
देना भोजन सन्त प्रीति जुत सीत जु लेना ॥
औगुन भक्तन दरस जेहि परसत ज्यौं नहि जल कमल।
प्रगट ओड़ेसा भक्त बर कन्दरा पारी बिमल थल ॥२०७॥

मूल—विप्र एक भागवत बर राम ध्यान रामाधरयो ॥
छत्तिसगढ़ के निकट रतनपुर सन्त निवासा।
सिखरभञ्ज धुन सर नरेश बर भक्ति प्रकासा ॥
प्रेमदास अति प्रेम नेम रसना रटना महि।
श्रीमोहन बर दास युगुल नीलाचल धामहि ॥
परम धरम पोषक सुभट बिरद अनुपम उर बरयो।
विप्र एक भागवत बर राम ध्यान रामाधरयो ॥२०८॥

मूल—श्रीराम रास बर ध्यान पर रसिक विप्र ये जन सुखद ॥
श्रीबापू महाराज देश नीमाड़ प्रधाना।
ग्रामखण्ड बाहरी कर्ण प्रिय लक्खू नाना ॥
तेज कर्ण नागर प्रबीन रस रास अहारी।
एक एक बर सुभट उपासक दृढ़ ब्रतधारी ॥
काव्यकलाबिद शास्त्र षट् चतुर्वेद बोधक बिसद।
श्रीराम रास बर ध्यान पर रसिक वि प्रये जन सुखद ॥२०९॥

मूल—फतेविप्र दूबे सुजन हढ्ढ सन्त सेवन सुभट ॥
गंगाबाई गड़ाकोट जेहि सन्तदास गुर।
दास जानकी ध्यान साहगढ़ भक्तिरास उर ॥
सरसय चौरी छाप देवपुर उत्तम करनी।
भक्त उपासक बसत लसत पावन सो धरनी ॥
बसि बुंदेल बरखण्ड ही बिपुल भक्त सज्जन प्रगट।
फतेबिप्र दूबे सुजन हढ्ढ सन्त सेवन सुभट ॥२१०॥

मूल—श्रीगोपीगोपाल बर दास सन्त सेवी सरस ॥
मुक्तिनाथ बर छेत्र कठिन सेवा ब्रतधारी।
बास अटल कुरुक्षेत्र ब्रह्मसर गूदर भारी ॥
खाखी लछिमनदास सुखद बर बिरद परायन।
देस काठियावाड़ बसे नामी गति दायन ॥
देस देस बर मेघ से भक्ति सुजल जन पै बरस।
श्रीगोपीगोपाल बर दास सन्तसेवी सरस ॥२११॥

मूल—उदैसुपुर ठाढ़ेसुरी सन्त सुखद रनछोरवर ॥
त्यागी सहित विवेक टेक नहि जांचत काहू।
अनइच्छित बहु वित्त सन्त सेवा निरबाहू ॥
भजैं तजत नहि संत बृन्द ममता अनुरागी।
बलिहारी मति सरस मुख्य गति है बड़भागी ॥
मध्य दिवस झांकी छकै लखैं जु संध्या भोर पर।
उदैसुपुर ठाढ़ेसुरी संत सुखद रनछोर बर ॥२१२॥

मूल—प्रागदास श्रीरामपुर बहिर्द्वार के निकट ही ॥
गुनागार परबोध अनूठे सन्तन प्यारे।
जिनके वित्त सुरक्ष दक्ष दसरथ के बारे ॥
भोर आय पूछ्यो सुचोर कहि धन्य सुहायो।
परिकर्मा करि पूजि सन्त सेवा मन भायो ॥
जो सेवत निश्छल सरस तेहि आश्चर्य न प्रगट ही।
प्रागदास श्रीरामपुर बहिर्द्वार के निकट ही ॥२१३॥

मूल—तैलंगी रघुनाथ बर दास उपासक राम के ॥
नगफेटा बसि अमल रीति सेवति भक्तनि पद।
कृष्णदास रघुनाथ सु पुर प्रेमी भजनानंद ॥
बास डाक बर महत जानकीदास अनूठे।
जाति पांति जेहि सन्त जगत चाहै कोउ रूठे ॥
प्रबल सुभट पालक सुजन सन्त सुखद बिश्राम के।
तैलङ्गी रघुनाथ बर दास उपासक राम के ॥२१४॥

मूल—सर्बकाल अनुराग भल दास उर्मिला रमन के ॥
उत्कट प्रबल अनन्य भाव आबेस गुनाकर ।
प्रीति प्रणय सतसङ्ग रङ्ग अनुमोद सुधाकर ॥
रामभक्त जो लखै सुनै तेहि जाति न देखै ।
पूजत प्रीति समेत मनहु रघुनन्दन लेखै ॥
भक्तन की बिरदावली ग्रंथ परम सुख भवन के ।
सर्बकाल अनुराग भल दास उर्मिला रमन के ॥२१५॥

* श्रीरामसेवकदासजी का जीवन चरित *

मूल—सुख सागर की छाप सुचि रसिक रामसेवक भये ॥
सुहृद सुसील सुजान भक्ति अनिमिता देसी ।
चन्द्रकला बिमलादि मंजु घोषादि सुकेसी ॥
स्यामदास गूदर नरेस वैराग्य पारायन ।
शील छिमा सन्तोष सुधन रुचि ब्रत रामायन ॥
श्रीरामदास के अनुग ये रीति बिचक्षन गुन लये ॥
सुखसागर की छाप सुचि रसिक रामसेवक भये ॥२१६॥

टीका-श्रीरामदास कृपा पात्र भये रामसेवकजी बीसा के सागर गुन आगर बिराजे हैं ।
ठाकुर जहाँ के सुखसागर श्रीरामचन्द्र रसिक चकोर चहुँओर तहां भ्राजे हैं ॥
सीतल भरे हैं सर बोलत विहंगबर गुल्मतरु लता बर बेदिका सु साजे हैं ।
नित्य रामकथा नई लीला नित्य नई नई सन्त सभा नई पेखि मोह दल भ्राजे हैं ॥५५३॥

* श्रीमनभावनजी का जीवन चरित *

मूल—पुष्कर छाया अछत तन मनभावन भाविक बिसद ॥
मिथिला अवनि सु दूरि नगर ते मानस पेखै ।
हृदय उदय संबंध पिहर इन नैनन देखैं ॥
बिरह बृद्ध बपु भवन प्रगट मिथिला छबि देखी ।
कंचन अटा सु कुञ्ज अलिन सङ्ग प्यारी पेखी ॥
अंस भुजा पिय के लगी सरद रैनि सुखमा सुखद ।
पुष्कर छाया अछत तन मनभावन भाविक बिसद ॥२१७॥

टीका-भाविक रसिक मन भावन विशद जिन पुष्कर की छाया में सुधन्य जन्म लयो है ।
चन्द्रा चन्द्रकला विमलादि लली अली तिनहीं के सङ्ग भाव जन्म मान्यो निज नयो है ॥
हर्याचार्य जू ने जबै कीनो राम रास तहां नर शशीमान परा प्रेम सुख छयो है ।
निज परिवार के समेत नाच गाय दिब्य दम्पति रिझाय सुख रसिकन दयो है ॥५५४॥
भावना सम्बन्ध उर सूर ज्यों प्रकास्यो जीव अज्ञता जनित तम तोम लैं नसायो है ।
लली नवनेह के सम्बन्ध मिथिला अवनि दरसन दिब्य बैठे घर ही में पायो है ॥
बाढ्यो रस सागर उमड़ि चल्यो बाणि पथ रसिक समाजन में सोई रस छायो है ।
सरद समै में गलबाहीं दिये पेखि छवि ताही को प्रभाव मन रैनि दिन पायो है ॥५५५॥

* श्रीजैरामदासजी "सियासखी" का जीवन चरित *

मूल—सिया सखी प्यारी अली भली रङ्ग रस भोग उर ॥
भाव नाम सम्बन्ध प्रगट कछु और कहत जग ।
रैवासे गुरुधाम के निकट रसिक मग ॥
बूझि सूझि बल्मीक ग्रंथ माधुर्य कहानी ।
नित्य दरश सम्बंध लली चरनन रति मानी ॥
अवध भूमि बन कुञ्ज थल दरश हेत बहु योग जुर ।
सियासखी प्यारी अली भली रंग रस भोग उर ॥२१८॥

टीका-सियासखी प्रथम जैरामदास नाम ख्यात रैवासे में जब ते संबन्ध नाम पायो है ।
बाढ्यो रस उज्ज्वल बिभाग अनुभाव युत दूलह स्वरूप हेत मन ललचायो है ॥
रच्यो ब्याह उत्सव समाज अनुरागिन के मध्य श्याम रूप नैन गोचर जो आयो है ।
सो सुख अगोचर तुरीयातीत जान्यो निज मानस में आन्यो भेव काहू न जनायो है॥५५६॥
अवध निवास हेत मिलै चारि लच्छ मुद्रा लच्छावधि पाई चले उर सुख पायो है ।
कामद बिहार भूमि निरखि हरखि हिये भागीरथी तीर रामघाट मन भायो है ॥
दंपति दरश हेत भोरही पयान कियो दरस के हेत उर विरह सतायो है ।
जनक लली चरण सेवा सुखकंद पायो ईश ईच्छा प्रबल निगम कहि गायो है ॥५५७॥

* श्रीसाधूरामजी का जीवन चरित *

मूल—अति धन्य संत सेवन प्रबर एक एक उत्तम रहनि ॥
साधूराम सुजान रसिक मति ध्यान परायन ।
जन राघव हिय ललित रास रस पद के गायन ॥

विप्र एक भागवत लरतपुर रसिक सुजाना ।
मिथिलापुर सम्बंध भेद रसराज प्रधाना ॥
रचि उत्सव कासी सुजन जोरी छबि अनुपम लहनि ।
अति धन्य संत सेवन प्रबर एक एक उत्तम रहनि ॥२१९॥

टीका-साधूराम रसिक सुजान वृन्दाबन बासी बड़े साधु सेई सीताराम के उपासी हैं ।
जैपुर प्रसिद्ध राघौदासजी महान पद ललित बनाय राज माधुरी प्रकाशी है ॥
बड़े बड़भागी सीताराम अनुरागी विप्र चौबे कासीराम लर्तपुर के निवासी हैं ।
निज परिवार के समेत लेत प्रतिदिन सन्त चरणामृत प्रसाद सुखरासी हैं ॥५५८॥

※ श्रीगिरधारीदासजी का जीवन चरित ※

मूल—प्रगट लधौरा जन सुखद प्रचुर पुजारी छाप सुचि ॥
श्रीगिरधारीदास रसिक संतनि मनभावै ।
सजत व्याहुला समै जुगल छबि नैन लड़ावै ॥
उमगत छिन छिन बना बनी पद गुनिजन गावत ।
मेला संत समाज बिबिध भोजन पहुंचावत ॥
सदा द्रवत अनुराग रति कथा श्रवन आलाप रुचि ।
प्रगट लधौरा जन सुखद प्रचुर पुजारी छाप सुचि ॥२२०॥

टीका-गिरधारीदासजी पुजारी सन्त सेवी लोक विदित लधौरा के निवासी सुखदाई है ।
ब्याह के समै में छबि दंपति की देखी रतिमार ते बिसेषी सोई मन में समाई है ।
सन्त अनुरागिन की भीर जहां राजै तहां नाना विधि साजि भोग थार पहुँचाई है ।
अवध में आये निज नैन फल पाइ मति रहि ललचाय नहिं अनत सिधाई है ॥५५९॥
गिरधारीदास दूजे ग्वालियर मध्य बसै बलिरामदास कृपा भये सब लायकै ।
पूरन गये सषेम आदि जेहि बंस बड़े भाविक भये हैं रामकृपा बल पायकै ।
सोई गादी उत्तम बिराजे भक्तिजोग साजे सन्तसेवा करत बिषमता मिटायकै ।
राजस बिहीन रस रीति में प्रबीन महामाधुरी में लीन मन राजत सुभायकै ॥५६०॥

※ महान्त श्रीवैष्णवदासजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीमोहन बर दास के शिष्य बैस्नवदास भल ॥
आचारज मत समुझि विशिष्टाद्वैत सुजाना ।
रामचरन गुरुबंधु ध्यान देसी मनमाना ॥

नगर बास थल महत उजागर नागर प्रेमी ।
सील छिमा संतोष विरति उत्तम दृढ़ नेमी ॥
सुचि सेवा रस रास उर बिमल बोध लहि आस फल ।
श्रीमोहनबर दास के सिष्य वैस्नवदास भल ॥२२१॥

टीका-महन्त मोहनदास नगर निवासी रामचरन पुजारीजी के गुरु मन भाये हैं ।
वैस्नवसुदास भये गादी के महन्त संप्रदाय अनुसार रस रीति लव लाये हैं ॥
स्याम गौर माधुरी बिलास पन्थ पेषि श्रीगोसाई कृत ग्रन्थ के रहस्य उर ध्याये हैं ।
सील छिमा बिरति विवेक नीति सम दम दया ज्ञान भक्ति रस मानस छकाये हैं ॥५६१॥

※ श्रीजानकीशरणजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीचित्रसिंधु गुरु कृपा ते मैहरगादी महत बर ॥
जानकीशरण उदार सील गुन भूषित भारी ।
जनककिसोरी चरण कञ्ज मकरन्द अहारी ॥
अली रसिक निज रूप सुखद सम्बंध लये हैं ।
शरण रघूत्तम रसिक सुभट रुचि सफल भये हैं ॥
उज्जल मति रस रास उर ऋतु बसन्त लखि चढ़त ज्वर ।
श्रीचित्रसिंधु गुरु कृपा लहि मैहरगादी महत बर ॥२२२॥

टीका-श्रीरामसखेजी के प्रिय सिष्य सुसीलाजी हैं मैहर की गादी प्रथमही जिन पाई है ।
तिनके पाछे महन्त जानकीशरण भये चित्रसिंधुजी के प्रिय सिष्य सुखदाई है ॥
जनकलडैती पदकंज मकरन्द रस रसिक दुरेफ परा रति मति छाई है ।
तिनके सुसिष्य प्रिय अवधसरण सब लायक महन्त सन्त करत बड़ाई है ॥५६२॥

※ राजा श्रीविश्वनाथसिंहजी का जीवन चरित ※

मूल—जगत विदित उत्तम कथा बिश्वनाथ नृपराज की ॥
सीताराम चरित्र ग्रंथ अवलोकत निसि दिन ।
जुगल नाम अरु जुगल रूप सुधि लेत छिनहिं छिन ॥
उत्तम पथ शृङ्गार भक्ति दसधा के भेदी ।
पण्डित कला प्रबीन रसिक रसग्रंथ निवेदी ॥
श्रीरामचरण सतगुरु कृपा क्रिया मानसी साज की ।
जगत बिदित उत्तम कथा बिश्वनाथ नृपराज की ॥२२३॥

टीका-राजा बिश्वनाथ सीतानाथजी के बड़े भक्त पावन चरित्र जिन राघव के गाये हैं।
रामायन आदि बहु ग्रंथन को सार तत्व अगम अगोचर सो सुगम लखाये हैं॥
गुरु प्रियादासजी से राम मंत्र बीज पाय सतगुरु भाव जल सींचिकै बढ़ाये हैं।
कीरति सु छाई रसिकन सुखदाई बिन देखे की प्रतीति कोई कोइ जन पाये है॥५६३॥
धाम को महत्व सुनि अवध में आये लली लाल छवि निरखि प्रसन्न मन भये हैं।
रसिक नरेसन के चरनन सीस नाय चित्रकूट जायकै निवास निरमये है॥
अष्टजाम सेवा राम मंत्र अर्थ सार बीजक के रसिक सु बोध अर्थ ठये हैं।
श्रुति स्मृति व्यास सूत्र सबको सु सार एक राम ब्रह्म सार गाय धाम पर गये हैं॥५६४॥

※ श्रीजनकलडैतीशरणजी का जीवन चरित ※

मूल—गुरु गदित गङ्ग गुरु रूप ज्यौं जनकलडैतीशरण भल॥
राउभला चिरगांउ रसिक जन सुखद उजागर।
काव्य कला रस रीति पदन रचना में नागर॥
रसिक सजाती जाति जाति की नाहि न बाधा।
रसिक गुरु निज कृपासिंधु अनुराग अगाधा॥
रसिक जानकी बल्लभी जग तारण जुग चरण बल।
गुरु गदित गङ्ग गुरु रूप ज्यौं जनकलडैतीशरण भल॥२२४॥

टीका-राउ चिरगाँउ को परम गुरुभक्त भयो जनकलडैतीशरण नाम सुभ पायकै।
गङ्ग गुरु गदित दृष्टान्त इहाँ गायो ताको अभिप्राय कहत हौं थोरे ही में गायकै॥
सिया नागरी के दासजी सो मंत्र पायो गुरु आज्ञा मानि राजराघौ सेयें मन लायकै।
सब परिवार धन आपनो समर्पि करजोरि भये ठाढ़े चरनन सीस नायकै॥५६५॥
जनककिसोरी के सरण संग भाव पायो महल के हेत जौ जो कह्यौ सोई कीनो है।
पाछे राज राघौगुरुजी की आज्ञा मानि करि बचन प्रमान बेगिं संग तजि दीनो है॥
रसिक सुसन्त तिन्हैं मानत सजाती राम विमुख सजाती को विजाती मानि लीनो है।
नाम रूप धाम लीला तत्व पहिचानि गोप्य केलि सुनि जानि परा प्रेम मन भीनो है॥५६६

※ श्रीपर्वतदासजी का जीवन चरित ※

मूल—सब रसिक चातकन घन बिमल बानी परबतदास की॥
सीताराम अनन्य भक्ति दसधा निरबाही।
स्याम गौर छवि सुधा माधुरी सिंधु बिगाही॥

शम दम दया निधान सदा सतसङ्ग निरत मन।
मधुर भाव सम्मिलित ललित लीला बरनी जिन॥
मिथिलेस लली करुणा बिसद रति पाई रस रास की।
सब रसिक चातकन घन बिमल बानी परवतदास की॥२२५॥

टीका-परबतदास गंगा जमुना के मध्य ग्राम धमना में छत्री कुल जन्म सुधि पायो है।
बारेही ते खेल रघुनन्दन के खेलै वर्ष द्वादश के भये गेह मोह बिसरायो है॥
गुरु के समीप जाय लीनो मंत्रराज कण्ठी कण्ठ में तिलक भाल दुति सरसायो है।
ध्यान के धरत लाल स्वपन दिखायो निज मूरति लखाय दियो जो जो मनभायो है॥५६७
रामदास ब्राह्मण को भक्ति उपदेश कियो सजिकै बिवाह लीला सिद्धि दरसाई है।
दूलह स्वरूप में लुभायकै कलेवा लहकौरि ग्रहदेवी पूजा मोद सरसाई है॥
अष्टजाम सेवा नित्य स्वकर सु प्रेम गान नृत्य बिधि नेम छिन छिन अधिकाई है।
रैनि दिन रामायण कथा सतसंग नीती सीतापरसादहूँ को रीति सोई भाई है॥५६८॥

※ श्रीरामदासजी का जीवन चरित ※

मूल—तन मन बचन सुसन्त की रामदास सेवा करी॥
बसे बदनपुर ग्राम नाम अवलम्ब लये हैं।
राम रूप घनस्याम हेतु भक्तन बिनये हैं॥
प्रति सम्बत सतसङ्ग मकर मज्जन जन आवै।
गांव गांव ते मोट चले सीधो पहुंचावै॥
बिनै करत गदगद गिरा भाव सु दृढ़ मेधा धरी।
तन मन बचन सु सन्त की रामदास सेवा करी॥२२६॥

टीका-रामदास गङ्गा तट बदनपुरा के वासी सबके सुपासी ऐपै सन्त प्रान मानही।
एक ग्राम रैनि अवशेष जब रहै तबही ते सब सन्तनि नाम धुनि ठानही॥
पूजा काल मन्दिर में जाय क्रमही सो सब ठाकुर को बदन निहारि सुख मानही।
सन्तन के आसन पै जाय करै दण्डवत बचन सुनाय मीठे बहु सनमानही॥५६९॥
ग्राम ग्राम जाइ सब सन्तन को नाम लैकै अन्नधन मिलै सब आसन पै लावही।
एक दिन बोझ भारी बैठि गये वृक्ष तरे आये प्रेत बोल्यो उठि जावौ कैसे जावही॥
भूखे उत सन्त इत मोटरी है भारी नेकु देहु पहुँचाय तुम्है भोजन करावही।
मोटरी उठायकै चलत पहिचान्यौ करिजोरि सनमान्यो प्रभु काहे दुख पावही॥५७०॥

बोल्यो देउ भोजन लगत भोग आपुही को भये हम प्रेत राम भजौ सुख पाइये।
आज्ञा जोई होइ सो टहल हम सदा करैं मन्दिर पै ग्रामन ते सीधो पहुँचाइये॥
सोई उन कियो सुख सन्तन को दियो जन वही बड़भागी जग सन्त सुखदाइये।
सन्त की कृपा ते प्रेत जोनि छोड़ि देव भयो बैठिकै बिमान सुरलोक को सिधाइये॥५७१॥

मकर महीना जाइ प्राग में निवास करै सन्त जेते आवै सब भोग को लगावहीं।
कथा कीरतन नित मज्जन त्रिबेनी बेनीमाधव दरस सन्त दरसन पावहीं॥
सन्ध्या भोर नाम धुनि सन्त सब करै दीन देखी अन्ध पंगु तेऊ नाम रट लावहीं।
ऐसे उपकारी कहूँ कहूँ जन देखि परै जिनके चरित्र कलिकलुष नसावहीं॥५७२॥

* श्रीमंसारामजी का जीवन चरित *

मूल—हरिसेवा सुमिरन कथा सन्त दरस इन नित चही॥
खाखी मंसाराम तपस्वी राम उपासी।
पुरी लक्षना विदित गोमती तट के बासी॥
सेवा सन्त अनूप गोमती दास दृढ़ाई।
राम भजन सतसङ्ग कथा नित लगत सुहाई॥
दरियाई श्रीलालदास सन्त कृपा सुभगति लही।
हरिसेवा सुमिरन कथा सन्त दरस इन नित चही॥२२७॥

टीका-अग्रस्वामी बंस मंसारामजी विदित तप तेज के निधान बसे गोमती के तीर में।
राममंत्र जाप महाबीर के प्रताप सीत उष्ण परिताप नहिं ब्यापी है शरीर में॥
राजा प्रजा जोरे कर दूरिते दरस करै मुदित बिराजे ध्यान साजे उर धीर में।
सरन में आये तिन्हैं काल ते बचाये ऐसे देखन में आये नहीं लाखन की भीर में॥५७३॥

तिनके प्रसिद्ध मनोहरदास सिष्य भये पण्डित प्रबर तप तेज के निधान है।
चारि संप्रदाय के महन्त सन्त कोई आवै राखै विरमाय सब भांति सनमान है॥
सदाचार रीति रामपद्धत की पाई सब सिष्यन सिखाई सजि नवधा विधान है।
जलसज्या पंचधुनी स्वामी निज रीति नित नेम को निबाहि दृढ़ राख्यो राम ध्यान है॥५७४

भाविक महन्त तिनहीं के गुरु भाई प्रहलाददास जिनको सुजस लोक छायो है।
रैनि जब रहै एक जाम उठि तबहीं ते नित्य क्रिया करि गुफा भजन दृढ़ायो है॥
जामजुग सदा मंत्र तारक जपत रूप माधुरी हो स्वाद जिन मानसी में पायो है।
बालमीक श्रीगोसाईं रामायन आदि रामचरित प्रसंगही में आयुष बितायो है॥५७५॥

* पैहारी श्रीलक्ष्मीनारायणदासजी का जीवन चरित *

मूल—श्रीपैहारी के बंश में पैहारी एकै भये॥
सर्बसु सीताराम उपासक पर उपकारी।
तीव्र त्याग अनुराग भक्ति दसधा दृढ़धारी॥
सरजूपारी विप्र कठिन कोमल दरसायो।
रामचरित बहुग्रंथ श्रवन दै दै छबि छायो॥
सन्त मण्डली नित बसत पूजा विधि सज सुख दये।
श्रीपैहारी के बंश में पैहारी एकै भये॥२२८॥

टीका-पैहारी श्रीलछमीनारायनजी सिद्ध भये सीताराम भजन की सिद्धि जिन पाई है।
बालपने ही ते रामपद अनुरागी साधु संगति में लागी रति मति हुलसाई है॥
बसत महेन्द्रग्राम खेती को उपाय करै मारग में एक सन्त छुधा की जनाई है।
सादर बैठाय तिन्हैं भोजन खवाये लही आशिषा पुनीत सियाराम भक्ति भाई है॥५७६॥

सुंदर पलास वृच्छ तरे राम नाम धुनि करत प्रकास उर थोरे ही भयो है।
सन्मुख मतंगज पै पेखी रघुचंद छबि इष्ट पहिचानिकै अनंद उर छयो है॥
क्रमही सों सब अंग सुख मानि हारि तन सुरति बिसार पदकञ्ज सीस नयो है।
राघव दयाल कर गहिकै उठाय निज हाथी पै चढ़ाय सीसपानि धरि दियो है॥५७७॥

भई बहु मूरति अदृश्य उरताप भयो व्याकुल बिरह तन नैन नीर छाये हैं।
उठिकै तिहारि दिसि बिदिसि अधीर भये बन बन ढूंढत ये कौलीग्राम आये हैं॥
धरि उर धीर षटमास लों भजन कियो सोई गज पै सवार पेखे मन भाये हैं।
स्वामी रघुनंदन प्रनतपाल दीनबन्धु पाहि प्रभु कहिकै यों चरन सीस नाये हैं॥५७८॥

दंडवत करत निहारिकै उठाय निज हाथी पै चढ़ायकै बैकुंठपुर लाये हैं।
गजही पै चढ़े धाम आपनो दिखाई जोई वेदन में गायो सोई नैनन लखाये हैं॥
भूमि पै उतारि कही रहौ कछु काल इहां जैहौ मम धाम जोई अबहीं जनाये हैं।
चलत निहारि पदकंज में लिपिटि कही राखौ निज संग प्रभु काहे बिसराये हैं॥५७९॥

बोले रघुचन्द जो हमारो प्रिय भक्त ताको लोक में सुजस परलोक में बड़ाई है।
सन्त इत आवैं तिन्हैं हमही को जानौ जोई कहै सोई मानौ प्रीति रीति सुखदाई है॥
होतही प्रभात उठि सन्तन की भीर देखी करिकै प्रनाम मृदुबचन सुनाई है।
बोले श्रीमहन्तजी अजोध्यापरसाद तुम कौन के हौ सिष्य सुनि पद सीसनाई है॥५८०॥

आपुही गुरु है आज्ञा होय सोई करै हम बचन प्रमान सुनि कीनो इष्ट ध्यान है।
भई उर प्रेरना तुरन्त संसकार दिये जिनके बिलोके होत सन्त रूप ज्ञान है॥

अष्टजाम नवधा की रीति को लखाई परा प्रीति दरसाय किये आपनी समान है।
मानसी में आली भाव रीति को जनाई तब पूर्ब सुधि आई ईस कह्यो सो प्रमान है॥५८१॥
अति सुख मानि कियो गुरु सनमान और आये सन्त जेते तिनहूँ की पूजा कीनी है।
बिदा होत दण्डवत करी परिपांय चरनामृत प्रसादी आसिषा समेत लीनी है॥
माला लै हजारी सीताराम धुनि वृति धारी अवधबिहारी में समर्पि रति दीनी है।
भयो उर नेह नयो मन को सन्ताप गयो पेखि निरहेतुकी कृपा में मति भीनी है॥५८२॥
देखिकै प्रभाव पुर परिजन आवैं चरनन सीस नावैं निज भाग को मनावहीं।
अन्न धन लाय आगे ढेर को लगावै सब सन्तन को बांटिकै अनन्तसुख पावहीं॥
नेत्र जोति हीन तऊ भाव में नवीन नित सन्ध्या भोर नाम धुनि सब सों करावहीं।
सिष्य भये प्रेमी कोई रामलीला नेमी कोई सामा सुभ साजि भोग राग दरसावहीं॥५८३
तारन तरन सन्त लच्छन पुरान कहै ग्राम ग्राम जाइ जड़ जीव बहु तारे हैं।
मिथिला अवध चित्रकूट लगि जाय फेरि इतही में आय पय अहार व्रत धारे हैं॥
भोर संध्या अर्द्ध राति लौं जो कोई आवै ताहि भोजन दिवाय मृदु बचन उचारे हैं॥
रामायन रामकथा सुनी मनलाय दीर्घ आयुष बिताय इष्ट धाम को पधारे हैं॥५८४॥
तिनके सु सिष्य सियारामदासजी प्रसिद्ध तिनहूँ की रीति उनहीं की सम जानिये।
जाम अवशेष जामिनी के रहे नित्य नेम स्वकर सुधारि मन मानसी प्रमानिये॥
शील छीमा दया उर समता सुसील सुचि सरल कृतज्ञ मृदु मधुर सुबानिये।
दरसन पाये जीव अजहूँ सनाथ होत कलिहूँ में सत्य ऐसी ठौर अनुमानिये॥५८५॥

※ श्रीपरशुरामदासजी का जीवन चरित ※

मूल—छपरा उत्तर बाटिका परसुराम ज्यों परसुधर॥
जोगी जोग सुजान तपस्वी तेज निधाना।
अधिक सन्त अनुराग लस्करी जै अस्थाना॥
बालानन्द महन्त सन्त पोषक रवि कंजै।
सेवानंद नरेस भक्त दूषक लखि गंजै॥
विपुल सौंज संतन सुखद सदा सरस सुख बरस घर।
छपरा उत्तर बाटिका परसुराम ज्यों परसुधर॥२२९॥

टीका-पर्शुरामदास सिद्ध छपरा सहर राजै बड़े जोग ध्यानी तप तेज के निधान हैं।
सेवानंदजी को जिन नीके सनमान कियो बड़े चिरजीवी जिन्हैं जानत जहान हैं॥
प्रथम कठोर पाछे कोमल बचन भाषै जो पै सन्त मिलै कोऊ लच्छन सुजान हैं।
सन्त जिन देखे तेते सकल प्रसंसत हैं पर्शुराम सिद्ध पर्शरामै की समान हैं॥५८६॥

※ श्रीजगन्नाथदासजी का जीवन चरित ※

मूल—सिद्ध प्रचुर मिथिला अवनि जगन्नाथ विमला निकट॥
सुखद पताही बास जक्त आसा नहिं राख्यो।
जनकनंदनी सुता भाव भाविक अभिलाष्यो॥
राम स्याम जामात जथा किसोर सुख पाये।
मनीराम जो रामदास रस रसिक सोहाये॥
जुगल रसिक शृङ्गार मति एक सिद्ध साधक प्रगट।
सिद्ध प्रचुर मिथिला अवनि जगन्नाथ विमला निकट॥२३०॥

टीका-जगन्नाथदासजी पताही में प्रसिद्ध सिद्ध जनकलली को जिन सुता सम जानी है॥
जथा श्री किसोरसूर लाल का दमाद मानै तथा चित बृति इनहूँ की ठहरानी है।
आठौजाम दम्पति के लालन पालन पगे थल देह योग छेम सुरति भुलानी है।
रसिक बिजातिन को संग न सोहावै जिन्हैं रसिक सजातिन में प्रीति अधिकानी है॥५८७॥
रूप हरि ग्राम में जैरामदास सिद्ध भये मनीराम साधक जो छप्पै में गनाये हैं।
चारुसीलासरण प्रसिद्ध ज्ञान कूप ढिग छेत्र न्यास लिये मिथिला की छवि छाये हैं॥
अष्टजाम रीति अली भाव में प्रतीति सब दयासिंधुजी से रसराज भेद पाये हैं।
पेखे रस ग्रंथ मिले रसिक सु पन्थ छोड़ि जीव जड़ ग्रंथि निज धाम को सिधाये हैं॥५८८॥
औरहू लसत सिद्ध मिथिला अवनि सियाबल्लभसरन आदि जहां तहां राजे है।
कञ्चन अवनि कमला के तीर बिचरत सिंह आदि जिनहिं बिलोकत में लाजे है॥
रसिक नरेसजू की माधुरी रहस्य पाय मधुर बचन कहि पोखत समाजे है॥५८९॥

※ श्रीरामशास्त्रीजी का जीवन चरित ※

मूल—मिथिला गौतमकुण्ड ढिग शास्त्री राम उपासना॥
मंत्र लियो निज रुचि बिचार गुरु कासी बासी।
राज पुत्र श्रीराम श्याम छवि शम्भु उपासी॥
ब्राह्मण को नहि चहैं अहैं अद्वैती भाष्यौ।
कर परास्त गुरु कृपा बगर मिथिला छवि चाख्यौ॥
खट शास्त्री रामहिं रख्यो ठव्यो कुञ्ज जग आसना।
मिथिला गौतमकुण्ड ढिग शास्त्री राम उपासना॥२३१॥

टीका-कासी बासी रामशास्त्री ज्ञाता सब शास्त्रन के पण्डित प्रबर ज्ञान भक्ति के निधान है।
महाराष्ट्र द्विज कुल जन्म लहि कासी आये व्याकरण पाये कीन्हे स्तामल ज्ञान है॥

बैठे बिन्दुमाधव संन्यासिन के मध्य सुनी ब्राह्मण को नहीं राम पूजा को विधान है।
रह्यो नहीं गयो ताहि कोपिकै ऊत्तर दियो सह्यो कैसे जाय जाके रामही को ध्यान है ॥५६०॥
ब्राह्मण को चहीन अहिल्या को न जाति रही पदरेणु पाय उठि पूजा जिन कीनी है।
विस्वामित्र बालमीक आदि जाको नाम जपि भये ब्रह्म रिषी रामभक्ति मति भीनी है॥
बादी सो परास्त भयो उर में विराग छयो मिथिला गौतमकुण्ड बास भूमि लीनी है।
बाम ओर जनकलडैती दाहिने लषन बीच खड़े आपु कृपा दृष्टि हेरि दीनी है ॥५६१॥
अद्भुत निहारि छवि पुलकित गात भये पाहि प्रभु पाहि कहि दण्डवत कीनी है।
जोरिकर ठाढ़े नैन प्रेम जल बाढ़े भई बरंत्रुहि बानी सुनि मांगि भक्ति लीनी है॥
पेखिकै प्रभाव दरभंगा नृप छत्रसिंह आयो लहि आपु सु मन्दिर नीम दीनी है।
अहिल्या उद्धारन बिराजे रघुनाथ तहां बूझिहैं सो गाथ जाकी परामति भीनी है ॥५६२॥

※ श्रीकूबाजी की शिष्य परम्परा ※

मूल—दामोदर गुरु कृपा ते हृदयराम हिय में बसे॥
ध्यान जनकजा सहित रहित कामादिक नामी।
कृपाराम बर सिष्य रतन बर अन्तरजामी॥
नृपति रामबल भजन भूति गति भव्य बखानी।
बल ते मंत्र सुनाय करण सङ्कर गति ज्ञानी॥
मण्डलेस पूर्बहि कहे राम नाम अमृत रसे।
दामोदर गुरु कृपा ते हृदयराम हिय में बसे ॥२३२॥

टीका-कूबाजी के सिष्य दामोदरदास ख्यात हृदैराम सिष्य तिनहू के कृपाराम भयेहैं।
तेई इतै आय दया छपरा बिराजे गंगा सरयू के मध्य में निवास भल ठये हैं॥
कृपारामजी के रत्नदासजी सुशिष्य भये तिनके नृपतिराम जोगबल लये हैं।
चर्णामृत लेत में निहारि रूप संकर को बल ते सुनाय कर्ण राममंत्र दये हैं॥ ५६३॥
अधिकारी हरिदास संका मन आनी तिन्हैं कही समुझाइ इन्हैं ईस अंस जानिये।
नादबिन्द दोनौं के प्रवृतिकारी मण्डलेस होयंगे स्वतन्त्र ये बचन सत्य मानिये॥
सुनिकै सम्बाद सीसनाय बोले संकरजी सिष्य जो किये तौ कृपा दृष्टि कुछ आनिये।
कृपा उनहीं की जो गोचारन समै में मिले तिनहीं की आठौजाम इच्छा पहिचानिये॥५६४॥

※ श्रीशङ्करदासजी का जीवन चरित ※

मूल—श्रीसंकर गुरु प्रगट भये कूबावत ध्यानी।
जानराय श्रीरामचन्द्र प्रगटे पथ आनी॥

कंटक बहु पद गथ्यो भूलि मारग अकुलाने।
छैल सिकारी गह्यो पानि तब पथ दरसाने॥
बिकल दसा पूछी तिनहि कही सो निज जन जानही।
रामनाम के माल रचि गंगा प्रगट चिरानही ॥ २३३॥
सोइ पर्म गुरुदेव भेव सब रस की जाने।
रामनाम के रसिक रूप हिय में मंडराने॥
ध्यानमंजरी दई देखि बहुमत चित सानी।
अग्रस्वामि पथ रुचै तोहि अस कहि मृदुबानी॥
दुतिय सु बिग्रह पथ अवध अग्रस्वामि सुख धामही।
रामचरण सतगुरु मिले कृपा करी सिय रामही॥ २३४॥

टीका-सोभाराम चौबेजी दैवज्ञ रामभक्त बड़े तिनहीं के पुत्र छोटी तिया के जू भये हैं।
देखि कै सुलच्छन बिचारयो ईस अंस कोई हीनो गति जानिकै अनन्द उर छये हैं॥
सुभ घरी दिवस बिचारि कुल देव पूजि नाम धरयो शङ्कर आसीस भल दये हैं।
धरि उर ध्यान सीताराम को सुमिरि नाम त्यागि तन प्राकृत साकेतपुर गये हैं ॥५६५॥
भयो उपबीत सब द्विज संसकार पाये पढ़ै में लगाये कछु मन में न भावई।
माता के सनेह बन बछरू चरावै तहां चले जात देखे पन्थ सोभा सरसावई॥
आगे राम स्याम पाछे लषन ललाम राजे कोटि सतकाम छवि चित को चुरावई।
भये तरु ओट लागी हिये रूप चोट भये ब्याकुल बिरह सो कहे न बनि आवई ॥५६६॥
बन बन डोलैं काहू सो न कछु बोलैं कहे ह्वै हैं कौने बन दोऊ पन्थ में निहारे हैं।
माता बन जाय ढूढ़ि संग में लिवाइ लाई बूझे ते बतायो दिन दूसरे सवारे हैं॥
मिले रघुनाथ जैसे कथा सो बखानी मिल्यौ मंत्र जैसे कथा ताकी पूर्व निरबारे हैं।
जैसे तीर्थ जात्रा करि आयकै चिरान बसे जथा मति सुनिकै कवितन में धारे हैं ॥५६७॥
बरस अठारह के भये पै अकाल परयो प्रजा की कलेस चारौ दिसा में जनाई है।
देवसिंह चारि पैसा देत सब ब्राह्मण को माता के कहे ते इनहूँ के मन आई है॥
सबसे पृथक जाय दूरि भये ठाढ़े ताने निकट बुलाय मुद्रा एक लौ देवाई है।
बूझे ते जनायो तुम्हैं रामजी दिवायो सुनि रूप उर आयो रामही की गति ध्याई है ॥५६८
अवधपुरी की ओर सुनिकै सुकाल चले टहलू समेत माता भगिनीहू संग में।
सूर्जकुण्ड ढिग सूर्जबंशी एक छत्री मिल्यौ राखे बिरमाय तिन दया की उमंग में॥
अवध में जाय सरि सरजू नहाय इष्ट दरसन पाय पगे सन्तन के रंग में॥
पीतांवरदासजी से धाम को महत्व सुन्यो तुलसी की माला लीनी भजन प्रसंग में ॥५६९॥

धाम कल्पवासही में माता को शरीर छूट्यौ देह मोह टूट्यौ सु बिराग उर धारे है।
संग में जे आये तिन्हैं घर को पठाये आपु दरस के हेत बद्रीनाथ को सिधारे है।
दरसन पाय फेरि हरद्वार आये बन तीर तीर सहर बुटोल को पधारे है॥
कई बोरा अन्न साधु ठाकुर के आगे धरि नीकेकै पवाइ सदावर्ती हट टारे है॥६००॥
सिद्ध एक मिले तिन मूठी भर आटा दियो भोजन समै में और तीनि को पवाये हैं।
दूजे सिद्ध मिले तिन मिष्ठकन्द दियो ताके भोजन ते छुधा षट मास की मिटाये हैं॥
तीजे सिद्ध गावें करनषन बजावें पद रचना की सिद्धि भली तिनहीं ते पाये हैं।
चौथे सिद्ध सीत लगे गूदरी उठाय दीनी आगे मांगि ओढ़ि निज मारग सिधाये हैं॥६०१॥
कण्टक सघन बन मारग भुलाने तहां आपुही सिकारी रूप मारग लखायो है।
पूछे ते बतायो थोरी दूरि है गढ़ी हमारी ताके ढूढ़िबे में आठ दिवस बितायो है॥
सन्त सूय बोले तुम्हैं दरसन भयो तुम नाही पहिचाने सुनि बैठि रूप ध्यायो है।
ध्यान के धरत गऊ लोके को प्रकास भयो मानस में आयो सो प्रतछ लखि पायो है॥६०२

कञ्चन की भूमि दिव्य भवन अनेक बने वाटिका तड़ाग सुधा सलिल सो भरे हैं।
बोलत विहंग मृदु भंवर गुंजार करैं कञ्ज बन फूले द्रुम मिष्ट फल फरे हैं॥
सुन्दर किसोर बाल भूषन बसन लाल गोधन के पाछे चले जात लखि परे हैं।
बूझे ते बतायो यहै भवन हमारो दुग्ध मधुर पियाय भूख प्यास सब हरे हैं॥६०३॥
कम्बल अनूप दै कै बालक अदृश्य भये ओढ़त ही ताके दिव्य ज्ञान तहां भास्यो है।
अवध स्वरूप चहुँ बन्धुन के बाल सखा सबको प्रकास बहु सूर ज्यों प्रकास्यो है॥
मन में करत अनुमान भोर भयो लोक देख्यौ सोऊ स्वप्नवत छिन में बिनास्यो है।
कम्बल जो ओढ़े दिव्य सोई रहि गयो ताते भयो अति प्रेम देख्यौ सोऊ बिसवास्यो है॥६०४

मिले देवाराम तिन्हैं कम्बल उठायो उनहूँ को निज आसन पै दिव्य ज्ञान ज्यो है।
धाम को प्रकास रघुनन्दन स्वरूप भास अद्भुत बिलोकि अति मोद उर छ्यो है॥
शङ्करजी चार्यो धाम परसि उज्जैन आये हनूमान इष्टी ब्रह्मचारी बर दियो है।
रसना सो आठौजाम नाम को उच्चार ह्वै हैं सुने बर बचन प्रसन्न मन भियो है॥६०५॥
पूरब दिसा ते अवधूतिनी को सङ्ग भयो आठ वर्ष दूर दूर साथ ही में रही है।
ब्रह्मचारीजी सो निज बिनय सुनाय चरनामृत को पाय तिन देह निज दही है।
रमनदुबे के घर गिरिजा ज्यों जन्म लियौ शङ्कर मिलन हेत आसा दृढ़ गही है॥
एऊ सब तीरथ नहाये नीमसार निज जन्मभूमि आये व्रत पूरि रति लही है॥६०६॥
देसपुर बासी सब दरस को आये भले लखि सुख पाय निज सदन सिधाये हैं।
रामद्याल पण्डित समीप नित्य आवै तिन पाय सावकास मृदु बचन सुनाये हैं॥

तिया के सहित धर्म आचरन वेद कहै आश्रम स्वधर्म आपु काहे बिसराये है॥
सुनि रघुनन्दन की इच्छा बलवान भाषी भोर भये अंग हरदी के रंगे पाये हैं॥६०७॥
रमनदुबेजी निज कन्या दिव्य रूप लखी याके जोग कोऊ तेज पुंज बर देखिये।
करत बिचार कोऊ आयकै उच्चार कियो शङ्कर समान और कहां अवरेखिये॥
आयकै बिनै सुनाय हिये की जनाई बात इनहूँ उघारि गात कही रंग पेखिये।
भयो उर चैन लखि दिन सुख देन कियो मङ्गल बिवाह सो उछाह किमि लेखिये॥६०८॥
उपकुरवान ब्रह्मचर्य्य इन धार्यौ चारि पुत्र चारि फल की समान जिन पाये हैं।
बड़े रामकिङ्कर प्रयागदत्त दूजे गंगागोबिन्दजी तीजे चौथे ग्रंथ कर्त्ता गाये हैं॥
जैसे ध्यान मंजरी प्रभाव आसिखा पुनीत लही सो प्रमथ सब कहिकै सुनाये हैं।
जिनकी कृपा सो भक्त सुजस प्रकास भयो अन्तहूँ में तिनके चरन कञ्ज ध्याये हैं॥६०९॥
महाराज शङ्कर चरन कंज वन्दत हौं भजन में राम नाम माला जिन गाई है।
कूप खनवायो जल सोत नहिं आयो तब इष्ट पद गाय जल धारा प्रगटाई है॥
राघव के ब्याह हेतु चून नहीं रह्यो पद गायो गंगा सूप भरि मडुवा दै आई है।
और जन्म भोग यही तनही में भोगि लियो अन्त राम धाम गति सहजही पाई है॥६१०
सिष्यहूँ अनेक भये बिरति बिवेक जुत नाम है अनेक तत्व थोरे में जनायो है।
जिनकी कृपा ते ग्रंथ कर्त्ता रुचि पर्म भई तिनहीं के संग भयो मेरो मनभायो है॥
पारस के संग ज्यों कुवर्णहूँ सुवर्ण होत तैसे मूल संग टीका रूप सरसायो है।
भये और ह्वै हैं बर्तमान में जो रामदास तिनको कहावौं यह ग्रन्थ भाव गायो है॥६११॥

※ श्रीसंत बंदना ※

मूल—अग्रस्वामी पद कंज के रसिक भृंग पद उर धरौं॥
बालअली श्रीरूपसखी पुनि मधुराचारज।
हरियाचारज रामसखे निवास रस आरज॥
रामदास गूदर कृपाल श्रीरामप्रसादा।
प्रेमसखी श्रीपरमहंस कृति पथ अनुवादा॥
चित्रसिन्धु आदिक दया रघुबरसरण बिमल सरौं।
अग्रस्वामि पदकञ्ज के रसिक भृंग पद उर धरौं॥२३५॥

टीका-अग्रस्वामी चरन कमल भृङ्ग कहे तिन्हैं षोड़श प्रधान नित्य पारषद जानिये।
बालअली रूपसखी मधुर निवास प्रेमसखी दीनबन्धु रामचरण प्रमानिये॥

रामसखे रामदास राजराघौ देवादास पर्महंस चित्रशील प्रेमनिधि भानिये।
करुणा समुद्र पद पंकज के प्रेमी सदा मेरे सिरमौर सर्व जीव सुख खानिये ॥६१२॥

मूल दोहा—श्रीजनककिसोरी ब्याह दिन उत्सव साज समाज।
विपुल सन्त भाविक तहां लह्यो पूर्ण रस राज ॥ १ ॥
श्रीगङ्गा तट सरस थल लहि चिरान अस्थान।
छपरा पुण्य निकुञ्ज में सोइ समाज की ध्यान ॥ २ ॥
मनन करत आश्चर्य सुख भयो स्वप्न अनुकूल।
नवल भक्त माला रच्यौ सकल सुमङ्गल मूल ॥ ३ ॥
सम्बत् अष्टादश विसद मकर मास गत पांच।
दिवस मनोहर छ्यानबे प्रगट नवल जस सांच ॥ ४ ॥
माधवसित अट्ठानबे नौमी विमल विलास।
नवलकिसोरी जन्म दिन पूरन रसिक प्रकाश ॥ ५ ॥

इति श्री महन्त जीवारामकृत रसिक प्रकाश भक्तमाल
मूल बीजक सम्पूर्णम्

टीका-भक्ति रस रीति रसिकन सम्प्रदाय मिलि सब दिन सब देश लागति सोहाई है।
धनी धन पाय सदा धनिक के मध्य लसै रसिकन सङ्ग सदा रसिक बड़ाई है॥
रामकथा रामभक्त चरित के सङ्ग लसै भूषन संजोग मुक्तामनि छवि छाई है।
रसिक प्रकाश भक्तमाल के प्रसङ्ग टीका रसिक सु बोधिनी की सोभा सरसाई है॥६१३॥
अवधपुरी को सरयू को जैसे नित्य जोग आतम निवेदन में जैसे भक्ति लीजिये।
माधुर्ज रहस्य मिलि ऐश्वर्ज सोहात जैसे कृपा गुन मिले जैसे रूप गुन भीजिये॥
दास सख्य मिलै रसराज जैसे सोहत है प्यारी को प्रसङ्ग नित प्रीतम ज्यौं कीजिये।
तैसे ईश जीव प्रतिकूलता मिटाय सन्त रसिकन सङ्ग मिले भक्ति निज दीजिये॥६१४॥
सम्बत् उनीसशत उनईस मास शुभ सावन धवलपच्छ नवमी गनाई है।
सोम दिन झूलन हिण्डोल छवि पेखि लली लाल की विशेष इच्छा उर में जनाई है॥
रसिक नरेसजू के पाद पद्म सीसनाइ रसिक सुबोधिनी समाप्ति करि पाई है।
जनकलडैती रघुनाथ पद कंजन में रसिक प्रकास भक्तमाला अरपाई है॥६१५॥

इति श्रीजानकीरसिकशरण कृता रसिक
सुबोधिनी टीका समाप्ताः सम्बत् १९४२

——:०:——

* श्रीसीतारामन्चद्राभ्यां नमः *

॥ श्रीचन्द्रकलायै नमः ॥

श्रीयुगलप्रिया पदावली

॥ राग भैरो ॥

नमो श्रीअग्रस्वामि पदकंजु।
प्रिय बानी रसिकन मन मोदक बोधक विपुल रास रस मंजु॥
रसिकवर्य रसिकन मत मंडन खंडन असद विषै भ्रम पुञ्ज।
नमो श्री जैति जैति प्रमोद बन पिय प्यारी संग रहसि निकुञ्ज॥
नमो श्री जैति जानकीबल्लभ नाम रसिक रसनावलि गुंज।
प्रीति रीति परतीति लली पद युगलप्रिया हिय तमसि विधुंज ॥१॥

जै श्री चन्द्रकला अलबेली॥ अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि गर्व गहेली॥ निमि कुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रियकारी रस केली। चंद्रप्रभाजू के सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली॥ कांचनबन कमला प्रमोदबन लीला लहरि रीझेली। मोहनि जंत्र बीन स्वर टेरति प्रीतम चित्त विथेली॥ सरनागत पालिनि रसमालिनि चालिनि गजगति हेली। युगलप्रिया अनुराग सदा संबंध राग की डेली॥२॥

॥ राग येमन ॥

मिथिला बिनु नाते नहिं दरसे। पढ़ै गुनै समुझै समुझावै पोथी लादै खरसे॥ लसति अनादि थली मणि भूमी मुक्ति फिरै घर घर से। विहरत सदा रसिक रघुनंदन लली चरणरज परसे॥ यही जानि सुखमानि बसी सब कांचनबन रस अरसे। सची सारदा रमा भवानी कमला सेवन कर से॥ जे रुखे रस कथा पगे नहिं मोह निसा प्रिय चर से। लहैं न रसिक गुरुन संगति भव बहै नदी ग्रह गरसे॥ परम रसिक सिंगार अहारी जग नभ बसि जलधर से। कामादिक पवनहुं गति थाकी काल डरत जेहि डर से॥ सुरति मिथिला सब अङ्ग सिथिला विरह चढ़ी जनु ज्वर से। विरही जिज्ञासू साली लखि कृपा प्रेम जल बरसे॥ रसिकन की गति अकथ कहानी सङ्ग लहै तो सरसे। अग्रस्वामि रस रीति मिलन को युगलप्रिया जिय तरसे ॥३॥

॥ राग बसंत ॥

मन अटकि रह्यो यमुना की कुञ्ज । मिथिला की भूमि रस बहति पुञ्ज ॥ रविनंदिनि नाहि अनादि थली । हिमवंत सुता निमिबंस पली ॥ एक रूप सियाजु के साथ रहै । द्रव रसिक जनन हिय ताप दहै ॥ जंबू दीपा सुकृतालि साजि । द्रुम दोउ किनार यामुन विराजि ॥ केतकी गुलाबी चंपकालि । प्रफुलित कुंजैं जनु पहिरि मालि ॥ फुलवारी लालन मिलन हेत । जमुना रसिकन सुख प्रगट देत ॥ गिरिजा प्रिय वहिनि विराजमान । बृहद्विष्णुपुरान बखान जान ॥ सबकी न कहौ रसिकन के मते । जिन अग्रस्वामि रस रंग रते ॥ लखि युगलप्रिया तहँ रास धाम । जमुना जमुना रट अष्टजाम ॥४॥

मन बस्यो अवध की गलियाँ । महल विचित्र कनकमनि मंडित निरखि मनोरथ फलियाँ ॥ कंचन कोट फटिक मनि चित्रित नग जगमग छबि छलियां । खाई निर्मल जल परिपूरित मिलि सरजू रंग रलियाँ ॥ चहुंदिशि बन प्रमोद कंचनमय भूमि विराजत भलियाँ । कुञ्ज कुञ्ज प्रति पुञ्ज पुञ्ज गुन आगरि नागरि अलियाँ ॥ भीतर चौक बजार हजारनि भिन्न भिन्न रंग थलियाँ । नृप सुत युगलप्रिया के जीवन जनकरायजू की ललियाँ ॥५॥

॥ राग गौरी ॥

अवध की भूमि सोहावन जानी । अरुण पीत सित मणिमय राजति रसिकन दृग लपटानी ॥ श्रीसरयू सब सरित सिरोमनि वेद पुरान बखानी । जहां नित्य विलसत पिय प्यारी बन प्रमोद सुख खानी ॥ जिनके युगल विहार कथा निति तिन यह पथ पहिचानी । युगलप्रिया निशि बासर ध्यावति रीझि रीझि सुखमानी ॥६॥

हमरे श्रीबनप्रमोद रस दानी । विविधि कुञ्ज द्रुमलता सोहावन निरखत छवि मनमानी ॥ योग ज्ञान अरु नेम दान व्रत इन सबकी न प्रधानी । प्रेम लक्षना भक्ति सिरोमनी चहूंओर सरसानी ॥ सरजू सोम विटप रतनागिरि छवि नहिं जात बखानी । युगलप्रिया यह रस विलास पथ संत कृपा ते जानी ॥७॥

॥ राग काफी एकताला ॥

अवधपुर नित्य विहारी राम ॥ चहुंदिशि जिनके कंचन अवनी बन प्रमोद सुखधाम ॥ द्वादस चतुर्विंश जेहि भीतर भिन्न सीम गुन नाम । तहाँ तहाँ बिहरत युगल बिहारी दिये अंशन भुज दाम ॥ कुंज कुंज प्रति अमित सहचरी सेवन विधि अनुयाम । मिटत त्रिगुन चन्द्रार्क वरुण यम ए नहिं मिटत ललाम ॥ जे जन

रसिक भक्त सेवन करि पायो रति अष्टजाम । मानस सरसि भाव सुचि अंबुज युगलप्रिया विश्राम ॥८॥

भोरे चन्द्रकला अलवेली बीन बजाई प्यारी । विमलादिक निज कुञ्ज कुञ्ज ते आनि जुरी एक सारी ॥ कनक निकुञ्ज भवन पलका पै पौढ़े युगल बिहारी । उठि अलसात जम्भात रंग भरि अखिया सुरति खुमारी ॥ विपुल थार सेवा सौंजनि करकंजनि मंजु सुधारी । अग्रभाग श्रीअग्रसहचरी युगलप्रिया वलिहारी ॥९॥

॥ राग ललित ॥

प्रीतम प्यारी सिय सुकुमारी जागे दोऊ भोर ॥ आलस भरे ऐंडात परसपर अखियाँ अति चितचोर ॥ नाशामनि वेशरि अधरन पर हलत सरस दुहुंओर । मनहुं शुक्र सुरगुरु बिचरत हैं कंज कोश के कोर ॥ रूप गर्विता नव नागरि पिय नागर श्याम किशोर । युगलप्रिया दोउ अवधि बिहारी जो कछु कहिय सो थोर ॥१०॥

॥ राग भैरो चौताल ॥

ये जागे श्याम सिया संग रंग भरे रंगमहल कनकभवन शैन कुञ्ज धाम । अलसोहैं सोहै नैन झपकोहै मोहै मैन अंग अंग सुरत समर छाम ॥ निज कुञ्ज ते छटा सी छवि पुंज पुंज आई चन्द्रकलादिक बाम । बीना मृदङ्ग उपङ्ग कठतार चंग मिलित चरित गावती ललाम ॥ यह रसराज समाज बिलोकत बिसरयो है सब मन काम । युगलप्रिया मगन एई रसिकन धन मिलन हेतु रटति युगल नाम ॥११॥

आजु सुकुमारी चली है सुधारी । निज अंग अंग में भूषन बसन संवारी रति कोटिन बारी ॥ थारें करकंज धारी चन्द्रकलाजू की बारी, आई है बिपुल निज लखि अधिकारी ॥ चली गान करत हरत मन लखि छबि कनकभवन सैन कुञ्ज ढिग चारी । उठे दोउ लाल भाल भाग जाग सबहिं के अबहिं के युगलप्रिया के भाग भारी ॥१२॥

राजत श्यामा श्याम सुजान । सरजू तीर निकुञ्ज भवन में राम सिया रस खान ॥ आलस भरे उनीदे लोचन निरखत अति सुखदान । रुचि सों भैरो राग अलापत लै लै सुन्दर तान ॥ चंद्रकला सखि अलक संवारहिं लखें मंद मुसुकान । रसिक जनन के जीवन दोऊ युगलप्रिया के प्रान ॥१३॥

॥ राग विलावल चौतारो ॥

पलंग ते उतरि दोउ चौकी रतन जटित तापै बैठि लाल प्यारी दंतधावन

करत। कंचन रतन झारि युग अलि करकंज धारि सरजु वारि वारि देत मुख छवि दृग भरत ॥ दीरघ आदर्श देखि चन्द्रकला तन सुपेखि दीर्घ नैन के कटाक्ष आलसता हरत ॥ युगलप्रिया कोमल पट मुख दृग करकंज पोंछि चरन परसि रसिक जननि जीवन धन धरत ॥१४॥

॥ राग ललित बहार ॥

मै वारी युगल पर वारी। दशरथजू के श्याम सलोने गोरी श्रीजनकदुलारी ॥ नवल निकुंज नवल बनिता चहुंदिशा लसति अति प्यारी। गान सरस बीना मृदंग धुनि युगलप्रिया बलिहारी ॥१५॥

नई लगन ललन तोसे लागी। या मिथिला की आवनि मै तेरी बिपुल अली छबि पागी ॥ लै चलु पिय प्रमोदबन में जहां ऋतु बसंत अनुरागी। अवध रङ्ग मणि महल कांचनी युगलप्रिया बड़भागी ॥१६॥

॥ राग काफी तिताला ख्याल ॥

लाडिली बनी अलवेली बना मतवारो। श्रीमिथिलेस कुमारि सरस छवि दशरथ राज दुलारो ॥ श्याम गौर नखशिख सुखमा ठनि अङ्ग-अङ्ग छबि भारो। युगलप्रिया दरशन के मनोरथ तलफत प्रान हमारो ॥१७॥

॥ राग कलंगडा पर्ज खेमटा ॥

मैं वारी बना रतनारे नैन पर वारी। श्याम सुजान लाल दशरथ के सुन्दर अवध बिहारी ॥ कञ्ज खञ्ज मृग मीन वारियत जुलफैं भँवर अतिकारी। नासामनि की हलनि अधर पर युगलप्रिया बलिहारी ॥१८॥

जादू भरी राम तुमरी नजरिया। जेहि चितवत तेहि बस करि राखत सुन्दर श्याम राम धनुधरिया ॥ जुलफन युत मुखचन्द्र प्रकाशित नासामणि लटकन मन हरिया। युगलप्रिया मिथिलापुर बासिन फसी जाल बिच मानो मछरिया ॥१९॥

चलोनी सदके जादी बना आया महबूब ॥ लली जो मिथिलापति की लालन अवध के भूप। अङ्ग अङ्ग ठगौरी डारी चस्मोदीपानी खूब ॥ युगलप्रिया बनी गोरी बना साँवल स्वरूप। युगल की सेवा भूमि रसिकन की लगन दूब ॥२०॥

रंगीला बना आयानी दिलदार देखो अलियां। अवध को छैला बना बनी जनकजू की ललियाँ ॥ चलोनी सदके जादी मिथिला की कुञ्ज गलियां। मिथिला शहर में शोर पड़ी निमि कुलादी चलियां। सुखमा सरों में फूली मानो खिली

कंज कलियां ॥ अटारी जो मिली खिली बनी के रङ्ग रलियां। घोड़े पर बना लखी छकी युगलप्रिया पलियां ॥२१॥

॥ राग सोरठ जलद तिताला ॥

रङ्ग भरो ब्याहन आया बना मेरो श्याम सलोना री। दशरथ राजकुमार ललन के अङ्ग अङ्ग टोना री ॥ तैसी बनी दीप दामिनि अङ्ग लज्जित सोना री। युगलप्रिया छबि सुधा पिवो करि अँखिया दोना री ॥२२॥

॥ राग मारू ॥

लालन की छबि जोरी नहीं कही। मिथिलापुर की नारि निहारति मानहुं चन्द्रचकोरी अही। पञ्चवक्र शिव चतुर्मुखी विधि विष्णु चतुर्भुज थोरी लही ॥ उमा रमा ब्रह्मानि रती नहिं है मिथिलेश किशोरी सही। युगलप्रिया उपमेय युगल छबि कबि मति सिन्धु हलोरी रही ॥२३॥

॥ राग टोड़ी चौताल ॥

प्यारीजू तेरो नैन देखि मैन सर सकुचात अनियारी रतनारी डोरी। तेरो इस रूप ध्यान बचन बखान करो गुन मिथिलेश किशोरी ॥ तैसी चन्द्रकला विमलादि शुभगा अनूप सेवाकुञ्ज सावधान सब नव गोरी। युगलप्रिया पिय हिया में लगी है दौरि घन चपला यक ठौरी ॥२४॥

॥ सिन्धु भैरवी ॥

कांचन बन कमला के तीर रंग होरी साज सजाई। चलिये श्रीरघुबंश लाडिले जनकललीजू बुलाई ॥ कुञ्ज रसाल विचित्र मनिनमय रचित परम सुखदाई। सदा बसंतलता द्रुम फूल्यौ भूलत लखि गुमराई ॥ सुनत उठे लालन छबि छाके धरि गलभुज मुसुकाई। चन्द्रकलाजू के भाग्य विभव लखि सची रमा ललचाई ॥ गावत रंग उमंग भरे पिय प्रानप्रिया ढिग जाई। श्याम कपोल खुल्यो सुन्दरता लली गुलाल लगाई ॥ बाजत साज अनेक जंत्र मिलि गावति अलि समुदाई। युगलप्रिया निरखति गलबहियां उमगि मृदंग बजाई ॥२५॥

॥ राग सोरठ होरी ॥

होरी धूममची मिथिलापति के दरबार। रही बरात मास फागुन लौं नित नई होत बहार ॥ चहुंदिशि महल विचित्र जटित मनि कञ्चन के झलकार। अंगनाई विस्तार बन्यौ मनि मंडप मध्य संवार ॥ तने वितान मखमली जरकस फरस बिछे अति प्यार। अमित सहानी कुण्ड बने रंग नहर चली बहु धार ॥ चन्द्रकला

अलबेली मुदित यक दोउ दिशि मिलि उपचार । फागु खेलावति अलिंगन गावति परे वकुंकुमन मार ॥ बाजत साज अनेक जंत्र मिलि दूलह राजकुमार । गावत उमगि मोहनी छाई प्यारी लई कठतार । सुनत श्रवन दोउ राज मगन मन अगिले चौक लगार । प्रेमा परा बराती उमगे रही न देह संभार ॥ बसि हिय साज समाज रंग छबि रंग महल के द्वार । रामचरण रसिकेश लखाई युगलप्रिया रस सार ॥२६

॥ राग सोरठ होरी ॥

चलि देखिये रंग होरी । मिथिला कांचन बन खोरी ॥ श्रीजनकललीजू की अलियां । जिन उमा रमा छवि छलियां ॥ गलियों में गावत आवै । सिय रघुनन्दन मन भावै ॥ चन्द्रकला वीन सजोरी । चन्द्रावति मृदंग टकोरी ॥ सुभगा जु सप्तस्वर घोरी । सुनि लालन मन उमग्योरी ॥ मिलि होली गावत लाला । प्यारी कर लई कठताला ॥ कमला जु रीझि रंग बरसै । गालैं गुलाल मलि परसैं ॥ पुनि रंग महल अंगनाई । रंगन की नदी बहाई ॥ मण्डप में बैठे जोरी । लखि युगलप्रिया तृन तोरी ॥२७॥

प्यारीजू होरी खेलन आई श्रीसरयूतट कुंज अनूपम धाम । वीना मृदङ्ग उपङ्ग मुचङ्ग सो गावै रंगीली बर वाम ॥ प्रीतम आये धाय अंग ज्यों अनङ्ग छाये प्यारी भाल दै गुलाल बैठे यक ठाम । युगलप्रिया दोउ मूठी गुलाल भरत सब समाज अङ्ग ललाम ॥ २८ ॥

रागश्री धमार ।

तन, मन, धन सर्वस वारि फागुन रँगभरी । चंद्रकला विमलादि सखी सब देति रँगीली गारी । दशरथ राजकुमार छैल तब जनकसुता दिशि देखि । बरजहु अपनी अलिन को न तो होइहैं धूम विशेषि ॥ तब हँसि कही लली लालन तुम येक अनेकन नारि । रसिकशिरोमणि साँच सही तब गारी कौन विचारि ॥ मृदु मुसुकाय श्याम नव नागर चतुर कला समुदाय । कञ्चन की पिचकारी रंगन उर मुख मौन धराय ॥ बैठी मृदु मुसुक्यात छवीली मन भाई यह वात । मलि गुलाल पिय मुखमण्डल पै युगलप्रिया बलिजात ॥ २९ ॥

रामलला रस होरी खेलैं । श्रीमिथिलेशसुता गुन आगरि नागरि सङ्ग सकेलैं ॥ रतन जडित पिचकारी श्याम कर सिय शरीर रँग झेलैं । प्यारी कुंकुम अविर पिया तन श्याम कपोलन मेलैं ॥ कनक भवन सुखसिंधु महल बिच कौन कहै रँग रेलैं । युगलप्रिया बीना मृदङ्ग धुनि सुनियत पडति पडेलैं ॥ ३० ॥

॥ राम सिंधुरा धमार ॥

आजु रँगभीनी होरी । रंगमहल बिच कनकभवन रंग बोरी ॥ जानकी बल्लभ युगुल छैल विमलादि सखिन चितचोरी । अतिविस्तार कुंज मणिमै जहँ फरस बिछयो जरकोरी ॥ तन्यो वितान मखमली जरकस राजत जरकस डोरी । चारि हौद चहुंओर बन्यो रंग कुंकुम केसर घोरी ॥ मन भावत गावत दोउ साजन बाजत मृदङ्ग टकोरी । कञ्चन की पिचकारि श्याम तन घन बरसत चहुंवोरी ॥ चपला चमकि रही चहुंदिशि अलि अतिहि सरस सिय गोरी । कुंकुम अति सुकुमार अङ्ग करकत इत उत झकझोरी ॥ युगलप्रिया केहि भाँति मिलौं अब अग्रअली गति मोरी ॥३१॥

॥ राग काफी ॥

खेलैं श्रीसरयूतट रङ्गरँगीली फाग री । पुर चहुंओर प्रमोद बनी मणि कञ्चन भूमि विभाग री ॥ तिनमें पूरबदिशि मिथिला सम्बन्ध सदा अनुरागरी । अति विस्तार चौक कल्पद्रुम रंग की चारि तड़ाग री । चारुशिला कमला विमलादिक चन्द्रकला गुन आगरी ॥ देति सुधारि लली लालन कर कुंकुम पिचका नागरी । याही में तत्सुख स्वसुखी सम्बन्ध टहल प्रिय लाग री ॥ जे यहि रीति प्रीति में हुलसत युगलप्रिया बड़भाग री ॥३२॥

खेलैं राम रँगीले आजु रँगीली फाग री । चन्द्रकला विमलादि रँगीली प्यारी रँगीली नागरी ॥ कनकभवन मनि कुंज-कुंज प्रति उमँगिरह्यो अनुराग री । युगलप्रिया अधिकार सदा जेहि अग्रस्वामि पद लाग री ॥३३॥

॥ रागदेश ॥

बनि आई रँगीली नारि फागुन रंग भरी । देखहु सखा सकल रघुवंशी झुंड झुंड जैवारि ॥ सजग होउ न तो अवला प्रवला देहै फौज विडारि । प्रान निछावरि कीन्ही लली पै युगलप्रिया वलिहारि ॥३४॥

॥ राग सिंधु भैरवी ॥

कनकभवन मनिकुञ्ज द्वार रंग धूममची हो होरी आजु । चन्द्रकला बीना प्रवीन चन्द्रावती मृदङ्ग टकोरी ॥ कमला विमला गानकलाजू रँगीली बनी सिया गोरी । तानपुरा कठतार चंग सरंगी रंग भरोरी ॥ राजकुमार श्यामछैला नवनागर गुन गन कोरी । तान लेत प्यारी करतारी युगलप्रिया तृनतोरी ॥ ३५ ॥

॥ रागआड़ाना धरौधमार ॥

होरी खेलत प्यारो प्यारी के संग मिलि धाय धाय । दशरथनन्दन जनक नन्दनी बढेउ प्रीति अति गाय गाय ॥ श्याम गौर अङ्ग अङ्गन छवि पर घन दामिनि उपमा लजाय ॥ विपिन प्रमोद सङ्ग ललना गन जुगलप्रिया मन भाय भाय ॥२९॥

होरी खेलन आय सरजू तीर सिय रामलाल ॥ श्यामगौर रंग रसिक रंगीले चलत सुघर मृदुमंद चाल ॥ महलन बनि ठनि सब आई झोरिन लिये गुलाल बाल । दोउ मिलि तान लेत उमङ्ग सों बाजत बीन मृदङ्ग ताल ॥ देखि देखि यह सुख समाज वर जुगलप्रिया अति भई निहाल ॥ ३६ ॥

॥ रागसोरठ धमार ॥

ए हो खेलत दशरथ लाल रंगीली आज रंगीली फाग । ललना कनकभवन श्रीरंगमहल बिच बिच नजर अबीरीबाग ॥ विपुल कुंज चहुंदिशा अलीगन चन्द्रकलादि विभाग । सजिशृंगार वसन भूषन पिय प्यारी परम सोहाग ॥ नहर लगी हौदे रंगन की श्रीसरजू अनुराग । भरिडारत पिचकारी पिय पर सिय कुमकुमा पराग ॥ चंद्रकलाजु भिजोई दई अंग पिय सिर केसरि पाग । प्यारी करतारी मन हारी वलिहारी प्रिय लाग ॥ यह लीला लहरी अवलोकनि मज्जन प्रेम तड़ाग । अग्रस्वामिपथ लह्यौं अमित सुख जुगलप्रिया बड़भाग ॥ ३७ ॥

मति डारो बरजोरी लाला रंगभरी पिचकारियां । अनखानी फौजे की फौजे मिथिलापुर की नारियां ॥ तुम तौ हौ कौशलपति वारे हौं मिथिलेश कुमारियां । रघुबंशी सेना संग तुमरे निमि बंशिनि की धारियां । सिमिट लली ढिग आई सिगरी चन्द्रकलादिक नारियां ॥ जो सारी पै रंग परैगो लाखौ देउँगी गारियां । मृदुमुसुक्याय सज्यौ पिचका प्यारी कुमकुमा पवारियां ॥ जुगलप्रिया लालनकपोल पै दै गुलाल छवि वारियां ॥ ३८ ॥

आजु चलो सजि फौज पिया को मै फाग खेलाऊँ । उनको शान फौज रघुबंसी निमिबंसी देखराऊँ स्यामकी मान नवाऊँ ॥ जाय कहौ कोउ अवधलाल ते मैं प्रमोद बन जाऊँ, फाग को साज सजाऊँ । फूल छरी कुंकुमन मारिकै पिय की फौज भगाऊं, तबै निमि बंसी कहाउं । घेरि अकेल गुलाल मेलि मुखचुंबन धूम मचाऊं, ललन की ऐंड छोडाऊं ॥ जुगलप्रिया तब नहीं कहौ कछु मिलि हिय कंठ लगाऊं रसिक सों होली गवाऊँ ॥ ३९ ॥

साजि चलौ भली भांति विपिनि में धूम मचाऊं । चन्द्रकलादि सुनो मोरी बातै घातै सकल बताऊं, मिल्यौ सरजु तट जाऊं । मंडल चौक चित्र रचि डारौ कुंकुम ढेर सजाऊं, कपुरे अकाश लगाऊं ॥ फूल छरी गेदों की गोली टोली पिय की भगाऊं । सबैमिलि होली गाऊं ॥ मोहनि मंत्र वीन तुमरी है ठुमरी तान सुनाऊं । रसिक पिय सुधि बिसराऊं ॥ जुगलप्रिया हौं मृदंग बजाऊँ नई-नई उपज धराऊं ललन को पाय पराऊं ॥ ४० ॥

या नृपनन्दन रामलला सखि सांवलिया मोहि भावै री । सैन करौं सपनो दरसावै दिन प्रति यहि मग आवै री ॥ फागुन भाग भरी अलियां जिनके गृह ये नित जावैरी । जुगलप्रिया अनुराग वचन सुनि प्रीतम मृदु मुसुकावै री ॥४१॥

सुन्दर रामलला अबहीं गयो या गलियां कोऊ देखै री । हाथ लिये कंचन पिचकारी पीतवसन अंग पेखै री ॥ उत ते आय गई सजनी तेहि रंग भरी अबरेखै री । जुगलप्रिया ठाढ़ी पछताती वाही की भाग विशेषै री ॥४२॥

बनि आई रंगीली होरी या बन प्रमोद की खोरी । उत ठाढ़ो अवधेस ललन वर इत मिथिलेस किशोरी ॥ इत अलिगन कुंकुम कर लीन्हे उत पिचकारी सजोरी । जुगलप्रिया बीना मृदंग स्वर छाय रह्यौ चहुंओरी ॥ ४३ ॥

होरी मची प्रमोदविपिन में । इत अलिगन संग राजकिशोरी उत सोहत श्याम सखन में ॥ गावै सखी मधुरे स्वर फगुवा सुनि सुख लहै पिय मन में । जुगल प्रिया अनुराग भरे दोउ खेलत फाग दगन में ॥४४॥

खेलत आज रसिक सियानागर रंगरंगीली होरी रे । राजत नवल कनक मंदिर में ललना गन चहुंओरी रे ॥ छूटत फुहारै मुखमंडलहिं गुलाब में केशर घोरी रे । कबहुं कुंकुमा चपल कला करि डारति नवल किशोरी रे ॥ तब हंसि रहे श्याम नयनागर प्रीति प्रणय नहिं थोरी रे । युगलप्रिया पिय लखत चंदमुख करि न सकत बरजोरी रे ॥ ४५ ॥

॥ ठुमरी ॥

आजु खेलो रंग होरी सइयां आजु खेलो रंग होरी हो । दशरथ राजकुमार छैल तुम काल्हिकरी बरजोरी हो ॥ तुम रघुवंश कुमार लाडिले मैं निमिवंश किशोरी हो । कौन बात में घटी हमारे यूथप सखी करोरी हो । रूप गुनन मैं नागर प्यारे हौं नागरि कछु थोरी हो । जुगलप्रिया मुसक्यात छवीलोकुञ्जमहल की पोरी हो ॥४६॥

॥ राग हिंडोल वसंत धमार ॥

आजु दोउ विहरत बन में राम रसिक सिया प्यारी। बन प्रमोद अति मोद पाय वसंतरितु संपति प्रगट कियो छवि भारी। द्रुम रसाल प्रति डार-डार मंझरी-मंजरी प्रति भंवर करत गुंजारी॥ यूथ यूथ नव नागरि आगरि बिमला दिक तहाँ गान करति मनहारी।युगलप्रिया पुर नारि उमगि आई मेवा भरि-भरि कर कञ्चन की थारी ॥४७

खेलत वसंत रसिकाधिराज। रघुनन्दन सिय सङ्ग अलिसमाज। नव अंग-अंग वर वसन साज। बाजे मृदङ्ग अरु विविधि बाज॥ तहाँ अलिगन गावें सरस राग। रागी जन मन अनुराग जाग। कहे चन्द्रकला सुनिये जू लाल। प्रमोद बन फूल्यौ द्रुम रसाल॥ सजि गावत चलिये वसंत राग। मनमोहन दोऊ मिलि एक संग। आये जहाँ बन मध्य धाम। आयत विशाल सुखमा ललाम॥ तेहि मध्य कुञ्ज बैठे जू आय। तब चन्द्रकला वीना बजाय॥ नाचन लागी अति विविधि भाव। गावहिं बसन्त अति सरस चाव। रितुराज सहचरी वेष कीन्ह। मेवा भरि थारन साज दीन्ह॥ फूलन सिंगार किये अपने हाथ। निरखत छवि होय रहे अति सनाथ॥ तब युगलप्रिया रुचि समय पाय। झोरी गुलाल होरी मनाय ॥४८॥

रंग होरी होरी होरी लाल। यह जोरी छवि लखि भई निहाल। अंग श्याम गौर चहुं ओर बाल। घन दामिनि पहिरे कनक माल॥ सिय सुभग भाल पिय दै गुलाल। जनु कनकलता पूजत तमाल॥ युगलप्रिया निरखत कृपाल। जनु होरी बांटत दै गुलाल ॥४९॥

सइयां जाने न पैहौ डारो न मो पर रङ्ग। श्रीमिथिलेश लली की अली सब आनि जुरी एक संग॥ सुनि सकुचाय रमाय दृगनदृग बोलत बचन उमङ्ग। काह करेगी विपुल नारि लगि जावो हमारे अङ्ग॥ कंठ लगाय भिजाय भिजे रङ्ग बढ्यौ परसपर जंग। जुगलप्रिया यह फाग अनोखी लखि रतिपति मद भङ्ग ॥५०॥

आजा पियरवा रसिक रघुनन्दन। रसिकराय रसिक हियचन्दन॥ याहि कुञ्ज मिलि रसिक रङ्गीली। आनि जुरी विमलादि छबीली॥ हमरो कुञ्ज मगमाहि रसीलो। तनिक विलंबि सरसरस पीलो॥ सुनि अलि वचन लाल मुसुकाये। मिलि तेहि सङ्ग लली ढिग आये।याही में ततसुख स्वसुख लखायो। जुगलप्रिया सेवा मनभायो॥५१॥

रसिया आनि मिलो मोहि जानकिबल्लभलाल। श्यामसुजान लली सङ्ग लीन्हें

निरखत होऊं निहाल॥ फाग कुञ्ज रचना रचि राखी सकल रंगीली वाल। जुगलप्रिया तिनकी रुचि पालिये दोऊ परम कृपाल ॥५२॥

समय चैत

भवरा सँवलिया रामा हो गोरी कमल सिय प्यारी। एक सुकी अवधपुर आई पाती सुगन्ध पहुंचाई। बांचत ही मन विकल भयो आये गाधि सुवन उपकारी॥ ल्याये चरित्रवन पावन कीन्हीं सुरमुनि मनभावन। धनुषकथा सुनि हर्ष भये मुनि सङ्ग चलनि मतवारी। आये मिथिला सर वाही छबि जल अथाह जेहि माँही। अलिगन दल लखि मुदित परम मकरंद पान फुलवारी॥ यह रसिक जनन के दाया जब होय रहित छलछाया। तबही लोचन मग छबि छावत जुगलप्रिया बलिहारी ॥५३॥

निस दिन हो रट लागी रामारामा। जबते नारद ऋषि आये सिय प्यारी को कहि समुझाये तबही ते नेक नाही सोहायल धामा॥ निसि दिन हो॥ विश्वामित्र संग ले आये सपने में चरित जनाये मिलबे की आसा मन नहि विश्रामा। जुगलप्रिया की स्वामिनि विरहिनि दुति दवि रही दामिनि नैना लगि रहै सुन्दर श्यामा ॥५४॥

सांवरे सलोनें प्यारे दशरथजू के लाल रामा हो। गोरी श्रीजनकदुलारी गोरी सोहै संग बाल रामा हो॥ सरजू के तीरे बंगला मनि जटित विशाल राम। चहुंओर गुलाब को वारिय सुखद सब काल। जुगलप्रिया दोउ रसिया ये करत रस ख्याल ॥५५॥

मोहनि मोपै डारी दइया दशरथजू के लाल मोरे रामा हो। मोहनि मूरति मोहनि सूरति मोहनी सब चाल॥ मोहनी श्रीजनकदुलारी मोहनी संग बाल। जुगलप्रिया के जीवन रसिकन प्रतिपाल मोरे रामा हो ॥५६॥

॥ राग सारङ्ग चौताल ॥

मोतिन महल तामे सरयू नहर लागी छूटत सुगंध यों गुलाब की फुहारे री। नवल निकुंज बन्यौ पुष्प गुलाबन की फूल्यौ है चतुर्दिशा लषत किनारे री॥ तकथै फरस लागी प्यारी पिया प्रेम पागी अलीगन रंग रंगी तानै लै उचारै री। बीना मृदङ्ग मुचङ्ग आदि यंत्र बाजैं जुगल प्रिया रीझि रीझि तन मन धन वारै री ॥५७

॥ राग सोरठ मलार तेताला ॥

गल बहियां दिये बैठे दोऊ आय सरजू कुञ्ज पुलिन मनभाये। मनिन जडित कञ्चन की अवनी विपिन प्रमोद प्रभा दरसाये॥ चहुंदिशि अलिगन लसत निकाये। निरखि निरखि नव नेह बढ़ाये॥ सीस चंद्रिका क्रीट सुहाये। कुसुमी वसन भूषन

छबि छाये ॥ देत परस्पर पान खवाये । मधुर मधुर बतिया बतराये ॥ रूप सुधा पीवत न अघाये ॥ अघटित प्रीति बरनि नहिं जाये । युगलप्रिया यह दंपति की छबि निरखत नैन रह्यौ मडराये ॥५८॥

रथ चढ़ि चले अवधपति लाल । वाम अंग सुहावनि रसरंगी सियाजू वाल ॥ चन्द्रकलाजू छत्र लीन्हें विमला चौर सुचाल । और सहचरि जंत्र लै प्रिय गान करति रसाल । लेति मृदंग टंकोर जोर सुदेति गति प्रतिपाल । युगलप्रिया समाज साज निहारि भई निहाल ॥५९॥

॥ रागमलार आडाचौतारो ॥

रथ चढ़ि चले सरयू तीर । रसिकनी मिथिलेशनंदिनि रसिक श्रीरघुबीर ॥ प्रथम मास अषाढ़ पावस वहत त्रिविध समीर । उमड़ि घुमड़ि घमंड घन धुनि व्यापि रही गंभीर ॥ श्याम गौर सुरंग अंग सुपहिरि कुसुमी चीर । जड़े भूषण नगन के छवि देखु मन करि थीर ॥ हरित भूमि विभाग कंचन जटित मनिगन हीर । हरित द्रुम सघनावली खग मधुर बोलत कीर ॥ सहचरी गन अमित चहुं-दिशि गान तान सुधीर । युगलप्रिया सु उतरि रथ ते पूजि मानस नीर ॥६०॥

उमड़ि घुमडि आई बादर कारी । दशरथलालन जनकललीजू बैठे सखिन संग महल अटारी ॥ कुसुमी वसन युगल तन राजत जगमगात भूषन उजियारी । अलकै बिथुरि रही मुख ऊपर मुकुटचन्द्रिका लटक सँवारी ॥ चन्द्रावती मृदंग टकोरति चंद्रा तानपूरा करतारी । चन्द्रकलाजू बीन बजावति गावत उमग भरे पिय प्यारी ॥ अधिक प्रवाह बढ्यो सरयू को भरे प्रमोद विलोकत वारी । युगलप्रिया रसिकन के संपति अगम निरखि रतिपति बलिहारी ॥६१॥

उमडि घुमडि घन बरसत बारी। श्रीमिथिलेशनंदनी प्रीतम भीजत बन प्रमोद द्रुम डारी ॥ पीत वसन नीलांवर दोऊ ओढ़ि खरे भये युगलबिहारी । मानहु घन दामिनि के भीतर चन्द्र चन्द्रिका सोभित न्यारी ॥ कुञ्ज कुञ्ज सुधि पाय अलीगन भीजत आई निरखि बिहारी । चंद्रकलाजू छत्र वोट किये महल पधारि सुधारि संभारी । भीजे बसन उतारि मोद भरे नवल बसन शृंगार सँवारी ॥ युगलप्रिया निवछावरि तनमन समै भोग धरि आरति बारी ॥६२॥

॥ रागमलार जाजवंती चौताला ॥

रङ्गमहल के आंगन मध्य अष्टकुञ्ज कनक भवन रमन गौर श्याम जोरी । जैसो

ई घन कारो दमकति दामिनि अङ्ग उपमेय लै हुलसि हिये गोरी ॥ चहुंदिशि अलिन के कुञ्ज मनोहर लसति सप्त खंड अटा आई एक ठौरी । सेवा सावधान प्राण जानकिबल्लभ नवलकिशोर प्यारी नवलकिशोरी ॥ कोउ जन्त्र वीना लै प्रवीन तानपूर कला पावस मलार टेरि मृदंग टकोरी । तान तरंग मगन सुख सिन्धु माहि युगलप्रिया मति गति भई भोरी ॥६३॥

ख्याल

झूलन आई रंग हिंडोरे वे जनककिशोरी सङ्ग वाम । सरयू तीर सुखद प्रमोद वन रंगमहल छविधाम ॥ सुखमा सील सनेह भरी गावति झूलन गुनग्राम । युगलप्रिया दंपति छवि निरखत मुर्छित भये रति काम ॥६४॥

ठुमरी

रंग झूलना रे झूले । श्रीजानकीवल्लभ रङ्गमहल बिच कुञ्ज मनोहर अद्भुत सरयूकूलना रे ॥ कमला विमला चमर ढुरावति कोटिन रति समतूलना रे । जैश्री-चन्द्रकलादि सहचरी युगलप्रिया छवि झूलना रे ॥६५॥

झूलैं श्रीजानकीवल्लभ रङ्ग हिंडोरना रे । रंग-पटुली चौकीडारी छतुरी अद्भुत मणि गन तोरना रे । कञ्चन खंभे जटित रंगमनि मरुवा वेलन मोरना रे । तापररंग मयूर की रंगन बोलत है चित चोरना रे ॥ रंगभरी झूलन पद गावत ललनागन चहुं-ओरना रे । युगलप्रिया रसिकन मन उमगत सुनत मृदङ्ग टकोरना रे ॥६६॥

॥ रागमलार आड़ाचौताला ॥

दशरथजू के छैला हो राज झूला झूलो । तू तो रंगीला पिया हौ तो रंगीली और रंगीली सखी समतूलो । रंगभरी सरयू उमडी हैं रंग विपिनि सब फुलो । जुगलप्रिया नवरङ्ग साज सब लखि प्रीतम अनुकूलो ॥६७॥

॥ राग मलार ॥

रंग झूलें अवधविहारी हो सरयू तट संग लिये सिय प्यारी । सावन कुञ्ज सुहावन पावन रतन भूमि हरियारी ॥ निज निज कुंजन ते बनि आई नित्य सखी अधिकारी । गावहिं सरसाती बरसाती दरशाती सुख भारी ॥ कबहुं झुलावत प्यारी प्रीतम कबहुक प्रीतम प्यारी । युगलप्रिया रसमत्त परस्पर दंपति लीलाधारी ॥६८॥

हिंडोरे झूलैं श्रीजानकीजान । युगल प्रकाश कुञ्ज कंचनमय विपिन प्रमोद लतान । श्यामवदन पर जुलफै छोडे मन्द मन्द मुसुक्यान ॥ प्यारो संग समाज

अलींगन लेत नई नई तान। जुगलप्रिया वारत तन मन धन करति निछावरि प्रान॥६९॥

रसिक दोउ झूलत सरयू तीर ॥ रघुनन्दन अरु जनकनन्दिनी श्यामल गौर शरीर। राजत छबिमैं रतन हिंडोरा तापर बोलत कीर ॥ गावहिं छबि अवलोकि प्रेमभरि चहुंदिशि सखिन की भीर। बाजत वीन मुचंग उपंग मृदंग ताल अति धीर ॥ जुगलप्रिया अति सुख बरसत जब लेततान गंभीर ॥७०॥

किशोरी संग झूलत नवलकिशोर ॥ दशरथनन्दन जनकनन्दिनी सुन्दर श्यामल-गौर। सरजू तीर सुखद प्रमोदवन विश्व भूमि शिरमौर ॥ तामधि मणिमय रचित हिंडोरा लसत हेममय डोर। चन्द्रकला सखि हरषि झुलावति विमला ढोरति चौर। जुगलप्रिया यह मधुर केलि लखि सुधिबुधि सब भई भोर ॥७१॥

॥ राग जंगला ॥

पिय सांवरे सलोने झूला झूलो। जैसी ये रंगभरी सिय प्यारी अलिगन त्यों सम तूलो। तैसी ये रंगमहल छबि अद्भुत बनप्रमोद सुख मूलो। श्रीसरयू मणि जटित घाट दोउ कंज प्रफुल्लित फूलो ॥ सुनत हिंडोर कुञ्ज ढिग आये पिय प्यारी दिल दूलो। जुगलप्रिया के जीवन धन दोऊ सदा रहो अनुकूलो ॥७२॥

॥ राग जाजवंती ॥

अलि फूलन हिंडोरे झूलैं जनककिशोरी। फूलन के चौकी राजैं फूलन की डांडी भ्राजै फूलन की छतुरी सोहै फूल खंभे डोरी। फूलन के तकिया प्यारी फूलन बिछौना वारी पिय अंस भुजधारि राजत जोरी ॥ फूलन सिंगार किये अलिगन लखिजियै गावति सरसराग प्रमुदित गोरी। विपिनि प्रमोद वागे फूलकुञ्ज अनुरागै युगलप्रिया चकित लखि त्रिनतोरी ॥७३॥

॥ रागमलार ध्रुपद चौताला ॥

झूलत सावन कुञ्जन सुरंग हिंडोरे सिय प्यारी संग रंग लाल। रंग प्रमोदवन-रंग घटा बरसत रंग मलार गावति रङ्गवाल ॥ रङ्ग मृदङ्ग बाजे रङ्गसारङ्गी साजे रङ्गमुचंग रङ्ग कठताल। युगलप्रिया रङ्गरङ्ग सरयू रंग महल झरोखे रंग रंग जाल॥७४॥

झूलत रसिक राम श्याम सुखधाम सियाजू रंगीली वाम झूलति उमंग मैं ॥ तैसी चन्द्रकला विमला कमला चंद्रवतीजू चन्द्रा अनूप तान गान की प्रसंग मैं। आईं पुरवासिनि विलासिनि सियाजू की विभव विलास देखि थकी छकी रंग मै। युगल-प्रिया जाचे रसिकजनन संग सांचे पहिरसमाचै राचै पाउं निज अंग मैं ॥७५॥

॥ राग ख्याल ॥

सबहिं चलोरी झूला झूलें। श्याम रंग हिंडोरे ॥ सरयु तीर सुखद मनि महलें अतर गुलाब सुगंधन चहले बन प्रमोद चहुंओरे। बोलत कोकिल मोर चकोरे। कंचन खंभ जड़ाऊ राजै छतुरी डांडी अद्भुत भ्राजै पटुली रंगविरंग विराजै निरखत हीं चित चोरे॥ मंद मंद मुसकावत प्यारे प्यारी के अंसन भुजधारे युगल-प्रिया कर सों करजोरे रतिपति को मद छोरे ॥७६॥

सबहिं झुलावो री हिंडोरे अलबेली राजकुमारी। सावन तीज सोहावन राजे बिविधि भांति के भूषन साजे अंगन प्रति कोटिन रति वारिय प्राण करौं बलिहारी। कमला विमला चँवर ढुरावै गान कला सु मृदंग बजावै चन्द्रकला कछु तान सुनावै लाल देत करतारी। सुख समुद्र श्रीजनकदुलारी रघुनंदन की प्राणपियारी। युगलप्रिया तन मन धन वारी वारि वारि डारी ॥७७॥

दौरि दौरि आवै बादर सरयू की कुञ्ज मांही रे झोंका दे रंगीली सखियाँ सावन झुलावे हो। श्याम गौर अंग मिलि झूले एक संग दूजो घन दामिनिनिरखि छबि पावै हो ॥ कानन कुण्डल जरे अंगनि भूषण भरे चंद्रिका किरीट मनभावे हो। नूपुर पगनि शोभा काम कोटि मनलोभा युगलप्रिया की हिय हरष न मावे हो ॥७८॥

पियरवा रंग वरसे पियरवा जनकसुता संग रंगमहलवा। युगलप्रिया तहाँ रास-रच्यौ पिया गावत रंग भरे वीन बजावति चन्द्रकला सुख चहल पहलवा ॥७९॥

रे मन क्यों न भजे दोऊ मूरति। श्रीमिथिलेशलली रघुनन्दन जगसुख-विष करि जानि मानि भलि भाँति विचारि कै देखु। गौरश्याम अद्भुत रङ्ग भीने नेकु छटा अवरेखु ॥ छबि उपमा नहिं जूरति ॥ रें० ॥ जाको यश निगमागम सुरमुनि नेति नेति करि गाय। पीवत जीवत भक्ति अमल रस बारबार सुखपाय ॥ भक्तिनि मति गति पूरति ॥ रे० ॥ अवधधाम सब धामन के पर श्रुति सिद्धांत बखानि। जगमगाति मणिमय भूमावलि युगलप्रिया पहिचानि ॥ रसिकन मत करि सूरति ॥ रे० ॥ ८० ॥

सब विधि सुलभ पाय तन दुर्लभ क्यों न भजे रघुनन्दन रे मन। जनकनन्दिनी चरणरज बन्दत सब सुखपाय ॥ उदयहोति अविरलि भक्ति तब रघुनन्दन ध्याय ऐसे जन जगबन्दन ॥ यह मारग रसिकन विना और न जानै कोई। जानै सो

रसिकन कृपा सपनेहु मोह न होई ॥ मिटि गई सब जगफन्दन ॥ नाम रूपलीला समुझि नित्यधाम पहिचानि । युगलप्रिया सम्बन्ध पद दिव्य अमल रसखानि ॥ सङ्ग त्याग मति मंदन ॥८१॥

॥ राग भैरो चञ्चरीक ॥

चले दोउ कुञ्ज सरजू तट को सखिन सङ्ग अलसाने दिये गलबाँहीं । विथुरित अलकावली मुखारविन्द शोभित सुखमा सनेह रसिकन दृग-कंज मंजु प्रफुलित जनु युगलभानु प्रगटे बनमाहीं॥ छये तस्करादि जेते रसिक भाव दुखित रहे सूख्यौ तेहि हृदैवारि रास ध्यान नाहीं। युगलप्रिया रसिकन के हृदय वारि रासध्यान बैठक सजि पुलकत आनन्द रोम रोम अश्रु जाहीं ॥८२॥

॥ राग ईमन चौताला ॥

ए आनि बैठे हैं दोऊ श्रीकनकनिकुञ्ज मध्य सङ्ग सियाप्यारी औेर प्यारोराम । वरण वरण अली चहुंदिशि अंगराग तनी सोहति मोहति तान तरंगिनि वाम ॥ चन्द्रवतीजू मृदंग गति उघटति चन्द्रकला वीन लै उमंग अति सुखधाम। गानकला सप्तस्वरनि सुखदा जु सुख देती लेत वलैया युगलप्रिया नाम ॥८३॥

आजु चलि देखोरी आली श्रीरामरसिक पिय रास रच्यो सुखदाई । रासभूषन वसन श्याम सलोने अङ्ग लोनी लली सङ्ग लोनी अली समुदाई । वीना मृदंग मुचंग कठतार चंग वाजत ईमन राग परमसोहाई । युगलप्रिया गान करहिं चन्द्रकला लालप्यारी उमंगि तान छाई ॥८४॥

॥ राग परज ॥

भटकी क्यों खड़ी चलि मिलिये श्यामसुन्दर के अंग। सुनु सजनी रजनी झुकि आई रास रमत सिय प्यारी संग ॥ सुनत चली रंगरली अली श्रीजनक लली ढिग मिलि सुढंग । नटतलाल लखि भई निहाल तहं युगलप्रिया मुर्छित अनंग ॥८५॥

अटकी तू भली सुचि शरण श्रीजनकलली री। सुनु अली जासु विवस रघुनंदन कलवल नाहिं चली री॥ धन्य भई जो रली लली संग कलिवलि छलि न छली री । युगलप्रिया प्रमोदवन संपति मिलि रंग रसिक गली री ॥८६॥

रसिया रामविहारी श्याम । बैठे कनक भवन सिंहासन जनकसुता लिये वाम । सजि सिंगार अली विमलादिक चन्द्रकला सुखधाम॥ श्रीयुगलप्रिया तिनकी लघुचेरी महल टहल विश्राम ॥८७॥

॥ राग काफी एकताला ॥

धनुहिया वारो श्याम हमारो प्रान । डोलत वन प्रमोद विच सजनी मन्द मन्द मुसकान ॥ शीश जड़ाऊ पाग लसत अति मोती कुण्डलकान । जगमग द्युति मनहरत सबन के नाशामणि चमकान । वक्षस्थल नाभी रोमावलि कटि प्रदेश सुखदान। पीत वसन युत युगल जंघवर जानु पुष्ट परिमान। नखद्युति अमल कमल कोमलतल उपमा अरु उपमान ॥ युगलप्रिया सब घटित लली अङ्ग अनत नहीं यह शान॥८८॥

॥ एकताला हमीर ॥

सियावर साँवरे छवि देखि । रहत न तन मन सुधि कछु सजनी लगत न नैन निमेखि ॥ सजि सिंगार परस्पर दोऊ गलबाही वर वेखि । युगलप्रिया अलि चन्द्रकलादिक सुफल सुजीवन लेखि ॥८९॥

॥ राग मारू तिताला जलद ॥

हमारी हो स्वामिनी सिय जू। कृपाखानि मुसकानि मनोहर वसि करनी पिय जू । चंद्रकलादि अली गुन आगरि नागरी प्रिय जू । वसहिं सदा जब कृपा करहिं निज युगलप्रिया के हिय जू ॥ ९० ॥

रसिकबर हो जानकीवर श्याम। सदा एक रस नित्यविहारी श्रीप्रमोदवन धाम॥ श्रीमिथिलेशनंदिनी सियजू चन्द्रकलादिक बाम । युगलप्रिया छकि रहे रसिकजन यहि रस आठोयाम ॥९१॥

॥ राग पूरवी एकताला ॥

खेलत नैहरे न वारी लाल । श्रीसरयू परिखा मिलि आई पूरब कोट के नाल॥ मधुर मोरपंखी ता ऊपर वैठे युगल कृपाल । चमर क्षत्र विजनादि करहि अलि छबि लखि होत निहाल ॥ पूरब तट प्रमोद वन कुञ्ज ते निरखहि अलि छवि जाल। आनि फंदे दृग मीन सबनि के युगलप्रिया सुविशाल ॥९२॥

॥ राग एकताला मलार ॥

झूमि झूमि छायो रस अखियाँ । गरज मेह नेह बोलनि मै नव घनश्याम राम जिन लखियां । दामिनि सी दमकति अङ्ग अङ्गनि गौर वरन चहुंदिशि लसे सखियाँ॥ युगलप्रिया हिय नटत रसिक जन ज्यों मयूरि शिर पर करि पखियाँ ॥९३॥

॥ राग सोरठ मलार जलद तेताला ॥

रसिक रसमाते बोलनि पै । वारिय तन मन वन प्रमोद कल कुञ्जनि डोलनि पै ॥ मिथलापति की लली अलिन सङ्ग आवनि बोलनि पै । मिलि जुलि युगलप्रिया रसबतियां छतियां छोलनि पै ॥९४॥

॥ राग सुलतानी गौरी ॥

रंगीले प्रीतम राम तुम राजत नव घनश्याम ॥ उमड़ि घुमड़ि आये मिथिलापुर धनुषभङ्ग धुनि जान । मण्डप में विजुरी सी प्यारी चमकति रसिकन मान ॥ छवि जल वरखि करखि चित सबके ऋखी नगर नरनारि । तिनमें सालि अधिक सुख रसिकन विपिन प्रमोद विहारि ॥ निवसत रंगमहल गिरि ऊपर कनक भवन छवि ऐन । विपुल सखी मिथिला ते आई सेवति हैं दिन रैन ॥ रासविलास करत प्यारी संग सोवत शैन निकुञ्ज । युगलप्रिया विरहिनि को लै चलु जहाँ सकल रसपुँज ॥९५॥

॥ रागदेशख्याल ॥

मेरी राजति सिय ठकुरानी देखो रामलला हो श्याम । कनक निकुञ्ज की अटारी॥ चन्द्रकलादि सहचरी सारी मगजोवत तुम्हरो आगम छवि गावति हैं सब वाम । उठे मन्द मुसकात प्रवीने चले कुञ्ज दिशि को रुख कीन्हे युगलप्रिया तब खबर कही मिलि विहरो आठोयाम ॥९६॥

॥ रागसिंधु ॥

नेक दरश देखा जा हो नृपलाला । मैं तो थारी दासी वारिये छैला अवध-विहारी अखियाँ रूप पिला जा ॥ युगलप्रिया की स्वामिनि जनक लली सुकुमारी आई सकल सुख साजा ॥९७॥

॥ राग तैलंगी ॥

देखि के अरुझान्यो जियरा । रामकुमार श्यामसुन्दर छवि हम ही नहीं सबहिन के हियरा ॥ वनप्रमोद बिच जनक लली संग अली सकल जुरि आईं नियरा ॥ युगलप्रिया येहि छवि निरखन को हिय विच वारुँ सुरति के दियरा ॥९८॥

श्याम सलोने से लगी मोरी नैना वन प्रमोद प्रति कुञ्ज निकुञ्ज नि डोलत फिरत वदत मृदु बैना ॥ आनि मिली तेहि समय सियाजू संग लिये अलिगन की सैना। युगलप्रिया अनुराग विलोकनि युगल कमलमुख अपर न चैना ॥९९॥

॥ ठुमरी ॥

मोंपै रस की चितवनि डारी । हो दशरथजू के लाल ॥ कटि पीतांबर धोती सोहै लाल पाग शिर न्यारी । तापर तुर्रा अधिक मनोहर मोतियन झालरदारी ॥ विहरत फिरत प्रमोदविपिनि में श्यामवरण मनहारी । नाशामणि की लटक चालपर युगलप्रिया वलिहारी ॥१००॥

॥ राग सोहनो ॥

लाल छवि देखो सिय प्यारी की । चटक रंगीन सावनी आवनि मिथिला की सारी की । मनभावनि लावन्यलुनाई तार-चौपकारी की । लखत किनारी सुधि बुधि वारी युगलप्रिया वारी की ॥१०१॥

लखु भामिनि भली यामिनी शरद की । श्रीसरयू तट रासकुञ्जमणि मण्डल कंचन भूमि जरद की ॥ तन्यौवितान स्वेत जरतारा की फरस बिछे वहु वसन फरद की । रासरच्यो प्रीतम रघुनन्दन सिय प्यारी सुख विमल हरद की ॥ अलिगन विपुल विचित्र मण्डली साज काम रति मान मरद की । युगलप्रिया छवि लखत विरहिनी लगन लग्यौ याते सौं नरद की ॥१०२॥

॥ राग काधरा ॥

अलि छवि देखु शरद की यामिनी । विमल अकाश चन्द्र परिपूरण रासकुञ्ज चलिये गजगामिनि ॥ देखी जाय विपिन अद्भुत मण्डल विभाग मणि भूमि सुनामिनि । नटवर अद्भुतवेष रसिकमणि अद्भुत चन्द्रकलादिक भामिनि ॥ अद्भुत अवध रंगमणि महलै अद्भुत श्रीसरयू वर कामिनि । नटति परस्पर वाहाँ जोरी अद्भुत युगलप्रिया की स्वामिनि ॥१०३॥

॥ ध्रुपद चौतारो ॥

रैनि दिवारी की बनी है आजु प्यारी छवि भारी पिय प्यारी खेलै चौपरि संग अली । चली हैं बिपुलनारी थारैं करकंजधारी बाजैं अनुहारि गावै अवध रंग गली । हास विलास परस्पर करतारी देत निज निज दांव भाव सर्वअंग भली । युगलप्रिया लोचन रसाल मृदु मुसकाते जीती है किशोरी पिय रंग की अनंगडली ॥१०४॥

देखु सखी भलीरैनि दिवारी । खेलत चतुर रंग भरी चौपर दशरथनन्दन जनककुमारी । दीपपंक्ति चहुंओर विराजित अलिगन अंग सरस उजियारी । विपुल-कला गुननिपुन विहारिणि तैसे सुन्दर अवध विहारी ॥ विमलादिक पियवोर भई हंसि सिय दिशि चंद्रकलादिक नारी । हासविलास परस्पर सरसत दरसत रसिक प्राण वलिहारी ॥ यह सुखसाज समाज प्रसंसित होत परमसुख दांव सँभारी । जीती श्री मिथिलेशनंदिनी युगलप्रिया पिय तन मन वारी ॥ १०५ ॥

जो मेरो अवगुन उरधारो । तौ मिथिलेसनंदनी स्वामिनि कोटिकल्प नहिं मोर उवारो ॥ कौनसी कृयाकीन्ह मैं नाही यह संसार असार पनारो । वेदविदित यह विरद तिहारो सीसीसीसीकत नाम विचारो ॥ जो ब्रह्माण्ड कोटि को नायक-प्रीतम रामस्याम छविभारो । तववस रहतसदा सोपिय नायकरसिक सिरोमनिछवि मतवारो यह जिय देषि पेषि प्रभुता निज नातो मिथिला ओर निहारो । रूपअनूप सीलगुन सीमादासी युगलप्रिया न विसारो ॥ १०५ ॥

रागबहारचौतारो ।

येई अवधधाम येई विपिनप्रमोद काम । येई रंगमहल येई सरजुकुन्ज प्यारी । येई युगलनाम येई रूपगौर स्याम युगल चंद्रकलादि वाम रहसि पुंजवारी । येई

युगलरीति कै प्रतीतीप्रीति पालक जो रसिक नरेस अग्रस्वामी बलिहारी ॥ चरन
कमलमंजु रसिकभ्रमपुंज युगलप्रिया तिन रसिकन चरन उरधारी ॥ १०६ ॥

अवध लखि जन्म सुफल करिहौं । सरजू छबि हिय धरिहौं । विपिन प्रमोद
दाग कुञ्ज कुञ्ज अनुराग कोट विचित्र लखि परम सुहाई खाई उतरि पार परिहौं ॥
चारुशिलाजू की परम कृपा अलि मिलि तेहि संग महल जाय छबि नैन शैन भरिहो।
युगलप्रिया है चेरी चन्द्रकलाजू की नेरी अभय करि दोउ प्रिये मिलाय अब काहु
की नहिं डर डरिहो ॥

न आये सैया कौन सी चूक परी । यह प्रमोद बन मोद कहां गयो विरह
अनल में जरी ॥ हैं सरजू सरि शीतल करनी सो गुन कहां धरी । युगलप्रिया
अवधेश ललन बिनु बीतत कलप घरी ॥

न जानों सैयां कौन घरी की बात । जाते रूठि रहे रघुनन्दन तलफत रैनि
बिहात ॥ हम ते बैर प्रीति औरन ते करत बितावत रात । युगलप्रिया ऐसी नहिं
चाहिये सुन्दर श्यामल गात ॥११०॥

रंगीला मेरा बनरा श्यामल गात । नीलमणी अरु नील घटा सम कहत
सुकवि सकुचात । धाम अवध सरजू तट सुन्दर मातु पिता अरु भ्रात ॥ नाम
मनोहर राम काम प्रद जपत संत दिन रात ॥ रूप बरणि नहिं सकत शेष श्रुति
और मुनिन की बात। युगलप्रिया लीला अनंत सत कोटि ते अधिक सोहात॥१११॥

हो रामा नेकु चितै दै रङ्ग भरी तोरी अखियां। नृपति कुमार उदार शिरोमनि
दूर गई सङ्ग की सखियां ॥ सुनत बैन मुसकाय भाय भरि हिय लगाय जिय
रखियां। युगलप्रिया तन मन धन वारहिं यह सुभाव जिन लखियां ॥११२॥

बैठे कल्पद्रुम छंहियां हो राम देखो सखी । श्रीमिथिलेस लली रघुनन्दन
सोहत दिये गलबहियाँ हो रामा । मृदु मुसुकनि चितवति मृदु बोलनि अमिय
चुवत छहियां हो राम । युगलप्रिया यह जोरी छबि लखि उपमा कहुँ कोउ
नहियां हो राम ॥११३॥

चलो सखि सरजू तीर बसि रहिये हो राम। जहां बिहरत दोउ नित्य बिहारी
नाम रूप रति चहिय हो राम ॥ बन प्रमोद द्रुम कुञ्ज कुञ्ज प्रति बिहरनि की छबि
लहिय हो राम। युगलप्रिया जहां अमित सहचरी भाव रीति ढिग गहिय हो राम॥११४॥

जै श्री जानकी बल्लभलाल । मणिमंदिर श्रीकनक महल में विथुल रंगीली-
वाल ॥ कोउ गावति कोउ वीनवजावति कोउ मृदंग कठताल । युगलप्रिया रिझ-
वति दोउलालन छविलषि भई निहाल ॥११५॥

इति श्रीयुगलप्रियाकृत पदावली समाप्तम् ॥